राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिलभारतीय तथा विशेषत. राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट-ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर;
ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी,
निवृत्त सम्मान्य नियामक (ऑनरेरि डायरेक्टर),
भारतीय विद्याभवन, बम्बई; प्रधान सम्पादक,
सिंघी जैन ग्रन्थमाला, इत्यादि

ग्रन्थाङ्क ५३

राजस्थानी-साहित्य-संग्रह

भाग ३

(पांच राजस्थानी प्रेमवार्ताओं का सङ्कलन)

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

१९६६ ई०

राजस्थानी-साहित्य-संग्रह

भाग ३

पांच राजस्थानी प्रेमवार्त्ताओं का सङ्कलन

(विस्तृत भूमिका एवं परिशिष्टादि सहित)

सम्पादक

गोस्वामिश्रीलक्ष्मीनारायण दीक्षित

कॅटलॉगिङ्ग एसिस्टेन्ट

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर

भूमिका-लेखक

डॉ० नारायणसिंह भाटी, एम.ए, (पी-एच.डी), एल-एल. बी.

सञ्चालक,

राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर

प्रकाशनकर्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०२२ प्रथमावृत्ति १०००	भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८७	खिस्ताब्द १९६६ मूल्य- ५.५०

मुद्रक- हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर

अनुक्रम

	सञ्चालकीय वक्तव्य	१ – २
	भूमिका	१ – ३७
	सम्पादकीय	३८ – ५४
	वार्तागत विषयानुक्रम	५५ – ६०

वार्ताए

१	वात बगसीरांम प्रोहित-हीरांकी	१ – ५०
२	रीसालूरी वारता	५१ – १४४
३	वात नागजी नागवन्तीरी	१४५ – १६३
४	वात दरजी मयारामकी	१६४ – १८५
५	राजा चद-प्रेमलालछीरी वात	१८६ – १९६

परिशिष्ट

१	रिसालू की वात के रूपान्तर—	
	(क) रीसालूकुमरनी वार्ता (गुजराती)	१९७ – २१०
	(ख) रिसालूरा दूहा	२११ – २१४
२	पद्यानुक्रमणिका—	
	(क) वात बगसीरामजी प्रोहित-हीराकी	२१५ – २२४
	(ख) वात रीसालूरी	२२४ – २३६
	(ग) नागजी ने नागवतीरी बात	२३७ – २३८
	(घ) वात दरजी मयारांमरी	२३९ – २४२
३	वार्तागत सूक्तियां	२४३ – २५

संचालकीय वक्तव्य

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान की ओर से 'राजस्थान पुरातन ग्रथ-माला' के अन्तर्गत "राजस्थानी साहित्य-सग्रह-श्रेणी" मे राजस्थानी भाषा की प्रतिनिधि स्वरूप उत्तम प्रकार की कृतियो को यथायोग्य प्रकाशित करने का हमारा सकल्प ग्रंथमाला आरम्भ करने के समय से ही वना हुआ है। तदनुसार राजस्थानी साहित्य-सग्रह के दो भाग पहले प्रकाशित हो चुके हैं।

राजस्थानी साहित्य-सग्रह, भाग १ का प्रकाशन १९५७ ई० में हुआ, जिसका सम्पादन राजस्थानी भाषा और साहित्य के सुप्रसिद्ध विद्वान् प्रो० नरोत्तमदास स्वामी, एम० ए०, विद्यामहोदधि ने किया। इस सकलन मे: १–खीचीं गगेव नीबावतरो दो-पहरो, २–रामदास वैरावतरी आखड़ीरी वात और ३–राजान राउतरो वात-वणाव नामक तीन राजस्थानी वर्णनात्मक वार्ताओ का प्रकाशन हुआ। इसी भाग के प्रारम्भ में राजस्थानी गद्य के विषय मे श्री अगरचन्द नाहटा के दो निवन्ध प्रकाशित किये गये हैं जिनसे पाठको को राजस्थानी कथा-साहित्य और राजस्थानी गद्यात्मक रचनाओ के वैशिष्ट्य का परिचय प्राप्त होता है।

राजस्थानी साहित्य-संग्रह, भाग २ का प्रकाशन १९६० ई० मे हुआ जिसका सम्पादन प्रतिष्ठान के प्रवर शोध-सहायक डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम०ए०, साहित्यरत्न ने किया है। इस पुस्तक मे वीरतासबधी तीन राजस्थानी कथाएँ हैं: १–देवजी वगडावतांरी वात, २–प्रतापसिंघ म्होकमसिंघरी वात और ३–वीरमदे सोनीगरारी वात। तीनो ही वार्त्ताओ के साथ सम्पादक ने शब्दार्थ और टिप्पणियां दी हैं जिनसे पाठको को वार्ताओ के अर्थग्रहण मे सुविधा रहती है। साथ ही, सम्पादकीय भूमिका और परिशिष्ट मे परिश्रमपूर्वक प्राचीन भारतीय कथा-साहित्य, राजस्थानी कथा-साहित्य और प्रत्येक वार्ता से सवधित ऐतिहासिक और साहित्यिक-सौन्दर्य को प्रकट कर राजस्थानी कथा-साहित्य-विषयक जानकारी को अग्रेसृत किया गया गया है। उक्त दोनो ही प्रकाशनो मे राजस्थानी भाषा की प्राचीन कथाओ और गद्य के उत्कृष्ट उदाहरण सक-लित हैं।

इसी शृखला मे प्रस्तुत राजस्थानी साहित्य-सग्रह, भाग ३, ग्रथमाला के ५३वें ग्रथ के रूप मे पाठको को प्रस्तुत किया जा रहा है। इसमे पाच राजस्थानी

प्रेमाख्यानो का सकलन है। इसका सम्पादन प्रतिष्ठान के कैटलॉगिग सहायक गोस्वामिश्रीलक्ष्मीनारायण दीक्षित ने किया है।

इन वार्ताओ का गद्य प्रसगानुसार पद्याशो से अनुप्राणित है। राजस्थानी कथाएँ बड़े परिमाण में कही, सुनी और लिखी जाती रही हैं। ऐसी अवस्था मे कथा कहने वाले और लिपिकर्त्ता इन कथाओ में अपनी रुचि के अनुसार परिवर्तन कर गद्याश में पद्य जोड़ते रहे हैं। इस प्रकार राजस्थानी गद्य-कथाओ का परिष्कार और विस्तार होता ही रहा है।

इस सकलन की कथाओ मे ऐतिहासिक पुट देने का भी प्रयत्न किया गया है किन्तु ऐतिहासिक तिथिक्रम की कसौटी पर वे तथ्य पूरे खरे नहीं उतरते हैं।

सम्पादकीय वक्तव्य में अनेक तथ्यो का अध्ययनपूर्वक उद्घाटन किया गया है। इस पुस्तक को अधिकाधिक उपयोगी बनाने का प्रयत्न किया गया है। इस प्रकार पुस्तक को उत्तमतया सम्पादित करने के लिये श्रीगोस्वामीजी बधाई के पात्र हैं।

राजस्थानी शोध सस्थान, जोधपुर के सचालक डॉ० नारायणसिंह भाटी ने अपनी विद्वत्तापूर्ण भूमिका मे राजस्थानी गद्य की प्राचीनता, राजस्थानी गद्य के विभिन्न रूप, राजस्थानी कथाओं का वर्गीकरण, प्रेम-कथाओ की सामान्य विशेषताएँ और वार्तागत विषयो का याथातथ्य निरूपण किया है जिससे इस प्रकाशन की उपादेयता अध्ययनार्थियो के लिये सवर्द्धित हो गई है। तदर्थ हम डॉ० भाटी को हार्दिक धन्यवाद देते हैं। साथ ही रिसालू की वार्ता से सम्बद्ध "रिसाळू री औरत" शीर्षक चित्र उपलब्ध करने के लिये भी हम उनके आभारी हैं।

इस पुस्तक के प्रकाशन-व्यय का एक अश "आधुनिक भारतीय भाषा विकास योजना (राजस्थानी)" के अन्तर्गत शिक्षा-मंत्रालय केन्द्रीय सरकार, दिल्ली से प्राप्त हुआ है। इस सहयोग के लिये हम प्रतिष्ठान की ओर से उक्त मत्रालय के प्रति हार्दिक आभार प्रदर्शित करते हैं।

आशा है कि इतः पूर्व प्रकाशित इस प्रकार के साहित्य-सग्रह के दो भागो के समान यह तीसरा भाग भी विद्वानो को पठनीय एव उपयुक्त प्रतीत होगा।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
शाखा कार्यालय,
चित्तौडगढ
दिनाक १-१-६६

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सचालक

भूमिका

राजस्थानी गद्य की प्राचीनता—

प्राचीन राजस्थानी साहित्य गद्य एव पद्य दोनो ही दृष्टियो से समृद्ध है। राजस्थानी पद्य की विपुलता एवं उसकी विशेषता सर्वत्र ज्ञात है। परन्तु राजस्थानी गद्य की अपनी विशेषता और उसकी प्राचीनता के सम्बन्ध मे बहुत कम जानकारी अभी प्रकाश मे आ पाई है। राजस्थान की विभिन्न साहित्यिक सस्थाओ के सग्रह तथा अधुनातन शोध-कार्य के आधार पर यह कहा जा सकता है कि राजस्थानी भाषा मे जो प्राचीनतम गद्य मिलता है वह 'असमिया' आदि एक दो भारतीय भाषाओ को छोड कर अन्य भाषाओ मे नही मिलता। राजस्थानी गद्य के प्राचीनतम उदाहरण स्फुट रूप मे ही प्राप्त होते हैं परन्तु उनसे गद्य की बनावट और भाषा के रूप का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। इस प्रकार के स्फुट उदाहरण शिलालेखो व ताम्रपत्रो मे देखे जा सकते हैं। राजस्थानी गद्य का प्राचीनतम उदाहरण बीकानेर के नाथूसर गाँव के एक शिलालेख मे अकित है जिसका समय स० १२८० दिया गया है।[1] अत. १३वी शताब्दी मे राजस्थानी पद्य के साथ-साथ गद्य का निर्माण भी प्रारभ हो गया था, यद्यपि उस पर अपभ्रश की छाप विद्यमान है।

१३वी शताब्दी के पश्चात गद्य का निरन्तर विकास होता रहा है। सग्रामसिंह द्वारा रचित बालशिक्षा व्याकरण[2] मे प्राप्य राजस्थानी गद्य के उदाहरणो को देख कर यह कहा जा सकता है कि आचार्यो का ध्यान भी राजस्थानी गद्य की ओर १४ वी शताब्दी मे आकृष्ट होने लग गया था। प्राचीन गद्य के निर्माण मे जैन-विद्वानो का विशेष योग हमे नि सकोच भाव से स्वीकार करना होगा, क्योकि

---

१ – वरदा, वर्ष ४, अक ३, पृ० ३।

२ – इस ग्रथ का रचनाकाल १३३६ है।

उन्होने न केवल स्वतन्त्र रूप मे वरन् बालावबोध, टब्बा तथा टीकाओ आदि के रूप मे भी राजस्थानी गद्य को अपनाया है तथा उसको पनपाने की चेष्टा की है। इस दृष्टि से तरुणप्रभसूरि द्वारा स० १४११ मे लिखित षडावश्यक बालावबोध यहा उल्लेखनीय है। १५ वी शताब्दी के अतिम चरण तक आते आते राजस्थानी गद्य मे काफी निखार आ गया था और अपने साहित्यिक रूप मे उसकी स्थापना हो चुकी थी जिसके प्रमाण मे माणिक्यसुदरसूरि द्वारा स० १४७८ मे रचित वाग्विलास के गद्यांशो को देखा जा सकता है, जिनमे गद्य के परिमार्जन के साथ-साथ लयात्मकता, अनुप्रास एव वर्णन-कौशल की खूबी परिलक्षित होती है।

भाषा के क्रमिक विकास की दृष्टि मे १५ वी शताब्दी की रचनाओ मे अपभ्रश का प्रभाव विद्यमान है क्योकि उनमे 'अउ' तथा 'अइ' के प्रयोग प्राय सर्वत्र मिलते हैं। इस समय की जैनेतर गद्य रचना अचलदास खीची री वचनिका मे भी इस प्रकार के उदाहरण देखे जा सकते है। शिवदास गाडण रचित यह रचना गागरोन के खीची शासक अचलदास तथा माडण के बादशाह के युद्ध को लेकर लिखी गई है जिसमे राजस्थानी गद्य का प्रयोग बहुलता के साथ हुआ है। उसकी अभिव्यक्तिगत विशिष्टता के आधार पर डा० टेसीटरी ने उसे प्राचीन राजस्थानी का एक क्लासिकल मॉडल कह कर उसके महत्त्व को प्रदर्शित किया है। यहा यह भी उल्लेखनीय है कि मुस्लिम सभ्यता के संपर्क के कारण राजस्थानी मे अरबी और फारसी के शब्दो का आगमन भी इस समय हो गया था। राजस्थानी गद्य के क्रमिक विकास का इतिहास प्रस्तुत करना यहा अपेक्षित नही है। अतः यहा केवल यह बताना पर्याप्त होगा कि १५ वी शताब्दी के अत तक आते-आते राजस्थानी गद्य का परिमार्जन एक सीमा तक हो गया था और १६ वी शताब्दी मे तो वह अनेक साहित्यिक विधाओ का माध्यम बनने लगा। १७ वी और १८ वी शताब्दी मे गद्य रचनाओ का निर्माण ज्ञात तथा अज्ञात लेखको द्वारा विपुल परिमाण मे हुआ है जिसका अधिकाश भाग प्राचीन हस्तलिखित ग्रथो मे आज भी सुरक्षित है।

गद्य के विभिन्न रूप—

राजस्थानी गद्य का यह विकसित रूप बात, ख्यात, पीढी, वंशावली, वचनिका आदि अनेकानेक रूपो मे प्रयुक्त हुआ है। इनके अतिरिक्त राजस्थानी गद्य के माध्यम से अनुवादो की परपरा भी कोई १४ वी शताब्दी से प्रारम्भ हो गई थी और जिनमे जैन-विद्वानो का ही विशिष्ट हाथ रहा है। अनुवाद तथा टीकायें अनेक रूपो मे उपलब्ध होती हैं। इन टीकाओ के मुख्य रूप टब्बा,

बालावबोध, वार्तिक आदि हैं। आगे चल कर अरबी फारसी आदि भाषाओ के महत्त्वपूर्ण ग्रथो का उल्था भी राजस्थानी गद्य मे किया गया है, जिसकी सामग्री हस्तलिखित ग्रथो मे हजारो पृष्ठो मे लिपिबद्ध हुई है। यह कहने की आवश्यकता नही कि रामायण, महाभारत, पुराण, हितोपदेश आदि को पूर्ण रूप मे अथवा आशिक रूप मे इस भाषा के माध्यम से जनता तक पहुचाने का सफल प्रयास भी अनेक विद्वानो ने किया है। स्थानीय रियासतो के प्राचीन राजकीय रेकार्डों को देखने से यह प्रमाणित होता है कि बडे लबे अर्से तक इस प्रकार के काम-काज राजस्थानी भाषा मे ही होते थे। अत समाज की व्यावहारिक भाषा राजस्थानी ही थी।

कथाओ का वर्गीकरण—

उपरोक्त गद्य के विभिन्न रूपो मे वात और ख्यात का विशिष्ट महत्त्व है। मुहता नैणसी, दयालदास तथा बांकोदास की ख्याते बहुर्चाचित हैं, परन्तु इन ख्यातो के अतिरिक्त राठोडो, भाटियो, कछवाहो, चौहानो आदि की ख्यातें भी उपलब्ध हैं, जिनका महत्त्व जितना साहित्यिक दृष्टि से नही है, उतना ऐतिहासिक दृष्टि से है। साहित्यिक दृष्टि से वात-साहित्य एक ऐसी विधा है जिस पर सही माने मे राजस्थानी भाषा गौरव का अनुभव कर सकती है। अन्य भारतीय भाषाओ में इतना विषय-वैविध्य तथा कलात्मकता से परिपूर्ण कथासाहित्य उपलब्ध होना कठिन है। इस कथासाहित्य को मोटे तौर पर पाच भागो मे विभक्त किया जा सकता है—

१ ऐतिहासिक २ अर्ध ऐतिहासिक ३ पौराणिक
४ धार्मिक ५ सामाजिक

ऐतिहासिक कथायें प्राय ख्यातो के आशिक रूप मे तथा स्फुट रूप मे उपलब्ध होती है, जो कि प्राचीन शासको, योद्धाओ तथा विशिष्ट प्रकार के चरित्र-नायको को लेकर लिखी गई हैं। अर्ध ऐतिहासिक कथाओ मे कल्पना तथा जन-श्रुतियो का बाहुल्य है, परन्तु वे ऐतिहासिक कथाओ के अपेक्षा अधिक कलात्मक हैं। इस प्रकार की कथाओ की बहुलता का मुख्य कारण मुगलकाल मे यहाँ घटित होने वाली अनेकानेक घटनाएँ हैं जिनमे यहाँ के शासक वर्ग के शौर्य तथा कर्त्तव्यपरायणता व स्वामीभक्ति आदि गुणो का बखान किया गया है। प्रत्येक साहित्य प्राचीन सामाजिक-परम्पराओ एव मान्यताओ से प्रभावित ही नही होता, अपितु अपने पूर्वजो की थाती के रूप मे बहुत कुछ उनसे ग्रहण करने और उस पर मनन करने को लालायित रहता है। अत अनेक पौराणिक प्रसग

सहज ही मे राजस्थानी कथा-साहित्य की निधि बन गये हैं। हमारी सस्कृति मे धर्म का स्थान सर्वोपरि रहता आया है, वह केवल देवालय तक ही सीमित न रह कर हमारे आचार-विचार और दैनिक नित्य कर्म को बराबर प्रभावित करता रहा है। ऐसी स्थिति मे धर्म की शिक्षा-दीक्षा तथा उसके अनुकूल आचरण की प्रवृति डालने के उद्देश्य से विभिन्न धार्मिक-सम्प्रदायो ने अनेकानेक कथाओ का प्रचलन हमारे समाज मे किया। जिनमे एकादशी, शिवमहात्म्य, शनिश्चरजी, सत्यनारायणजी आदि की कथायें प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त प्रायः प्रत्येक धार्मिक पर्व से सम्बन्धित कथायें आज भी सुनने को मिल सकती हैं।

सामाजिक कथाओ के अतर्गत नीति, प्रेम और आदर्श-परक कथाओ को रखा जा सकता है। प्राचीनकाल मे जब शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध आधुनिक ढग का-सा सभव नही था, तब इस प्रकार की कथाये ज्ञान-वर्द्धन तथा समाज की व्यावहारिक जानकारी का महत्त्वपूर्ण साधन थी। इनमे प्रेम-कथाओ की सख्या सबसे अधिक है जो कई उद्देश्यो से लिखी जाती रही हैं। इन कथाओ पर सर्वागीण रूप से विचार करने पर यह प्रतीत होता है कि इनमे अनेक तत्त्व विभिन्न रूपो मे गुम्फित होकर मानव-भावनाओ तथा तत्कालीन समाज की मनोदशाओ के अकन के साथ-साथ उनकी मान्यताओ पर सुन्दर प्रकाश डालते हैं।

कथाओ के विकास एव प्रचार की प्रक्रिया—

कथाओ की विविधरूपता के साथ-साथ उनके विकास एव प्रचार मे समाज के कुछ वर्गो का विशिष्ट योगदान रहा हैं जिसकी चर्चा यहाँ करना इसलिए आवश्यक है कि उसे जाने बिना इन कथाओ के उद्देश्य एव मर्म को समझना सहज नही है। इस दृष्टि से जैन विद्वानो, राजघरानो और चारण व भाटो का योग यहाँ उल्लेखनीय है।

जैन—जैन-विद्वानो द्वारा रचित अधिकाश कथा-साहित्य धार्मिक है। वह जैन यतियो और श्रावको द्वारा विकसित एव प्रचारित होकर उनके धर्मावलबियो मे विशेष प्रतिष्ठित हुआ। कई विद्वानो ने धर्मनिर्पेक्ष कथाओ का भी सर्जन किया। कुछ कथाओ मे लौकिक पक्ष की प्रमुखता है परन्तु उन्होने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए उस पर धर्म का आवरण चढा दिया है। कथाओ के निर्माण की दृष्टि से ही नही अपितु उनकी सुरक्षा की दृष्टि से भी जैनियो की सेवाये अविस्मरणीय हैं। उनके नित्यकर्म मे स्वाध्याय एव लेखन आदि नियमित रूप से चलता रहा है जिसके कारण कथाओ के प्रचार एव उनकी सुरक्षा की तरफ

उनका ध्यान निरन्तर बना रहा। आज भी बडे-बड़े मदिरो और उपाश्रयो मे इस प्रकार के ग्रथ बहुत बडी सख्या मे सग्रहीत हैं।

राजघराने—जिस काल मे प्रेम, नीति तथा ऐतिहासिक तत्वो को लेकर अधिकाश कथाओ का निर्माण हुआ है, वह काल मुगलसत्ता और सस्कृति से आच्छादित रहा है। आए दिन भू और भामिनी के अतिरिक्त मदिर और गायो के प्रश्न को लेकर युद्ध होना साधारण बात थी। अपने मान और गौरव की रक्षा के लिए वीर पुरुषो की कथाओ का निर्माण एव प्रचलन कर उत्सर्ग की प्रेरणा प्राप्त करना स्वाभाविक ही था। परन्तु इस प्रकार के युद्धो की क्लान्ति और सघर्षमय जीवन मे रस का सचार करना भी आवश्यक था जिसकी पूर्ति के लिए अनेकानेक प्रेम-कथाए बनती रही और अवकाश के क्षणो मे वे उनके लिए मनोरजन के साधन का काम देने मे सफल हुई। राठोड पृथ्वीराज की तरह अनेक राजा जहाँ युद्धकला व काव्यकला दोनो मे निपुण थे, वहाँ महाराजा मानसिंह तथा बहादुरसिंह जैसे शासको ने इन दो कलाओ के अतिरिक्त कथा-निर्माण की कला भी प्राप्त की थी। वैसे शासको का निजी योगदान उतना नही है जितना उनके आश्रय मे रहने वाले साहित्यकारो का है। इस प्रकार की रोमान्टिक कथाओ के प्रचलन के पीछे एक सामाजिक प्रक्रिया भी थी। एक राजघराने से उपहार के रूप मे लिपिबद्ध बातो की सुन्दर पोथिया दूसरे राजघरानो व विद्वानो को पहुँच जाया करती थी। एक घराने की लडकी जब दूसरी जगह ब्याही जाती तो वह अपने साथ अपनी मन पसद कई पोथियें ले जाती थी। इस प्रकार यहाँ के रजवाडो मे इनका आदान-प्रदान होता रहता था। आज भी अनेक ठिकानो मे दूसरे स्थानो की लिखी हुई पोथियें उपलब्ध हो जाती है। कहना न होगा कि इस प्रकार के आदान-प्रदान मे कथाओ के प्रचार के साथ-साथ उनकी भाषा मे भी परिमार्जन हुआ है।

चारण व भाट—चारण तथा भाटो का सम्बन्ध यहाँ के शासक वर्ग के साथ तो घनिष्ठ रूप मे रहा ही है परन्तु समाज मे भी उनकी मान्यता व स्थान सदा से रहता चला आया है। उनके द्वारा राजस्थान मे साहित्य-रचना भी बडे परिमाण मे हुई। राज्याश्रय के अतिरिक्त स्वतत्र रूप से भी वे अन्य साहित्य की तरह कथाओ का निर्माण भी करते थे। उनका सम्पर्क प्राय साधारण जनता से अधिक रहता था इसलिए जनता मे इस प्रकार की कथाओ के प्रचलन का श्रेय भी इन लोगो को ही है। दिन भर के कार्य से थक कर शाम के समय मनोरजन के लिए जब लोग हथाई पर बैठते थे तो प्राय कई नो कोई बारहठजी

या रावजी बीच मे आ जमते और लोगो के थोड़से आग्रह पर बात की भूमिका बननी प्रारम्भ हो जाती थो। इन बातो को कहने की भी एक विशिष्ट कला है जो स्वय कथाओ से कम रोचक नही है। श्रोताओ का ध्यान आकृष्ट करने के लिए भूमिका बाँधी जाती है जिसमे प्राय: बात से सम्बन्धित भौगोलिक वर्णन अथवा देश विशेष की विशेषताओ का वर्णन रहता है। बात मे हुकारे का बडा महत्त्व है। बात कहने वाला पहले से ही श्रोताओ को सतर्क रहने तथा बात मे दिलचस्पी लेने को यह कह कर आगाह करता है कि 'बात मे हुकारो और फोज मे नगारो'। सब की जिज्ञासा को अपनी ओर केंद्रित कर फिर वह मूल बात पर यह कहता हुआ आता है—तो रामजी भला दिन दे, एक समय री बात, फला नगर मे फला राजा राज करतो हो। आदि २।

प्रेम गाथाओ की सामान्य विशेषतायें—

यह उल्लेख हम पहले कर आये हैं कि कथा-साहित्य मे शृगारपरक कथाओ का विशेष महत्त्व है। यहाँ सम्पादित बातो पर प्रकाश डालने के पहिले इस प्रकार की प्रेम-विषयक वार्ताओ की सामान्य विशेषताओ की ओर सकेत कर देना अनुचित न होगा। इन कथाओ मे प्रेमिका के सौन्दर्य का वर्णन अनेक उपमाओ, रूपको और उत्प्रेक्षाओ के सहारे किया जाता है। वेश-भूषा तथा हाव-भाव का चित्रण भी कथाकारो ने पूर्ण रस लेकर के किया है। जहाँ नायिका की कोमलता, प्रेम-लालसा व अलौकिक सौदर्य का वर्णन किया गया है, वहाँ नायक के शौर्य, शारीरिक गठन, घुड सवारी आदि का भी बखान किया गया है। उसे यथा-स्थान छैल-छबीला व रसिक-शिरोमणि भी सिद्ध किया गया है।

शृगार का सजीव चित्रण प्राय प्रकृति व महलो की साजसज्जा की पृष्ठ-भूमि मे किया गया है। वियोग और सयोग दोनो अवस्थाओ मे नायिका के भावोद्वेलन का वर्णन कही-कही षट्ऋतुओ के प्रभाव के साथ-साथ हुआ है तो कही वसन्त और वर्षा के सहारे। बाग-बगीचे व उद्यानादि उनके मिलन-केद्र के रूप मे वर्णित है। कही-कही प्रकृति के उपकरणो पर प्रेमातुर क्षणो मे मनुष्यो से भी अधिक विश्वास कर उन्हे प्रेम की सचाई के लिए साक्षी रूप मे स्वीकार किया गया है। प्रेम-सन्देशो के आदान-प्रदान के लिए जहाँ डावडियो तथा दूतियो आदि का सहयोग उन्हें मिलता रहा है वहाँ मालिन, तम्बोलिन व धोबन आदि ने भी पूरा जोखम उठा कर बडी चतुराई के साथ उनका काम कर दिया है। उनके शुभचिंतको की सख्या यहाँ तक ही सीमित नही है, पाले हुए मृग, सुगे व कबूतर भी अपने कर्त्तव्य से विमुख होना नही जानते। अश्व व ऊँट आदि

ने नायक को निश्चित स्थान व समय पर उसकी प्रेमिका से उसे मिलाया हो नही, अपितु सब की आंख मे धूल झोककर सुरक्षित स्थान पर भी पहुंचा दिया।

स्वजातीय प्रेमी-प्रेमिका के वीच मे जहा घरेलू व्यवधान, प्रेम-तत्त्व को प्रगाढता प्रदान करते हैं वहाँ विजातीय नायक-नायिका के वीच समाज का व्यवधान चित्रित किया गया है। परतु सच्चे प्रेम के सामने दोनो ही प्रकार के व्यवधान अन्तत बालू की दीवार की तरह ढह पडते हैं। नायक-नायिका का मिलन चाहे विधिवत् रूप से विवाह मंडप के नीचे न हो, अथवा कुसुम शैया पर निश्चित रूप से पौ फट जाने तक सभोग का आनन्द लेने का अवसर उन्हे भले ही न मिला हो, परन्तु श्मसान की भूमि में आकर उनके चिरमिलन मे ससार की कोई भी ताकत व्यवधान नही वन सकी। यह अलग बात है कि शिव-पार्वती की किसी प्रेमी-युग्म पर कृपा हो जाय और वे पुनर्जीवित होकर सामाजिक नियमो की पराजय से निर्मित गौरव महल मे फिर से प्रेम-क्रीडा करने लगें।

नायक-नायिका के प्रेम को चरम सीमा तक पहुचाने के लिए अनेक प्रकार के व्यवधानो का वर्णन तो किया ही गया है परन्तु इसके साथ-साथ नायिका के प्रेम को औचित्य प्रदान करने के लिए जहाँ च्युत नायक के वुद्धूपन तथा कुरूपता, कायरता आदि का हास्यास्पद वर्णन किया गया है वहाँ शौर्य आदि का उत्कर्ष न केवल नायक तक ही सोमित रहा है, वह नायिका के चरित्र मे भी प्रकट किया गया है। कुसुमादपि कोमल सुकुमारी अपने प्रेमी से मिलने के लिए मेघो से आच्छादित तिमिराच्छन्न रात्रि में अपने घर से वाहर निकल पडना साधारण सी बात समझती है और रास्ते में आने वाले किसी वन्य पशु व दुश्मन की हत्या करने में तनिक भी नही हिचकिचाती है।

प्रेम करना कोई हसी-खेल नही है। इसमें जितने साहस की आवश्यकता है उतनी चतुराई की भी। अनेको बार ऐसी परिस्थितिया आ जाती हैं जिनमे नायक-नायिका का वातचीत करना सभव नही होता, तव सकेतो के सहारे हृदय की मूक-भाषा मे सवाद सपन्न होते हैं। कही परिस्थिति कुछ अनुकूल-सी लगी तो लाक्षणिक काव्य-पद्धति उन्हें सहयोग दे जाती है।

अधिकाश प्रेम-चित्र यौवन के उद्दाम क्षितिज पर चित्रित है। जिनमे काम की लालिमा पर सुखद सभोग के अनेक इन्द्रधनुष तैरते हुये दिखाई देते हैं।

त्रिया मे धूर्ततापूर्ण चरित्रो को चित्रित करने की दृष्टि से लिखी गई कथाओ मे प्राय. जादू, टोना, निम्न कोटि की सिद्धिया, भूत-प्रेतो व पाखण्डी

सन्यासियो का वर्णन वडी चतुराई के साथ किया गया है जो लबी कथा मे प्राय औत्सुक्य का निर्वाह करने मे भी सहायक सिद्ध होता है।

प्रेम-गाथाओ मे पत्र-लेखन का बडा महत्त्व है। अपनी विरह-वेदना का सागर प्राय प्रेमपाती पर अकित दोहो की गागर मे भरकर भेजने मे प्रेमी को बडा सतोष होता है। इन पत्रो मे प्राय· नायिका अपने प्रेम-विह्वल हृदय की बात ही नही करती अपितु अपने हृदय को ही प्रेमी तक पहुचाने को लालायित रहती है। निश्चित अवधि पर मिलन न होने की स्थिति में प्राणो का मोह छोड देने की धमकी उसका अमोघ अस्त्र है, उसका उपयोग भी पूर्ण विश्वास के साथ वह करती है।

यद्यपि नायिका की विभिन्न अवस्थाओ और हाव-भाव का वर्णन इन कथाओ मे मिलता है परन्तु वह हिन्दी के रीतिकालीन प्रेमाख्यानो से अलग किस्म का है। शृगारिक उपकरणो व उसकी अभिव्यक्ति मे परिपाटीबद्धता अवश्य लक्षित होती है परन्तु रीतियुक्त नायक-नायिकाओ के सुनिश्चित क्रिया-कलापो के केट-लाग से वह सर्वथा भिन्न है। रीतिबद्ध प्रेम को जहाँ शास्त्र ने अपने नियमो मे जकड लिया है वहा इन गाथाओ का प्रेम सर्वथा मुक्त है। रीतिकाल के अनेका-नेक प्रेम-चित्र जहा वासना-जन्य भावनाओ से उत्पन्न कवियो की कल्पना के उपहार हैं वहा इन कथाओ का प्रेम जीवन की वास्तविकताओ के बीच क्रीडा करता हुआ दिखाई देता है।

कहने की आवश्यकता नही कि इस प्रकार का कथा साहित्य तत्कालीन समाज के राग-द्वेष, सौन्दर्य और प्रेम के मापदण्ड, जातीय-व्यवस्था, जीवन-आदर्श, यौन सम्बन्ध, मनोविनोद व राजा तथा प्रजा के सम्बन्धो की जानकारी का बडा ही उपयोगी साधन है। इन कथाओ मे प्रयुक्त काव्याश कही-कही उत्कृष्ट कोटि की काव्यकला अपने मे लिये हुये है। गद्य और पद्य का यह सुन्दर समन्वय तत्कालीन जीवन की यथार्थता और प्रेमानुरजित कल्पना के सम्मिश्रण के अनुकूल है, जिसकी व्याप्ति कथाकारो ने इस लोक में ही नही, जन्म-जन्मान्तर तक मे कर देने का प्रयत्न अपनी कुशल लेखन-शैली के बल पर किया है।

अब यहा सम्पादित प्रत्येक कथा को लेकर सक्षेप मे कुछ आवश्यक विचार प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

१ वात बगसीराम पुरोहित हीरां की

कथा साराश—

प्रकृति और मानव-सौन्दर्य की सुषमा के आगार उदयपुर पर राणा भीम (१८३४-१८८५) राज्य करता था। उसके राज्य मे अनेक कलाओ मे

निपुण गुणिजन और धनी सेठ-साहूकार रहते थे जिनमे कोडिधज लखमोचन्द का नाम प्रसिद्ध था। उसके घर हीरा नाम की रूपवती पुत्री ने जन्म लिया। शनैः शनै. समय के साथ अपनी सखियो के बीच गुड्डा गुड्डी का खेल खेलती हुई बचपन की देहली को लाघ, वह यौवन के क्षेत्र मे ज्यो ही प्रविष्ट हुई, उसके अगो मे नया निखार, मुख पर भोली लज्जा की अरुणिमा और आखो मे चचलता व्याप्त हो उठी। यौवन का चाचल्य बातों मे व्यक्त होने लगा और अधरो की बातें नजरो तक आने लगी, तब माता-पिता ने उसका विवाह अहमदाबाद के धनी सेठ कपूरचन्द के सुपुत्र माणकचन्द के साथ कर दिया। हीरा यौवन की सुख-लालसा का स्वप्न लेकर माणकचन्द के साथ चली गई, परन्तु उस सुन्दरी की इच्छा के अनुकूल वर प्राप्त न होने से वह बडी दु खित रहने लगी और वापिस उदयपुर चली आई।

उन्ही दिनो निवाई[1] (जयपुर राज्य) मे बगसीराम पुरोहित निवास करता था जो युद्ध और प्रेम दोनो ही कलाओ मे समान रूप से प्रवीण था। वह अपने ससुराल बूदी मे आखेट आदि अनेक प्रकार के मनोविनोद करता हुआ सावण की तीज का आनद लूट रहा था। इतने मे किसी ने उदयपुर की गणगौर को प्रशसा करते हुये उसे देखने का प्रस्ताव रखा। बगसीराम वहा से अपने साथियो सहित उदयपुर आ पहुँचा और सहेलियो की बाडी मे डेरा डाल दिया। पीछोला तालाब पर 'गवर' की सवारी देखने के लिये जनता को भीड एकत्र हुई तो बगसोराम भी अपने घोडे पर सवार हो वहा जा पहुचा। उसके सौन्दर्य और तडक-भडक ने सभी को अपनी ओर आकर्षित कर लिया। उधर हीरा की नजर इस पर पडी तो उसने फौरन अपनी चतुर दासी केसरी को सकेत कर उसके पास भेजा और परिचय प्राप्त करने के बाद उसने हीरा की अभिलाषा प्रकट की। पहले तो बगसीराम ने स्वीकृति नही दी परन्तु जब उसने हीरा की मनो-दशा का, उसके अलौकिक सौन्दर्य का वर्णन किया तो बगसीराम का उन्मत्त यौवन भी उस सुन्दरी को भोगने के लिये लालायित हो उठा।

सकेत के अनुसार निश्चित समय पर बगसीराम अपने घोडे पर सवार हो रात के समय हीरा के महल मे जा पहुचा। महल की शोभा, साज-सज्जा और उसमे सोलह शृगार कर बैठी हुई काम भावना की साक्षात् मूर्ति, अप्सरा सी सुन्दरी हीरा ने एकाएक उसे अपनी ओर खीच लिया। रात भर रति-विलास करने के पश्चात् जब पुरोहित रवाना होने लगा तो हीरा के लिये विदाई के वे

---

१ – कथा में पुरोहित का निवास-स्थान कही निवाई और कही नरवर मिलता है।

क्षण असह्य हो उठे। दूसरे ही दिन राणा भीम को ज्यो ही पता लगा कि कोई विलक्षण व्यक्ति अपने दलबल सहित सहेलियो की बाडी मे ठहरा हुआ है, तो उन्होने मिलने की इच्छा प्रगट की। जगमदिर मे दोनों का मिलना हुआ। राणा ने जब नमस्कार किया तो पुरोहित ने केवल राम राम कह दिया और आशीर्वाद आदि न दिया। राणा ने क्रुद्ध होकर इसका कारण पूछा तो उसने बताया कि मै अनमी हू और रघुवश तथा नरवर के शासको के अलावा किसी को नमन नही करता। महाराणा ने उसके अनमीपने के औचित्य को स्वीकार किया परन्तु जब उसने साधारण ब्राह्मण न होकर तलवार के बल पर खेलने वाला योद्धा अपने आपने को कहा और इसी सदर्भ में परशुराम के द्वारा २१ बार क्षत्रियो का विध्वस करने की बात आई तो फिर बात बढ गई। राणा ने उसके दल-बल को देख लेने की चुनौती तक दे दो। पुरोहित ने अपने डेरे पर लौट कर शिवलाल धाभाई को सारी बात कही। धाभाई ने किसी प्रकार की परवाह न करने को कहा और अपनी सहायता के लिये फौरन अपने पगडी बदल भाई सिवाने के राव बहादुर को चुने हुए योद्धाओ के साथ सहायतार्थ आने के लिये लिखा। राव बहादुर आ पहुचा।

ज्योही तीज का त्यौहार आया, पुरोहित अपने साथियो सहित अफीम आदि का सेवन कर तीज का उत्सव देखने पीछोले पर एकत्रित हो गए। उधर हीरा भी अपनी सहेलियो के साथ बन ठन कर वहाँ आ पहुची। सुनिश्चित योजना के अनुसार देखते ही देखते बगसीराम ने हीरा को अपने घोडे पर बिठाया और वहा से निकल पडा। मेले मे भगदड मच गई और शहर मे शोरगुल हो गया। राणा भीम ने पता लगते ही अपनी फौज भेजी। दोनो पक्षो मे घमासान युद्ध हुआ। पुरोहित ने हीरा और उसकी दासी केसर को पहाडी की ओट मे घोडे से उतार दिया और स्वय विपक्षियो पर टूट पडा। काफी समय तक युद्ध होने पर दोनो पक्षो के अनेक योद्धा मारे गये परन्तु विपक्षियो की क्षति अधिक हुई। पुरोहित हीरा को लेकर अपने निवास स्थान लौट गया। अपने सहयोगियो का आभार प्रकट किया और हीरा के सौन्दर्य का निश्शक होकर उपभोग करने लगा। छहो ऋतुओ मे विभिन्न त्योहारो का आनन्द लूटते हुये अनेकानेक प्रकार की प्रेम-क्रीडाओ मे रत होकर समय व्यतीत करने लगा।

कथा का वैशिष्ट्य—

यह कथा अनमेल विवाह के दुष्परिणामो को प्रकाश मे लाने की दृष्टि से लिखी गई है। हमारे देश मे अनमेल विवाह की प्रथा काफी लबे समय से

प्रचलित रही है। राज्य सत्ता, धन सत्ता अथवा घराने के वडप्पन की होड को लेकर प्राय अनमेल विवाह होते रहे हैं। मुगलो मे भी यह प्रथा प्रचलित रही है और उसके दुष्परिणाम भी उन्हे भोगने पडे हैं। जलाल और बूबना की वात इसका उदाहरण है। हीरां जैसी सुन्दरी का विवाह माणिकचन्द जैसे कुरूप व्यक्ति के साथ कर देने से ही हीरा का मन उसके उपयुक्त प्रेमी ढूढने के लिये विकल हो उठता है और सयोग से वगसीराम जैसे सुन्दर और साहसी नवयुवक के सपर्क मे आकर उसे अपना जीवन अर्पण कर देती है।

कथा को रोचक वनाने के लिये लेखक ने स्थान-स्थान पर गद्य व पद्य मे वडे ही सुन्दर वर्णन किये हैं। इस दृष्टि से उदयपुर नगर, वूदी, सहेलियो की वाडी, हीरा का सौंदर्य व श्रृगार, उसके महल की साज-सज्जा, वगसीराम व उसके साथियो का ठाट-वाट तथा प्रेमी युग्म की क्रीडाओ का वर्णन द्रष्टव्य है। कही कही उक्ति-वैचित्र्य भी देखते ही बनता है।

प्रेम की रात प्रेमियो के लिये प्राय: वहुत छोटी हो जाया करती है। प्रथम मिलन की रात ढलने को हुई है उस समय हीरा की मनोवृत्ति का वर्णन लेखक ने सुन्दर संवादात्मक शैली मे किया है। यथा—

वगसीराम कहै छै—परभात हूवो, मदर झालर घटा बजायो।
हीरा कहै छै — वालम, परभात नही, वधाई बाजै छै। अऊत घर पुत्र जायो।
प्रोहित कहै छै — प्यारी, प्रभात हुई, मुरगी बोल रही छै।
हीरा कहै छै — कुकडा मिलाप नही छै।
प्रोहित कहै छै — प्यारी, प्रभात हुवो, चडिया बोलै छै।
हीरा कहै छै — वालम, प्रभाति नही, याका माळा मे सरप डोलै छै।
प्रोहित कहै छै — प्यारी, प्रभात हुवो, चकई चुपकी रही छै।
हीरा कहै छै — वालम, वोल बोल थाकी भई छै।
प्रोहित कहै छै — दीपग की जोति मदी भई छै।
हीरा कहै छै — तेल को पूर नही छै।
वगसीराम कहै छै — सहर को लोग जाग्यो छै।
हीरा कहै छै — कोईक सहर मे चोर लाग्यो छै
प्यारो कहै छै — प्यारी, हठ न कीज्ये, अब बहुन कर डेरानै हूकम दीज्ये।

(पृष्ठ २६)

सपूर्ण बात मे गद्य का प्रयोग बडी काव्यात्मक शैली के साथ किया गया है। उसमे लय के साथ साथ तुकान्तता भी है, जिससे उसे पढते समय काव्य का सा आनद आता है। इस द्रष्टि से एक उदाहरण यहा दिया जाता है—

'हीरा की सहेलिया हसा को डार। अदभुत कवळ वदन सोभा अपार। यूं कवळ की पापडीया एक वरोवर सोहै। वा सहैलिया मे हीरा परगुरूपी मन मोहैं। कीरतिया को भूमको तारा मडल की शोभा। आफू की क्यारी पोसाष मन लोभा। केसरिया कसुमल घनवर पाटवर नवरग पोसाष राजै छै। अतर फुलेल केसरि कसतुरी सुगध छाजै छै।' (पृ० १५)

लेखक व्यग का प्रयोग करने मे भी बडा प्रवीण है। व्यग के सहारे दूल्हा और दुलहिन की अनमेल जोडी का चित्रण बडी ही खूबी के साथ किया गया है, जिसे पढते ही पाठक की सहानुभूति हीरा के साथ हुए बिना नही रहती। हीरा के मन की वात हीरा के मुख से सुनिये—

'सुणि केसरी, असो पावँद पायौ छै। कपूर को भोजन काग नै करायौ छै। गधेडा रै अग पर चदन चढायौ छै। अन्ध कै आगै दरपण दीपायो छै। गूंगै के आगै रगराग करायो छै। नागरवेल को पान पसु नै चवायो छै।' (पृ. ५)

लेखक ने जहाँ एक ओर परिमार्जित गद्य का प्रयोग किया है वहाँ कविता को भी सुन्दर सृष्टि की है। उसने स्थान-स्थान पर दूहा, सोरठा, गाथा, कुड-लिया, पद्धरी, झमाल, उधोर, चद्रायणा, भुजगप्रयात, छप्पय, त्रोटक, गीत अर्धाली आदि अनेक छदो का सफल प्रयोग किया है। काव्यकला की दृष्टि से कुछ पद्याश यहाँ उल्लेखनीय हैं।

हीरा की मनोदशा—

हीरा मन आकुल भई, आयो लेप अनथ।
चाग्र हीरा चदसी, केत राहासो कथ ॥ ३१ ॥

फीकै मन फेरा लिया, अतर भई उदास।
आप मीच रोगी अवस, पीवत नीम प्रकास ॥ ३२ ॥

× ×

हीरा मद आतुर हुई, चित पीतम की चाह।
विपधर ज्यू चदन विना, दिल की मिटै न दाह ॥ ४२ ॥

× ×

प्यारी पीव प्रजक पर, ऊलही उर अवलूंव।
मानु चदन वृच्छ मिल, भुकी क नागणि भूव ॥ २१४ ॥

शिकार वर्णन—

ताता अपार प्राक्रम तुरग, कूदत छँवि जावत कूरग ।
चढि चले प्रोहित राण चग, अत वलवीर जोधार अग ।।

वण सुभट घाट हैमर वणाये, आखेट रमण कीनो उपाये ।
घमसाण चले घण थाट घेर, वाजत घाव नीसाण भेर ।।

चमकत सेल पाखर प्रचड, दमकत ढाल नीसाण दड ।
घ्रमकत घोड पुर घरण धज, रमकत गगन मग चढीये रज ।।

× ×

हलकार प्रोहित कोप कीन, ललकार म्यान तरवार लीन ।
पेष्यो क गज घरै अनड पप, घायो क वाज चीडकली यधक ।।

अति जोम पीरोहत कर अपार, दमकत तडत वाई दुधार ।
कटचो क शीस केहरि कराल, फटचो क मानु तरवूज फाल ।। ६९ ।।

(पृष्ठ ९)

युद्ध वर्णन—

चहूवाण डतै झालो अचल, ऊत राव प्रोहित ऊरडै ।
वीर हाक-धमच विषम, झुके वदूका सो कड(ड़ँ) ।।२६३।।

हणण माच हैमराण गणण घोपा रवै हू गर ।
पणण वाजया ज पाषरा धुज पूरताल धरणधर ।
ठणण वदूकां ठोर गोलिया गिणण गिण गनगत,
टणण धनस टकार भणण पर तीर भणकत ।।

सिंधवा राग समागमण गणण भेर अ वक वज्जे ।
चीरवै घाट परचा पडै, विषम थाट भारथ वजे ।। २६४ ।।

(पृ० ३६)

इस रचना का लेखक अज्ञात है। परन्तु यह घटना राणा भीम के समय की है, इसलिए यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इसकी रचना १९ वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे हुई है । उदयपुर को प्रकृति-सुषमा, सहेलियो की वाडी तथा राणा भीम के ठाट-बाट का वर्णन कवि ने विशेष रस लेकर किया है जिससे वह स्वय उदयपुर का निवासी हो तो कोई आश्चर्य की बात नही, परन्तु उसने पुरोहित वगसीराम के ऐश्वर्य, शौर्य आदि का वर्णन भी उतनी ही दिलचस्पी के साथ किया है और युद्ध मे राणा भीम की राजकीय सेना को उससे हारता हुआ वताया है जिससे यह सम्भावना

अधिक वजन रखती है कि वह बगसीराम के साथियो की मण्डली मे से ही उसका आश्रित कोई कवि रहा होगा ।

२ राजा रीसालू री बात

कथा सारांश—

एक समय श्रीपुर नगर मे शालिवाहन राजा राज्य करता था । उसके स्वर्गवास होने पर समस्तकुमार गद्दी पर बैठा । उसके सात रानिया थी, किन्तु पुत्र एक के भी नही था । इस कारण राजा चिन्तित रहता था ।

एक बार वह सूअर की शिकार खेलने के लिए निकला । शिकार का पीछा करते करते रात पड गई । उसने वही जगल मे ही ठहरने का निश्चय किया । वहा से कुछ दूर एक पहाडी पर आग जलती हुई दिखाई दी । राजा ने इसका पता लगाने को कहा, तब अन्य लोगो की तो हिम्मत नही पडी किन्तु एक गडरिये ने हिम्मत की और वह पता लगा कर आया कि वहा कोई सन्यासी तपस्या कर रहा है । जब राजा स्वय वहा पहुचा तो उसने देखा कि गुरु गोरखनाथ आखें बद किये समाधि मे लीन हैं । राजा बहुत देर तक एक पैर पर हाथ जोड कर खडा रहा, गुरु गोरखनाथ की कृपा हुई । वर मांगने को कहा । राजा ने पुत्र मागा । गोरखनाथ ने अपनी गुलाब की छडी उसे दी और उसे फेंक कर आम प्राप्त करने को कहा तथा वह आम किसी रानी को खिला देने से उसके पुत्र पैदा होगा, जिसका नाम रिसालू रखा जाये ऐसा आदेश देकर राजा को विदा किया ।

राजा ने ऐसा ही किया । कुवर तो उत्पन्न हो गया परन्तु ज्योतिषियो ने एक आशका खडी करदी । उन्होने अपनी विद्या के आधार पर पुत्र का जन्म माता-पिता के लिए घातक बताया जिसके निदान-स्वरूप बारह वर्ष तक पुत्र का मुह वे न देखें, इस प्रकार की व्यवस्था की गई । राजकुमार अलग से धाय मा के द्वारा पाला पोसा जाने लगा ।

समय बीतता गया । जब वह ग्यारह वर्ष का हुवा तो आनदपुर के राजा मान और उज्जैनी के राजा भोज की ओर से कुवर के शादी के नारियल आये । कुवर अभी एक साल तक बाहर नही निकल सकता था और नारियल वापिस करना उनकी प्रतिष्ठा के प्रतिकूल था । इसलिये कुवर का खाडा मगा कर नारियल स्वीकार किये गये और राजकुमारियो का विवाह खाडे के साथ कर दिया गया ।

राजकुमार ने जब धाय मा की लडकी से बाहर निकलने के प्रतिबंध की जानकारी चाही तो उसने सच्ची-सच्ची बात कह दी । वह बडा दु खित व कुपित हुआ तथा राजा की अनुपस्थिति मे दरीखाने मे आ बैठा । ज्योतिषी महाराज से उसकी झडप होना स्वाभाविक ही था । राजा को पता लगते ही राजकुमार को देश निकाला मिल गया । वह काले घोडे पर सवार होकर वहा से विदा हुआ ।

अनेक प्रकार की बाधाओ को झेलता हुआ वह एक नदी किनारे पहुचा तो उसने अनेको मुड पडे हुये देखे । उन्हें हँसता देख कर वह और भी चकित हो गया । जब उसने इसका भेद जानना चाहा तो उसे पता लगा कि यहा के अगरजीत नामक राजा की राजकुमारी को प्राप्त करने के लोभ मे इनकी यह गति हुई है । वह स्वय अगरजीत के महल तक जा पहुचा और बाजी खेलने का प्रस्ताव रखा । चौपड बिछाई गई । पहले तो राजकुमार हारता गया, उसने अपनी सारी वस्तुयें खो दी । आखरी दाव सिर को बाजी पर लगा देने का था । दोनो मे निश्चित लिखा पढी हुई । कुवर ने इस बार अपनी लघु लाघवी विद्या के सहारे गोरखनाथजी के पासे वहा प्रस्तुत कर दिये । कुंवर जीत गया । राजा सिर देने के पहिले बडा दु खित होकर रानियो से मिलने गया तो राणियो ने राजा को बचाने को युक्ति से राजकुमारी का विवाह रिसालू के साथ कर देने का प्रस्ताव रखा । रिसालू ने उदारतापूर्वक प्रस्ताव को स्वीकार किया; किन्तु जिस लडकी की मनोकामना के फलस्वरूप अनेक राजकुमारो के मुंड धराशायी हो गये थे, उसे पापिनी समझ कर उसके साथ विवाह करने से इन्कार कर दिया । दूसरी लडकी केवल दस माह की थी परन्तु रिसालू उसके साथ विवाह करने को राजी हो गया । विवाह के पश्चात् लडकी को अपने साथ ले वहा से विदा हुआ । लघु लाघवी कला से उसने एक हिरण और सुग्गा-सुग्गी के जोडे को अपनी परिचर्या के लिये पकड लिया ।

वहा से ज्यो ही एक नगर मे पहुचा तो पता लगा कि नगर उजाड पडा है । किसी राक्षस के आतक से वह नगर खाली हो गया था । रिसालू ने उसे पुन आबाद करने की दृष्टि से उस राक्षस का वध करने को ठानी । गोरखनाथजी से प्राप्त तलवार से उसने राक्षस को खत्म कर दिया । वहा से भागे हुये लोग पुनः आकर बस गये । नगर पुनः आबाद हो गया । समय बीतते-बीतते राजकुमारी ग्यारह वर्ष की हुई ।

रिसालू का हिरण बाग मे चरने का बडा शौकीन था । जलाल पाटण के बादशाह हठमल का बाग पास ही पडता था । वहा वह प्रायः रात को पहुच

जाता था। जब हठमल को उसका पता लगा तो वह स्वय एक रात उसकी शिकार करने के लिये वहा आया। हठमल उसका पीछा करता-करता रिसालू के महल के पास वाले बगीचे तक आ पहुचा। रात अधिक हो जाने के कारण वह वही सो रहा। उधर जब बहुत देर तक हिरण वापिस नही आया तो रिसालू स्वय उसकी खोज मे बाहर निकल पडा। रानी ने प्रभात मे जब महल से बाहर झाका तो बडे निश्चित ढग से हठमल अपने दाढी के बाल सवारता हुआ, अलसायी हुई आँखो से झरोके की तरफ देख रहा था। राणी ने भी निश्चिन्तता, साहस और मदभरी आखे देखी तो वह उस पर आसक्त हो गई। रिसालू तो बाहर गया हुआ था ही, रानी के सकेत पर हठमल महलो मे पहुच गया और दोनों प्रेम-क्रीडा करने लगे. सुग्गा-सुग्गी को यह असह्य हुआ तो उन्होने उसे टोक कर अपना कर्तव्य पूरा करना चाहा। परन्तु उनकी इस गुस्ताखी की सजा रानी ने सुग्गी के पर नोच कर उसी समय दे दी। सुग्गा फौरन उड कर सभी बातो की खबर राजा को दे आया। राजा पहुचा तब तक हठमल वहा से रवाना हो चुका था। राजा ने रानी के सब रग ढग देखे तो उसे सशय हुए बिना न रहा। दूसरे दिन राजा सुग्गे को साथ ले घूमने निकला। कुछ दूर जाने पर सुग्गा उड कर पुन महल पर आया। उस समय हठमल रानी के साथ प्रेम-क्रीडा कर रहा था। सुग्गे ने फौरन इसकी सूचना राजा को दे दी और फिर महल पर आकर व्यगात्मक ढग से उन्हें कुकर्म करने की सजा मिलने का सकेत किया। हठमल ने आने वाले खतरे को भाप लिया और काम मे उन्मत्त रानी से बडी कठिनाई के साथ विदा लेकर घोडे पर वहा से निकला। रास्ते मे ही हठमल और राजा मे मुठभेड हो गई। हठमल राजा के भाले से मारा गया। रानी से दुश्चरित्र का बदला लेने के लिये वह हठमल का कलेजा उसके पास ले गया और उसे शिकार का मास बता कर, पका कर खाने को कहा। रानी ने ऐसा ही किया।

रानी राजा की नजरो से गिर ही चुकी थी। सयोग से एक योगी अपनी स्त्री को खो चुकने के बाद दूसरी स्त्री की मनोकामना लेकर राजा के पास उपस्थित हुआ। राजा ने अपनी रानी उसे देदी। योगी के साथ रानी रवाना तो हो गई परन्तु उसके मन मे अनेक प्रकार के सकल्प-विकल्प उठ रहे थे। आगे जाकर उसने देखा तो हठमल रास्ते मे मरा पडा था। उसे कौए नोच रहे थे। मन ही मन रानी अपने प्रेमी की यह दशा देख कर विलाप करने लगी। जोगी को कह कर उसे जलाने के लिए चिता बनवाई, और जोगी को पानी लाने के बहाने तालाब पर भेज कर पीछे से हठमल की देह के साथ जल मरी।

अब राजा ने उस नगर मे रहना उचित न समझ कर वहा से राजा मान की नगरी आणंदपुर को कूच किया। वहा जाकर तालाब पर स्नानादि करने लगा। अनेक सहेलियो के साथ राजकुमारी भी वहा पानी भरने आई थी। उसने इस सुन्दर युवक की ओर कटाक्ष किया, तथा दोनो मे साकेतिक ढग से एक दूसरे के प्रति अनुराग व्यक्त हुआ। रिसालू वहा से सीधा मालिन के घर पहुचा जिसने जँवाई के आने की खबर राजा के दरबार मे पहुचाई। राज-लोक मे बड़ी खुशिया मनाई जाने लगी। रिसालू का स्वागत किया गया। वह राजमहलो मे ठहरा। रात पड़ने पर राजकुमारी सोलह शृंगार कर अपने पति से मिलने आई तो महल का दरवाजा बद था। उसने दरवाजा खटखटाया। अनेक प्रकार के प्रेम-भरे उलाहने कोमल शब्दो मे देने लगी, पर दरवाजा न खुला। इतने मे वर्षा प्रारभ हो गई। राजकुमारी ने दरवाजा खुलवाने का यह कह कर प्रयत्न किया कि मेरा शृंगार भीग रहा है, अब तो यह मजाक छोडो। दरवाजा फिर भी न खुला, तब उसने अपनी दासी से कहा—इसे तो थकावट के कारण नीद आगई है। मैं अपने प्रेमी का वायदा तो निभा आऊ। रिसालू तो नीद का बहाना करके सोया हुआ था। उसने सभी बातें सुनली। राजकुमारी जब महलो से नीचे उतरी तो वह उसके पीछे हो लिया। राजकुमारी सीधी प्राणनाथ सुनार के यहाँ गई। बरसती हुई रात मे दरवाजा खुलवा कर अदर गई तो प्राणनाथ ने उसे देर से आने पर बुरी तरह डाटा। राजकुमारी ने बडी विनम्रता के साथ माफी मांगते हुए अपने दुष्ट पति के आ जाने की बात कही। तब तो सुनार और भी बिगड़ा और कहने लगा—तब तो तू इसी तरह टालमटोल करती रहेगी। तब राजकुमारी ने उसी विनम्र भाव से उसे आश्वासन दिया कि चाहे जितनी देर हो जाय किन्तु मैं आपकी हाजरी अवश्य बजाऊगी। रिसालू यह सब कुछ दर-वाजे के पास बैठा हुआ चुपके से देख रहा था। उसने उनके सभोग की उन्मुक्त क्रीड़ायें भी देखी। प्रभात हो गया। राजा राणी से पहले अपने महल मे आकर सो गया। कोई पहचान न ले, इसलिए राणी भी पुरुष का वेश धारण कर महलो मे पहुंची। राजा को जगाया तो वह बनावटी निद्रा से आलस मरोडता हुआ उठा। राणी ने रात को दरवाजा न खोलने के लिए बड़े मान और प्रेम भरे वाक्य राजा को सुनाये।

कुछ समय पश्चात् राजा ने कहा कि उसे कुछ सोने का काम करवाना है अत सुनार को बुलवाया गया। राणी भी वही उपस्थित थी। राजा ने सुनार से बातचीत प्रारभ की। उसने देखा कि सुनार और राणी की प्रेमभरी नजरे बार-बार आपस मे टकरा रही हैं। उसने उपयुक्त अवसर देख कर पानी की

झारी मंगवाई और अजली मे सकल्प लेकर 'श्रीकृष्णारपुन्य छै' कहकर रानी का हाथ सुनार के हाथ मे दे दिया। राज-परिवार ने रिसालू को बडा उलहना दिया, परन्तु उसने यह कह कर वहा से विदा ली कि मैंने तुम्हारी लडकी को उसी प्रकार तज दिया है जिस प्रकार साप केचुली को छोडता है।

रिसालू को अब केवल भोज की लडकी से मिलना था। वह सीधा उज्जैन पहुचा। उसके सकेत के अनुसार जब बगीचे मे आम का झूमका गिर पड़ा, तो भोज की लडकी ने समझा कि रिसालू आ जाना चाहिए था परन्तु निश्चित अवधि तक वह नही आया। इसलिए अब प्राण त्याग देना ही उचित होगा। नदी के किनारे उसके लिए चिता वन चुकी थी। रिसालू आकर वही वाग मे ठहरा। लडकी जलने के लिए चिता के पास पहुची तब रिसालू ने वहा पहुच कर अपने आने की सूचना दी। लडकी को जलने से रोक दिया गया और यह निश्चय होने पर कि लड़की का पति रिसालू यही है, दोनो सुख के साथ राज-महलो मे आनद भोगने लगे। रिसालू को विश्वास हो गया कि ससार मे पतिव्रता और सती नारिया भी हैं।

वहा से फिर अपनी रानी सहित अपने माता-पिता से मिलने चला। महादेवजी की कृपा से उसका फौज-बल भी बढ गया था। शहर के बाहर तालाब पर उसने फौज सहित पडाव डाला। राजा समस्तजीत किसी प्रबल शत्रु को आया जान, पहले तो भयभीत हुआ, परन्तु जब पता चला कि बारह वर्ष का वनवास भोगने के बाद यह उसका पुत्र ही आया है तो उसके हर्ष का ठिकाना न रहा। पूरे शहर में खुशिया मनाई गई और रिसालू को बड़े स्वागत के साथ राजमहलो मे लाया गया।

कथा-वैशिष्ट्य

कथाकार का उद्देश्य—

राजस्थानी कथा साहित्य मे राजा भोज, विक्रमादित्य, रिसालू आदि प्रसिद्ध व्यक्तियो को लेकर अनेक प्रकार की कथाये वनी हैं। उनमे त्रिया-चरित्र को प्रगट करने वाली कथाओ का अपना महत्व हैं। इस प्रकार की घटनाये वास्तव मे इन महापुरुषो के जीवन मे घटी या नही, यह कहना बडा कठिन है। परन्तु यह स्वीकार किया जा सकता है कि इन विभूतियो का व्यक्तित्व इतना महान् था कि जिसे महत्तर वनाने के लिए ये मानव की अनेकानेक प्रवृत्तियो को जानने के जिज्ञासु निरन्तर बने रहे और अपने ज्ञान की पिपासा को शान्त करने के लिए अनेक प्रकार की कठिनाइया भी इन्होने झेली।

सौन्दर्य से ओतप्रोत सुकुमार नारी मनुष्य की काम-पिपासा को शान्त करने का साधन सृष्टि के प्रारभ से ही रही है। इसलिए उसके सौन्दर्य और व्यक्तिगत विशिष्ट गुणो की असख्य कल्पनाये अलग-अलग युगो मे होती रही हैं। एक ओर मनुष्य नारी की सम्मोहन-शक्ति से जहां अभिभूत होता रहा है वहा वह उस पर पूर्ण अधिकार रखने के लिए ही सचेष्ट रहता आया है। अपना पूर्ण अधिकार खो देने की कल्पना उसे भयभीत भी करती रही है जिसके कारण वह अपनी अत्यन्त प्रिय वस्तु को सशय की दृष्टि से भी देखता आया है। दूसरी ओर, नारी अपना सब कुछ पुरुष को अर्पण कर सन्तोष और सुख का अनुभव करती रही है, वहा वह मनुष्य के कृत्रिम अधिकारो से बुने हुए सामाजिक नियमो के जाल मे दम घुट जाने के कारण मनोवैज्ञानिक विवशताओ की विशेष परिस्थितियो मे उस जाल को तोड़ कर सब के सम्मुख आ खड़ी हुई है।

इस प्रकार की कथाओ के नारी-चरित्रो को देखने से नारी और पुरुष के अधिकारों की असमानता तथा दाम्पत्य जीवन की विशृखलता का अनुमान लगाने के साथ-साथ उस काल के मानव का नारी के प्रति दृष्टिकोण भी किसी अश तक समझ मे आता है।

राजा रिसालू जब अगरजी की नगरी के पास पहुचा तो उसे पता लगा कि एक सुन्दर राजकुमारी को पाने के लिये कितने ही लोग अपनी जान गँवा बैठे हैं, फिर भला वह क्यो पीछे रहता यद्यपि कुछ ही समय पहले उसकी शादी राजा भोज और राजा मान की लडकी से हो चुकी थी। चौपड के खेल मे अगरजी से जीत जाने पर अगरजी का शिर न कटवाने के बनिस्पत उसकी बड़ी लड़की के साथ शादी करने का प्रस्ताव उसके सामने रखा गया परन्तु अनेक मनुष्यो का वध उसके कारण हुआ था, इसलिये उसने यह रिश्ता अस्वीकार कर दिया। वस्तुस्थिति तो यह थी कि लोगो के प्राण लेने का खेल उसका पिता खेलता था, लड़की का भला इसमे क्या दोष? एक ओर पिता के कुकृत्यो के कारण उसे पापिनी घोषित होना पड़ा और दूसरी ओर उसका भविष्य भी अनिश्चित हो गया। मनुष्य का नारी के प्रति मोह बडा अजीब होता है। रिसालू ने राजा की दस माह की कन्या के साथ शादी करली और उसे लेकर वहा से रवाना भी हो गया। अनेक प्रकार की कठिनाइयो को झेलने के बाद लड़की ग्यारह साल की हुई और उसका प्रेम-सम्बन्ध अचानक ही हठमल के साथ हो गया। रिसालू का उसके प्रति कुपित होना स्वाभाविक ही था, क्योकि वह उसको परिणीता थी। परन्तु मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यदि देखा जाय तो जो

लडकी एक पुरुष द्वारा शिशु-अवस्था से ही पाल पोष कर बडी की गई हो, उसके प्रति पिता का सा आदर और अनुराग की भावना का होना स्वाभाविक ही है। उसे अपना प्रेमी बना लेने की कल्पना बहुत कठिन है। ऐसी स्थिति मे प्रेमातुर पिपासा के वशीभूत वह अपना नवविकसित यौवन हठमल को अर्पित कर देती है। उसका प्रेम वास्तव मे सच्चा है, इसीलिये वह योगी के साथ न जाकर हठमल की चिता मे जल मरती है।

राजा मान की लडकी के साथ रिसालू की शादी कोई ११-१२ वर्ष पहिले हो चुकी थी। क्योकि रिसालू को देश निकाला मिल चुका था और उसका निश्चित पता भी मालूम नही था, ऐसी अवस्था मे सुनार के लडके से उसका प्रेम हो गया। सुनार जैसे साधारण व्यक्ति से एक राजकुमारी का प्रेम होना चौका देने वाली वात अवश्य है, किन्तु इसके पीछे सपर्क की सुविधा विशेष कारण प्रतीत होती है क्योकि सुनार लोग प्राय रनिवास मे गहने आदि बनाने के सबध मे बातचीत करने पहुच जाया करते होगे। रिसालू को जब उनके प्रेम-सबध का पता लग गया तो उसने सुनार को ही राजकुमारी देदी और वह उसे अपने घर ले गया। इससे एक ओर जहा रिसालू की उदारता प्रकट होती है वहा राजा मान की घरेलू व्यवस्था का भी पता चलता है। राजकुमारी के चरित्र के बारे मे घर वालो को सब कुछ मालूम हो जाने पर भी वे राजकुमारी को उसी समय किसी प्रकार का उलाहना या दण्ड नही देते अपितु रिसालू से ही प्रार्थना करते हैं कि वे इतनी सुन्दर राजकुमारी का परित्याग इस प्रकार की घटना के कारण न करे और सारी वात को वही पर दबा कर उनके घर की प्रतिष्ठा को बचाने मे सहयोग दें। रिसालू का कोई भी वात नही मानना स्वाभाविक है क्योकि कोई भी व्यक्ति, दुश्चरित्र नारी को जान-बूझ कर पत्नी के रूप मे स्वीकार करना नही चाहता।

राजा रिसालू के जीवन मे इस प्रकार की घटनाओ के घटने से नारी-जाति के प्रति उसका विश्वास उठ-सा गया था। फिर भी वह अपनी एक और विवाहिता रानी राजा भोज की राजकुमारी को भी परख लेना चाहता था। निश्चित अवधि समाप्त हो जाने पर वह अपने वायदे के अनुसार उज्जैनी नगरी पहुच गया। न मालूम इस बीच मे कितनी उलटी-सीधी कल्पनायें राजा भोज की लडकी के सबध मे की होगी। परन्तु ज्यो ही वह वहा पहुचा, उसने देखा कि अवधि के समाप्त हो जाने के कारण राजकुमारी चिता मे जल कर भस्म हो जाने को तैयार है। तव उसे विश्वास हुआ कि सभी स्त्रिया एक सी नही होती।

स्त्री या पुरुष का चरित्र सस्कारो से ही बनता और बिगड़ता है। वात की ऊपरी घटनाओ को देखने से तो नारी-जाति के प्रति अविश्वास का भाव जगता है परन्तु उनकी गहराई मे जाकर विचार करने से कथाकार का उद्देश्य यही मालूम देता है कि परिस्थितियो की छाप मनुष्य के मनोभाव पर पड़े बिना नही रहती।

सामाजिक परिस्थितियां व मान्यतायें

राजकुमारी का पानी भरने सखियो के साथ तालाब पर जाना, स्वय खाना आदि पकाना, जल-क्रीडा करने सहेलियो के साथ जाना आदि कथा मे वर्णित है। इससे पता चलता है कि आभिजात्य-वर्ग के लोगो का सीधा सम्पर्क जनता से था।

जूआ आदि खेलना और उसमे अपने प्राणो की बाजी लगा देना तथा उसके दुष्परिणामो के कारण दु खद घटनाओ का होना भी महाभारत-काल की तरह उस समय मे भी मौजूद था।

जैसा कि प्रायः राजस्थानी लोक कथाओ में मिलता है। पशु-पक्षियो को इन्सान की तरह पढा लिखा कर चतुर वताया गया है। हरिण व सुग्गे-सुग्गी राजा रिसालू के विश्वासपात्र मित्र की तरह उसका काम करते है और उसकी अनुपस्थिति मे उसके महलो की निगरानी भी रखते है। मौका आने पर स्वामि-भक्त नौकर की तरह प्राणो का मोह छोड कर अपने कर्तव्य को पूरा करते है।

अनेक प्रकार के अवतारो व उनकी सिद्धियो आदि से नायक को अचानक सहायता मिल जाने के कारण कथा मे अप्रत्याशित परिवर्तन आ गये है। गोरख-नाथ की सिद्धि तथा लघु-लाघवी विद्या के बल पर ही रिसालू बड़ी से बड़ी कठिनाइयो मे से पार होता हुआ आगे बढता है और अन्त मे महादेवजी की कृपा से वह बहुत बडी फौज का मालिक भी बन जाता है।

कई घटनाओ को घटित कराने के लिये ज्योतिष का भी सहारा ले लिया गया है।

ये सभी तत्व तत्कालीन समाज की मान्यताओ और रूढियो को हमे अवगत कराते है।

वर्णन एवं शैली

कथा मे स्थान-स्थान पर नारी-सौन्दर्य के अतिरिक्त सुन्दर प्रकृति-वर्णन भी किया गया है। प्रकृति-वर्णन प्राय पारम्पर्य रूप से ही हुआ है। परन्तु उससे वातावरण की सुन्दर सृष्टि अवश्य हो गई है। यहा वर्षा का वर्णन उल्लेखनीय है :—

"इतरा माहे वरषा काळ रो मास छै। श्रावण रो महिनो छै। तठे उतराधरा पमी (गी, गा) री चाली थकी घटा आई छै। मोर, पपीया, कोइला कहुका कीया छै। डँडरिया डरू डरू कर रह्या छै। धरती हरीयो काचू पहरण रो आस धरी छै। (पृ० ११५)

पद्याशो मे भी कुछ पद्यो मे प्रकृति के उद्दीपक रूप की सुन्दर अभिव्यजना क गई है —

"वरपा रित पावस करे नदीया प (प) लके नीर।
तिण विरीया सूकलीणीया, धणीयास्या घरचौ सीर ॥ २२६ ॥
परवाई भीणी फूरे, रीछी परवत जाय।
तिण विरीया सूकलीणीया, रहती पीव-गल लाय ॥ २२७ ॥ (पृ० ११५)

जहा तक शैली आदि का प्रश्न है, इसमे गद्य और पद्य का प्रचुर प्रयोग हुआ है, परन्तु कथा को रोचक बनाने के लिए तथा उसे गति प्रदान करने के लिए सवादात्मक शैली को प्रधानता दी गई है। कुछ एक सवाद तो बडे ही प्रभावोत्पादक बन पडे हैं जिससे लेखक के कलात्मक सृजन का अनुमान लगाया जा सकता है। पद्याशो के अन्त मे 'वे' अक्षर का प्रयोग प्रायः सर्वत्र मिलता है, जो कि शायद इसी कथा के आधार पर प्रचलित खयालो की शैली के प्रभाव के कारण है। जहा तक भाषा का प्रश्न है उस पर पजाबी का प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है।

कथा-भिन्नता

राजस्थानी भाषा मे लिपिबद्ध कथाओ के विभिन्न रूपान्तर भी प्राय मिलते हैं। मूमल, सोरठ, ऊजळी जेठवा आदि कुछ वातें राजस्थानी और गुजराती दोनो में ही प्रचलित रही हैं। राजा रिसालू की बात भी गुजराती भाषा मे भी उपलब्ध होती है जो इस ग्रन्थ के परिशिष्ट १ (क) मे प्रकाशित की गई है। दोनो की कथा-वस्तु मे तथा स्थानो आदि मे भी अन्तर है। उदाहरणार्थ कुछ एक भिन्नतायें इस प्रकार हैं —

राजस्थानी	गुजराती
१ शालिवाहन का पौत्र समस्तकुमार का पुत्र रिसालू।	१ शालिवाहन का पुत्र रिसालू।
२ राजा भोज एव राजा मान की पुत्रियो का नाम नही।	२ राजा भोज की पुत्री का नाम सामलदे और धारा नगरी के मान कछवाहा की पुत्री का नाम धारा।

३ अगरजी की नगरी का नाम नही।	३ अगरजी की नगरी का नाम विराट है।
४ अगरजी की छोटी पुत्री का नाम नही।	४ छोटी पुत्री का नाम फूलवती है।
५ राक्षस द्वारा उजाड़े गये नगर का नाम द्वारका।	५ सीघडी गांव।
६ जलाल पाटन का बादशाह हठमल।	६ हठीयो बणझारो, जाति का राजपूत, गढ गांगल का चहुवाण राजपूत, सोरठ मे नवलरक गांव बसा कर रहा।
७ योगी की पत्नी का किसी ने हरण कर लिया।	७ योगी के साथ सुन्दरी के त्रिया-चरित्र का ऐन्द्रजालिक वर्णन।
८ फूलवती का हठमल के साथ सती होना।	८ फूलवती का झरोखे से कूद कर आत्महत्या करना।
९ प्राणनाथ सुनार।	९ कुमतीओ सुनार।

परिशिष्ट १ (ख) मे प्रकाशित रिसालू के दोहो मे भी कुछ भिन्नता है।

कथा का मूल लेखक कौन रहा होगा ? इसका पता बात से नही लगता परन्तु कथा के अन्त मे आए हुए एक पद्यांश मे नर्वद नामक चारण का उल्लेख अवश्य आया है जिसने कि प्रचलित बात मे दोहे आदि जोड़ कर उसे वर्तमान रूप दिया है।

बात नागजी नागवन्ती री

कथा-साराश—

कच्छ के स्वामी जाखडे अहीर के राज्य मे दो तीन वर्ष तक निरन्तर अकाल पड़ा। जब कोई व्यवस्था वहा न बैठ सकी, तब वे वागड प्रदेश के राजा धोलवाडा के वहा पहुचे। दोनो मे अच्छी मेल-मुलाकात हो गई तथा वे दोनो पगड़ी-बदल भाई हो गये। धोलवाडा के नागजी नाम का पुत्र था। नौकर-चाकर जब चारो ओर काम मे लग जाते तब वह स्वय एक खेत की रखवाली किया करता था। उसकी भावज परमलदे उसका खाना खेत मे ही दे आया करती थी। एक बार वह जाखड़े अहीर की लडकी नागवती को भी साथ ले गई। रास्ते मे परमलदे ने नागवती से जिद्द किया कि नागजी जब स्नान करके प्रभात मे सूर्य को जल चढाते हैं तो उनके पैरो के चिन्ह कुंकुम से अकित हो जाते है। नागवती ने इस पर बडा आश्चर्य व्यक्त किया और कहा कि यदि ऐसी बात है तो मैं नागजी से शादी कर लूगी। बात सही निकली।

नागजी भी नागवती के सौन्दर्य को देख कर मुग्ध हो गये। उनके विवाह मे एक अडचन यह थी कि दोनो के पिता आपस मे पगडी-बदल भाई बने हुये थे। इसलिये बिना किसी को मालूम हुये उन्होने खेत मे ही विवाह कर लिया। अब वे खेत मे ही आनद से रहने लगे। परन्तु जब खेत काट लिया गया तो सभी को अपने-अपने घर वापिस जाना पडा। नागजी आम के वृक्ष के नीचे घोडे पर सवार होकर विदा होने के लिए तैयार हुए तब नागवती ने आम को साक्षी बना कर अपना प्रेम व्यक्त किया तथा प्रेम का निर्वाह करने की दोनो ने अपने हृदय मे दृढ प्रतिज्ञा की।

नागजो को चेष्टाओ को देखकर उसके पिता को सदेह हो गया। अत. वह नागजी को घर से निकलने की इजाजत तक नही देता था। विरह की व्याकुलता मे नागजो क्षीणकाय होकर बीमार रहने लगे। वैद्य बुलाये गये, परन्तु बीमारी का कुछ भी पता नही लगा। नागजी ने एक दोहे मे अपने हृदय की बात कहते हुए कीमती मूदडी उस वैद्य को दी। तब वैद्य को बात समझ में आई। उधर से नागवती ने भी अपना कीमती हार उसी वैद्य को दिया। वैद्य ने नागजी की चारपाई वहा से हटवा कर अलग कमरे मे लगवा दी जिससे नागवती मौका निकाल कर नागजी से मिल सके।

होली के दिन नागवती गैहर देखने के बहाने से गढ मे नागजी से मिलने आई, परन्तु नागजी कही दिखाई न दिये। तब एक दासी की सहायता से वह

नागजी के पास महल मे पहुची । संयोग से इन दोनो को पलग पर सोता हुआ नागजो के पिता ने देख लिया । क्रुद्ध होकर ज्योही उसने अपनी तलवार निकाली, नागवनी का पिता जाखडा अहीर भी आ पहुचा और उसने उसका हाथ पकड लिया ।

दूसरे दिन नागजी को देश-निकाला दे दिया । नागवती की सगाई हाकड़े परिहार से की हुई थी, अत. उसे फौरन आकर नागवती से शादी कर लेने की सूचना दी । रवाना होते समय नागजी अपनी भावज से मिले । तव भावज ने उमसे कहा कि तीन दिन तक वह बाहर वाले बगीचे मे ही ठहरे । उसने दोनो का मिलान कराने का वायदा भी किया । हाकडा सूचना मिलते ही फौरन आ पहुचा । दोनो तरफ विवाह की तैयारियां होने लगी । नागवतो ने जव परमलदे को मिलने के लिए बुलाया तो वह अपने साथ स्त्री के वेश मे नागजो को भी ले आई, यद्यपि सभो लोग चौकस थे कि कही वेश वदल कर नागजी यहा न आ जाय ।

नागजी किसी तरह से नागवती के पास पहुंच गये । नागवंती ने भी इन्हे पहिचान लिया और हथलेवे के बाद रात को वाग मे आकर मिलने का वायदा किया । नागजी अपने स्थान पर लौट गए और रात पडने पर वगीचे मे नाग-वती का इतजार करने लगे । हथलेवे के वाद नागवती सिर मे दर्द होने का वहाना वना कर एकान्त मे चली गई और वहा से चुपचाप वगीचे की ओर निकल पडी । नागजी काफी देर तक वडी उत्सुकता से नागवती का इन्तजार करते रहे, परन्तु जव नागवती नही पहुची तो विरह के दारुण दुख ने उन्हे कटारी खाकर चिर निन्द्रा में मो जाने को मजबूर कर दिया । अनेक विघ्न और वाधाओ को पार करतो हुई, वर्षा मे भीगती हुई नागवती जव नियत स्थान पर पहुची तो नागजी अपना दुपट्टा ओढ कर सोये हुए थे । पहले तो नागवती ने समझा कि ये रूठ कर सो गये हैं, परन्तु उसने जव नागजी को मरा हुआ पाया तो वह अत्यन्त दुखित होकर विलाप करने लगी । इतने में नागजी का पिता वहा आ पहुचा और यह सारा दृश्य देख कर जाखड़ा अहीर को भी वुलाया । बड़े ही मार्मिक और करुणाजनक परिस्थितियो मे लोकलज्जा-वश नागवती को घर लाया गया ।

प्रभात होने पर वरात रवाना हुई और ज्योही तालाव के पास पहुची तो नागजी को चिता जल रही थी । नागवती ने जब उस दृश्य को देखा तो उसका हृदय उसके वश में न रहा और वह अपने हाथ में नारियल लेकर सती होने के

लिए रथ से उतर पडी। देखते-देखते नागजी और नागवती का अग्निदेव की गोद मे चिर मिलन हो गया।

सच्चे प्रेमियो का यह करुणापूर्ण जीवन-उत्सर्ग देख कर महादेव व पार्वती तुष्टमान हुए और उन्होने उन दोनो को पुनर्जीवित कर दिया। अब दोनो आनद और उल्लास के साथ जीवन-सुख भोगने लगे।

कथा-वैशिष्ट्य

राजस्थानी प्रेम-गाथाओ मे नागजी और नागवती की प्रेम-गाथा का विशिष्ट स्थान है क्योकि इनकी प्रेम-कहानी इस प्रकार की घटनाओ के साथ गुंफित है जिसमे कि प्रेम, करुणा, सामाजिक व्यवधान और इन्सान की मजबूरी का अद्भुत सम्मिश्रण हमे देखने को मिलता है। नागजी के साथ नागवती का प्रेम, नागजी के विशिष्ट गुण के कारण परमलदे के माध्यम से होता है और नागवती अपने नैसर्गिक सौन्दर्य के कारण नागजी को पूर्ण रूप से अपने मे आसक्त कर लेती है। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि सामाजिक रीति-रिवाजो और बधनो से एकाएक ऊपर उठना उनके वश की बात नही है। इसलिए वे अपना विवाह भी चुपके से खेत मे ही कर लेते हैं। विवाह के पश्चात् वे एकान्त मे ही आनद का उपभोग करते हैं और सशय हो जाने पर समाज का मुकाबला न कर चुप्पी साध लेते हैं। दोनो पात्रो में इतना घनिष्ठ प्रेम होने के बावजूद भी उनका इस प्रकार का व्यवहार उनके हृदय की कमजोरी को ही व्यक्त करता है। लडकी और लडके के पिता दोनो ही अपनी सन्तान को प्रिय समझते हैं परन्तु यह जानते हुए भी कि नागजी और नागवती मे बहुत गहरा प्रेम है, वे समाज के भय से विचलित होकर उन्हें सहायता पहुचाने के बजाय व्यवधान ही बनते हैं। अन्त मे नागजी की मृत्यु के पश्चात् नागवती हाकडे परिहार के साथ विदा होती है तो नागजी का पिता उस पर व्यग करके नारी की दुर्बलता पर पुरुष के क्रूर पौरुष का आघात करता हुआ पुत्र-हानि से होने वाले विह्वल हृदय को आत्म-तोष प्रदान करना चाहता है। यह विडम्बना तत्कालीन समाज मे नारी और पुरुष के सम्बन्धो को व्यक्त करती है। व्यग्यात्मक दोहा इस प्रकार है —

> ऊडै पडवै पैस, पिवसु पैजा मारती।
> सु माणसीया एह, बू घै लागा घोलउत ॥ ७४ ॥ पृ० १६२

इसमे कोई सदेह नही कि सभी पात्र समाज के बधन से ऊपर उठने मे असमर्थ रहे हैं। परन्तु अन्त मे नागवती ने नागजी के साथ सती होकर अपने हृदय की कमजोरी पर ही विजय नही पाई, वरन् नागजी तक के प्रेम को उसने

चुनौती दे दी । इसी प्रकार नारी का सच्चा प्रेम पुरुष के प्रति कथा मे प्रकट किया गया है ।

कथा के अन्तिम भाग मे करुणा और प्रेम का बडा ही अद्भुत मिश्रण हुआ है और वह भी नागवती का विवाह अन्य पुरुष के साथ होने की पृष्ठभूमि मे । यद्यपि नायक और नायिका का प्रेम बडी ही भावुकतापूर्ण शैली मे व्यक्त किया गया है तथापि यह प्रेम करुणा की रागिनी से ओतप्रोत है । अत: विवाह अथवा अन्य किसी शुभ कार्य के अवसर पर इस गीत का गाना अशुभ माना जाता है । नागजी, भर्तृहरि आदि के गीत और दोहे सुन कर लोगो के हृदय मे अन्तत एक प्रकार के वैराग्य की भावना उत्पन्न हो जाती है ।

कथा मे जहा तक उस काल की सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियो का प्रश्न है, ऐसा प्रतीत होता है कि दुष्काल पड़ने पर शासक-वर्ग प्रजा को सहायता पहुचाना अपना फर्ज समझता था । इतना ही नही अपितु प्रजा की भलाई के लिये वे स्वय उसके साथ दूसरे देश मे जाकर वहा के शासक से जान-पहिचान करते और अपनी प्रजा के लिये समुचित व्यवस्था करवाते थे । प्रजा और राजा का यह घनिष्ठ सबध यहा तक ही सीमित नही था, चोर लुटेरो को दलित करने के लिये उनके पुत्र स्वय जोखिम उठा कर उनका पीछा किया करते थे । धोलवाडा के राज्य का आतक उसके पुत्र स्वय नागजी ने समाप्त किया था । नागजी का स्वय खेत मे जाकर पहरा देना और उनकी भावज परमलदे का उनके लिये खाना लेकर जाना आदि इस बात को प्रमाणित करता है कि उस काल का शासक-वर्ग कितना कर्मठ और समाज के साथ घुला-मिला था ।

भाषा-शैली

कथा की भाषा का जहा तक प्रश्न है वह प्रसाद-गुणयुक्त और सरल है तथा बोलचाल की भाषा के अधिक समीप होते हुये भी उसमे साहित्यिक सौन्दर्य का अच्छा निर्वाह हुआ है । ठेट राजस्थानी के शब्दो के प्रयोग से सामाजिक वातावरण बनाने मे कथाकार को अच्छी सफलता मिली है । काव्य-सौंदर्य की दृष्टि से कुछ दोहे राजस्थानी साहित्य की अमूल्य निधि कहे जा सकते हैं क्योकि उनमें भाव-गरिमा के साथ-साथ हृदय की तडफन और व्यग्यात्मकता का सुन्दर सम्मिश्रण हुआ है । उदाहरणार्थ कुछ दोहे इस प्रकार हैं—

सज्जन दुरजन हुय जले, सयणा सीख करेह ।
घण विलपती यू कहै, आवा साख भरेह ॥ १६ ॥
नागजी नगर गयांह, मन-मेलू मिळीया नही ।
मिळीया अवर घणाह, ज्यासु मन मिळीया नही ॥ १७ ॥ पृ० १५१

सामा मिळीया सैण, सेरी मे सामा भला ।
उवे सुमीणा वैण, नहचै निरवाया नही ।। ३० ।। पृ० १५४

नागडा निरखू देस, एरड थाणौ थपीयौ ।
हसा गया विदेस, बुगला ही सू बोलणौ ।। ३७ ।। पृ०

भामण भूल न बोल, भवरो केतकीया रमैं ।
जाण मजीठां चोळ, रग न छोडे राजीयो ।। ३८ ।।

वण्यो त्रिया को वेस, आवत दीठो कुवरजी ।
जातो दुनीया देख, नाटक कर गयो नागजी ।। ४० ।। पृ० १५७

नागडा सूतो खूटी ताण, वतळाया बोलै नही ।
कदेक पडसी काम, नोहरा करस्यो नागजी ।। ५८ ।। पृ० १६०

कळ मैं को कुमार, माटी रो मेळो करै ।
चाक चढावणहार, कोई नवो निपावै नागजी ।। ७७ ।। पृ० १६२

वात मयाराम दरजी री

कथा-साराश—

आबू पर्वत पर गुरु और चेला तपस्या करते थे । गुरु का नाम गगेव ऋष और चेले का नाम चतुर रिष । तपस्या करते-करते उन्हें तीन युग व्यतीत हो गये । ऐसे तपस्वियो की सेवा-शुश्रूषा करने और ज्ञान-चर्चा सुनने इन्द्राणी स्वयं आठ अप्सराओ सहित प्रस्तुत हुआ करती थी और कलियुग मे गुरु-चेले की मसा वहा रह कर तपस्या करने की नही थी । अत उन्होने वहा से विदा लेने के पहले इन्द्राणी और अप्सराओ से वर मागने को कहा, क्योकि उनकी सेवा से वे अत्यधिक प्रसन्न थे । इन्द्राणी ऐसे पहुचे हुए ऋषि का पीछा छोडने वाली कब थी । उसने यही वर मागा कि नरपुर मे जन्म लेकर आप मुझसे विवाह करें और हम दोनो आनद का उपभोग करें । वचनो मे आबद्ध ऋपि को भाड्यावास ग्राम मे दुलहे दरजी के घर मयाराम के रूप मे जन्म लेना पडा और अलबल(र) नगर में शिवलाल कायस्थ के घर इन्द्राणी ने जसा के रूप में अवतार लिया । आठो अप्सरायें जसा के पास दासियो के रूप मे पहुच गईं ।

जब जसा पन्द्रह वर्ष की हुई तो रामबगस सुग्गे के रूप मे चेला चतुर ऋष उसके पास पहुच गया । वह वेदो का ज्ञाता तथा आगे-पीछे की जानने वाला था । शिवलाल कायस्थ सुग्गे की प्रतिभा से बहुत अभिभूत था इसलिए उसने जसा के वर ढूढने तथा विवाह करने की जिम्मेवारी भी उसी पर छोड दी और वह

स्वयं परदेश चला गया। अब विलंब किस बात का था। जसा से प्रेम-पत्र लिखवा कर वह फौरन भांडियावास मयाराम के पास पहुचा और मयाराम की स्वीकृति तथा हाथ की मूदड़ी लेकर जसां के पास लौटा।

मयाराम जसा से विवाह करने के लिये वडी सजधज के साथ अलवल (र) नगर पहुचा। बरात मे घोडो और बरातियो की साज-सज्जा देखते ही बनती थी। बधाईदार ने ज्योही जसा को जाकर बधाई दी तो उसे ५०० मोहरे मिली। मालकी दासी को जसा ने बरात के सामने भेजा, तथा साथ ही मयाराम के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए उसे पहिचानने के लक्षण बताये। फिर मालकी मयाराम के पास पहुच कर उसे तोरण पर लाती है। उसके स्वागत मे कोई ५०० वेश्यायें, भगतणें व ढोलनियें गाती हुई उसका स्वागत करती हैं। मयाराम का ठाट-बाट उस समय इन्द्र से कम प्रतीत नही होता है। उसका रूप तो कामदेव को भी मात करता है। सभी सखियो ने मयाराम के सौन्दर्य और साज-सज्जा की मुक्त-कंठ से प्रशसा की। बडे ही ठाट-बाट के साथ विवाह-सस्कार सम्पन्न हुआ। दूसरे दिन जसा जब मयाराम के डेरे की ओर चली तो मदमस्त हाथी की सी चाल और उसके शृगार की अनुपम छवि लोग देखते ही रह गये। आधी रात होने पर दोनो रति-क्रीडा का आनद लेने लगे। बीच-बीच मे दासियां ठिठोली करने लगी।

दूसरे दिन जब मयाराम वहा से प्रस्थान करने का विचार करने लगे तो जसा के लिए मयाराम का विछोह असह्य हो गया। इतने सुन्दर वर को वह आसानी से किस प्रकार जाने देती। उसने अपनी दासियो की सहायता से शराब के प्यालो की मनुहार ही मनुहार मे युवक वर को मदमस्त बना कर उसका जाना स्थगित करवा दिया, फिर भला वर्षा ऋतु मे जाना सभव कैसे हो, क्यो कि सामने ही सावण को तीज भी तो आ रही थी, जिसका ललित चित्र मयाराम के सामने जसा ने प्रस्तुत कर आनन्द का उपभोग और अनुकूल मौसम का लोभ देकर उसे भरमा लिया। शराब की मनुहारें निरतर चलती रही।

प्रेम की इन मदमस्त घडियो मे जब लज्जा और सकोच का निवारण हो गया तो बातो ही बातो मे अपने-अपने देश की बडाई करते समय दूल्हे-दुल्हन मे खटपट हो गई। मयाराम यह कह कर कि ऐसी कई सुंदरिया मुझे उपलब्ध हो सकती हैं, वहा से विदा लेने को तैयार हुआ तब परिस्थिति को बिगडते हुए देख कर मालू दासी ने जसा के राशि-राशि सौन्दर्य का वर्णन कलात्मक ढग से करते हुए 'ऐसी सुन्दरी को त्यागना बुद्धिमानी नही है' कहकर प्रेमी युग्म को

पुन भावात्मक सहजता के सूत्र मे बाधा। जसा ने भी गुस्से ही गुस्से मे कटु वचन कहने के लिए क्षमा मागी ।

कथा-वैशिष्ट्य

युद्धवीरो, दानवीरो और धर्मवीरो को लेकर यहा के कवियों ने पुष्कल परिमाण मे साहित्य-सृजन किया है। इन प्रमुख विषयो के अतिरिक्त कुछ चारण कवियो ने सभ्रान्त परिवार के नायको को छोड कर साधारण व्यक्तियो का नाम अमर करने की मनोकामना से भी साहित्य-निर्माण किया है। ये व्यक्ति किसी न किसी कारण से कवियो के कृपापात्र बन गये थे और उनको सेवाओ का पुरस्कार उन्होने उन्हे सबाधित कर साहित्य रचना के द्वारा किया है । राजिया, किसनिया, ईलिया, चकरिया आदि को सबोधित करके की गई रचनाओ के पीछे इसी प्रकार की कुछ बाते हैं। उन्नीसवी शताब्दी से इस प्रकार की रचनाओ के निर्माण की परम्परा विशेष रूप से राजस्थानी-काव्य मे गतिशील दिखाई देती है ।

मयाराम दरजी की वात भी इसी कोटि की रचना है। ऐसी किंवदन्ती प्रसिद्ध है कि भाडियावास (मारवाड) के प्रसिद्ध कवि मोडजी आसिया जब एक बार लबे अर्से तक बीमार रहे तब उन्ही के गाव के दर्जी मयाराम ने उनकी बडी सेवा की थी। अत कवि ने प्रसन्न होकर इस वात की रचना उसे नायक बना कर की।

जहा तक बात की कथावस्तु का सबध है उसमें दैविक अवतार से कथा प्रारभ होकर नायक-नायिका के उद्दाम यौवन मे झूलती हुई काम-क्रीडा और प्रेमी-युग्म की अनेकानेक चेष्टाओ को व्यक्त करती हुई समाप्त होती है। कथा मे जहा एक ओर अत्युक्तिपूर्ण वर्णनो का आधिक्य है, वहा कामुकता और नग्न शृगार का भी कवि ने बड़ी उदारता के साथ रस लेकर वर्णन किया है ।

राजस्थानी मे प्रेमपाती लिखने की विशेष परम्परा रही है। प्राय प्रेयसी भावुकतापूर्ण अलकृत शैली मे अपने प्रिय को अनेक प्रकार की उपमाओ से विभूषित करती हुई उसे पत्र लिखती है । इस बात में भी रामबगस सुग्गे के साथ जसा अपने प्रिय मयाराम को पत्र लिखती है, जिसमें जसा के प्रेम-प्रदर्शन के साथ-साथ राजस्थानी सस्कृति के भी दर्शन होते हैं ।

'सिध श्री भाडोयावास वाली वाट मुहगी दसै, आतम का आधार मयाराम जी वसै, अलवल (र) थी लषावतुं जसांकी मुझरो अवधारसी । रामबगस राज नषै आयो छै, जीको कुरब वधारसी। अठा लायक काम बिंदगी लषावसी ।

अठी दसाकी आप गाढी षुसीया रखावसी। षान-पानकौ, पिडाकौ जाबतौ रषावसी। जावतो तो वलदेवजी करसी पण तावादार तो लषावसी। भरोसादार भला मनष जीव-जोग साथे लीजो। इद्र राजाकी तरैका वीद राजा (हो) वीजो। आपकी वाट भाळां छा। औ दवस कदीया ऊगै, जसीकौ भाग जागै, अलवल (र) आप आय पूगै।'[1]

मोडजी आसिया वाकीदासजी के वशजो में प्रसिद्ध कवि हो गये हैं जिनकी रचना पावू प्रकाश विख्यात है। उन्होने इस कथा के निर्माण में कुछ स्थलो पर अपनी विद्वत्ता और भाषा की विस्तृत जानकारी का सुन्दर परिचय दिया है। वास्तव मे ये स्थल ही कथा को साहित्यक महत्व प्रदान करते हैं। दो स्थल इस दृष्टि से यहा उल्लेखनीय है :—

घोड़ो का वर्णन—

'पवन का परवाह 'गुलाव की मूठ' सघराजकौ गोटकौ, तारेकी तूट। आतसकौ भभकौ, चक्रीकी चाल, चपलाको चमकौ, चातीका ढाल। सीचाणै की झडप, हीडैकी लूव, षगराजका वच, षेतुमे पूव ऐहड़ा-ऐहडा पांच हजार घोडा सोनैरी साकता सज कीधा।'[2]

जसां का सौन्दर्य-वर्णन —

'जसीया कसोयक छै आपने भी उधारे जसीयक छै। पतीयासीको कमल, गगासी विमळ। भूभलीया नैणाकी, अमरतसा वैणाकी। ममोलौ, वादलाकी, वीज, होलीकी झाळ, सामणकी तीज। केळकौ गरभ, सोनेको षभ, सीळकी सती, रूपकी रभ। ताठौ मरग, मगराकी मोर, पाबासर को हस, मनकी चौर। जीवकी जडी, होयाको हार, अमीकौ ठाहो, रूपको अवतार। काजालीकी साठी, गूजालीको भळको, गैलाको कवाण, हीडाकौ कलकौ। मुगलरौ मीमचौ, वषायतरो झालौ, सघरौ गाटको प्रेमरौ प्यालौ। सोलैमो सोनो, राजहसरो वचौ, बावनौ चदण, रेसमरौ गचौ। करतीयारौ झूबकौ, मोतीयारी लूब, हीरारो लछो, सरगरी झूंब। सनेहरी पालपी, हेतरौ थाणौ, नैणारौ नरषणौ, प्रेमरौ कमठाणौ। सरदरी पूनमरो चद, आसाढरो भाण, जसोयाकी तारीफ, वुधैका वाषाण। मदवीको मछोळौ, हाथको हाल, तीजणीयाकौ तुररौ, रूपकी ससाल। काषको लाडू, मोतीयाको गजरो, जलालीयाको धको, जसीया को मुजरौ। कलपव्रच(छ) री डाळ, पारसरौ टोळ, मेहरो महर, दरीयावरी छौल। तावड़ैरी छांह, अधारैरो

---

[1] पृ० १६६

[2] पृ० १६७

दीयो, सीयाळारो ताप, जका जसा घणा जुग जीवौ । हरषरौ हींडौ, उदेगरी भेट, जीवरो जतन, इन्द्ररी भेट । किस्तूरीरो माफो, केसररी क्यारी, रूपरो रूषडो, रच(स) ना हीनारो । भमरारो भणणाट, डीलारी दोली, दीपमाळारा दीर, भाषररी होळी । गुलाल सही गढौ, आषारी पाणी, हीरारो हार । ग्रहणाको भल-लाटौ, तजको अबार, जसीयाको जीवणो वा ससार की सार । दातारो पांणी, कडीयारो केहरो, हालरो हस, भू आरी भमर, कुरजरी नस । अलकांरी नागण, पलकारो कुरग, कठारी कोयल, सोनेरी अग । अणीयाळां नैणामे काजळकी रेषा, अमरतरा ठासा चदामे पेषौ । सीदूर की बीदो भालूमे भळकै, काळोसो काठळमे चदो कन चळकै । असोभता ऊतारे, सोभता धारे । वाल वाल मोताहल पोया, जाणे नवलाष नषत्र एकठा होया । वाजणा जाभर पैराया, घूघराका सुर गैरीया । अण भातकी जसीया, जकाकू चो(छो)डो चौ(छो) रसीया । माणोनी म्याराम जी, थानै दीनी छै रामजी । लो नी लाडीका लावा, पीचै (छै) करसो पच(छ) तावा । जावणकी वाता जाणा छा, मतवाळी कू नही माणा छां । वरसाळाका वादळ ज्यूं ढाळका जल ज्यू, भाषरका पाणी ज्यू, वाटका वाणो ज्यूं, चे(छे)ह मती चा (छा) डौ, थोडो सो मन करौ गाडौ । भाली वागा पडौ, थोडा रहौ भलीया । पिण थामै किसो दोस, था कै सगी पलीया ।"[1]

वहुत ही साधारण स्थिति के नायक को लेकर लेखक ने इसे ऋषि का अवतार और जसा को इद्राणी का अवतार वताया है तथा उनकी साज-सज्जा और ऐश्वर्य का वर्णन भी बहुत ऊचे दर्जे का चित्रित किया है, जिससे उसका अत्युक्तिपूर्ण वर्णन उस समय के साहित्यकारो को भाया नही, इसलिए वात की सुन्दरता को स्वीकार करते हुए भी नायक के औचित्य का किसी कवि ने व्यग्या-त्मक ढग से उपहास किया है .—

दर्जी कौडी दोढ रो, वणी लाख री वात ।
हाथी री पाखर हुती, दी गधे पर घात ।।

राजा चद प्रेमलालछी री वात

कथा-सारांश—

राजपुर गाव मे रुद्रदेव नामक एक राजपूत रहता था । उसके दो औरतें थी दोनो ही मत्रसिद्धि मे निष्णात थी, परन्तु पति इससे अनभिज्ञ था । एक बार जब दोनो औरतें पानी भरने जाने लगी तो छोटी ने रुद्रदेव से कहा—मेरा लडका पालने मे सो रहा है सो तुम उसका ख्याल रखना । बडी बहू ने कहा—

---

[1] पृ० १८२

गायों के आने का समय हो गया है। बछडा कही चूग न जाय, इसका तुम ध्यान रखना। थोडी देर मे बच्चा रोने लगा तो रुद्रदेव ने बच्चे को खिलाना शुरू किया किन्तु इतने मे गायें आ गई। अत बच्चे को पालने मे छोड़ कर बछड़े को वाधने लगा। उसी समय दोनो बहुवें पानी भर कर आ गई। छोटी बहू ने देखा कि वच्चा पालने मे रो रहा है, और वह वडी के काम मे संलग्न है। ईर्ष्या के वशीभूत उसने ऐसे पति को मार देने का निश्चय कर अपनी इंढुरी उसकी ओर फेकी जिससे वह साप बन कर रुद्रदेव को डसने के लिये भागा। वडी बहू यह देखते ही सारी बात भाप गई। उसने अपने हाथ की लोटी साप पर फैंकी, सो लोटी नौलिया बन गई और उसने साप को मार डाला।

यह देख कर भोला राजपूत वडा भयभीत हुआ और मन ही मन वहां से निकल भागने की तरकीब सोचने लगा। औरते इससे ज्यादा होशियार थी, इसलिए उन्होंने आपस मे विचार किया–अब यह अपने कब्जे मे रहने वाला नही है इसलिये इसे गधा बना कर रखा जाय। रुद्रदेव अपनी स्त्रियो से पिंड छुडाने के लिये विदेश मे कमाई के लिये जाने को उनसे कहता, किन्तु वे नही मानती। अन्त मे उन्होने प्रसन्न होकर, भाता साथ मे देकर सीख दी। रुद्रदेव मन ही मन बडा खुश हुआ और वडी तेजी के साथ वहा से चला। करीब दस कोस पर पहुचा तो उसे एक तालाब दिखाई दिया। वहा हाथ-मुह धोकर कलेवा करने का विचार कर ही रहा था कि इतने मे एक ढोली वहा आ पहुचा और उसकी याचना पर अपने कलेवे मे से एक लड्डू उस ढोली को दे दिया। ढोली बहुत भूखा था, इसलिये फौरन ही वह लड्डू खा गया। लड्डू खाते ही वह गधे के रूप मे परिवर्तित हो गया और तत्काल रेंकता हुआ उलटे पैरो रुद्रदेव के घर जा पहुचा। इधर जव रुद्रदेव ने यह करामात देखी तो स्त्रिया कही पीछे न आ पहुचे, इस भाव से आतकित तीनो लड्डू जल मे फैंक कर, वह भाग खड़ा हुआ।

स्त्रियो ने जव गधे को पुरुष वनाया तो वह ढोली निकला। अपनी योजना की विफलता ज्यो ही उनके समझ मे आई वे घोडिया वन कर वहां से रुद्रदेव के पीछे भागी। रुद्रदेव देवगढ नगर मे पहुचा ही था कि दोनो घोडियें उसके समीप आ पहुची। जान वचाने के लिये वह वेचारा एक अहीरन के घर जा पहुचा। पहले तो अहीरन ने उसे डाटा, परन्तु जव उसने सारी वात सच-सच वताई तो अहीरन बड़ी प्रसन्न हुई और उसने रुद्रदेव से वचन मागा कि वह उसके घर मे रहेगा। रुद्रदेव ने स्वीकार किया। अहीरन नाहरी वन कर घोडियो पर झपटी और उन्हें वहुत दूर तक भगा दिया।

रुद्रदेव ने देखा कि छोटी आफत से छुटकारा पाने के लिये बड़ी आफत मे आ फसे। वह किसी प्रकार रात को वहा से भी भाग निकला और चदराजा की आभोनगरी मे आ पहुचा। वहा राजा की लडकी का स्वयवर था। कौतूहलवश वह भी वहा जा पहुचा। सयोग से राजा की लडकी ने वरमाला इसके गले मे डाल दी। आनन्द और विलास के साथ वह राजमहलो मे रहने लगा। इतना हो जाने पर भी दोनो स्त्रियो ने उसका पीछा नही छोडा। वे चीले बन कर वहा आ पहुची और एक दिन रुद्रदेव जब झरोखे मे बैठा था तो उसकी आखे नोचने के लिये वे उस पर झपटी। रुद्रदेव भयभीत होकर महल के अन्दर लुढक गया। राजकुमारी ने एकाएक इस प्रकार की घबराहट हो जाने का कारण पूछा। पहले तो रुद्रदेव बात छिपाता रहा, परन्तु राजकुमारी के अत्यधिक आग्रह पर उसने सारी बात कह दी। राजकुमारी ने इसका निदान फौरन निकाल लिया। उसने अपने नूपुर उतार कर मत्र पढा और उन्हे झरोखे मे से ऊपर फेका तो नूपुरो ने बाज का रूप धारण कर दोनो चीलो को मार डाला।

रुद्रदेव ने देखा कि इस माया का कही अन्त नही है। ये औरतें मेरी जान लेकर छोडेंगी। अत बेचारा अपनी जान बचाने के लिये वहाँ से भी रात को भागा। चद राजा को जब दामाद के चले जाने की खबर मिली तो उसने फौरन सिपाही पीछे भेजे। सिपाहियो से जब रुद्रदेव वापिस नही लौटा तो राजा चद स्वय मनाने के लिये पहुचे और इस प्रकार बिना सीख लिये ही रवाना होने का कारण पूछा। रुद्रदेव बेचारा क्या कहता ? परन्तु राजा ने जब अधिक हठ किया तो उसने सारी बात कह सुनाई। इस पर राजा चद ने कहा—'जब तक हमारे दिन अच्छे है, तब तक हमारा कोई कुछ नही बिगाड सकता, और फिर बीती बात कहने लगा—

"मेरी माता और पटरानी प्रभावती इसी प्रकार की मत्र-विद्या मे प्रवीण थी। वे अपनी विद्या के बल पर मुझे अघोर निद्रा मे सुला कर रात्रि को गिरनार के राजा के पास क्रीडा करने के लिये पहुच जाया करती थी। एक बार मुझे सशय हुआ, तो जिस वट-वृक्ष पर बैठ कर वे जाया करती थी, उस वट-वृक्ष की खोह मे पहले से ही मैं छिप गया और उनके साथ गिरनार जा पहुचा तथा वहा के रग-ढग देख कर बडा आश्चर्य-चकित हुआ। कुछ दिन बाद ही गिरनार के राजा की लड़की प्रेमलालछी का विवाह होने वाला था। उसमे इन दोनो को भी आमन्त्रित किया गया था। अत विवाह की रात को मैं इनके साथ गिरनार पहुचा। बरात बडी साज-सज्जा से आई थी। किन्तु दूल्हा बडा कुरूप था। अतः उन्होने यह युक्ति निकाली कि

दूसरे किसी खुबसूरत आदमी को फिलहाल दूल्हा वना कर भेज दिया जाय और शादी के वाद मे लडकी को अपने हो ले जायेंगे । सयोग से दूल्हा बनने के लिये मैं ही उन्हे मिला । जब मैं तोरण पर पहुचा तो मेरी पटरानी ने मुझे पहचान लिया ।

मैंने शादी के समय तावूल से दुलहन की चूनड़ी पर यह दूहा लिखा—

अमो नगरी चद राजा, गिर नगरो प्रेमलालछी ।
संजोगे-सजोग परणिया, मेळो दैव रे हाथ ।।

वहा से मैं उसी रात अपनी नगरी तो पहुच गया परन्तु सास-बहू ने मिल कर मुझे सुग्गा वना दिया । दिन भर पिंजरे मे बद रहता और रात को पुनः चद वन जाता ।

उधर कुरूप पतिदेव प्रेमलालछी के रगमहलो में सुहाग-रात मनाने पहुचे तो उनकी वडी दुर्गति हुई । वरात विना दुलहिन के वापिस पहुची । प्रेमलालछी वड़ी दुःखित रहने लगी । परन्तु जब एक वर्ष बाद सावण की तीज के दिन उसने अपने विवाह के कपड़े पहने तो चूनडी की कोर पर लिखा हुआ दोहा उसके ध्यान में आया । उसने सारी बात का अनुमान लगाकर अपने पिता से सहायता ली और मेरी नगरी में आ पहुची । उसकी चतुर दासियो ने अपनी जासूसी के द्वारा मेरा हाल-चाल मालूम कर लिया और एक दिन दावत के वहाने जव वह स्वय महलो को देखने ऊपर पहुची तो उसकी एक चतुर दासी ने मेरे पिंजरे के स्थान पर तोते सहित दूसरा पिंजरा आले मे रख दिया और मुझे वहा से मुक्ति दिलाई । सास-बहू ने शाम को जब सुग्गे को सभाला तो सुग्गा दूसरा था । अत वे चीलें वनकर मेरी आंखें फोड़ने को डेरे पर आई, उस समय मैंने तीर से उन दोनो को मार गिराया ।"

अपना अनुभव सुनाने के बाद चद ने रुद्रदेव से कहा कि त्रिया-चरित्र का कोई पार नही होता है परन्तु मैंने तुमको प्रेमलालछी की पुत्री व्याही है । वह तुम्हारा कभी बुरा नही चाहेगी । इसलिये तुम आश्वस्त रहो ।

कथा-वैशिष्ट्य—

इस वात की कथा-वस्तु पूर्णत त्रिया-चरित्र पर ही आधारित है । छोटी-सी वात में अनेक स्त्रियो के चरित्र का उल्लेख हुआ है । राजा रिसालू की वात में भी स्त्रियो के कुटिल चरित्रो पर प्रकाश डाला गया है । परन्तु इन दोनो कथाओ के निर्माण व घटनाक्रम में वडा अन्तर है । रिसालू की वार्ता में प्रत्येक

नारी-पात्र के जीवन की पृष्ठभूमि बांधने का प्रयत्न किया गया है जिससे उन नारी-पात्रो के चरित्र मे उत्पन्न होने वाले यौन-विकारो का मनोवैज्ञानिक अध्ययन किसी हद तक सभव हो सकता है। इस कहानी मे जादू-टोने व मत्र-सिद्धियो के आधार पर अनहोनी घटनाओ को घटित कराते हुये नारी की यौन-पिपासा के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाली अनेकानेक घटनाये वर्णित हैं। जादू-टोने का सहारा लेने के कारण कथा में किसी भी नारी-पात्र का चारित्रिक विकास नही हो पाया हैं, जिससे कहानी केवल काल्पनिक स्तर पर ही न रह कर तिलस्मी बन गई है।

इस कहानी को पढने से सामाजिक तथ्यो की ओर हमारा ध्यान अवश्य ही आकर्षित होता है। कथाकार ने रुद्रदेव जैसे साधारण नायक से बात प्रारभ कर के चद राजा और उसके परिवार पर कथा को समाप्त किया है। अतः निम्न स्तर के समाज से लेकर राज्य-परिवार तक में व्याप्त दुष्चरित्रता तथा यौन-कुण्ठाओ पर करारा व्यग हमे देखने को मिलता है। इसके अतिरिक्त यह बताया गया है कि एक ओर नारी को स्वयवर के माध्यम से अपना पति चुनने का पूर्ण अधिकार है तो वहा किसी सुन्दरी को छल के साथ प्राप्त करने के लिए असली दूल्हे के स्थान पर दूसरे दूल्हे को तोरण पर भेज दिया जाता है क्यो कि असली दूल्हा कुरूप था। इस प्रकार जहा एक ओर नारी की बडी दीन स्थिति बताई गई है, वहा दूसरी ओर पुरुष उसके सामने बडा निरीह चित्रित किया गया है। क्यो कि वे अपनी चतुराई तथा काम-पिपासा में उन्मत्त पुरुषो के विभ्रम के कारण उन पर शासन ही नही करती अपितु उनको मूर्ख और अपनी लालसाओ का खिलौना तक बना देती हैं।

लेखक ने जहा एक ओर दुष्चरित्रता का पूरा वर्णन किया है वहा दन्तकथा की मुख्य नायिका प्रेमलालछी के चरित्र को निष्कलक बताया है तथा उसकी चतुराई का भी बडा बखान किया है।

कथाकार ने मनुष्य के भाग्य को सर्वत्र प्रधानता दी हैं परन्तु दुष्चरित्रता मे लिप्त पात्रो का अन्त भी बुरा बताया है। अत कथा का वास्तविक उद्देश्य दुष्चरित्रता के दुष्परिणामो की ओर इगित करना कहा जा सकता है।

भाषा-शैली—

पूरी कथा गद्य के माध्यम से ही कही गई है जिसमे केवल एक दोहे का प्रयोग मिलता है। जहा तक कथा की भाषा का प्रश्न है वहा सरल, प्रसाद-गुण-

युक्त बोल-चाल की भाषा है। स्थान-स्थान पर अरबी व फारसी के शब्दो का प्रयोग भी मिलता है। कथा की शैली मे सबसे बड़ी खूबी राजस्थानी के ठेट मुहावरो का सफल प्रयोग है। अत. कुछ मुहावरे यहा द्रष्टव्य है –

"भलो नही आपने, तिको दीजे काळा साप ने।
एस साख पतळी हुई ने घर माहे उडो तेह नही।
जाडी जीमतां पतली जीमस्यां।
चौपडी जीमता लूखी जीमस्या।
वोहर पालू।
वात धुरा मूल सू कही।
मोसू लाल पाल करणो।
जीमण सू देखणो भलो।
बुरो चाहे तो भलो होवे नही।

उपसंहार

प्रस्तुत सग्रह की पांचो वाते मूलत प्रेमविषयक होते हुए भी अनेक प्रकार की विभिन्नतायें लिए हुए हैं। अत न केवल साहित्यिक दृष्टि से अपितु समाज-शास्त्र व भाषाविज्ञान की दृष्टि से भी इनका बडा महत्व है।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर के मान्य अधिकारी-गण इस प्रकार के साहित्य-सग्रह प्रकाशित कर राजस्थानी-साहित्य की अमूल्य निधियो को प्रकाश मे लाने का प्रशसनीय कार्य कर रहे हैं उसके लिये वे बधाई के पात्र हैं।

मेरे प्रिय मित्र श्रीलक्ष्मीनारायणजी गोस्वामी ने इन कथाओ को सपादित करने में बडा श्रम किया है। अनेक प्रतियो के पाठान्तर तथा विस्तृत परिशिष्ट दे कर पुस्तक को साधारण पाठक व विद्वद्वर्ग, दोनो के लिए उपयोगी बना दिया है। उनकी इस साहित्य-साधना के लिये बधाई तथा मुझे इस पुस्तक की भूमिका लिखने का अवसर प्रदान करने के लिये धन्यवाद।

नारायणसिंह भाटी
सचालक
राजस्थानी शोध सस्थान, जोधपुर

जोधपुर
वसत पचमी, १९६५

सम्पादकीय

आज जिस प्रान्त को राजस्थान कहा जाता है उसका यह नामकरण अधिक प्राचीन नही है । बहुत प्राचीन काल मे इस भूभाग के नाम मरुप्रदेश, मरुभूमि तथा मरुस्थल आदि मिलते हैं जिसका आशय मुख्यतया वर्तमान पश्चिमी राजस्थान की मरुभूमि से ही रहा होगा । वैसे राजस्थान शब्द प्राचीन ख्यातो व वातो आदि मे प्रयुक्त हुआ है परन्तु उसका अर्थ वहाँ राजधानी अथवा किसी राजा के आधिपत्य के दस्तूर आदि से है । सस्कृत-व्युत्पत्ति 'राज्ञ स्थानम्' से भी यही अर्थ प्रकट होता है । 'यथा नाम तथा गुण.' के अनुसार सस्कृत की विशेष व्युत्पत्ति इस नामकरण के औचित्य को और भी बढा देती है —'राजन्ते शौर्यौदार्यादिगुणैर्देदीप्यन्ते ये (नराः)ते राजानस्तेषा स्थान - आवासभूमि राजस्थानम् ।' अर्थात् जो मनुष्य शौर्य-औदार्यादि गुणो से सर्वाधिक सुशोभित हो, उन मनुष्यो के रहने का स्थान 'राजस्थान' है । प्रान्त के वर्तमान नामकरण के रूप मे सभवत इस शब्द का प्रयोग सबसे पहिले प्रख्यात इतिहासकार कर्नल टॉड ने किया है जैसा कि उसकी पुस्तक 'एनल्स एण्ड एन्टिक्विटीज् ऑफ राजस्थान' से प्रकट होता है । जब कि इससे पूर्व यहाँ की रियासतो के समूह के लिए 'राजपूताना' शब्द प्रचलित रहा है क्यो कि अग्रेजो के ऐतिहासिक वृत्तान्तो मे यहाँ की रियासतो के लिये 'राजपूताना स्टेट्स' जैसे प्रयोग मिलते हैं ।

यहाँ की रियासतो और इस भूभाग के लिए राजस्थान शब्द कब से प्रयोग मे आने लगा, यह इतना महत्त्वपूर्ण नही है जितना कि भारतवर्ष के इस भूखण्ड मे आर्यसस्कृति को जो सास्कृतिक और साहित्यिक देन इस प्रात ने अपने नाम के अनुरूप दी है, उसका है । राजस्थान वीरों का देश कहा गया है । यहाँ के निवासियो ने शताब्दियो से विदेशियो और विधर्मियो का सामना हर कीमत पर करना अपना धर्म और अन्तिम ध्येय समझा है । इतिहास साक्षी है कि धर्म और धरती के लिये जितना वलिदान यहाँ के वीरो ने किया है, वह भारत के इतिहास मे ही नही अपि तु विश्व के इतिहास मे अप्रतिम है ।

वलिदान और तप से ओत-प्रोत यहाँ का इतिहास राजस्थान शब्द की पृष्ठ-भूमि मे होने से राजस्थान शब्द के साथ 'वीर' शब्द का सान्निध्य सहज ही हो जाता है । भारतीय सस्कृति मे वीरो का असाधारण महत्व समझकर उनका गुण-

गान अनेक रूपो मे हुआ है। वैसे वीर शब्द का उल्लेख अतिप्राचीन काल मे ऋग्वेदसहिता (१ १८ ४; १ १४४ ८; ४.२९.२, ५ २० ४; ५ ६१ ५), अथर्ववेद (२ २६ ४ ; ३ ५ ८), आश्वलायनादि - श्रौतसूत्र, पञ्चविंशब्राह्मण (१९ १.४), बृहदारण्यकोपनिषद् (५ १३ १ ; ६.४.२८), छादोग्योपनिषद् (३ १३.६), शरभोपनिषद् (११), नीलरुद्रोपनिषद् (२३), नृसिहपूर्वतापिनी (२.३; २ ४), नृसिहोत्तरतापिन्युपनिषद् (२,४,५;६) आदि मे तेज, पराक्रम और शौर्यादि अर्थों मे मिलता है। इससे हमारी सस्कृति मे वीरो की विशिष्ट परम्परा ही लक्षित नही होती अपि तु सस्कृत-साहित्य मे आदर्श नायक के गुणो मे वीरत्व एक अनिवार्य गुण के रूप मे कवियो द्वारा अपनाया गया है।

राजस्थान के इतिहास मे युद्धो की अधिकता के कारण सहस्रो युद्धवीरो का उल्लेख हमे अनेक रूपो मे मिलता है परन्तु युद्धवीरो के अतिरिक्त धर्मवीरो, दानवीरो और दयावीरो की भी यहाँ कमी नही रही। वस्तुत युद्धवीर के उदात्त चरित्र के साथ अन्य वीरात्मक भावनाओ का गुंफन भी किसी न किसी रूप मे हमे दृष्टिगोचर हो ही जाता है। वैसे उत्साह को वीररस का स्थायीभाव रसशास्त्रियो ने माना ही है परन्तु त्याग और सयम की जो गरिमा चारो प्रकार के वीरो मे देखने को मिलती है वह भी इन वीरो के दृष्टिकोण की एकता को ही प्रतिपादित करती है। अत. इन वीरो ने हमारी संस्कृति और धर्म को जो महत्त्वपूर्ण देन दी है उसका न केवल यशोगान ही अपि तु दार्शनिक लेखा-जोखा भी राजस्थानी साहित्य मे अनेक रूपो मे मिलता है। पद्यात्मक शैली मे इन विषयो को लेकर, सैकडो कवियो ने जहाँ अनेको महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तक-काव्य लिखकर अमरत्व प्राप्त किया है वहाँ राजस्थानी-भाषा की विशाल गद्य-परम्परा मे वातो, ख्यातो, वचनिकाओ मे इस प्रकार की घटनायें भी अनेक प्रसगो को लेकर वर्णित की हैं। साहित्यिक दृष्टि से यह वात-साहित्य अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

'वात' शब्द वार्ता का अपभ्र श रूप है। भारतीय वाङ्मय मे वार्ता का प्रयोग ठेठ सीतोपनिषद् (३१), सामरहस्योपनिषद् (२५०,११), आश्रमोपनिषद् (२), आदि मे उपलब्ध होता है। प्रतीत होता है कि इससे पहले वार्त्ता के लिये 'कथा' शब्द ही प्रचलित रहा है क्यो कि 'ऐतरेय-ब्राह्मण (५ ३ ३), जैमिनीय-ब्राह्मण (६), जैमिनीयोपनिषद्ब्राह्मण (४ ६ १ २), विष्णुधर्मसूत्र (२० २५) आश्वलायन-गृह्यसूत्र (४ ६ ६), छान्दोग्योपनिषद् (१ ८ १), नारदपरिव्राजकोपनिषद् (४.३), आदि मे इस शब्द का प्रयोग वार्त्ता के अर्थ मे मिलता है।

वार्त्ता का चाहे जो रूप प्राचीन वाङ्मय मे रहा हो किन्तु राजस्थानी-साहित्य मे यह शब्द विशेष अलकृत और सुव्यवस्थित साहित्यिक शैली मे लिखी

गई कहानियो के लिए वात के रूप मे प्रचलित रहा है और इस साहित्य का अपना विशिष्ट स्थान भी है। यहाँ की ऐतिहासिक व सामाजिक परिस्थितियो के अनुरूप प्राचीन राजस्थानी का अधिकाश साहित्य वीररसात्मक है परन्तु अन्य रसो के साहित्य की भी इसमे कमी नही है। यदि हम वातो को ही लें तो वीर-चरित्रो को लेकर लिखी गई वातो के अतिरिक्त शृगार, भक्ति, धर्म, नीति और उपदेश आदि विविध विषयो को लेकर अनेक कथाओ का निर्माण हुआ हैं। यहाँ की वीरगाथाओ और कहानियो ने द्विजेन्द्रलाल राय तथा रवीन्द्र-नाथ ठक्कुर जैसे महान् साहित्यकारो को भी प्रभावित किया है तथा उनका महत्व सर्वविदित है ही। परन्तु शृगारात्मक वातो की जो विशिष्ट देन यहाँ के साहित्य को है उस ओर अद्यावधि अन्य प्रातो के साहित्यकारो का ध्यान बहुत कम आक-र्षित हो पाया है। अत इस बहुमूल्य साहित्य का परिचय साहित्यानुरागियो को देने की दृष्टि से ही प्रस्तुत पुस्तक मे ५ वातो का सकलन किया गया है।

पाचो ही वातें प्रेमविषयक है, परन्तु प्रेमसम्बन्धी कथाओ मे भी जो वैशिष्टय यहाँ देखने को मिलता है उसको ध्यान में रख कर वे विविध प्रकार की प्रतिनिधि प्रेमकथाए यहाँ प्रस्तुत की गई है जिनमे कही स्वकीया नायिका का निश्छल प्रेम है तो कही परकीया की कामातुरता, कही नारी के कुटिल चरित्र की अनेकरूपता है तो कही नारी व पुरुष की काम-भावनाओ का गूढ चित्रण यहाँ की सामाजिक पृष्ठभूमि मे देखने को मिलता है।

नागजी - नागवन्ती की वात मे जहाँ पुरुष और नारी का एकनिष्ठ प्रेम मार्मिकता के साथ चित्रित है वहाँ बगसीराम और हीरा की वात मे अनमेल विवाह पर करारा व्यग्य है। मयाराम दर्जी की बात मे जहाँ पूर्व सस्कारो को मान्यता देते हुए अतिशयोक्तिपूर्ण शृगार का वर्णन है तो रिसालू री वात मे राजा रिसालू जैसे ऐतिहासिक व्यक्ति के साथ नारी के विभिन्न रूपो और यौन-सम्बन्धो का अजीव चित्रण है। प्रेमलालछी की वात मे नारी के कुटिल-चरित्रो का सूक्ष्म दिग्दर्शन ही नही अपि तु पुरुष की काम-पिपासा को नारी-सौन्दर्य द्वारा तृप्त करने के विकल्प भी वर्णित हैं। इन सभी कथाओ मे एक ओर नारीपात्रो की सुन्दरता और चतुराई दिखाई गई है तो दूसरी ओर पुरुष की विवशता तथा सामाजिक मान्यताओ एव रीति-नीति पर भी अच्छा प्रकाश डाला गया है। इस प्रकार की प्रेमकथाओ का सर्वाङ्गीण अध्ययन तो तभी सभव है जब कि हस्तलिखित ग्रन्थो मे विखरी हुई सामग्री सुसम्पादित होकर प्रकाश मे आ जाती है। परन्तु, इन कथाओ के आधार पर प्रेम-कथात्मक-साहित्य की कुछ विशेपताओ का अनुमान तो लगाया ही जा सकता है।

यहाँ सम्पादित कथाओं के वैशिष्ट्य पर डॉ० श्रीनारायणसिंहजी भाटी ने भूमिका मे विस्तृत रूप से प्रकाश डाला है ; अत. इनके वैशिष्ट्य के बारे मे चर्चा करने की आवश्यकता नही है।

प्रसन्नता का विषय है कि सम्पादकीय लिखते समय कुछ विशेषज्ञातव्य सदर्भ भी प्राप्त हुए हैं वे यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

'बगसीराम प्रोहित हीरां की बात' का रचियता 'तेण' कवि है या अन्य कोई, निश्चित रूप से नही कह सकते ! 'कवी तेण इण विध कहो' (पृ० ४६) से तेण का अर्थ 'कर्त्ता' भी माना जा सकता है और तेण का अर्थ 'उसने' भी। यहाँ 'तेण' शब्द यदि नामवाचक है तो इसे इस वार्ता का प्रणेता मान सकते हैं अन्यथा कर्त्ता का प्रश्न शोध का ही विषय है।

प्रस्तुत पुस्तक मे राजा रसालु की बात के दो सस्करण मुद्रित हैं :— १ राजस्थानी-रूप है और २ गुजराती-रूप है। इस वार्ता का एक अग्रेंजी सस्करण भी रेवरेण्ड चार्ल्स स्विन्नरटन (Rev Charles Swynnerton) लिखित 'दी एडवचर्स ऑफ दी पजाब हीरो राजा रसालु' के नाम से डब्ल्यू. न्यूमेन एण्ड कम्पनी लिमिटेड, ४, डलहोजी स्क्वायर, कलकत्ता के प्रकाशक द्वारा सन् १८८४ मे प्रकाशित हुआ है। चार्ल्स स्विन्नरटन उस समय रॉयल एशियाटिक सोसायटी, फोकलोर सोसायटी तथा एशियाटिक सोसायटी, बगाल के सदस्य थे। स्विन्नरटन ने यह गीतात्मक कथा 'सरफ' नामक लोकगायक से सुनी थी। इस गायक का चित्र भी इसमे प्रकाशित है।

आग्लभाषा के सस्करण और इस सस्करण की कथाओ मे कही वार्ता का तारतम्य एक-सा नजर आता है तो कही बहुत ज्यादा अतर दृष्टिगोचर होता है। अत. तुलनात्मक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए अग्रेजी सस्करण के १२ अध्यायो का क्रमश सक्षिप्त रूप (अनुक्रम) यहाँ उद्धृत कर रहे हैं जिससे कि शोधविद्वान् इसका समालोचनात्मक अध्ययन कर सकें।

१ रसालु का प्रारम्भिक जीवन :

[राजा सलवान और उसकी दो रानियाँ, रसालु के बडे भाई पूरण भगत का चरित्र और उसकी भविष्यवाणी, रसालु का जन्म और बाल्य-काल, प्रतिबन्ध से मुक्ति, उसका नटखटपन और देशनिष्कासन, लूणा माता का विलाप]

२. रसालु की प्रथम विजय

[गुजरात की यात्रा, झेलम की राजकुमारी के विरुद्ध अभियान, तिला के साधु का चमत्कार, साधु की भविष्यवाणी]

३. रसालु का पुनरागमन :

[मक्का की यात्रा, हजरत द्वारा स्वागत, मुसलमान-धर्म मे परिवर्तन, सियालकोट से समाचारो का आना, दीवारो का गिरना और मनुष्यो का वलिदान, जबीरो द्वारा हजरत को अपील, सियालकोट पर आक्रमण, नगर पर अधिकार, सलवान की मृत्यु और रसालु का राज्यारोहण]

४. राजा रसालु और मीर शिकारी .

[रसालु की दक्षिण यात्रा, जगल मे मीर शिकारी से भेंट, मीर शिकारी का रसालु का शिष्य बन जाना, रसालु की शर्त्तें, मीर शिकारी और उसकी रानी, उसके द्वारा प्रतिज्ञाभग, मृग और मृगी की कथा, मीर शिकारी की मृत्यु, मीर शिकारी की पत्नी का रसालु से दुर्व्यवहार, मीर शिकारी की मृत्यु का दोषारोपण, रसालु की मुक्ति, मीर शिकारी का अन्तिम सस्कार और स्मारक

५. राजा रसालु और हस .

[रसालु का एक नगर मे प्रवेश, रसालु द्वारा तीस मील ऊँचा बाण चलाना, दो कौवो की कथा, उनका आकाश मे उड कर वापस आना, हस के घोसले मे शरण लेना, नर-काक द्वारा धोखा दिया जाना, राजा भोज का न्याय, रसालु और गीदड की कथा, रसालु और भोज, गीदड़ की मित्रता, हसो और कौवो को वापस बुलाना, रसालु की बुद्धिमानी]

६ राजा रसालु और राजा भोज .

[रसालु की यात्रा विलम्बित, उसका प्रस्थान, भोज का साथ चलना, उनका वार्त्तालाप, रानी शोभा के बाग मे पराक्रम दिखलाना, उनका आम्र-वृक्ष के नीचे ठहरना, राजा होम का आगमन, उसकी कविता, रसालु की बुद्धिमानी, रसालु और भोज दोनो मित्रो का बिछुडना]

७ राजा रसालु और गण्डगढ के राक्षस .

[रसालु का स्वप्न, उसका पराक्रम के लिए प्रस्थान, ऊजड़ नगर और वृद्धा, वृद्धा की विपत्ति, राक्षस का भोग, रसालु और वृद्धा का पुत्र, रसालु और थीरा, थीरा और भीवूं का पलायन, दूसरे राक्षसो से मुठभेड, राक्षसी से टक्कर, राक्षसराज वैकलबाथ, भीवू और थीरा का दुर्भाग्य, थीरा का विलाप, गण्डगढ पर्वत मे कैद, गण्डगढ की चीत्कार, रसालु के तीर]

८ रसालु का तिलार, नाग और काग, डोढ काग (जगली कौवा) के साथ पराक्रम .

[रसालु का झाऊमूसे को डूबने से वचाना और अपने साथ ले चलना, उसका एक सूने महल में आगमन, चार घड़िया, झाऊमूसे का कुण्ड मे पड जाना, राजा का जीवन खतरे मे, झाऊमूसे का काग और नाग से युद्ध, उसकी दुहरी विजय, राजा रसालु का जागरण, आभार-प्रदर्शन, झाऊमूसे का परामर्श, मित्रो का विछुड़ना]

९. राजा रसालु और राजा सिरीकप :

[रसालु और सिरीसूक, सिरीसूक का बोलना, उसका निषेध और परामर्श, रसालु की यात्रा चालू, जुलाहा और उसकी विल्ली, दो ग्रामीण युवक, वृद्ध सैनिक और बकरा, रसालु का श्रीकोट पर आगमन, सिरीकप के जादू का तूफान, रसालु और किले का घण्टा, रसालु और राजकुमारी झुघाल, राजाओ का मिलन, उनका कूट प्रश्नोत्तर, उनका खेल, रसालु की हार, रसालु की विल्ली और सिरीकप के चूहे, सिरीकप की अन्तिम पराजय, उसका भाग जाना और फिर पकडा जाना, राजकुमारी कोकिलान का जन्म, जादूगर सिरीकप का अन्त, रसालु की कोकिलान के साथ विदाई]

१०. रानी कोकिलान का धोखा :

[रसालु का खेड़ीमूर्त्ति मे वस जाना, कोकिलान का बाल्यकाल, धाय की मृत्यु, रसालू की शिकार, रानी कोकिलान का शिकार मे साथ जाना, उनके पराक्रम, हीरा हरिण कृष्ण मृग का अपमान और उसके द्वारा वदला, गजा और कांना, राजा होदी का खेडीमूर्त्ति मे आना, उसका कोकिलान से प्रेम, तोता और मैना, होदी का डर कर महल छोड़ना, व्याकुल रानी, होदी का धोबी और धोबिन से मिलना, उसका अटक पहुंच जाना]

११. रानी कोकिलान का भाग्य :

[तोते द्वारा तलाश जारी रखना, उसका हजारा मे अपने स्वामी से मिलना और रानी का भेद बताना, रसालु और उसका घोडा, उसका घर पहुचना, शादी को राजा होदी के पास भेजना, षडयन्त्र, होदी का खेड़ीमूर्त्ति आना, द्वन्द्वयुद्ध, होदी की मृत्यु, रसालु और कोकिलान, अपराध के प्रमाण, धीरे-धीरे दुर्घटना का रहस्योद्घाटन, रानी कोकिलान का अन्त]

१२ रसालु की मृत्यु :

[रसालु द्वारा मृत शरीरो को प्राप्त करना, उनको नदी पर ले जाना, धोवी और धोविन से मिलना, धोबी की कहानी, राजा का उसका मित्र वन जाना, उसके दुःख और शक्ति का ह्रास, अटक की बुद्धिमती स्त्रियां, राजा होदी के भाई, खेडीमूर्त्ति पर आक्रगण, धोबी का सदेश और भविष्यवाणी, खेडीमूर्त्ति का घेरा, रसालु का शाप, युद्ध, रसालु की मृत्यु, सन्देश]

'मयाराम दर्जी की वात' की एक अन्य विशिष्ट प्रति इस सस्थान मे प्राप्त हुई है। उसका मन्थन करने पर ऐसा प्रतीत हुआ है कि जो वार्ता इस सस्करण मे मुद्रित हुई है वह अपूर्ण है। अत. इस वार्ता का शेषाश और मुद्रित सस्करण की अपेक्षा इस प्रति मे जो अधिक दोहे प्राप्त हैं, वे यहाँ पाठको की जानकारी के लिये दिये जा रहे है ·

जाणण समजण वध जुगत, सषरापण सागेह।
आठू ही दासी अवै, एक जसीयल आगेह ॥१६॥ १६ के बाद[1]

ग्रहणा झव-झवे गजव, पाग फवै सिर पेछ।
उगतडी सूरज अवै, देप दवै दस देस ॥३१॥ ३१ के वाद

तेल पटा कसीयल तरह, रसीयल लाग रहत।
वसीयल हीय अमीयल वनी, जमीयल वाट जोअत ॥३४॥ ३३ के वाद

यण तरै का वीदराजा मयराँम चवरीनू आवै है,
पेमरा पयाला नेत्रा सू पावे है,
विलकुल तो अलवेलो गूमरामै वै है।
करतीया रा झूत्रकामै चदो जिम कहै है,
जोय जोय हेली मदरूप च(छ)क जावै है।
घूम घूम रग मै सहेली इम गावै है ॥५०॥

गावै उभू गायणी, नरपै उभी नार।
मद-चकीया म्याराम रो, इद्र जिसो उणीयार ॥५१॥ ४८ के वाद

मांणै सूप यम म्यारजी, दूलहो जमीयल देह।
दनकर तीन ससरम्न दप, धण वती पीउ मेह ॥६४॥ ५६ के वाद

---

१. यहाँ पर सभी जगह मुद्रित संस्करण की पद्यसंख्या के वाद यह समझनी चाहिए।

वावल काठल वीजळी, वुग पकज उर चाढ ।
वादल काला वरसता, आयो घुर आसाढ ।।६६।। ६० के बाद

झड लागो धौरां झरण, मोरां लोर मिलाव ।
वैरल सरपाटा वहै, भालण ज्यु भाड्याव ।।६८।। ६१ के बाद

उर-वसीया मैं ऐकली, वसीया कदे न वाग ।
इण पुल जसीयाइ षनै, रसीया साभल राग ।।७३।। ६५ के बाद

म्यारो आषै मालकी, रहै नही ऐक रीत ।
काछो(चो) रग कसूभरो, पछो(चो)लणरी प्रीत ।।७८।। ६९ के बाद

चत्रमासो वलवल सषर, अथ जल थल-थल आज ।
जिण पुल जसीयल तीजनै, मांणो अलवल(र) माज ।।११७।। १०६ के बाद

मनछल छलरूपी मकर, वल-वल उठो वैल ।
अलवल(र) रहणो आदरो, छोडो हल-वल छैल ।।११८।।

वीज-छटा घुर वादला, आव घटा छ(च)हुँ ओर ।
वाव मटा दीठा वणै, मीठा महकत मोर ।।१२३।। १११ के बाद

लोरा जल लायो लहर, पायो थल चहु पास ।
मोरा मल गायो महक, चायो इल चत्रमास ।।१२५।। ११२ के बाद

उमड घटा उद्रीयांमणी, वीज छटा छव वाह ।
विस जसडी लागै बुरो, निस पावस विण नाह ।।१२७।। ११३ के बाद

वरछा झूवै वेलीया, लूंबै काठल लोर ।
कर-कर सोर कलाव कर, माणै रत घर मोर ।।१३०।। ११५ के बाद

कांठल आभै काजली, वल-वल पवसी बीज ।
म्यारा अलवल माजली, तिण पुल रमसा तीज ।।१३२।। ११६ के बाद

मगज अमर मूछां मयद, भमर डमर भणणंत ।
अरज गूमर मानो अना, नवल वना नषतंत ।।१३५।। ११८ के बाद

मालू आषै म्यारनै, जालू छाला झल ।
की हालू-हालू करो, पालूं ज्यू पल-पल ।।१५०।। १३२ के बाद

कहीया था आगु कवल, रहण अठै राज़ान ।
कर हठ क्यू बाधो कमर, नवल वना नादान ।।१५२।। " "

क्यू हठ जाली कवरजी, वाली धण वीसार ।

जसां-वायक —

क्यू काळी अतरी करै, माली थूं मनूहार ।।१५३।। " "

म्याराम-वायक —

अण जसीयल मानै अबै, कहीया बौल कुबोल ।
यण बोलारै उपरै, जासा अलवर षोल ।।१५४।। „ „

मालू आषै म्यारनै, हठ कर तजो हलाण ।
कलहलीया केकाण ज्यू, करो पलाण-पलाण ।।१५७।। १३५ (गीत पद्य-६) के बाद

म्यारा मारा मुलकमै, चोषी पाचू चीज ।
हीडै रागा वाग हद, तीजणीया नै तीज ।।१६२।। १३९ के स्थान पर

वात का शेषाश इस प्रकार है—

वारता— ।। म्यारामजी-वायक ।।

अबै म्यारांमजी बोलीया, दिल का पडदा षोलीया । वचना अमरत-वाणसी, सारा देसा सिरे सिवाणची । लूणका लहरा लेवै, उमग की छौला ए वै । सारी नदीया सू सिरै, कताबामै कव तारीफ करै । जिका जमना गगारै जोडै, तुठी थकी पाप-दालद तोडै । यण भातको माको देस, जठै केलासके भोलैभुलै महेस । जिकण सवाणछीका इसा भाषर छै नै इसाइ ठाकुर छै ।

।। कवत ।। अकल दुरग अण षलो वडा परबत चहुं वल,
माही नदी लूणका नीर-धारा अत उजल ।
अन भाजा नीपजै रहै सब दन आवासा,
माता बकर षाय चढण ताता बरहासा ।।
पदमणी त्रीया उत्तम पुरष, पड अवगुण न हवै पछी,
मुरधरा तणा जोता मुलक, सिरै देस सिवीयाणछी ।। १७३

वात—मुलक देसाको सरो मारवाड, मारवाडका मुगटामण सिवाणची का पाड । सिवाणचीको चोगो भाडीयावास, जठै माको रैवास । जकण देसमे हमै जावसा, अलवल फेर कदेक आवसा । जसा सहथी सात ही सहेलीयानै ले जावसा ।

मालू-वायक—

जद मालुडी इउ कहै छै—राज ! इठै क्यू न रहै छै ? सीत रत आवसी, वरषा रत जावसी । आभो उजल रग धरसी, गुडलापण दुर करसी । मोर कलासून करसी, कमोदण विकससी, वादल नकससी । आ रत जद आवैला, जसीअल मर जावैला । सूणो नी भमर छैला, घण छोड क्यू चालसो गैला ।

।। दूहो ।। देषण मुरधर देसनू, है जावणरी हाम ।
कर जोडे अरजी करा, मानौ नी म्यारा‌म ।।१७४।।

वादल गल जल वीषरै, एल सीतल अधकार ।
केकाणा हलवल करै, इण पुल क्यू असवार ।।१७५।।

रिल चित मलीया राजसु, विलकुलीया एक वार ।
चलीया जसीयल चो(छौ)डनै, अलवलीया असवार ।।१७६।।

वात—मालू कहै—मांकी अरज क्यू न मानौ छो ?
इल सीतल अवदात वायव-जव-सम वलावल ,
डार माण डरपती नार भीडै पीउ कावल ।
भुअग भूम माय भलत भमर दाहत वेजोगण ;
रूठ सगत न्ह रहत तोमडछम तमोगण ।
दाजसी वना सोतल दहण, रहण अठै चत रीभीयै ।
रत पलग छाक मांणो रमण, इण रत गमण न कीजोयै ।।१७७।।

वारता—जद म्यारांम कह्यौ—माको तो मन उठै लाग रह्यौ । अबारु तौ जावाला, फेर थू कहै तौ आवाला । बेलीयानू कह्यौ कमरा बाधौ, सारा साज पुरणा पर साधौ । घोडा पर साकता मडाणी छै, जद जसा चढणकी जाणी छै । मालुनूं कह्यो—कवरजी राषीया नही रहै, अब थु कासूं कहै । जद मालू कह्यौ—आपाकै म्यारामजी वना नही सजसी, आपा घणी करसा तौ आंपानू तजसी । जद जसा भी सारी त्यारी कीधी, लषा ग्रहणा-पौसाषा साथे लीधी । जानी सिरदार दोढी आया, कलावत गाया । जद म्याराम जसानू कह्यौ—मै डेरा जावसा, सारा साज तारी करावसा । वीद-राजा घणा दना सू बारै आया, जानी घणा आणद चाया । मुजरा-सलाम कोधी, हाजरी लीधी; जण दनगे दुलहो ऐसो नजर आयौ, नकी लीघी । अलवर की सहेलीया देषणनु आइ छै, आपकै तौ मारवाड की छढाइ छै । वछायता कीजै, की छका दीजै । आप ही पीजै, जसीयाको सुहाग अर कीजै । वछायता कराइ, दारूकी तुगा भराइ, जसाकै दोली कनात षडी कराइ । वीदराजा वराजीया, चद-सूरज-सा छाजीया । दारूका प्याला भराया, घोडा कायजै कराया । पणीयारीयाका टौला आवै छै, रूप देष मस्त होय जावै छै ।

दुहा ।। कचन-षभ कलाइया, मणघर जेही ड[ड] ।
गज-गत चगी गोरडी, लाबा वैणी - डड ।।१७९।।

चद्रायणौ— मसतक कुभ उपाड गहके मोर ज्युं,
भरीया भूषण अग लहके होर ज्यु ।
पाणी कुंभ उपाड धरै पणीयारीया,
परहा कहा जी, गज-गत चगी चाल सुचगी नारीया ॥१८०॥

अलवेली यण रीत चलती ओयणा,
घमकै नेवर घाट विलोकै लोयणा ।
रस-भरीया ज्यान नरषण राजनु,
लयौ महीलौ नेह हटकौ लाजनुं ॥१८१॥

॥ दुहौ ॥ लोयण मोहण लागणा, सोयण दोठ समैह ।
जोयण कण विध जाननु, भोयण भमर भमैह ॥१८२॥

वात—इसी पणीयारीया जल भरवानै आवै छैइ, मुजरा की सडासड लगाइ। जसीयलनै पेषै छै, म्यारामनु वेषै छै। मुधर हसै छै, आमै रूप बसै छै।

दुहा ॥ दूपटा भूज पेछा दयण, परछल अतरपट ।
अग-अग उजलतौ उमग, छक मद अनग चट ॥१८३॥

॥ छद्रायणा ॥ इण सरवर री पाल हीडौलौ बाधसा,
दोवड रेसम डोर जरीतर साधसा ।
कसीया भमर सूजाण हलो किण काजनै,
रीसीया मारूराण रमाडो राजनै ॥१८४॥

लूहर लूबा लार गुलाक दध मागसा,
जसीहल कठ लगाय अबौलौ भागसा ।
जो मारूराव सजोगी छक घणा,
लासा जटाधर भेष पटाभर मेवणा ॥१८५॥

वात—इण तक अठे सारारौ समाध्यान कीधौ। म्यारामजी कह्यौ–हमै ताकीद करौ, सारा सभ उठा माथै धरौ। ढोलीया-ढाढीयानै सीष दीधी, उणारी जसवाद लीधी। सारा सिरदार असवार हुआ। लारली सषीयारा कहा दूहा—

विरह विमासी वालमा, भामण गावै भीज ।
इण रतमै सी आवसी, कवण रमासी तीज ॥१८६॥
म्यारै सारी महलसुं, जब मिल कोहा जुहार ।
वीचडताइ सजना, पलक्या असूधार ॥१८७॥

पी म्याराजी पोंचसो, दुलहा मुरध [र] देस ।
लाडा था विण लागसी, निज घर दुसमण नेस ॥१८८॥

सायब आज सधावसी, रल-मल गावे रज ।
सायब उर तीय जीयसमी, हो मारू हीय हंज ॥१८६॥

जसा सषीयां परसीया, कमलमकरद वरसीया । जसा मन उदास हुओ, मालकी कौ कह्यौ दूहौ—

पित-माता परवार पष, नज भ्राता तजनेस ।
म्यारा व्याह विनोदसुं, तजीयौ अलवर देस ॥१८६॥

ओ दुहौ सुणीयौ, पाचौ म्यारांमरै षवास दूहौ भणीयौ ।—

सपनै ही इण देसडै, आय न जीवयता ।
म्याली माडै मोहसू, आया कोस किता ॥१६०॥

जान सारी षडीया, जसां रथ चडीया । मिजला-मिजला भाडयावास आया, घणंकौ छाकां मद छायौ । ग्रहणाकौ भललाट, तेजकौ जललाट । आसाढरी भाण, रसराग जाण । मगजा मदध, वोप तेजबध । ओपह दुबाह, बाषाण वाह । काम की मूरत, रूपकी सूरत । रगरी रली, रसरी डली । आणदरी गली । माहरो चद्रमा सजोगणी कै लेषै, आसाढरी भाण बनो जोगणी कंब पेषं, तुररैरा तार तुटता, किलगी सोभ उठता । आषामै ललाया चुटती, रसरी धारीया वुठती । डेरानू ओवै छै, भगतण-पातर गावै छै । अलवरकी सहेलीया देषै छै । इण तक म्याराम तवु दाषल हुओ । जद जसा जोतसीनू कह्यौ—जान छ(च)ढणरौ तीषौ मोरथ दीजै, मनमानी नवाजस लीजै । जद जोसी कह्यौ—जतौ वागमै प्रस्थानौ कीजो, परभातको दन नीको छै, सारो सूभ महुरताको टीको छै । परभातरी दुजी मजल करावी । आज तौ डेरा वागमै दरावसी । सिरदार वागनु वलीया, जसाका मनोरथ फली [या] । वाग आणद उतरीया, जठै ठोड-ठोड कूड भरीया । घोडा वडलारी साष-तलै वाधीया । सिरदार उतर वागमै आया, जाजम गदरा वछवाया । भगतण-पातर गावै छै, चछ(च) लगा मचावै छै। अलवेलीया छैलाना नरषै है, वयण परस नेत्रा रस वरसै है । तवु षडा कीया, मोतीयारा गुछा रेसमरी लड़ा दीया । वागमै मेलायत षडो हुई, इन्द्र की पुरी हुई । चा(छा)-जा कबाणीया छूटा है, सरदरी पुनमरा चद उग-उग उठा है । झालरी फहरै हैं, चादणी चहरै है । कलस झगमगै है, अजब जेब जगै है । जण महलामै वराज भमर आलीजा रो भूप, गधरौ गैद, माणीगराको रूप । चायलाकौ तुररौ, चबीनीको हार; आष्यारो अजन, आतमारौ आधार । छोगालौ छबीलौ प्राण-

प्यारी, नैणाकीं नरपणो ना है छिन न्यारी, मतवालीको माणग, रसजीणैको जाणग। जिण वागकी छीज जेती, दीठाइ'ज वण आवै कहा केती। वसत रत फल-फूल रही छै, आणदमइ छै। चद्रसरोवर छै, तीर माथै घणा तरोवर छै। केतकी, चवेली, गुलाब, चपाकी फुलवाद। आबाकी मजर, भमराकी गुजर। आबाकै उपरै कोयला टहुका करै छै, सुवा नीलकठ मैमथ हुआ फरै छै, रस झरै छै। मोर मैमत हुआ निरत करै है, एक-एकसु सिरै है। फुलवादीरी क्यारीयामे धावे है, टहुका करै है, गुदीमे गुचा धरे है।

॥ दूहा ॥ महकै मीठा मोर, कहकै मीठी कोयला।
आठ पहर छहु ओर, लपटाणी तरसु' लता ॥१६१॥

वात – जण वागमै आय उतरीया। रूख सारा रसमजरासु भरीया। जसा महेला दाषल वीही, रात घणी आणदसूं गई। दीपक जगायौ, सनेह-रस पायौ। साडी जरकसी पर म्यारांमजी दुपटौ ओढायौ। भमर कली लपटायौ। हीडोल षाट झूलै छै, च्यारू पय डुलै छै। म्याराम तन जागीया। जसा मन जागी। मदन-माहराजरी नौबत जोर बागी; कमल कलीया वषसी, भमर गुजार थागी। हमै सुरजरौ भास हुऔ, कमलारौ वेकास हुऔ। तम-दालदरौ नास हुऔ, जोतरौ प्रकास हुऔ। म्यारामजी अपोढी हुआ, दोढी-दस त्यार हुआ। मालूडी दारूरी मनुआर कीधी, दोय छक लीधी। मारवाड छा (चा)लणकी ताकीद कोधी। उठासु कसीया चद सरोवर आया। गौडा जाषोडा, पाया, कमरा सु कसीया छै, रभाका रसीया छै। बेलीयानू दारू पावै छै, केई जलमैं नावै छै, गायणी गावै छै। जद किसतुरी अरज कीधी। जसीयाकै मडसु वधाया।

दूहा ॥ म्यारौ अलवल देसती, आयौ जसीयल व्याह।
गावत बादी गीतडा, लीना कवर बधाय ॥१६२॥

वात – अण तक जान आइ। जानी सीष पाइ आपो-आपकै घरा गया। घररा घोडा, आदमी रह्या। हमें इण तक सुष माणै छै, इद्र भी वषाणै छै। नित सकारा जावै छै। असवारी आवै छै। सतषणा महल आकास छाया छै, आभा वादल झूक आया छै। अण देसरौ चढती वेसरौ पडदा छूटा छै, कलावातु का बुटा छै। उग-उग उठा छै। चत्रगारी वणी, सोनै मैं वैडुरज-मणी, कडा, कठचा, वीटचा, पुणछ्या सु भरचौ, उनालाको आवौ मजरीसु इ भरचौ। मोतीयाको गजरौ, फूला कौ भारौ, गाहडको गाडौ रायजादो प्यारौ। दरीयाइको रेजौ आछो रग लागौ। सोनैरै कडा मे हीडोल-पाट हीडै छै। इद्र देप-देप भुलै छै। छ(च)दणका कपाटका जडीया छै हाटका,

गवाष छूटा है वाटका । इण तकरा महलायत वराजै । चवै म्याराम आसमांनरै चा(छा) जै । कोक-कलाको प्रवीण वीदराजा सुजाण, रंग-भमर नादान, चढती जवांन । जसीया कटाच करै है, म्यारांम रो मन हरै । अणारो सुष बषाणै, रात-दन मनछौजी लौ जाँणै । म्यारामसा भोगी भमर, जमी आसमाँन लग अमर ।

इती वात सपुरण । म्यारांमरी आसीया बुधजीरी कही स० १६१३ रा मती भद्रवा व्द ७ ।

मुद्रित सस्करण मे पृ० १६७ 'रेंवत समजै रानमैं' दोहा २७, पृ० १७७ 'जेले तुरगा रेशमी' गीत और पृ० १८५, 'वन सघन लसत मनु घन वसाल' छद पद्धरी १४०, जो प्रकाशित हुए हैं वे इस नई प्रति मे प्राप्त नही हैं ।

उक्त वार्ताओ के अतिरिक्त इसमे तीन परिशिष्ट दिये गये हैं जिनका सक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

परिशिष्ट १ (क) मे राजा रिसालू की बात का जो सक्षिप्त रूप प्राप्त हुआ है, उसे अविकल रूप से यहाँ दिया है और (ख) मे इसी 'बात' के केवल जो स्वतन्त्र रूप से दोहे प्राप्त होते हैं वे ही दिये हैं । इन दोहो मे राजस्थानी, गुजराती, और पंजाबी भाषा के शब्दो का मिश्रण है जिनका कि भाषा-विज्ञान की दृष्टि से महत्व है ।

परिशिष्ट २ क ख ग. और घ मे विभक्त है । प्रत्येक वार्ता मे प्रयुक्त दोहा, कवित्त, कुण्डलियां, चौपाई आदि छन्दो के वर्गीकरण के साथ अकाराद्यनुक्रम अलग-अलग दिया गया है ।

परिशिष्ट ३ मे पाचो वातो मे पद्य एव पद्याश के रूप मे उपलब्ध कहावतें, मुहावरे और सूक्तियो का सकलन कर अकारानुक्रम से दिया गया है जो कि शोधविद्वानो के लिए उपादेय होगा ।

प्रति-परिचय—

प्रेमकथाओ की प्रतिलिपियाँ अनेक हस्तलिखित सग्रहो में और सस्थाओ मे बिखरी पडी हैं, यहाँ तक कि कई प्रसिद्ध कथाओ की बीसियो प्रतिलिपियाँ तक प्राप्त हो सकती हैं । यहाँ प्रकाशित वातो को यथासाध्य प्रामाणिक रूप देने के लिए मैंने कुछ महत्त्वपूर्ण प्रतियो का प्रयोग किया है जिनका विवरण इस प्रकार है —

१. बगसीराम प्रोहित हीराँ की वात : इसका केवल एकमात्र गुटका राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर मे है । ग्रन्थ-सख्या ५८६७ है । साइज-

सेन्टी मीटर मे १६.१×२७; पत्र स० ६५, पंक्ति १६, अक्षर १६ है। लेखन काल २०वी शती है। इसमे लेखन प्रशस्ति नही है।

२ राजा रिसालू री वात : इस वात के सम्पादन में मैंने ७ प्रतियो का प्रयोग किया है। ५ प्रतियो का मूल वार्ता मे और २ प्रतियो का परिशिष्ट १. क और ख. मे । पाँचो प्रतियाँ क ख ग घ. ड सज्ञा से अङ्कित की गई है। क सज्ञक का पाठ आदर्श मान कर ऊपर दिया गया है और ख ग घ ड का पाठान्तर मे प्रयोग किया है।

क सज्ञक—राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर, ग्र स. ३५५३; साइज १८×१२ ३ से मी ; पत्र स —१२७–१५६; पक्ति १६; अक्षर ३६ है। गुटका है। लेखन प्रशस्ति इस प्रकार है .—

"सवत १८७८ रा वृषे मिति माह वद ७ गुरवासरे लिखत चूतरा [चतुरा] नागोर नगर मध्ये. ॥श्री॥"

ख. सज्ञक—राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर स० ६२६, साइज १३ ×११ से मी.; पत्र-७; पक्ति १३, अक्षर ४४ है। लेखन प्रशस्ति निम्न है—

"सवत् १८६० ना कात्तिक विद ८ वुद्धे सपूर्णं। लिखित मुनी गुलाल-कुसल। श्रीमान कुए ।

ग सज्ञक—रा प्रा प्र , जोधपुर; ग्रन्थ सख्या ३६६०; साइज २६ ३×११ से मी ; पत्र १५, पक्ति १३; अक्षर ३३ हैं। लेखन प्रशस्ति—

"सवत् १८६० वर्षे मती वैसाष वदि ५ दिने वार आदित्य दिने लि० ऋ० रामचद ग्राम कागणी मध्ये ॥ श्री

घ सज्ञक—राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर; गुटका न० ३५७३ (६०), साइज २०×२८.८ से.मी , पत्र १७१–१७५, पक्ति ४०; अक्षर ३२ हैं। लेखन अनुमानत १८ वी शती है। गुटका जीर्ण-शोर्ण है ।

ड सज्ञक—राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, गुटका नं० १०७०१, साइज १६.३×११ ८ से. मी , पत्र स० ६९, पक्ति ११, अक्षर १८ है। सचित्र प्रति है। लेखन प्रशस्ति—

"स० १८६२ रा मिती चैत सुद ७ अर्कवासरे ॥ मैडता नगरे ॥ श्री ।"

परिशिष्ट १ (क)—राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर, गुटका न० ४६०५; साइज १५ ८×१२.५ से. मी , पत्र २६, पक्ति १४, अक्षर १८ हैं। लेखन प्रशस्ति—

"ली/प/अनोपवीजय ग ।/सवत् १८७५ रा आसाढ सुद ३ दने ॥श्री॥"

परिशिष्ट १. (ख)—राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर, गुटका नं० ३५७३ (४५); साइज २०×२८.८; से मी. पत्र १ (१०६वा), पक्ति कुल ६८, अक्षर० ३२ है। लेखन प्रशस्ति नही है। अनुमानत. लेखन १८ वी शती है। गुटका जीर्ण-शीर्ण है।

३. नागजी-नागवतीरी वात इस वात का सम्पादन दो प्रतियो के आधार पर हुआ है। क सज्ञक आदर्श है और ख. सज्ञक के पाठान्तर दिये हैं।

क. सज्ञक—राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर, ग्र० न० ४३२० प्रेसकापी है। कॉपी साइज मे ३८ पृष्ठ हैं। यह प्रेसकॉपी श्रीअगरचन्दजी नाहटा, बीकानेर द्वारा करवा कर मगवाई गई थी।

ख. सज्ञक—राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर, गुटका न० ११५८५, साइज १६×१० ६; से मी पत्र ३२; पक्ति० ६; अक्षर० २० है लेखन-प्रशस्ति निम्न है :—

"इति श्रीनागवती नें नागजीरी वात सपूर्ण। सवत् १८५२ वर्षे मिति आषाढ वदि ७ भोमवारे लपिकृत प० केसरविजे [जये] न विकपुर मध्ये कोचर सु लिछमणजी वैठनार्थ श्रीरस्तु कल्याणमस्तु।१।

४ वात दरजी मयारामरी. इसके सम्पादन मे दो प्रेसकॉपियो का प्रयोग किया है। क. सज्ञक प्रेसकॉपी को आदर्श माना है और ख सज्ञक प्रेस-कॉपी के मैंने पाठान्तर दिये हैं।

क सज्ञक—राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, शाखा कार्यालय, जयपुर में सुरक्षित 'पुरोहित हरिनारायणजी सग्रह' की है। फूलस्कैप साइज की यह प्रेसकॉपी दो खण्डो मे विभक्त है। प्रथम खण्ड ग्रन्थ न० १२७; पत्र १६–२४ है। इस मे वार्ता प्रारभ से प्रकाशित पृष्ठ १६६ दोहा ४५ तक है और बाकी का अश ग्रथ नं० $\frac{३३५}{१—३}$ पृष्ठ ६ तक मे है।

ख सज्ञक—यह प्रेसकॉपी फूलस्कैप साइज की २४ पृष्ठ की है, राजस्थानी शोध सस्थान, जोधपुर की है। इस मे 'वार्ता' का आद्यश (४५ पद्यो तक का) नही है।

५. राजा चद प्रेमलालछी री वात : इस वार्ता की भी दो प्रतियों का मैंने उपयोग किया है। क सज्ञक आदर्श है और ख सज्ञक के मैंने पाठान्तर दिये हैं।

क सज्ञक—राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर, ग्रन्थ न० १२७०६ (११); साइज २२ ५×१३ १; पत्र० ८६–६७, पक्ति० १५, अक्षर० ३५ हैं। लेखनकाल स० १८२६ के आस-पास का है। लेखनप्रशस्ति नही है।

ख. सञ्ज्ञक—राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर के सग्रह का यह गुटका है। साइज १४.५×१२; पत्र० १४४–१५६, पक्ति० १४; अक्षर० २१ है। लेखन-प्रशस्ति इस प्रकार है :—

"इति श्री राजा चदरी प्रेमलालछी रुद्रदेवरी वात सपूर्णं। सवत् १८३६ रा मती चैत्र वदि १४ चंद्रवासरेः। पडीतचक्रचूडामणी वा०। श्री श्री श्री ७ श्रीकुशलरत्नजी तत्शिष्य प० श्रीश्रीअनोपरत्नजी मुनि खुस्यालचद लिपिकृतः। श्रीगुदवच नगरमध्ये ।। सेवग गिरधरीरी पोथी माहे सु लखीः।"

आभार-प्रदर्शन—

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के सम्मान्य सञ्चालक, परमादरणीय 'पद्मश्री' मुनि जिनविजयजी 'पुरातत्त्वाचार्य' का मैं हृदय से अत्यन्त आभार मानता हूँ कि जिन्होने अपने निर्देशन मे मुझे प्रस्तुत 'राजस्थानी साहित्य सग्रह-भाग ३' का सम्पादनकार्य सौप कर राजस्थानी भाषा के प्रति मेरी अभिरुचि का सवर्द्धन किया। साथ ही मैं प्रतिष्ठान के उपसचालक, विद्यारागपरायण प० श्रीगोपालनारायणजी बहुरा एम ए का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ जिनका कि मुझे स्नेहसौजन्यपूर्ण सहयोग एव सत्परामर्श सतत सुलभ रहा।

राजस्थानी भाषा के शोधविद्वान् एव प्रतिनिधिकवि डॉ नारायणसिंहजी भाटी ने अपने शोध-सस्थान तथा शोधप्रबन्ध-लेखनादिक अनेक महत्त्वपूर्ण कार्यों मे अत्यधिक व्यस्त रहते हुए भी मेरे स्वल्प अनुरोध से ही उक्त सग्रह की विशद भूमिका लिखने का कष्ट कर अपनी सदाशयता का परिचय दिया। एत-दर्थ मैं इनके प्रति धन्यवाद-पुरस्सर हार्दिक आभार प्रदर्शित करना अपना कर्त्तव्य समझता हू।

मैं अपने सहयोगी मित्रो, विशेषत सुहृद्वर श्रीविनयसागरजी महोपाध्याय एव प० श्रीठाकुरदत्तजी जोशी साहित्याचार्य का भी आभार मानता हूँ कि जिन्होने मुझे सामग्री-सकलनादि कार्यों मे अपना अपेक्षित सहयोग प्रदान किया।

आनन्द भवन, चौपासनी रोड, जोधपुर
भाद्रपद शुक्ल ५ स० २०२२ वि०

गोस्वामी लक्ष्मीनारायण दीक्षित

वार्त्तागत-विषयानुक्रम

१. वात वगसीरांमजी प्रोहित-हीरां की

	विषय	पृष्ठाङ्क
१	गणपतिध्यान, उदयपुर-वर्णन, राणा भीम तथा कोटचधीश लिषमीचंद का परिचय एवं हीरां की उत्पत्ति।	१–२
२.	हीरां की बाल्याद्यवस्था का वर्णन, लिखमीचद द्वारा हीरां की सगाई का टीका रामेसुर ब्राह्मण के साथ सेठ कपूरचंद के पुत्र माणकचंद के लिये अहदाबाद भिजवाना, हीरा का विवाह एवं अहमदाबाद के लिये उसकी विदाई, केसरी बडारण के समक्ष हीरां द्वारा अपना दु खवर्णन, हीरा का पुन' उदयपुर-आगमन तथा अपनी सहेलियों के समक्ष विरह-दु खवर्णन, नरवर-(निवाई)निवासी बगसीरांम प्रोहित का वर्णन।	३–७
३	बगसीरांम का अपने ससुराल बूदी जाना, बूदीनगर-वर्णन, बूदी मे प्रोहित द्वारा सिंह की शिकार करना।	८–९
४	प्रोहित का उदयपुर की ओर प्रस्थान, सहेलियों की बाडी का वर्णन, प्रोहित एव उसके साथी वीरो की वीरता का वर्णन।	१०–१२
५	हीरां का गौरीपूजनार्थ आभूषण-धारण, उदयपुर की गौरी माता की सवारी का पीछोले-आगमन, हीरा की सहेलियों की शोभा का वर्णन, नील-विडङ्ग अश्व पर आरूढ प्रोहित का अपने सुभटों सहित पीछोलै-आगमन।	१३–१७
६	प्रोहित एवं हीरां का नयन-मिलन, केसरी बडारण द्वारा लालस्यंघ से प्रोहित का परिचय प्राप्त कर हीरा को बतलाना, हीरां का प्रोहित के प्रति केसरी के साथ पत्र-प्रेषण, केसरी द्वारा प्रोहित-कथित उत्तर से हीरा को अवगत कराना।	१८–२०
७	सन्ध्यासमय-वर्णन, हीरां-महल-वर्णन एव आभूषण-धारण, हीरां द्वारा प्रोहित को बुलाने केसरी को भेजना, केसरी के साथ प्रोहित का महल की ओर गमन एवं हीरां के साथ सुख-विलास, प्रभात का वर्णन एवं प्रोहित का हीरा को अपने साथ ही रखने का वचन देकर वापस सहेलियो की बाडी मे आना।	२१–२६
८	राणा भीम का वर्णन, राणा का बगसीराम को मिलनार्थ निमन्त्रण तथा	

विषय पृष्ठाङ्क

उनका 'जगमन्दिर' स्थान पर मिलने का निश्चय, राणा का जगमन्दिर की ओर प्रस्थान एव जगमन्दिर-निवास का वर्णन । २७–२९

९. प्रोहित का जग-मन्दिर की ओर गमन एवं राणा के साथ विवाद, राणा का कुपित होना, प्रोहित की राणा को 'वध' पकडने की चेतावनी, 'वाडी' मे प्रोहित की अपने साथियो से मन्त्रणा, शिवलाल द्वारा 'सिवाणी' के राव वहादुर का शौर्य-वर्णन, प्रोहित द्वारा राव वहादुर को अपनी सहायतार्थ बुलावा भेजना, राव बहादुर का अपने सुभटो सहित उदयपुर पहुचना । ३०–३२

१० राव वहादुर एवं प्रोहित का मिलाप, हीरा द्वारा तीज के मेले मे वीरू-घाट पर मिलने का सन्देश-प्रेषण, प्रोहित एव राव वहादुर का अपने सुभटो के साथ वीरू घाट पर पहुचना तथा वहा से मेवाडी वीरो को मार कर हीरा को उठा कर पीछोले के पार जाना, हीरां के बन्ध की सूचना पाकर राणा का क्रुद्ध होना । ३२–३५

११ राणा के वीरो के साथ प्रोहित एव उसके सुभटों का युद्ध, राव वहादुर-युद्ध ,महम्मदयार खां का गीत, प्रोहित-युद्ध, चादस्यघ वालै पोता का गीत, प्रोहितजी का गीत, प्रोहित का अपने साथियो सहित युद्ध जीत कर अपने देश 'निवाई' ग्राम पहुचना, विजयोपलक्ष मे राव बहादुर को गोठ देना तथा सिवाणी के लिये उसे विदा देना । ३६–४०

१२ वगसीरांम-हीरां का विलास वर्णन, वर्षा-शीत-वसन्तऋतु-वर्णन, हीरां का अपने देवर अभैराम तथा प्रेमी प्रोहित के साथ रंग-फाग खेलना, हीरा को महल मे वुलाने निमित्त प्रोहित का सन्देश केशरी द्वारा प्राप्त होना । ४१–४४

१३ प्रोहित को केसरी द्वारा हीरां का निषेधात्मक उत्तर प्राप्त होना, मनाने पर भी हीरा की नाराजगी से क्रुद्ध प्रोहित का हीरा से वैमनस्य, केसरी द्वारा दोनों का बीच-बचाव, प्रोहित-हीरां का रस-विलास, वात का उपसहार । ४५–५०

२. रीसालूरी वारता

१. श्रीपुर के अधिपति सालवाहन के पुत्र राजा समस्त का वर्णन । ५१–५२

२. सूअर की शिकार के लिये राजा समस्त का वन-गमन एव उसे वहां पर श्रीगोरखनाथ का दर्शनलाभ । ५३–५६

३. श्रीगोरखनाथ के आशीर्वाद से रीसालूनामक पुत्र की उत्पत्ति, रीसालू का ११ वर्षपर्यन्त गुप्त स्थान मे धाय द्वारा सरक्षण, राजा भोज तथा मान की राजकुमारियों के साथ रीसालू का खांडा-विवाह एवं राजकुमारियों का अपने-अपने पीहर वापस जाना । ५७–६३

विषय पृष्ठाङ्क

४. रीसालू को अपने गोपनीय रक्षण का कारण ज्ञात होना, उसका पण्डित पर क्रुद्ध हो कर गुरज का प्रहार करना, राजा समस्त द्वारा रीसालू को १२ वर्ष तक देश से निष्कासित करना। ६४–६८

५ रीसालू का गोरखनाथजी के आशीर्वाद से प्राप्त पासो द्वारा जूवे मे पराजित अगरजीत राजा की दश मास की (दूधमुही) बच्ची के साथ विवाह कर विदा होना। ६९–७८

६ रीसालू द्वारा कस्तूरी मृग, सूवा तथा मैना को पकड़ना, उस का 'स्योगवास' गाव से गुजर कर द्वारका नगरी मे पहुँचना तथा वहाँ राक्षस को मार कर बस जाना। ७९–८२

७. रीसालू की रानी के साथ 'जलाल पट्टण' के पातसाह हठमल का प्रेम होना, सूवा-मैना द्वारा रानी को समझाना तथा वन मे जाकर अवैध सम्बन्ध की रीसालू को जानकारी देना, रीसालू द्वारा युद्ध मे हठमल का हनन करना। ८३–१०१

८ रीसालू के समक्ष स्त्रीवियोगी एक योगी की पुकार, रीसालू द्वारा अपनी पत्नी (रानी) को उसे दान मे देकर द्वारका नगरी से कूच करना तथा रानी का योगी को चकमा देकर हठमल के शव के साथ जल जाना। १०२–११०

९ रीसालू का राजा मान की नगरी आणदपुर मे पहुचना, सरोवर से पानी का कलस भरती हुई राजकुमारी (पत्नी) से नोक-झोक होना, राजा मान से मिलाप एवं वार्त्तालाप, रीसालू को सुनार के साथ रानी के प्रेमसबध की जानकारी प्राप्त होना, रीसालू द्वारा सुनार को अपनी रानी (पत्नी) का दान कर वहाँ से प्रस्थान करना। १२७–१३४

१० रीसालू का धारा नगर (उज्जेन) पहुचना, राजा भोज की पतिवियुक्ता राजकुमारी का चिता मे जल कर मरजाने का निश्चय करना; रीसालू द्वारा अपना सप्रमाण परिचय देकर राजकुमारी (पत्नी) के प्राण बचाना तथा पति-पत्नी द्वारा राजलोक मे आकर हर्षोल्लास के साथ सुख विलास करना। १२७–१३४

११ रीसालू का उज्जेण छोड़ कर उजडी हुई धारावती मे ५ वर्ष तक रहना, महादेवजी की कृपा से वसती को फिर से आबाद करना, रतनसिह-नामक पुत्र का जन्म, रीसालू का अकलबादर दीवाण को धारावती का कार्यभार सौंप कर अपने पिता समस्त राजा की नगरी श्रीपुर की ओर अपनी सेना के साथ प्रस्थान। १३५–१३७

१२ राजा समस्त को किसी अन्य राजा के आक्रमण का सन्देह होना, प्रधान द्वारा पता लगा कर रीसालू के आने की सूचना देना, राजा समस्त द्वारा अपने पुत्र रीसालू की सज-धज के साथ अगवानी तथा पिता-पुत्र-बन्धु-बान्धवों का मिलन एव वार्त्ता का उपसहार। १३५–१३७

३. वात नागजी-नागवन्ती री

विषय — पृष्ठाङ्क

१. दुष्काल से पीडित प्रजा के साथ कच्छ के स्वामी जाखड़े अहीर का राजा घोलवाला के देश 'वागड़' में जाकर वसना। — १४५–१४६

२ भाटियो का 'वागड़' पर आक्रमण, घोलवाला के राजकुमार नागजी द्वारा भाटियों का दमन, तथा खेत मे रह कर अपनी खेती का संरक्षण एवं नागजी के लिये उसकी भाभी परिमलदे द्वारा प्रतिदिन वहां जाकर भोजन पहुंचाना। — १४६–१४७

३ खेत मे परिमलदे द्वारा जाखड़े अहीर की राजकुमारी नागवन्ती का नागजी के साथ गान्धर्व विवाह कराना एवं नागजी का नागवन्ती से विदा लेकर पुन गढ दाखिल होना। — १४८–१५०

४ नागजी-नागवन्ती के प्रेम-सम्वन्ध का घोलवाला को ज्ञात होना, विरही नागजी की अस्वस्यता का नागवन्ती के सकेत से वैद्य द्वारा उपचार करना, नागजी-नागवन्ती का एकान्त मे पुन संगम देख कर घोलवाले द्वारा नागजी का देश-निर्वासन। — १५१–१५४

५ नागजी का परिमलदे द्वारा सकेतित वाग मे ३ दिन तक ठहरना, नागवन्ती को देश-निर्वासन का पता चलना, नागवन्ती का हाकडे पड़िहार के साथ विवाह, मण्डप मे नागवन्ती का परिमलदे के साथ सम्मिलित स्त्रीवेष धारी नागजी से साक्षात्कार होना तथा नागजी का वाग मे पुन· आकर ठहरना। — १५५–१५७

६. नागवन्ती का चँवरी से उठ कर आधी रात को वाग की ओर भागना, वहाँ माले पर कटारी खाकर मरे हुए नागजी को देख कर उसका अत्यन्त विलाप करना, वहाँ से धोलवाला एवं जाखडे द्वारा नागवन्ती को पुन घर पर लाकर उसे हाकडे के साथ विदा करना। — १५८–१६२

७ मार्ग मे नागजी के शव को देख कर नागवन्ती का रथ से उतरना एव नागजी को अपनी गोद मे बैठा कर चिता मे प्रवेश करना, वारात का गमन, महादेव और पार्वती के प्रसाद से पुनर्जीवित नागजी का नागवन्ती के साथ पुन· नगर मे प्रवेश, वात का उपसंहार। — १६३वां

४. वात दरजी मयाराम की

१ मगलाचरणानतर वात का उपक्रम तथा मयाराम एव जसा का पूर्वभव-वर्णन के साथ वर्तमान परिचय। — १६४–१५५

२ अलवर निवासी दिवलाल कायस्थ द्वारा रामवगस नामक सूवे को खरीद कर उसे अपनी पुत्री जसां के पास रखना, सूवे द्वारा जसां के पूर्वभव का वर्णन

विषय पृष्ठाङ्क

करना, शिवलाल का जसा के विवाह-सम्बन्धी कार्य सूवे को सौंप कर कलकत्ता जाना, सूवे का मयाराम के पास जसां का पत्र लेकर भांडचावास जाना और वहां से विवाह का निश्चयपत्र लेकर वापस जसां के पास आना। १६६–१६७

३ बारात का सज-धज के साथ अलवर पहुँचना, जसां द्वारा मालकी दासी को अगवानी के लिये मयाराम के पास भेजना, वार्त्तालाप के साथ मालकी द्वारा मयाराम को तोरण-द्वार पर लाना, बारात की सज-धज का वर्णन, जसां-मयाराम-विवाह, मयाराम के डेरे पर जाती हुई जसां का सौन्दर्य-वर्णन, मयाराम-जसां-मिलन, मालू-मयाराम का हास्य-विलास । १६८–१७३

४ लाधै ब्राह्मण द्वारा प्रेषित दुहे को पढ़ कर मयाराम की 'मुरधर' की ओर जाने की तय्यारी, मालू एवं जसां द्वारा उसे वहीं रोके रखने का प्रयास करना, मयाराम का जसां पर नाराज होना । १७४–१७५

५ मालू एव सहेलियो द्वारा मयाराम को मदविह्वल बना कर उसके मारवाड़ जाने का विचार स्थगित कराना तथा उसे रंग-विलास मे लीन करना, वर्षाऋतुवर्णन । १७६–१८०

६ मयाराम का जसां पर पुन नाराज होना, मालू दासी का बीच-बचाव के दौरान मयाराम से वाद-विवाद, मालू द्वारा जसां के रूपगुण-वर्णन के साथ वर्षा तथा बाग का वर्णन, जसां एवं मालू का मयाराम से अलवर छोड़ कर न जाने का आग्रह । १८१–१८५

५. राजा चंद-प्रेमलाल्छीरी वात

१ 'राजपुर' ग्रामवासी रुद्रदेव रजपूत एव उसकी दोनों पत्नियों का परिचय, पत्नियों के ऐन्द्रजालिक चरित्र से भीत रुद्रदेव का नौकरी के बहाने ग्रामान्तर-गमन विचार । १८६–१८७

२ रहस्यवित् पत्नियों द्वारा पाथेय (भाथा) के रूप में अभिमन्त्रित लड्डू देकर रुद्रदेव को विदा करना, रुद्रदेव का किसी तालाब के तट पर रुकना तथा वहा उपस्थित याचक ढोली को भोजनार्थ लड्डू-दान, लड्डू के खाते ही ढोली का गधा बन कर 'राजपुर' गाव पहुचना, रजपूतानियों द्वारा मन्त्र-बल से गधे को पुन. ढोली बनाना तथा स्वय को घोड़ी बना कर रुद्रदेव का पीछा करना । १८८वां

३. रुद्रदेव का 'देवगढ़' पहुँच कर एक अहीरणी के घर पर शरण लेना, अहीरणी का नाहर-रूप देख कर रजपूतानियों का पलायन, भयचकित रुद्रदेव

विषय पृष्ठाङ्क

का 'देवगढ़' से राजा चंद की 'अंभो नगरी' जाना, देववशात् वहाँ की राजकुमारी के साथ उसका विवाह होना। १८९वाँ

४. सांवली (चील) रूप में आती हुई रजपूतानियों के भय से रुद्रदेव का मूर्छित होना, राजकुमारी द्वारा मूर्च्छा का कारण जानना तथा 'बाज' रूप नेवरो द्वारा रजपूतानियों का हनन, जादू से त्रस्त रुद्रदेव का महल से चुपचाप भाग निकलना, राजा चद द्वारा उसकी तलाश कर उससे भय का कारण जानना। १९०वाँ

५. राजा चद द्वारा रुद्रदेव के समक्ष आप-बीती कहानी का उपक्रम, चद को अपनी माता एव रानी के साथ 'गिरनगरी' के राजा का अवैध-सम्बन्ध तथा जादुई चमत्कार का पता चलना, गिरनगरी की राजकुमारी प्रेमलाल-छी के साथ राजा चद का असभावित विवाह। १९१–१९२

६. रानी (परभावती) द्वारा राजा चंद को सूवा बना कर गुप्त स्थान में रखना, प्रेमलालछी द्वारा बराती किन्तु बनावटी पति को महल से बहिष्कृत कर स्थानापन्न किन्तु असली पति (चद) की तलाश मे तीर्थ के बहाने 'अभो नगरी' जाना। १९३–१९४

७. नगरी की रानी एव उसकी सास द्वारा स्वागतार्थ समाहूत प्रेमलालछी का महल में पहुँचना, चतुर दासियो द्वारा पिञ्जरबद्ध शुक (चद) को महल से पार करना, प्रेमलालछी द्वारा शुकरूप चद को स्वस्थ कर उसे अपना परिचय-दान, सास-बहू का चीलरूप घर कर चद को नेत्रहीन बनाने का असफल यत्न, प्रेमलालछी द्वारा सास-बहू का हनन, चद का अपने दामाद रुद्रदेव को आश्वस्त कर उसे अपने पास यथासुख बसाना। १९५–१९६

बात बगसीरांमजी प्रोहित हीरांकी

◈ ◇ ◇

॥ श्रीगणेशाय नम ॥

अथ बात बगसीरामजी प्रोहित हीराकी लिष्यते

सोरठा— डसरा ऐक सुडाल, बरदायक रिधसिध-वरण ।
विद्या बयण विसाल, आपीजै अषिर उकत ॥ १

गाथा चोसर— डसण येक गजमुष लबोदर,
धरणी कनकमुकट फरसीधर ।
पीतम्बर सोभा तन वुपर,
विनायक दायेक विद्या वर ॥ २

दोहा— चाहत चातुर अधिकचित, लेषत सुणत लुभात ।
जथा अनुक्रम मम जुगत, वरणु अद्भुत वात ॥ ३

अथ उदय्यापूरको वरनन

कु डलिय्या— उदिय्यापुरकी छब अधिक, सपति नगर समाज,
घर घर परजा लषपती, राणो भीम सुराज ॥
राणो भीम सुराज, तपोबल रंगसु,
सगता चुडा साथ, लिया दल सगसु ॥
उजल कोट उत्तग, इसी विधि वोपिया,
जाण क लकाकोट, कनकमय जोपिया ॥ ४

दरवाजा वणिया दुगम, कीना लोहकपाट ।
एक एकतै आगला, थटै सुभटा थाट ॥
थटै सुभटा थाट अनोषा थाहरा,
नरनायेक बलबीर पछाडै नाहरा ॥
किरमाला जुध कीध अरिंदा कालसा,
जाण क क्रोध अभग जुटै जम जालसा ॥ ५

वजै अमक धौंसर बजै, नोबति सबद निराट ।
मदमत पभु ठाण मय, थटै गयदा थाट ॥
थटै गयदा 'थाट' क फोजां थाहणा,
वणै तुरगा बाल मृगाटा बाहणां ।

ऊट प्रचड अनेक अग्राजे उधरै,
घरणहर भादुमास क जाणे घरहरै ॥ ६
चहुँ तरफां बणि चौहटा अटा वुतंग अषड ।
घुमडे जाणों घनघटा दमक छटा छवि-डड ।
दमक छटा छबिडड पताका देपिया,
पटा हाट व्यौपार जुहारा पेषिया ।
आभुषण नर नारि ईसी बिध वोपिया,
जाण क सुरपुर लोक इधक छबि जोपिया ॥ ७
पीछोलाको पेषबो मानसरोवर मोज,
पाणी भरै छै पदमणी चदवदनी मुप चोज ।
चदवदनी मुष चोज हसगति चालवो,
हाव भाव गावत हबोलै हालवो ॥
तार जरी पोसाष बीच तन तेहडी,
इदपुरी उणियार बिराजै येहडी ॥ ८
बाग अनेक वावडी अदभुत फूल अपार,
कोयल मोर चकोर पिक जपत भवर गुजार ।
जपत भवर गुजार गुलाबा जूथमैं,
लता फूल लपटात तरोवर लूथमै ॥
अवा चवा सुगध विराजै येहडा,
जाणे क वदरावन वसत छवि जेहड़ा ॥ ९

दोहा— ऊदयापुर राजै ईसो, राणो भीम सुरिंद ।
कोडीधज जिणरै कैनै, चावो लिपमीचद ॥ १०
लिपमीचद किरति लोयें, दे दे दोलत दाव ।
भाट गुणीजन भोजिगा, पावै लाप पसाव ॥ ११
चैन मास पप चादणै, सातम तिथि सकाज ।
अर धनिसा वृसपत अवर, सुक (भ) नक्षत्र पुपराज ॥ १२
उण पुल कन्या अवतरी, पूरव लेप प्रताप ।
चित वृत लिषमीचदकै, उछव घणो अमाप ॥ १३

छन्द पधरी— उपजी कोडीधज घरि आय, लपमीचद मन उछव लगाय ।
गई निसा भईयो परभात, त दन पचदुण वीते दिपात ॥
सेठ सवै जोतिस वुलाय, सुभ वोप्र लग्न जोये सुभाय ।
मिलि गावत कुलतिय तान मान,

वीच आगण स्यघासण वणाय, आभूपण कर त्रिये वैठ आय
अतर फुलेल चिरचत अग, सुभलिया किनका गोद सग ।
अदभुत सम मगल भये आण, वांजत्र वजे अनेक वाण ।।
द्वज विप्र मत्र आहुत दीन, किनका नाम हीरा सु कीन ।
चणक लेप छवि वीज चद, वालक मृालकन रूप वृंद ।।
नागरी अग मोभा नवीन, कनकनकै केल दोय पान कीन ।
भई सात वरममैं वालभाव, त्रिवि त्रिधि आभूपण तन वणाव ।।
अदभुत लसै छव गवर अग, पदमणि कोमल चपक प्रसंग ।
ढुलड्यां रमैं सग सपी ढूल, दमकत अग जरकस दकूल ।।
अग्यातजोवना भाव एम, नह जाणत जोवन आप नेम ।। १४

दोहा– सात वरसाकी समय, गोरी मुगध अग्यात ।
जोवननै नहै जाणियो, वरण सुणज्यौ वात ।। १५
कुच ऊपजे काची कली, हिवडै लागी हाथ ।
मुगधा जाण्यो रोग मन, विसर गई मल वात ।। १६
कह्यौ आपकी धायकू, कीयो वीरांम अकाज ।
काल हुतै काची कली, भई सुपारी आज ।। १७

धाय वचन

दोहा– हीरा चिंता परहरो, ऐ तो कुच ऊपजाय ।
देपे जाकै दूपसी, थाकै पीड न थाय ।। १८
हीरा चिंता परहरी, धाये वचन उर धारि ।
सुघड सहेली साथमै, विहरत हस विहार ।। १९
वालकलीला वालपण, वीत्यो पेलत व्रंद ।
हीरां तन सूरज हरप, आयो जोवन ईंद ।। २०

१ **वात**– य तै हीराके सरीर ऊपर सूरजरूपी जोवन आयो छै। हाव-भाव दरसायो छै। पाछै सूरजपाख जागी छै। मुप शोभा लागी छै। सूरजकी अरणोदै अवरमैं भ्यासी छै। जोवनकी अरणोदै मुष ऊपर प्रकासी छै। सूरजकी उदै रपीसुर ध्यान करण लागा छै। जोवनकै उदै ऊर ऊत्तग जागा छै। सरीरमैं रातिरूपी वालकपणो विलायो छै। दिनरूपी जोवन आयो छै। कवलरूपी हीराका नेत्र फूल्या छै। भव[र]कवल फूल जाणकर भूल्या छै। हीरा मुगधा ग्यातजोवना कहावे छै, दिल वीच चुपचतराय भावै छै। अव नोपचोपकी वातां वणावै छै। सनेहकी चुप जगावै छै।

दोहा– चवदह वरसै अधिक चित, जोबन तणी जिहाज ।
जोवत अब टेढी निजरि, गह चालत गजराज ।। २१
मधूर बचन छवि चद मुष, ऊमगे ऊरज ऊतग ।
लीलवर ढाके ललित, सुभ कचन-गिर-शृ ग ।। २२
ऊडघन अबर छबि अधिक, वोपत अग अनत ।
मानौ वदल मेघके, कचनगिर ढाकत ।। २३
ललित बक छवि लोयणा, अति चचल उभकात ।
अंजणतै अटकायिया, अबै नतर उड जात ।। २४

२ बात– अब माइता व्यावकी होस कीनी छै । रामेसुर ब्राह्मणनै आग्या दीनी छै । रामेसुर अठासु गुजरातनै ध्यायौ छै । अहमदावाद नगरमै आयौ छै । तदि कपूरचद सेठ सुणि पायो छै । सेठ आपका आदमी षिनाये रामेसुरनै बुलायौ छै । प्रोहितको घणो सिमटाचार कीनौ छै । टीको वधाय लीनौ छै । टीको पाचैकौ सावो थापि दीनौ छै । ब्राह्मणसू व्यावकी ताकीदी कीनी छै । कडा मोती सीरोपाव बीदा दीनी छै । उदैपुर आय ब्राह्मण बधाई दीनी छै । लिपमीचद हीराको व्यावकी ताकीदी कीनी छै । माणिकचदकी जान उदैपूर आई छै । कलावत भगतण्या गावै छै । नेगदार नेग पावै छै । यौ बीदराजा तोरण आयो छै । हीरानै हीराकी भाभी कहै छै—

भाभी वचन

दोहा– भाभी इम कहियो बयण, नणद सुणो छो नेम ।
मन कर देषो बीदमुष, तोरण आयो तेम ।। २५
आभूषण झमकत ऊठी, अग दमकत पटवोट ।
बाके द्रगन बिलोकता, चमक बाणकी चोट ।। २६
पकजमुष पर लीलपट, गवणत मनु गयद ।
मानु वदल मेघको, चालत ढाक्यौ चद ।। २७
वनडाको देष्यौ बदन, हीरा भई बिहाल ।
मानु होय गइ कुद मन, मुरझत चपामाल ।। २८
दुलही वनडो देषता, ऊलही उर बिच आग ।
सगम देषो साहिवो, कीनो हस र काग ।। २९
हीरा मन व्याकुल भई, आयौ लेष अलेष ।
कनकथालमैछेद करि, मारी लोहा मेष ।। ३०
हीरा मन वाकुल भई, आयो लेप अनथ ।
चात्र हीरा चदसी, केत-राहासो-कथ ।। ३१

फीकै मन फेरा लीया, अतर भई उदास।
आंष मीच रोगी अवस, पीवत नीम प्रकास ।। ३२

३ बात– तीसरै दिन समठुणी करि जाननै विदा कीनी छै। हीरानै रथमैं बठाण केसरी बडारणनै साथ दीनी छै। जान अहमदाबाद आई छै। कपूरचद घण हेतसु वधाई छै। अठै हीरा घणी बेषातर रहै छै। दुष-सुषकी बात केसरी बडारणिनै कहै छै। "सुणि केसरी, असो षावंद पायौ छै। कपूरको भोजन कागनै करायौ छै। गधाडारै अग पर चंदन चढायो छै। अधकै आगै दरपण दीषायो छै। गूगेके आगै रंगराग करायो छै। नागरवेलको पान पसुनै चबायो छै।" यू हीरा दन दूभर भरै छै। पीहर आबाकी आतुर करै छै। माणिकचद कोठी सिघायो छै। पीहरया आणौ मेल हीरानै ल्याया छै। सायनी सहेल्याका झुलरा मिलबानै आया छै।

दोहा– मोद न हीरा कुद मन, बदन रह्यौ बिलषात।
सनमुष आये सहेलिया, विधि विधि पूछत बात ।। ३३

हीरां वचन

सुष-सज्या समझै नही, गोझु वुधि गवार।
बिडरूपी मुष दुर्वचन, तिनको मुझ भरतार ।। ३४

सहेलिया वचन

दोहा– हीरा चिंता परहरो, करो मतो मन कुद।
गावो मगल गवरज्या, वा करसी आणद ।। ३५

४ बात– हीरा मनमैं चिंता न कीज्यो। चित लाय र गौरि पूजिजे। आपकै पुज्यांको दूणो फल थासी। आप मनमैं चावस्यौ जीस्यौ बर आसी।

दोहा– हीरा तणी सहेलिया, दुरस दिलासा दीन।
वीसराई उण बातनै, नागर ग्यात नवीन ।। ३६
सषी बचन पणि विध सुण्यौ, चिंता भई निचंत।
अति सुषदायक अगमैं, हीरा मन हुलसंत ।। ३७
हीरा जोवत मन हरष, मोहत तन सुकमार।
गुणसागर गजराज गति, अदभुत रूप अपार ।। ३८
चाहत जोवन अधिक चित, मदन भई ऊनमत।
हीरा डोलत हसगत, सुघड सहेली सथ ।। ३९
छकी हीरा मदन छकि, वण वुध सदन वीसेष।
चद बदन मुलकण दमक, रदन तडतकी रेप ।। ४०

५ वारता— अब हीरा मदकी छाकमैं छाक रही छै। मीठीसी वाणी बोल मुषम कही छ। चदबदनीकै अग सोभा लागी छै। आपको वदन दरपणमै दिखावै छै। बिधि बिधि रंग पोसापा बणावै छै। हीराकै रूपकी समोबड कुण- करै। मुनियाको मन डिगै। अपछराको वालो भोलो पडै छै। जोवना छाकमै डोढी निजरी जोवै छै। चदमुषी हीरा चकोरसषी मोवै छै। सुदर अलबेली हीरा अतिरूप छाजै छै। कामकदला क ऊरबसी क रभादिक राजै छै। सषियानकै बिचि हीराको मुषारबिंद छै—जाणै तारा मडलमै पुन्यूको चद छै। केताकै दिन तो हीरानै सहेलीया बिलमाई छै। यु करता वरषा रति आई छै।

अथ हीराको विरहवर्नन

दोहा— कामातुर हीरा कहै, रबि राह विहरत।
चाहत चातुर अधिकचित, आतुर होत अनत ॥ ४१
हीरा मद आतुर हुई, चित प्रीतमकी चाह।
विपधर ज्यु चदन बिना, दिलकी मिटै न दाह ॥ ४२
हीरा चाहैं छैल चित, जोबन हदो जोर।
किरणालो चाहै कमल, चाहै चद चकोर ॥ ४३
पुरुष प्रीत हीरा तलफै, दुषद हीयो दाहत।
ऐसे वुद आकासमै, चात्रग मुष चाहत ॥ ४४
हीरा सूती महलमैं, सषीया तणै समाज।
विरषा ऋति आई विषम, गगन घटा घुन गाज ॥ ४५
घणहर जल वरषत घुरत, चमकत वीजल चोज।
हीरा रोकी महलमै, फिर गई सावण फोज ॥ ४६
चमकत बीज अचाणचक, झिझकत उठत जगात।
हीरा डरपत महलमैं, थरर थरर थररात ॥ ४७
मदनातुर मेरो मरण, दुसतर वृषा दूसार।
कर ऊचो कर कहत है, हर हर सरजणहार ॥ ४८
सूती सहै सहैलिया, गहरी नीद गरद।
दरद नही छै दूसरा, दुपै जिका दरद ॥ ४९
वरपत घणहर वीपरचौ, उजल्ल भयो अवास।
उड्डगन जुथ अकासमै, पूरण चद प्रकास ॥ ५०
चमकण लागी चद्रिका, दमकत पङ्ग दूधार।
ऊडगन लगे अगनिसे, विप सम लगत वयार ॥ ५१

मोर-सबद लागे विषम, कोयल बोलै कराल ।
चात्रग विष वाणी चवत, हीरा रैन बिहाल ॥ ५२
घणै परकार हीरा अठै, दुभर भरै दिवस ।
तो लायेक सषिया तवै, आसी पीवें अवस ॥ ५३
चाहत हीरा छैल चित, उमगत मदन अरोड ।
भावै मन-रसीयो भवर, जोवत अपनी जोड ॥ ५४

अथ न[र]वरको प्रोहित बकसीरामजी वरननं
ढोला जकै समै हुवा

दोहा– अठै निवाई उपरै, राजत वगसीराम ।
प्रोहित जग मारै प्रगट; कबिया पूरण काम ॥ ५५

छंद झमाल– प्रोहित बगसीराम भमर छै कीतको,
वरदायक अरिजीतण बाटण बृत्तको ।
घोडा भड घमसाण क थाटा घेरणो,
जुटै नगी समसेर अरिंदा जोरणो ॥ ५६

कुडलिया– साथ समाजत घण सुभट, अग्राजत आथांण,
आठै विराजत ईद सो, राजत प्रोहित राण ।
राजत प्रोहित राण, तपोबल रूपको,
भड घोडा घमसाण, समोबड भूपको ।
वगडावत बरबक आकण वारको,
मालेम वगसीराम चहुँ दिस मारिको ॥ ५७
प्रोहित बूदी परणियो, रसियो वगसीराम,
सावण तीजा सासरै, कीनौ आवण काम ।
कीनौ आवण काम महोला कोडका[1],
जगम पडे अपार लीया भड जोडका ।
देपि झरोषै नारि हरष दरसावियो,
आज अवीणो कंथ क बूदो आवियौ ॥ ५८
तीज तणै उछव तटै वाचौं घणौं वपाण,
निरभै गढ बूंदी नगर, राजै हाडा राण ।
राजै हाडा राण अरिंदा रीसका,
अहकार दुज हणै तमोगुण ईसका ।

१ बूदी नगरके पास कोडक्या नामक ग्राम है ।

कविया लाष पसाव क छदा कारणा,
मरदा हदा मरदै क देणा मारणा ।।५६

अथ बूदी वरणन

दोहा– निरमल गढ बूदी नगर, झुक परबत चहुँ ओर ।
अदभुत छवि चहुँ तरफ अति, मीठा बोलत मोर ।। ६०

छंद जाते उधोर– अति मीठा बोलत्त मोर, सुभ करत्त कोयेल सोर ।
वण बिबध बूदीय वाग, लत लूब तरवर लाग ।।
छवि नदी सागर छद, उलसत जल अरबिंद ।
वोपत नीर अथाह, गवणत क छिव शाह ।।
तरकत नीर तरग, सुर पोष दादुर सग ।
तट बाग छवि उत्तग, अछि विविधि बौरग ।।
अदभूत फूल अपार, जुथ भवर करत गुजार ।
सरसत फूल सूगध, मिलि पवन सीतल मद ।।
मजरी फल दर मोर, चलबौल करित चकोर ।
अत्यादि षग धुनि अग, प्रति फूल फूल प्रसग ।।
बण होद सागर ब्र द, मिलि नीर मधु मकरद ।
जल भरत नारीह जुह, सिगार हार समूह ।।
हालत हस हुलास, पद कनक नूपर पास ।
मुप चद सोभत मज, कर फूल लोचन कज ।।
सोहत कनक सिंगार, पोसाष चीर अपार ।
वण हीर हार बिहार, रुचि निपट छवि नर नारि ।।
बनखड अवर बिराज, मिल सूर स्यंह समाज ।
ओ घाट परवत अग, उत्तग श्रग अभग ।।
षलकत झरना षाल, नीझरत जल परनाल ।
अदभूत गिरद अनेक, ऊ विचै परवत येक ।। ६१

दोहा– उण गिरवरपै आयेकै, केहर तडव कीन ।
घणहर मानु इद्रधन, भादैव जलधर मीन ।। ६२
माणत पदमणि महलमै, रशियो वगसीराम ।
सुष सज्यामै साभली, केहर तडव ताम ।। ६३
सुष सज्या तडव सुणी, मोहित घणौ प्रकार ।
आय वणो, रमस्या अवै, सिंघा तणी शिकार ।। ६४

छंद पधड़ी– भयो प्रातकाल परकास भान, बन पषी जन बोलत्त बाण ।
प्रोहित बोल्यो जब ईण प्रकार, सुरमा क थाट चढस्या स्रिकार ।।
ताता अपार प्राक्रम तुरग, कूदत छैवि जावत कूरग ।
चढि चले प्रौहित रंण चग, अत बल बीर जोधार अग ।।
बण सुभट थाट हैमर बणाये, आषेट रमण कीनौ उपाये ।
घमसाण चले घण थाट घेर, बाजत घाव नीसाण भेर ।।
चमकत सेल पाषर प्रचड, दमकत ढाल नीसाण दड ।
ध्रमकत घोड षुर धरण धज, रमकत गगन मग चढीये रज ।।
वनषड एक उद्यान बाग, वन सूर स्यघ सावर व्रजाग ।
झुक झोम तरोवर घेरि झुड, पेषियो सिघ प्रोहित प्रचड ।। ६५

सोरठा– केहर येक कराल, बनपडमैं देष्यौ विहद ।
जगमग आष्या ज्वाल, पूछ कीया सिर ऊपरे ।। ६६
घोडा चड घमसाण, आय थया सहै येकठा ।
विधि विधि बोलत वाण, बतलाईजै बाघनै ।। ६७

दोहा– केहर वतलायो कना, थट घोडा भड थाट ।
बतलायो अब बाघनै, नागी पाग निराट ।। ६८

छन्द पधडी– वतलायो ईम केहरि बडाल, कोप्यो क आय जमजाल काल ।
जग्यो क सोर ढिग अगन जोम, घडहडो धीरत घण अगन धोम ।।
दगी क तोप वुदडा दोज, विलगी क सो घणघर कडक वीज ।
छुटचौ क वान अरजन छोह, मडल तारा टूटचौ समोह ।।
दव्यौ क पुछधार सरप हुठ, जग्यौ क नेत्र शिव जटाजुठ ।
जोगद अषाडै पर जगाय, यण भाति स्यघ सनमुप आय ।।
हलकार प्रोहित कोप कीन, ललकार म्यान तरवार लीन ।
पेष्यौ क गज धरै अनड पष, धायो क बाज चीडकली यधक ।।
अति जोम पीरोहत कर अपार, दमकत तडत वाई दुधार ।
कटचौ क शीस केहरि कराल, फटचौ क मानु तरबूज फाल ।। ६९

दोहा– प्रोहित कीनो जग प्रगट, सिघा तणी सिकार ।
बूंदी गढ आयो विहसि, सरणा ईसा धार ।। ७०
अतरै अदभुत आवियौ, तीजा तणौ तिवार ।
अलवेली आभूपणा, निकसी कर कर नार ।। ७१
सावण घणौ सिरावियो, रसीयो वगसीराम ।
निरभै गढ बूदी नगर, तीज महोला ताम ।। ७२

कर जोडे येकण कह्यौ, रसीया प्रोहित राण ।
उदिय्यापुरकी गणगवर, वाचीजै वापाण ।। ७३

प्रोहित वचन

प्रोहित ईण विधि पूछियौ, वेहद गवर वपाण ।
राय भाण चारण रसक, वोल्यौ तव यण वाण ।। ७४

चारण वचन

दोहा– जगमग आभूषण जडे, भामण अति रसभीन ।
उदयापुरमै रूप अति, नागर ग्यात नवीन ।। ७५
ऐक ऐकतै आगली, निपट सलूणी नारि ।
उदयापुरमै सव यसी, अपछरकै ऊणियार ।। ७६
चहु तरफा डगर अचल, कीना सिखर कगृर ।
वाक विचै सागर यसो, पीछोला जलपूर ।। ७७
प्रगट महल जलतीर पर, सोहत सहर समाज ।
गवर अग्र मिल सुभटगण, वण ठण षेलत वाज ।। ७८

प्रोहित वचन

दोहा– वोल्यौ प्रोहित वेलिया, सुणज्यो सव सिरदार ।
ऊदयापुर चाला अवै, वायक कह्यौ विचार ।। ७९

६ **वात–** प्रोहित वगसीरामजी सु साथिकाको वचन–अव प्रोहितजीनै साथका कहै छै । ऐक अरज सुणीजै । चैन वुझाकड चादसिघजीनै वुझ लीजै ।

चैनस्यघ वुझाकड चादस्यघजीको वचन

दोहा– चैन वुझाकड मुप वचनै, प्रोहित पुछै प्रमाण ।
उदयापुर चालो अवस, देपाला र दीवाण ।। ८०
चादस्यघ वोल्यो वचन, प्रोहित सुणू प्रकार ।
उदयापुरकी गणगवर, परपाला नर नार ।। ८१
ऊदयापुर चढियो अवस, विवधि निसाण वजाय ।
गवरचा देखण वागमै, ऊतरीयो छै आय ।। ८२
वण सहेली वाडिया, विध विध फूल वणाय ।
ऊठै प्रोहित ऊतरची, उदयापुरमें आय ।। ८३

चन्द्रायणो– ऊदयापुरमैं आयकै प्रोहित ये रसो,
घण थट भडिजा सुभट समदा घेरसो ।

भवैराईका पेच मगेज भ्रमाडिया,
विध ऊतरियो आय सहैली बाडियां ।। ८४

कुंडलिया– वणी बिछायत बाडिया जाजमै गिलम जुहार,
आप दूलीचा उपरै अदभुत षुलै अपार ।
अदभुत पुलै अपार दूलीचा वोपिया,
जाण क पचरग फूल अपारा जोपिया ।
कीमषाप तकिया कसमदा खूब है,
सजीवणकी जडी क जोत सबूब है ।। ८५
उण गदीक ऊपरै राजत बगसीराम,
मिल घण थट दोहूँ मिसल कीना सुभट सकाम ।
कीना सुभट सकाम दुसासण क्रोधका,
जग जीवण है भीम गदाधर जोधका ।
जवर वीर छाजत अरिंदा जालका,
किरमाला धमचाल समोबड कालका ।। ८६
राजन बगसीरामकै अभग सुभ[ट]शट येम,
छक छायल भुजबलमछर जवरायेलस्यघ जेम ।
जबरायेलस्यघ जेम भभका सोरका,
जवरायेल कर षीज भुजगम जोरका ।
भागणकी पणव्रत उपासी भाणका,
मोजा[जी]मन महरावण क रावण मारका ।। ८७

दोहा– सुभटा जसा समाजमैं, राजैस प्रोहित-राण ।
बणी सहैली बाडिया, वाचू कर बाषाण ।। ८८

अथ सहैलियां बाडीको वर्णन

७ **बात**– विध विध सहेली बाडिया छाजै छै। आबा, खजूरि, केला, नारेल, राजे छै। पिसता, छूहारा, दाष, विदामा समैकत की छै। चपा, मरवा, मोगरा, जुही, जाये केतकी छै। वैवलसरी, नीबू, नारगी, झवीरी जुह छ। रेशमी, गुलाव, गैद, केवडा, समुहै छै। और लीलडबर तरोवर पर बेलिडिया लुम रहै छै। सीतल सुगध मद तीन प्रकारको पोन वहै छै। तरबेली सुगध फूल मजुरी फूलै छै। ज्याकै उपर भवर गुजार सवद भुलै छै। बाग बन कुजमै मयूर छत्र मडै छै। नाटक निरतक ऊचै सुर तडै छै। अवा डाल कोयेलिया टहुका करै छै। मोहणी सी वाणी बोल मन हरै छै। चकवा, कपोत, कीर, षग धुन सुणै छै।

मानु कामदेवकी पोसाल वालक भर्‍याँ छै। अनेक होद, सरोवर, दादर, मीन जल झूलै छै। तापै कमोद कवल फूलै छै। सुगध पर सोहै छै। भमर मन मोहै छै। उण वाडीमै अनेक महिल चत्रसाली छै। जरीका पडदा झरोपा गोप जाली छै। ऊण वाडियामै प्रोहित माजुम कसुमा करै छै। साथमै दारु दुवाराका प्याला फिरै छै। दूणा अमल चोगणा चढावै छै। ऊगाव कर सोगुणा जोसमै आवै छै। तीरमदाज वदुकची हदफा उतारै छै। वालवधी कोडी पर तीर गोली मारै छै।

अथ रजपूताका वषाण

दोहा– षल-पायक रणषेतमै, वरदायक मजवूत।
राजा वगसीरामकै, पासि असा रजपूत ॥ ८९

वात– जिके रजपूत कैसा, जगमै मजबूत, प्रथीराजका सामत जैसा, आकासकी बीज, कना जमराजकी पीज, आपका सीस पर पेलै, पडता आसमानकू झेलै। केहरका प्राक्रम सोरका भभका, वाराहका जोर, जलालियका धका, कालीका कलस, सतीका नारेल, सेरुका षेल, नगी समसेर विजै जैतका प्यासी छै तीसु आवधुका अभ्यासी। जोधविद्याका सागर, रजपूतीका आगर। दातासु दातार, झुझासू झुझार। कीरतका कोट रजपूत कहिये, वगसीरामका सुभट असाइ चहिये।

दोहा– सोहै जेहा जेहा सुभट, तेहा तेहा सिरदार।
वीरभद्र रजपूत बिध, प्रोहित रुद्रप्रकार ॥ ९०

अथ प्रोहितजीको वरणन

८ वात– प्रोहित पण कैसा, दातार करण जैसा। करताका वीद प्रथी पर कहावै, षगाकी षैराते षावै र पलावै। भीमका धमचाल, केवियाका काल। अरजुनका वाण, दुरज्योधनका माण। रसबिलासका यद, वचनका हरचद। समेरका भार, कूमेरका भडार। अनेक षानदानवला धूकला उडावै छै, उदैपुरका वागमै वारा बजावै छै।

दोहा– वर्‍याँ सहेली वाडिया, घोडा भड्ड घमसाण।
अलुधो उछव रमै, राजै प्रोहित राण ॥ ९१
उदयापुरपति ईद सो, निरभय सुप नर नारि।
अब आई छै गणगवरै, उछव नगर अपार ॥ ९२
हीराकै आयो हरष, सपिया तर्‍याँ समाज।
अलबेलि ऊचारीयो, ऊछैव करस्या आज ॥ ९३

आभूषण करस्या अवस, हिवड लागो हेत ।
गहरी पुजा गवरनै, मन वच करय समेत ॥ ९४
सब सोलै सणगार है, मजण आद प्रमाण ।
अब हीरा आरभियो, वाचु कर बापाण ॥ ९५

अथ हीरा गवर पुजण आभूषण आरभते–

छंद भूजगी प्रायात– पट वैठ हीरा सनान प्रसग, अबीर गुलाब धरे नीर अग ।
झलै नीरकी वूद केस झरते, षुलै रेसमी डोर मोती षिरते ॥ ९६
किये फूल सप्पेद बेणी क रगे, लसै नागणी दूधके फेण लगे ।
वणै बादल स्याम पाटी विचित्र, षुलै माग मोती क व्योम नपत्र ॥ ९७
पुणै मागकी ओर सोभा प्रकार, धसै नीलके पबै मु गध धार ।
रसीली अलप्प वणै स्याम रग, झुक(कै) रूपकी रासि छोटे भूजग ॥९८
उदार विसाल बण(णै) भाल अग, तटै पेल चोगान काम तुरग ।
विराजै गुलाल किये भाल विंद, चपेटी मनू रोहणी अग चद ॥ ९९
वणै नैण भूहार भालं विचत्र, पडै दीपको काजल हेमपत्र ।
विचित्र वणी भहकी रेष वक, वरचौ कामदेव कर(रा)मे धनक ॥ १००
लसै लोचन षजन मीन लीला, रचै पकज फूल सोभा रसीला ।
सुप सागर द्रग्ग पलक्क सुघाट, किधू पेमके रूप लज्या कपाट ॥ १०१
दुत(तै) लोचन काजलै रीप दीने, वणै कामदेव विप(पै) वाण मीनै ।
वणै नासिका कीर तुड(डे) विमोयं, लसते किधू तिष्षणी दीपलोय ॥१०२
विचै नासिका अग्र मोती विराजै, मनू राजकै द्वार शुक्र(क्र) समाजै ।
वणै होट नीके सुरग विसाल, लसै बिद्रमी कोमल व्यव लाल ॥ १०३
दुत दतकी दाडिमी हीर दाणा, विचित्र पक मोहणी मत्र बाणा ।
किये मजण गोर सोभा कपोल, उजासत हेमत वक(क्क) अमोल ॥ १०४
मिण(णी) माणक हेम ताटक मडै, चलै भाण दोय जगा जोत चडै ।
लसै चबुका बिंद जाडी लपेटचौ, चितै दूजकै चद भ्र गी वसटचौ ॥ १०५
मुप(प) मडल जोति सोभा विमोह, सुधासागर पूरण चद सोह ।
फवै स्वासक(का) वासना कज फूलं, झणकार मत्तगण भ्र ग भूलै ॥ १०६
वणी कठ सोभा विसाल वसेषा, रुचै नीलकठ कधू सपरेषा ।
जुत पोतकठ मणी नील भूवी, लसै मेरश्रृ ग नदी स्याम लूवी ॥ १०७
वलै कठकी सोभना कोण भास, पिये पानको पीक लाल प्रकास ।
उरज्ये प्रकासत सोभा असभ, विधू यम्रतग पूरण हेमकुभ ॥ १०८

कुच(च) कचुकी रेसमी तारकद, गहीर मनो कुभ ढाक्यौ गयद ।
वर कोमल सोभ बाहू बिराजै, छबीले मनू कजके नाल छाजै ।। १०९
फबै वाहे(ह) बाजु(जू) मिण(णी) जोति फूलै, झुक्यौ चदनी साषपै नाग झूलै।
विराजै नग सोवनी चु(चू)डवध, फबै मोहणी प्राणकै काम फद ।। ११०
जु(जु)हार मिणी पुचिका हाथ जोपै, अघ(घै)पकज मडल भ्र ग वोपै ।
कली चपकी आगली सोभ कीनै, नप उज्जल चद सोभा नवीनै ।। १११
पुनीत नष रग मैदी प्रकासै, विभूपत मानू कण लाल भासै ।
किय(ये) हाथफूल भणकार कीनै, लै(ल)सै कामकी नोबत जीत लीनै ।।११२
हो(हि)ये फूलमाल कीये हीरहार, दुत चदनी मालसी काम्द्वार ।
सुभ त्रि(त्री)वली ऊहुकै रोम सग, तिरै नागनी अबुधी सतरग ।। ११३
सुरग दुती नाभि गभीर सोहै, मनू छैलको भ्र ग रूपी बिमोहै ।
कटी ककनी हेम भकार कीनै, लसै केहरी लकपै बाधी लीनै ।। ११४
जरी तार पट्ट बिराजै ज हर किये कोमल जक (लज्जेक) लक पूर ।
ललीत पद नूपुरै घोष कीनै ।। ११५
पद कोमल लाल य(ए)डी प्रकासै, कील मोगरा अगुली सावि कासै ।
सुचगी नपाकी जगाजोत सोभा, लसै अष्टमी चदसे प्राण लोभा ।। ११६
विणे मोचडी हीर मोती विचित्र, पद मोह लीनै किधू हस-पुत्र ।
म(ग)ती जोबनाकी चलै मद मद, गहीर चल्यो जोम छाक्यौ गयद ।। ११७
विभूषै सरीर पढ(ट) नील बृ द, घण बादल मेह ढाक्यो गिरदं ।
प्रभा चीर सोभा जगाजोति मडै, चम(क)कै घटामै क बोजू प्रचडै ।।११८
करै हावभाव कटाछ किलोल, विराजै पिकं यम्रत मज बोल ।
मुष चद्रहास हरै प्राण मोह, छिव देष डोलै मुनी छंद छोह ।। ११९
चढै अत्तर वासना अग चोज, मिलया(य्या)गर चदन गध मोज ।
किये काज हाथ चतै रूप काज, मन(नो) मोद मानै सहेली समाज ।।१२०

छप्पै– सपिया तणे समाज ललित गहणा नीलवर ।
किसतूरी केवडा डहक परमल घण डवर ।
ग्यातजोवना गहर मदन छक लहर समाजत,
वणि हीरा द्रग विकम रसक रभादिक राजत ।
कुकमकी वेदी लिलाट कर, चद वदन छिव अधक चित,
आनदत देपण गवर, गवणी उठ गयद गति ।। १२१

उदयापुर त्रिय अवर बिबध मन राग वणावत,
चंदमुषी मिल चलय गवर ऊचै स्वुर गावत ।
जोवण कोतुक जात नागरी ग्यात नवेली,
जुथ जुथ जगमगत अग सोभा अलवेली ।
आई समाज देषण गवर, कनकजरी भूपण करी,
पीछोलाको पाल पर, यंद्रपरी सी ऊतरी ।। १२२

दोहा– पीछोलै आई प्रगट, हीरा उच्छव हेत ।
बाकी द्रगनि विलोकता, ललता मन हर लेत ।। १२३
आंनन संषियाको अवर, आठमै(म) तिथ(थी)उजास ।
विचै वदन हीरा बिमल, पूरण चाद परकास ।। १२४

अथ उदयापुरकी गवर पिछोलै आगमण

दोहा– उदयापुर निकसी गवर, विधि विधि भूपण आण ।
गज वाजा सुभटा गरट नरभय वजत निसाण ।। १२५
रछ्यक आये गवरके, जुथप जुथ जवान ।
नर नारी घण थट नरप, चल छोडा चोगान ।। १२६
नर नारी सोभन निपट, लाष लोक लेषत ।
पीछोलाकै ऊपरै, दुत गवरा देषत ।। १२७
धजा फरकत दल सघर, वाजा वजैत विसाल ।
गवरचा भड हय थट गरट, पीछोलाकी पाल ।। १२८
कोयल सुर मिल नायका, गावत गीत गहीर ।
हय ध्यावत धर थरहरत, विवध षिलावत वीर ।।१२९

९ **अथ बात–** यण परकार गोरचा पीछोलै आवै छै। नायका वारा जुथ मिलावै छै। ऊचै स्वर गावै छै। ललिता समूहमैं हीरां मनलोभा छै। नागरवेली अलवेली अग सोभा छै।

हीरांकी सहेलियांको वरणंन— हीराकी सहैलिया हसाको डार। अदभुत कवल बदन सोभा अपार। यु कवलकी पापडीया एक वरोबर सोहै। वा सहैलियामै हीरां परागुरूपी मन मोहै। कीरतियाको भूमको तारामंडलकी सोभा। आफूकी क्यारी पोसाष मन लोभा। केसरिया कसुमल घनवर पाटवर नवरग पोसाप राजै छै। अतर फुलेल केसरि कसतुरी सुगध छाजै छै। अतरग बहूरग सषिया अपार छै। पदमणी, चत्रणी सुदर सुकुमार छै। कनक-आभूषण जरी मोती हीर हार छै। यसी सहलीयाकै विचै हीरा विराजै छै। मानु अपछरामैं रभाकी सोभा। मनलोभा चदमुषी उडगनमैं चद्रमाकी सोभा। यण प्रकार हीरां

सहलियामै उछव करै छै। गवरकै वोली दोली घुमर दे दे फिरै छै। गोरिका गीत कोयलस्वर गावै छै, जोडका जवानकी सगत पाऊ ओ वर चावै छै। हीराको रूप देष सुरद मनमै जाणै छै। धन्य छै ऊ पुरुस जु इ नारिनै महलमै माणै छै।

अथ पीछोलै उपर प्रोहितको आगमण

प्रोहित वचन

दोहा– बोल्यौ प्रोहित बागमै, सुभटा तणै समाज।
ऊदयापुरकी गणगवर, अब देषाला आज ॥ १३०
बोल्यो प्रोहित वेलिया, विध विध रग वपाण।
अमला करो दुणा अथग, तुरगा करो पलाण ॥ १३१
आरभ उछव गवर, रसिया वगसीराम।
माजिम अमला भागि मिल, कीनौ कैफ सकाम ॥ १३२
सरस पियाला साथमै, दारू फिरै दुवार।
चकन धुत कैफा चढे, अदभुत सुभट अपार ॥ १३३

प्रोहितकी असवारी

छद जात ऊधोर– अदभुत सुभट अपार, उतग अमल उदार।
वण बिवध आवध वाण, एम पनगा करत पलाण ॥
राजत प्रोहित राण,
ओतग भाल उदार, केसरि तिलक प्रकार ॥
आजानबाहु अभग, ओपत कोट अल(न)ग।
चष रत वोपत चग, पर कमल फुल प्रसग ॥
भलहलत किरणा भाग, पट तार पचरंग पाग।
पोसाष अंग अपार, कलि रंग रंग प्रकार।
कट कस्ये पेसकवज, वण षाग ढाल बिरज ॥
वधे निपग कधे वपाण, कर लीय तीर कवाण।
कमर कसंत कटार, धारत कर चोधार ॥
परचड उठत पैंड, वण कान मोती वैड।

अथ नीलविडग घोडाकौ वरणन

छद जाते त्रोटक– तीन प्राक्रम यक तुरगम यु, भण नाम सनील विडगम यू।
तन पाटि कनोतिय तीषण यू, लस दोय मनु छिव देषण यू ॥
कर सोहत कुकड कदम य, मषतूल रोमावल वधम यू।

चष सालगराम सुलछणसी, छवि पूछ मयोर कि पुछनसी ।।
तन रोम प्रभा मपतूलनसी, दरसत मयक दरपणसी ।
उर ढाल छिवंत ओराटकसी, कर पड बिराजत फाटकसी ।।
वण अंग असभव तेज बली, नट्ट नाच सहोदर जत्र नली ।
धर पोड कठोर धमकत यू, झल पथर आगि झिमंकत यू ।।
ऊचकत अपार उलटणकी, नटबंत क बालक नटणकी ।
अदभुत्त तुरगम अगमकै, बर जोड न नीलविडगमकै ।। १३५

दोहा– अत बल चंचल सवल अति, अदभुत प्राक्रम अग ।
रग तुरगम रणि रिसक, वणियो नीलविडग ।। १३६

छद ऊधोर– भणिया किम विडग, अदभुत प्राक्रम अग ।
पर पीठ कनक पलांण, तन तग रेसम ताण ।।
चल झुल जरकस चीर, अंतर चिरचत अबीर ।
ईस विध वण्यो केकाण, अब कीयो हाजर आण ।।
चढि चलै प्रोहित चग, तम अवर सुभट तुरं[ग]
रजपूत हैमर रज, धर पोड धड धड धुज ।।
सत्र चले मिल येक सग, अत्याद वीर अभग ।
सव येक रग ममाज, कर गवर ऊछैवे काज ।।
घण थाट हेमर घेर, भणकत त्रबक भेर ।
चमकत वरछीये चोकुल निसाण, भट विवध आवध वाण ।।
रम रग प्रोहित राव, वण विवध रूप वणाव ।
वण सुभट घण थट बाज, सोभत अधक समाज ।। १३७
राजत बगसीराम किये गवर देपण काम ।

दोहा– असवारी छत्र अधिक, पीछोलै सु पियार ।
रसिया वगसीरामकु, निरपत मव नर नारि ।। १३८

१० वात– प्रोहितकी असवारी पीछोलै आई । अलवेली नायकाकै मन भाई । अलवेलिया असवार घोडा षिलावै छै, पाच पाच वरछीका टेका दिरावै छै । प्रोहितकी असवारीको घोडो नीलविडग फरै छै । नाना प्रकारकी गतामै ईगा-ईगा करै छै । केसरिया कसुमल लपेटा पर सोनाका तुररा लटकै छै । भवराईका पेचपवा ऊपर लटकै छै । पीछोलाकै पाणी उपर गुलाबका फूल तिरावै छै । आलीजा असवार घुडचडीकी बदुका सु हदफा लेजावे छै । रायेजादा ' रजपूतानै ऊदैपुरको लोग घणा रंग दाषै छै, अर ऐ वाता प्रोहित ऊदैपुरमै अमर राषै छै ।

अथ प्रोहित–हीराको नैन मिलाप

दोहा– भिणधारी छिवतें उछर, प्रोहित प्रेम प्रकास ।
देष्यो हीराको वदन, हरषत उमंग हुलास ।। १३९
करहु ता पाछै करै, हीरा रूप निहार ।
देपण दो षेडा चढया, अलवैलिया असवार ।। १४०

छप्पै– अलेवेलिया असवार यण विध देपण आई,
गजगामन गुसा गहर छोक मदन छत छाई ।
भाजन ग्रहणा भार पदमणी रूप प्रकासत,
कुनण तन दमकत विवध पोसाप विलासत ।
चदमुपी मृगलोचनी, कर कटाछै हीरा कहु,
हाव-भाव करि मोह्यो रसियो वगसीरामहु ।। १४१
घोडा भड घमसाण पापरा वगतर पूरा,
चोधारा चमकत जबर पग ढाल जवूरा ।
जवरायल जोघार छाक मन मछर छाया,
अलवेलिया असवार आजै पीछोलै आया ।।
वा विचै पिरोहत यद, वदन तेज अधिको वहै,
सुण बडारण केसरी, करे पवरि हीरा कहै ।। १४२

हीरा वचन

दोहा– सुण वडारण केसरी, हरिष हीयमै होत ।
ऐ घुलो भलै आवियो, देषौ वहै देसोत ।। १४३
मो मनमैं रसियो भवर, लागत प्यारो लोय ।
आष्या देष्यो आज मै, जोडी हदो जोय ।। १४४
करि गमण अब केसरी, षबरि ल्याव कुस्याल ।
कवण नाम रहै छैं कठै, साचो कोहो सवाल ।। १४५

११. वारता— केसरी बडारणि रूपकी सागर, गुणाकी आगर । आधी कह्या सरब जाणै, पैलाका मनकी पछाणै । हीराका वचन सुणि केसरी ध्याई, बगसीरामकी असवारीकै नजीक आई । प्रोहितनै देष्यौ, साष्यात कामदेव पेष्यौ । वगसीरामकै सनमुख आय ऊभी, नीलविडग घोडांकी वागनैं विलूवी ।

केसरी वडारण वचन

दोहा– काई नाव क जातिय्या, किण देस किण गाम ।
ऊदयापुरमैं आईया, कहै दीजै किण काम ।। १४६

अथ लालस्यघ दरोगाको बचन

लाल दरोगो बोलियो, मुछ्या कर विमरोड ।
अवर देस नह छै इसो, जिण ऊप[र] सर जोड ।। १४७
वृछ सरोवर छवि विमल, परघल भूरत पाहाड ।
वाग अनेक नदिया वहै, वन छै देस ढूढाड ।। १४८
रहै जतै उ राजवी, कोट निवाई कीध ।
सुजस बिजै चहूं दिस सरस, लायेक भुजवल लीध ।। १४९

१२ वात—कमवेस घोडाको असवार लालस्यघ दरोगो कहै छै— प्रोहित हेल हमीर ढुढाडै देसमैं रहै छै। निरभयगढ निवाई गाम छै, देगतेग बरदायेक वगसीराम नाव छै। देस परदेसमैं मारको कहावै छै, षाग त्याग अण गज बीर(व) वजावै छै। सहलिया बाडियामैं डेरा करवाया छै, उदैपुरकी गवर देषण आया छै।

दोहा— सुणत वडारण केसरी, गमण करी गजगत ।
हीरानै कहिया हरख, समाचार सरबत ।। १५०
प्रोहित आयौ पेमसुं, भाग तमीणौ भाम ।
जोय तमीणो जोडको, रसियो वगसीराम ।। १५१
ऐ धुलो छिब सयअतै, अब देषीजै आप ।
मन वछित ओ छै मदन, मन कर करो मिलाप ।। १५२
आप जोड देष्यौ अवै, राषो प्रोहित रीत ।
औ वर दीनो गवरज्या, प्यारी करलै प्रीत ।। १५३
आलीजो छिब अगमैं, वर जोडी वापाण ।
प्रीत करीजै पदमणी, अवर नही अवसाण ।। १५४

प्रोहितजीनै हीरां कागद लषते

दोहा— हीरा मनमैं अति हरप, कागद लिषो प्रबीन ।
समाचार विध विध सकल, नागर हेत नबीन ।। १५५

१३ वारता— केसरी वडारणै हीराका हाथको कागद ले गमण कीनो, राधाकृष्ण पवासका हाथमैं दीनो। केसरी भणै छै, राधाकृष्ण सुणै छै।

केसरी वचन

दोहा— कहैत वडारण केसरी, राधाकृष्ण सुणत ।
मालुम कर माहाराजसु, तन-मन कागद तत ।। १५६

कर जोड्या राधाकृष्ण, प्रोहित अरज प्रकाम ।
कागद नजरचा कर दीयो, हीरा हेत हुलास ।। १५७

१४. वात– राधाकृष्ण पवास अरजको हुकम लीनु, कागद प्रोहितकै हाथमैं दीनु। वगसीराम वाचै छै, मन मोद राचै छै। हेतको प्रकार, कागदका समाचार।

दोहा– हीरा यम लषियो हरष, करस्या पूरण काम ।
विध विध कागद वाचज्यौं, रसिया वगसीराम ।। १५८
वणियाणी चातुर घणी, आपतणी आधीन ।
विध विध कृपा कर मो घरै, आज्यो विलव न कीन ।। १५९

प्रोहित वचन

दोहा– पर घर करा न प्रीतड़ी, प्रोहित वचन प्रकास ।
दापा म्है छा काच दिढ, रमा न धिय्र रत रास ।। १६०
वोल सुणत तव केसरी, हीरा अग्र विहार ।
कहियां वन मलाय का ··· ··· ··· ··· ।। १६१
प्रोहित सुरभै प्रेमसु कर गहै मालुम कीन ।।

१५ वात– दूसरो समाचार प्रोहितनै वचायो, मदनमैं छायो, कामदेव दरसायो ।।

हीरां वचन

दोहा– यम फद फसिया प्रगट, कसमसियेव सुकाम ।
घर वसिया आयो घरां, रसिया वगसीराम ।। १६२
सिरपै वारू साहिवा, प्यारा तन मन प्राण ।
मो सुगणीरा महलमैं, रहज्ये प्रोहित राण ।। १६३
हसज्यो कसज्यो षेलज्यौ, लीज्यो जोवन लेह ।
पलक न न्यारा पोढज्यौ, नाजक धणरा नेह ।। १६४
आप नही जो आवस्यो, हीरा कवण हवाल ।
महिला पदमण माणज्यौ, जोडीतणा जलाल ।। १६५
आप नही जो आवस्यो, रसिया प्रोहितराय ।
आपघात मरस्यु अवस, मरू कटारी पाय ।। १६६

१६ वात– यण प्रकार कागद प्रोहितनै वचाय्यो, समचार वाचता हरष आयो। प्रोहित मिलापको वचन कहै छै। केसरी वडारण हेतका कांन दे छै।

प्रोहित वचन

दोहा– कह दीजे तु केसरी, साचा वचन सुणाय ।
हीरां हुदा महलमैं, आज्ये रमाला आय ।। १६७

केसरी वचन

दोहा– हीरासु कही केसरी, विध विध निसचै बात ।
हीरा प्रोहित हेतसु, रग रमासी रात ।। १६८

१७. बात– केसरी समाचार भणै छै। हीरा हेत कर सुणै छै। प्रोहितजी महला आसी, तोनै रगकी राते रमासी। ईतरी वात हुई—प्रोहितकी असवारी सहैलियां वाडी गई। हीरा पणि आपकै महल प्राप्त हुई। हीरा झरोषै वैठी छै। सहैलिया वाडी कानी जोवै छै। अवै तो सूरज्य असतग हूवौ छै। पुजारी पुजा करण मदर परसै छै, अब तो सभ्या दरसै छै।

अथ सझ्या समै वरणन

छप्पै– अव सूरज्य आथम गहर सुनो बति गजिये,
मदर सभ्या समय सषधूनि सजिय।
चमकत घर घर दीप मोद सजोगन मडत,
कलवलाव कोचरी तीषसुर घुघु तंडत ।।
जव कवल कुद विछुडे चकव, इधक चद छवि उडगनिय।
उदयापुर सागर अवर, कहर प्रफुलित कमोदनिय ।। १६९

दोहा– इण विध सूरज आथयो, पुरकर चद प्रकास।
अव वरणत सोभा अधिक, हीरा महल हुलास ।। १७०

अथ हीराका महलको वरनन

छद जात पधरी– वणि महल मपतप म[ड] गगन वाट,
कण हेम जटत चदण कपाट।
ऊतग झरोषे वण अलग, पट पाट जरी पडदा प्रसग ।।
विद्रमी थथ[भ] अनेक वान, वण बिब्रध रग जाली बितान।
उण बीच विछायेत नरम अग, रेसम दुलीचा चादणी रंग ।।
छिव हेम रग चित्राम बध, सरसंत झपट नाना सुगध।
चहु वोर महिल छिव रग चोज, मानु अनग असमान मोज ।।
ढोलियो मद्ध चंदण सुढाल, बिद्रमी ईस सोभा बिलास।
रेसमी बणत कोमल सुरग, प्रतिफुल गध सज्या प्रसग ।।
मिसरु गलीम गदरा मसद, सज्या कसत विध विध सुगध।
विछयु प्रजेक सोभा विराज, सुष सागरको मानु समाज ।। १७१

दोहा– यण प्रकार सोहत महल, दमकत छवि ऊद्योत।
दीपग लग प्रतिविंव दुत, हिलमल जगमग होत ।। १७२

अथ हीरा आभूषण आरभते

दोहा– आभूषण आरंभयो, केसर मजण कीन ।
प्रोहित मरावा पेमसु, आतुर होत अधीन ॥ १७३
मजण नीर गुलाब मिल, केस पास मुकरात ।
वैणी फूल सुगध वर, लेपत मन लोभात ॥ १७४
तिलक तेल तबोल मिल, द्रग अजन ऊदार ।
ललित मुकत पाटी अलष, मिल सुगध सुकमार ॥ १७५
मुगत मग सिंदूर मिल, कनक फूल छिब कीन ।
मज तिलक छबि चदमणि, पकज वदन प्रवीण ॥ १७६
करण फूल मोती कनक, जगमग नगमणि जोत ।
लटकत मुकट लिलाट लै, उडगन छवि उद्योत ॥ १७७
म्रगमद कुकम चद मिल, द्रग अजन छवि दीन ।
नकवेसर झमकत किनक, नाग पान मुष लीन ॥ १७८
कज कठ त्रेवट किनक, परस लील मणि वोत ।
मुकता माल बिद्रुम विमल, उजल हीर ऊदोत ॥ १७९
सपत लडी कचन सुभग, हास हार सुहेल ।
नवसर कण नव रगके, चोसर फूल चमेल ॥ १८०
चद्रहार ऊपर चमक, कचु[क] जरकस कीन ।
दमकत कूदण धुगधुगी, नग प्रतिबिंब नवीन ॥ १८१
कामल भुज अणवट किनक, वाजुवध बिचार ।
कीय चुड नग जुत किनक, कर ककण झणकार ॥ १८२
पहुची नग विध विधि प्रगट, पान फूल परकास ।
लालरग महदी ललत, अदभुत नख ऊजास ॥ १८३
किनक मुद्रिका वज्रकरण, दुत सोभा दमकत ।
हाव भाव पोसाष हित, चपलासी चमकत ॥ १८४
ललवत किनक सहेलडी, विमल करत बिहार ।
नील जरी अवर लुकी, करत विवध झूकार ॥ १८५
छुद्र घंटका अधक छव, कटि प्रदेस दुत पुज ।
पग नूपुर पायेल प्रगट, गत मुराल धूनि गुज ॥ १८६
विमल किनकके विछये जावक पग थल जोप ।
लाल नषन मैदी ललत, अरध चंद छबि वोप ॥ १८७

पावपोस मोती प्रगट, गणवत मनु गयद ।
हीरा प्रोहित मिलन हित, ऊर ऊपजत अणद ॥ १८८

छद पधरी– आभुषण तन झमकत असेष, वण अग सग सोभा विसेप ।
बिवध रग रग पोसाक वृद, अतर फुलेल चिरचत अनद ॥
केसर कसतुरी मिल कपूर, निरमल तन चदन बिरचत नूर ।
परमल अनेक मजन प्रसग, रभादिक सोभा रूप रग ॥
अपरग सषी केसरी आय, दीपक जोति दरपण दिषाय ।
हीरा मन अति कीनू हूलास, प्रोहित प्रचड मिलवो प्रकास ॥
मदनातुर हीरा मन मलाप, वर प्रोहितकी सगम वयाप ।
ललिता ज भई बस कामलीन, केसरी बडारणन बदा कीन ॥
वाडियां केसरी कर विहार, प्रोहित मिलबो मन मोद प्यार ।
अब कह वचन रस बस अनेक, हीरा मिलाप हित हेक हेक ॥ १८९

दोहा– अरध निसा आई अली, प्रोहित प्रेम प्रकास ।
हीरां मिलवा हेतकी, वाता कहत विलास ॥ १९०

केसरी वचन प्रोहितजीसूं

अरज करू चालो अबै, आपतणी आधीन ।
कामातुर हीरा कह र, दुष पावै छै दीन ॥ १९१
चकोर चाहे चदकू, मोर चहै घण मड ।
हीरा चाहे आपकू, प्रोहितराये प्रचड ॥ १९२

१८. बात– साहिब जेज न कीजै, रमिया भवर वेग पधारीजै । कोडे महोरकी राति जावै छै, हीरा पणो महलम येकली दुष पावै छै ।

प्रोहित बचन साथकासु

छप्पै– प्रोहित यण प्रकार साथनै बात सुणाई,
हीरा मिलबा हेत अरध निस दूती आई ।
हरषण मिलण हुलास चाहै अब अवसर चुकत,
मुरछैत नारी महल मदनजुर प्राण स मुकत ॥
दिलको न कोई जाणे दरद, मुव्रत नही नारी मरद,
फिरै बव(च)न पाछो फरक, यु नहचै कर भुगते नरक ॥ १९३

अथ प्रोहित हीराको महल गमण आरभते

दोहा– हय चढियो परघय हुकम, चाकर लियो सु चंग ।
माणीगर रसियो भवर, रग प्रोहित रग ॥ १९४

असवारी हद वोपियो, बणियो नीलबिडग ।
अधूल्यौ छवि इद सो, रग प्रोहित रग ।। १६५
कमर कटारी असी हथा, आयुध बिबध अभग ।
चकाधूत कैफा चढचौ, रग प्रोहित रग ।। ६६
हीरा मदन बिलास हित, अति मनमै ऊछरग ।
बचनको बाँध्यो बहै, रग प्रोहित रग ।। १६७
वहत अगाडी बीर वर, सेवो चाकर सग ।
दारण चाल्यौ चित निडर, रग पिरोहित रग ।। ६८
सहर कोट आयो सिधर, ऊतगत ऊनाड ।
दरवाजा मगल दुगम, किलफा जडी कवाड ।। १६६
दरवाजै प्रोहित दूगम, ऊभौ जोम अनत ।
चाकर सेवो केसरी, नासकमैं निकसत ।। २००

१६. बात– प्रोहित मनमैं बिचार करै छै। कवाड टुटै न घोडो कुदावाको दावा रै छै। प्रोहितका मनमैं दाव आयो, नीलबिडग घोडानै कोटकी सफील कुदायो ।

दोहा– दावत अतबल कूदियो, तूरत सफील तुरंग ।
ऐल नही असवारनु, कुद्यो जाण कूरग ।। २०१
वेग तुरगम अति विहद, प्राक्रम तन भरपूर ।
गढ सफील झप्यौ गिगन, लफ्यौ जाणा लगूर ।। २०२
नीलबिडग कुद्यौ लहर, प्रोहित मन हूलसत ।
कर जोडी यम केसरी, 'षमा पमा' आषत ।। २०३

२०. बात– प्रोहित इण प्रकार घोडो डकायौ, हीराका महलकै झरोपै नीचै आयौ। सेवै चाकर घोडाकी वाग पकड लीनी, केसरी वडारणि हीरानै बधाई दीनी। हीरा केसरीनै वधाईमै नवसर हार दीनो। केसरी मुजरो कर लीनो। रेसमका रसा प्रोहित चढि आयौ, हीरा गवर पूजवाको फल पायौ। हीरा वार वार मुजरो कर हरप धरै छै, मोती मोहोर मुगियास निछरावल करैछै।

हीरा वचन

दोहा– रमस्या सेजा रग, रली, [करस्या] पूरण काम ।
आजि भला घर आविया, जोडीतणा जलाल ।। २०४
आजि भलाई आविया, रति पूरण अनुराग ।
दरस तमीणो देपियो, भलो अमीणो भाग ।। २०५
गहर प्रजक सुगध अति, प्रोहित मदन प्रकास ।
प्रोहत चितवत सदनमै, हीरा वदन हुलास ।। २०६

चातुर वोल्यो मुप वचन, आतुर हीरा आप ।
तिरपातुर मेटो त्रया, तनु मदनातुर ताप ॥ २०७
प्यारी आवो प्रजक पर, हावै भाव कर हेत ।
दपत रत रमस्या मदन, मन वच ऊमग समेत ॥ २०८

छप्पै– सुणत गवर सक्रमी झणण, आभूषण झमकत,
हाव भाव मन हरत दरस तानगो(पो)र भ्रमकेत ।
मधुर मधुर मुलकत अधर पुलकत अरण अति,
ललत विलोकत ललत चहत हित मत्र अधिक चित ॥
हीरा ऊमगत मन ऊलस, कसमसर स ऊर कामकै,
ऊभी सनमुप आयकै, रसिया वगसीरामकै ॥ २०९

दोहा– ऊभी सनमुष आयेकै, हीरा मन हुल्लसत ।
देष देप आनद अति, मद मद मुसकत ॥ २१०
प्रोहित रसक प्रजक पर, ललित अक भर लीन ।
चूवत अधर निसंक चित, डक रदनको दीन ॥ २११
हीरा व्याकुल थरहरत, चमकत डरत चकीन ।
वद करत रित मदन छिब, देप वदन हस दीन ॥ २१२
दंपत दरस प्रजक पर, सपत करत हुलास ।
हीरा वगसीराम हित, कद्रप मुदत प्रकास ॥ २१३
प्यारी पीव प्रजक पर, ऊलही उर अवलूब ।
मानुं चदन वृच्छ मिल, झुकी क नागणि झूब ॥ २१४

२१ वात– यू रगमै राति वितीत भई। हीराकी अवलाषा पूरण भई। रगमहलको समाज वणायो, प्राणपियारीनै रतिविलासको सुवाद आयो ।

वगसीरामजीको वचन

वगसीरामजी कहै छै—प्राणपीयारी अव डेरानै हुकम दीज्यै, प्रभातिको आगमरण छै जेजै न कीज्ये ।

हीरा वचन

दोहा– अरज करत हीरां अधिकै, वायेक प्रेम वषान ।
मो सुगणीनै माणज्ये, रग तणी छै रात ॥ २१५
प्यारा पलका ऊपरै, राषाला चित्त रीत ।
रातै घणी छै राजवी, प्रीतम अधिकी प्रीत ॥ २१६

प्रोहित वचन

प्रोहित प्यारीनै कह्यौ, प्रितष हुवो प्रभात ।
पुजारी मदर प्रगट, झालर घट बजात ।। २१७

२२. बात– बगसीराम कहै छै– परभात हूवो, मदर झालर घंटा बजायो । हीरा कहै छै – बालम, परभात नही, बधाई बाजै छै । अऊत घर पुत्र जायो । प्रोहित कहै छै -- प्यारी, प्रभात हुई, मुरगी बोल रही छै । हीरा कहै छै – कुकड़ा मिलाप नही छै । प्रोहित कहै छै – प्यारी, प्रभात हुवो, चडिय्या बोलै छै । हीरा कहै छै – बालिम, प्रभाति नही, याका आलामै सरप डोलै छै । प्रोहित कहै छै – प्यारी, प्रभात हूवो, चकई चुपकी रही छै । हीरा कहै छै–वालम, बोल बोल थाकी भई छै । प्रोहित कहै छै – दीपगकी जोति मदी भई छै । हीरां कहै छै – तेलको पूर नही छै । बगसीराम कहै छै – सहरको लोग जाग्यो छै । हीरां कहै छै – कोईक सहरमै चोर लाग्यौ छै । प्यारो कहे छै – प्यारो, हठ न कीज्ये, अब बहूत कर डेरानै हूकम दीज्ये ।

दोहा– रग रात बीती असक, अरुणोदय आभास ।
बन पछी बोलत विमल, पकज फूल प्रकास ।। २१८
अंक छोड प्रोहित उठयौ, प्यारी रहो प्रजक ।
हीरा मुछित पर रही, डसी भुजगम डंक ।। २१९
हिया पीतम परहरत, स्वातग भई सुभाय ।
भीर तबै कर अक भर, प्रोहित ऊर लपटाय ।। २२०

हीरां बचन

कर जोडी हीरा कहैत, अब कद मलस्यौ आप ।
एक घडी नै आवडै, तनकी मटै न ताप ।। २२१
लारै मोने लेवज्यौ, आपतणी आधीन ।
आपं बना मरस्यू अवस, मरत नीर बिन मीन ।। २२२
वैले मिलीजै बालिमा, प्यारा तन मन प्राण ।
हिवडै राषू हेतसु, रसिया प्रोहित राण ।। २२३
मो मन मलियो वालमा, कहुक प्यारा कत ।
दीसत यक सम दूधमैं, मानु नीर मिलत ।। २२४

प्रोहित बचन

दोहरा–बिलकुल बोल्यौ मुष वचन, रसियो बगसीराम ।
प्यारी साथ पधारस्या, जुदी नही यक जाम ।। २२५

प्यारी कर गह प्रेमसु, वचन दीयो मुष वाण ।
रहस्या भेलारा वयण, ईसटदेवकी आण ॥ २२६
अवै झरोषैं ऊतरचौ, वचन कथन वर वीर ।
चाकर सग तुरग चढि, रावत मघ मन धीर ॥ २२७
वणी सहैली बाडिया, आयो बीर अभग ।
वण वैठो गादी विमल, सुभट समाजत सग ॥ २२८

वात– अथ राणाभीम वगसीरामको मिलाप आरभते ॥

राणाको वरणन

दोहा– वुदयापुर राजै यवक, राणो भीम सुरिंद ।
सुभट समाजत सूरमा, आजत राजत ईद ॥ २२९

२३. वात– यण प्रकार राणो भीम, कीरतिको कीम, भोजतालाबिंद, चितको समद, आचारको ईद, सरणाया साधार, हीदुपति पातस्याह, यकलकको अवतार, महिमा अपार, यसो राणो भीम। जीको दरगामै येक समै बात आई, ढिकडीये अरज गुदराई ।

ढिकडीयाको वचन

वात– प्रतप श्रीदिवान, येक ढूढाड देसको प्रोहित आयो छै, सातबीसी असवार घोडां आडवर वणायौ छै। सहलिया बाडियामै ज्यौको ऊतारौ छै, कीरतको भारौ छै, अनेकानै रीझ मोजा करै छै मनमै हजूरेसूं मिलवाकी ऊमग धरै छै। दातारको दातार, झूझारको झूझार, हेला हमेर ईदको अवतार। वगसीरामनावे कहावै छै, मिलया हजूरिकीभी दाये आवै छै।

दिवानकोवचन

जब दिवान फूरमाई – म्हे भी मलस्या, देषणां स भुलणा नही, रूप, गुण देप(षा)ला, प्रोहितनै पेषोला। राणीजी हुकम कीयौ – प्रोहित वेग आवै, मिलवाकी मन भावै। यण प्रकार दीवान हुकम दीनो, छडीदारनै बदा कीनौ। चोपदार सहैलिया वाडी आयौ, सुभटाका साजमै प्रोहित दरसायौ। अधुलौ प्रोहित माजम कसुमा लैछै, परगहैनै फुलमदका प्याला दैछै। विघविघ षुबी कसबोई लगावै छै, अनेक प्रकार बला-धुकला उडावै छै। बगसीरामकी हजूरे छडीदार आयौ, मुजरो करे दीवाणको हुकम गुदरायौ ।

अथ छडीदारको बचन

वात– प्रोहित साहिब, अपनै श्रीदीवान याद करैछे, आनका मलवाकी मनमै धरै छैं, सुभटान साथ लीजै, सताब असवारी कीजै ।

प्रोहित वचन

प्रोहित प्यारीनै कह्यौ, प्रितप हुवो प्रभात ।
पुजारी मदर प्रगट, झालर घट वजात ।। २१७

२२. बात– वगसीराम कहै छै– परभात हूवो, मदर झालर घटा वजायो । हीरा कहै छै – बालम, परभात नही, वधाई वाजै छै । अऊत घर पुत्र जायो । प्रोहित कहै छै – प्यारी, प्रभात हुई, मुरगी बोल रही छै । हीरा कहै छै – कुकड़ा मिलाप नही छै । प्रोहित कहै छै – प्यारी, प्रभात हुवो, चडिय्या बोलै छै । हीरा कहै छै – वालिम, प्रभाति नही, याका आलामै सरप डोलै छै । प्रोहित कहै छै – प्यारी, प्रभात हूवो, चकई चुपकी रही छै । हीरा कहै छै–वालम, बोल वोल थाकी भई छै । प्रोहित कहै छै – दीपगकी जोति मदी भई छै । हीरां कहै छै – तेलको पूर नही छै । बगसीराम कहै छै – सहरको लोग जाग्यो छै । हीरा कहै छै – कोईक सहरमै चोर लाग्यो छै । प्यारो कहे छै – प्यारो, हठ न कीज्ये, अव वहूत कर डेरानै हूकम दीज्ये ।

दोहा– रग रात बीती असक, अरुणोदय आभास ।
वन पछी बोलत विमल, पकज फूल प्रकास ।। २१८
अक छोड प्रोहित उठचौ, प्यारी रही प्रजक ।
हीरा मुर्छित पर रही, डसी भुजगम डंक ।। २१९
हिया पीतम परहरत, स्वातग भई सुभाय ।
भीर तवै कर अक भर, प्रोहित ऊर लपटाय ।। २२०

हीरा बचन

कर जोडी हीरा कहैत, अव कद मलस्यौ आप ।
एक घडी नै आवडै, तनकी मटै न ताप ।। २२१
लारै मोनै लेवज्यौ, आपतणी आधीन ।
आप बना मरस्यू अवस, मरत नीर विन मीन ।। २२२
वैले मिलीजै वालिमा, प्यारा तन मन प्राण ।
हिवडै राखू हेतसु, रसिया प्रोहित राण ।। २२३
मो मन मलियो वालमा, कहुक प्यारा कत ।
दीसत यक सम दूधमैं, मानु नीर मिलन ।। २२४

प्रोहित वचन

दोहरा–विलकुल वोल्यौ मुप वचन, रसियो वगसीराम ।
प्यारी साथ पधारस्या, जुदी नही यक जाम ।। २२५

प्यारी कर गह प्रेमसु, वचन दीयो मुष वाण ।
रहस्या मेलारा वयण, ईसटदेवकी श्राण ॥ २२६
अवै झरोषै ऊतरचौ, वचन कथन वर बीर ।
चाकर सग तुरग चढि, रावत मघ मन धीर ॥ २२७
वणी सहैली वाडिया, आयो वीर अभग ।
वण वैठो गादी विमल, सुभट समाजत सग ॥ २२८
वात– अथ राणाभीम वगसीरामको मिलाप आरभते ॥

राणाको वरणन

दोहा– वुदयापुर राजै यवक, राणो भीम सुरिंद ।
मुभट समाजत सूरमा, आजत राजत ईद ॥ २२९

२३. वात– यण प्रकार राणो भीम, कीरतिको कीम, भोजतालार्विद, चितको समद, आचारको ईंद, सरणाया सावार, हीदुपति पातस्याह, यकलकको अवतार, महिमा अपार, यसो राणो भीम । जीको दरगामै येक समै वात आई, ढिकडीये अरज गुदराई ।

ढिकडीयाको वचन

वात– प्रतप श्रीदिवांन, येक ढूढाड देसको प्रोहित आयो छै, सातबीसी असवार घोडां आंडवर वणायौ छै। सहलिया वाडियामै ज्यौको ऊतारौ छै, कीरतको भारौ छै, अनेकानै रीझ मोजा करै छै मनमै हजूरेसूं मिलवाकी ऊमग धरै छै। दातारको दातार, झूझारको झूझार, हेला हमेर ईदको अवतार। वगसीरामनावै कहावै छै, मिलया हजूरिकीभी दाये आवै छै।

दिवानकोवचन

जव दिवान फूरमाई – म्हे भी मलस्या, देषणा स भुलणा नही, रूप, गुण देष(षा)ला, प्रोहितनै पेषोला। राणीजी हुकम कीयौ – प्रोहित वेग आवै, मिलवाकी मन भावै। यण प्रकार दीवान हुकम दीनो, छडीदारनै बदा कीनौ। चोपदार सहैलिया वाडी आयौ, सुभटाका साजमै प्रोहित दरसायौ। अघुलौ प्रोहित माजम कसुमा लैछै, परगहैनै फुलमदका प्याला दैछै। विधविध पुबी कसवोई लगावै छै, अनेक प्रकार बला-धुकला उडावै छै। वगसीरामकी हजूरे छडीदार आयौ, मुजरो करे दीवाणको हुकम गुदरायौ।

अथ छडीदारको वचन

वात– प्रोहित साहिव, अपनै श्रीदीवान याद करैछै, आपका मलवाकी मनमै धरै छै, सुभटान साथ लीजै, सताब असवारी कीजै ।

प्रोहित वचन

वात– प्रोहित कहै छै -- मैं तो ऊदैपुरकी गवर देपण आयो छो, म्हाकै मासरै वूदीमै चारण वपाण सुणायो छो । एक वार तो घरानै जावस्या, दीवान ईती कृपा करै छै तो फेर आवस्या ।

चोपदार वचन

चोपदार अरज करै छै – दीवान तो आपसु मिलवाकी आजी धरै छै । दीवाणनै आप राजी रापस्यौ, मिलायकी दापस्यौ ।

प्रोहित वचन

जो दीवान मिलवाकी धारमी तो आजि जगमदर पधारमो । पीछोलै पेपाला, दीवाणनै भो देपाला ।

दोहा– जगमदर जगनीवाममै, जुगत आवै जो दीवान ।
प्रोहितराण मिलायकै, प्रगट कह्यौ प्रमाण ।। २३०

दीवाण जगमदार पधारवाकी असवारी वरणन

छडीदार वचन

छद भुजंगी– धर(रे) वात निरधारर छडीदार ध्यायौ, अवै सानकुल दरवार आयौ ।
कह(हे) राण भीम(मो) कहो वात कैमे, उचारी दुजाती सवै तु(तू) ऐसे ।।
छडीदार वोल्यौ सुणौ भीम वात, दिवाण मलापं मगेज दुजात ।
प्रथीनाथ आपे पीछोलै पवार, जग(गे)मदर राम राम जुहार ।।

राणो भीम वचन

तवै भीम वोल्यो सुणौ वेगताम, अवै जेज कीज्ये नही येक जाम ।
जग(गे)मदर आज तो वेग जोहै, मन(ने)मान दान दुजात(ती)विमोहै ।।
तवै चोपदार फरचौ वेगताम, जणायो सुभट(ट्ट)चलो जामजाम ।।
फुवै राण भीम फुर(रै)माण फेर, वज्यौ दूक धूसा कर नाल भेर ।
जरी तारपट(ट्ट)पुलै भडचड, विपचित्र मनै पहोद व यड(यड) ।
रचै स्याम लीला गज(जै) ढाल रुंड, पट आवृत रेसमी भूल पडं ।।
सन वीर ऊतग ततै तुरग, सुभ हीरहार वनाथ(थ)सुरगं ।
लसत नग पाटहेम पलान, मन(नं)मोद मानै चढैतै विमान ।।
रचै चदन के जट हेम(म)रथ्र, अदू तारपट(ट्ट)लपेटत मथ्र ।
रसे रमम हेम रजु टरावै, मन वेगवान वन घोप मावै ।।
पुलै जोत नग जट(टे)हेम पास, लसै पालकी रग रग विलास ।
थटै नेप नेप छडीदार थड, चमकार हेम जटे डड चड ।।
विभूपत्त अग्र वर(रै)दार माल, रचै मजघोप नकीव रस्याल ।

हलै वेठ भीमग जरी तार पट(ट्ट), झुकै चामर सेत सोभा, झपट(ट्ट) ॥
मनु वद(द्द)ल हेमको छत्र मंड, दमकार वज्र कण सोभ डडं।
चल्यौ भीमराण समाज(जै)बिचित्र, नट(टै)नाये(य)का रगराग निरत्रं ॥
दहू धा वजे ताल भेरी म्रदग, रचे आर भीतसिक(का, कै) रंगरगं।
विमु(भू,मू)पत्त शस्त्र पन(नै,ना)जोधवृद, करै क्रीतकी हाक भद्र कवद ॥
उडै हैमर पोड रज आपड, तट व्योम भासी ढक्यौ मारतड।
थटै सग लीनै सवै सेन थाट, घुमडे पीछोलै गई वीर घाट ॥
नरिंद तवै वैठयू नीर नाव, सुभट(ट्ट) हजूर सवै सग भावै(व)।
जग(गै)मदर प्रापत(ते)ईद्र जैसै, अत(ती)सोभमान विराजत्त एैसे ॥
मिलेयू चहू गा महानीर मड, चलै मच्छ कि(की)लोल लोल प्रचड ॥२३०

दोहा– सगता चाडा सग सभट, यम जगमदर आय।
विवध बिछायत भीमवर, वैठे सभा बनाय ॥ २३१

अथ जगमदर जगनिवासको वरण

जाति पघरी– उपत जगमंदर जगनिवास, पर दोहनको सोभा प्रकास।
वण थभ लाल विद्रूम वसेस, अतरग रग पथर असेस ॥
ऊतग षभ सोभा अतूल, द(दी)पत लपट रेसम दुकूल।
गयदत किरम छिव रग रग, सोभा वितान जर तार सग ॥
वरण त्रिवध गोप जालीन वृद, छित्र चित्र काच मकरद विंद।
ऊतग झरोपा गिगन वक, वण छाजा तिखण घनक बक ॥
वण पडदा छटकत विवध रग ।
पुलकठ जडत मोती प्रसग, अतरग रावटी छिव ऊतग ॥
सोभत क वैंलगिरि किनक अग, थित माल सुगधन फूल थाट।
कुदन चित्र म चदन कपाट, वण वाग तेरावर विध विघान ॥
पर गहर सपा फल फूल पान, जप ओमन बेली गहर झूड।
मिल पवन सुगधन फूल '', झकार ससट गण अग भूल ॥
मिलकोर पिक है तडत मयोर, सुर चकव कपोतन बिबध सोर।
यह विध जगमदर जग निवास, परस पर विमल सोभा प्रकास ॥ २३१

दोहा– होद नीर चादर वहत, अरु फुलवा दिस वोय।
सुप समाज सोभा सरस, जगमिंदर द्रग जोय ॥ २३२

छप्पै– जगमिंदर इम जोप राण भीमेण त्रिराजत,
ऊछव कर्त अनेक सुभट थट स्यघ समाजत।

दाषे हूकम दीवान वगसराम वुलायेहु,
मन मानत मिलाय जेज नै वेगा जाय हू ॥
जव पीछोला ऊपरै, चोपदार नावक चले,
विवध महैली वाडिया, माहावीर प्रोहीत मिलै ॥ २३३
चोपदार सुण वचन प्रोहित ऊसम,
सज पुनीत पोसाप किनक सनाह भलकस ।
ढाल षस पडगवध कट षूव सुभट थट आवध सगम,
भीमराण मेटवा तामस चढ चल्ले तुरगम ॥
मालम अषड नवषड मय, अनमी धिर प्रचड अत,
मारतड भल हरत मुप प्रलब भुज डडवत ॥ २३४

दोहा– प्रोहित अव चाल्यौ प्रगट, सुभट लिया षण स्यघ ।
वीर घाट प्रापत भये, अतवल वीर अभग ॥ २३५
चाले नाव जिहाज चढ परघ सग प्रचड ।
जगमदर आयौ जबै, अनमी मगज अषड ॥ २३६
दरगहै राणा की दरस, अनमी प्रोहित अग ।
मानु जुथ गयदमै, आयो स्यग अभग ॥ २३७

२४. **वारता–** यण प्रकार राणाकी दरगामै सुभट समाजसु प्रोहित आयौ । जिण प्रकार सुण्यौ तिण प्रकार दरसायौ । तवै राणै प्रोहितनु नमसकार कीनो, तवै प्रोहित राम राम कीनो । तव राण रोस कीनो – आसरीवाद कु न दीनो ।

प्रोहित वचन

वात– प्रोहित कहै छै--अनमी छू, रूघवस वना ओर नरवर वना नमु नही । आपका सीस पर पेलु, औरनै हाथ माडू नही ।

राणा वचन

तव राणो कहै छै – अनमी पणो तो माहानै चाहिज्ये । यू आप ब्राह्मण छौ, आपनै क्यू ?

प्रोहित वचन

आप जाण्, मो ब्राह्मण नही । जोध विद्याको साधिक, ईसटकौ आराधिकै छु सही ।

राणा वचन

जोधवद्या छिग्रीवममें छै, जिका महाभारथमै कैरवा पाडवा दिषाई ।

प्रोहित वचन

माहाका वसमै द्रोणाचार्य्येजी हूवा, जिका वा वना वानै किण पढाई ?

राणा वचन

छित्रीवसमै म्हाकै छ चक्रच (व)रती हूवा, जिका प्रथवी जीत लीनी ।

प्रोहित वचन

माहाका वसमै श्रीपरसरामजी हुवा, जिका ईकईस बार प्रथी नछत्री कीनी ।
वगसीरांमका वचन सुण राणै भीम रोस कीनो, मनमै अहकार आण यो जबाब दीनो ।

राणा वचन

दोहा– क्रोध कर राणौ कह्यौ, दल बल लेऊगा देष ।
ऊदय्यापुर बधा अवस, पकडी जो हद पेष ।।

प्रोहित वचन

प्रोहित बोल्यौ दिल प्रघल, आप जतन बाधो दीवाण ।
ऊदय्यापुरकी बाधु अवस, पकड़ पकड़ूलो प्रमाण ।। २३८
रतनावत दिल रोसमैं, प्रोहित चले पयाण ।
वचन वचन वांधी विथा, जग्यौ अग्नि घ्रत जाण ।। २३९
चले प्रोहत नाव चढि, ध्यावत क्रोध अधीर ।
सुभट सजोरा संगमै, बाडी आयो बीर ।। २४०

छप्पै– चढे रीस चष चोल मुछ मिल भ्रगट अमावत,
अषाडै पर आय जाणैं जौगेन्द्र जगावत ।
कोप्यौ भीम कराल कना जमजाल क्रोधकस,
जगी सो(से)र ढिग ज्वाल इण विध प्रोहित उसस ।।
क्रोड बात नही चूकस्यू, सुणलीजो साची सुभट,
ऊदयापुर बधा अवस, पकडाला भुजबल प्रगट ।। २४१

राजपुता बचन

दोहा– प्रोहित राण प्रचडका, सुभट बोल यक संग ।
बध पकडस्या वीरबर, जुटस्यां षागा जग ।। २४२
कर जोडी सुभटा कह्यौ, आज असाढ अभंग ।
सावण स लेस्या सही, तीजा चाढ तुरग ।। २४३
भली बात प्रोहित भणै, तीजा तणै विवार ।
पकडाला वधा प्रगट, सव देषत ससार ।। २४४

२५ वारता– इतनै प्रोहितजीनै सिवलाल धाभाई कहै छै – आज तो तीजा आडा पचीम दन कहै छै । माहाकी आ अरज छै – सिवाणी गावै छै । वो हू पाघडी-वदल भाई छा । काम पडयां मेहे(म्हे), वै जावा आवा छा । सो वडो धाडवी

छै। म्हाकै र ऊकै बचन गाढौ घणो छै। ऊमै काम पडचा तो हु जाऊ, मैमै काम पडचा वो आवै। लापा बाता रहै नही, ऊ ईसोईज छै। ऊधारा झगडाको लेबा वालो छै। भारथको भीम, सूरमाको सीम। केबियाको काल, नगी किरमाल। नेक बषत तमाण, देषते षबरियाण। जाक समसेर दसु देख सका, पाधरा सु पधरा, बकासु त्रिबका। झगडेकी अरदास्त, सस्त्रूका अभ्यासत। प्राक्रमका प्रथीराज, बुधिका समाज। सोरका जोर कवारी घडारा यारु का यार। आडू ते आडा, ऐसे नागर सिवाणी बज्रकी ढाल, जैजै रावै बाहाद्र षलुका नाटसाल।

दोहा– कटक बिकट घण थट किया, घोडा घमसाणीह।
राव बाहादुर राजबी, सुर ईंद्र मिवाणीह ॥ २४५
राव बाहाद्र सुभट रग, बाच घण बाषाण।
पर घट षेलै सीस पर, है झैले अस प्राण ॥ २४६

२६. वारता– यू राव बाहादरनै कागद लषीजै, हलकारानै बदा कीजै। प्रोहित राणाक ऊदैपुरमै नोप-चोपै हूई, जिण वातको कागद सिवाणीनै लष दीनो, गीर-धारी हलकारानै बदा कीनो। प्रोहितनै सिवलाल कहै छे– अब तो गिरधारी हलकारो बाटा बहै छै। सो अठै ऊदैपुर आये राणा झगडा ऊपर आसी। लापा बाता टलै नही। अगजीत षागा बजासी। अब गिरधारी हलकारो सिवाणी गयो छै। प्रोहितको कागद रावनै दीयो छै। राव कागद बाच परगहैनै सुणायो छै।

परगह बचन

परगहै कहै छै बडो अवैसाण आयौ, रावनै सूरवीर जाण कागद पढायौ।

राव बचन

लाषा बाता ऊदैपुर गया राहाला, मेवाडाका रजपुता सु फूल धारा षेलाला। कैतो मेवाडानै चापडै पेत मारलेस्या, जै आपा मरस्या तो प्रोहितजीकै अवसाण अपछैरा वरस्या। यू बात करता दिन असतग हुवो। राति बृतीत-मान हुई। सूरजको प्रकासमान हुवो। रावै कटकनै कहै छै– ठाकुरा, जेज न कीज्ये, ऊदैपुर दूर छै मनमै विचार लीज्ये। बला धोकला करीजै, घोडा काठी धरी लीज्ये। तब सारै साथ बणा कर लीनी। चरवादार घोडा काठी धर लीनी। इतै नगारची नगारै चोभ दीनी और कटकानै तो कोट तालकै कीना, सात बीसी पायर हित साथ लीना। घोडाकै तो सछी पाषर अवारकै बगतर, टोप, झिलम जरै च्यार आनी दस्ताना चलितै, इतरा समाजकी सिलै सरब असवाराकी पा, राव चढचो। रावका रजपूत कैसा ? वैता कालकी चालकू पकडै ऐसा। रावका रजपूत, जगमै मजबूत, आवधाम कडा जुड, अडाभीडका ओनाड, षलाका विभाड, नाहरा पछाड।

रावका रजपूतका बचन

दौहा– हक मल हल हुकलँ, घुरँ नगारा घावँ ।
गढ उदैयापुरपँ गवँण, रचँ वाहदर राव ।। २४७

छप्पै– रचे बाहादर रावँ गवणत्र वाट गरज्ये ,
चढे कटक थट चलँ करण भारत स कज्ये ।
अडा भीड आवधा करी वगतरां पणकत ,
वेग भ्रगाटा वहत भिड ज फोरणाट भणकत ।।
ससत्र हजारा सु लिये, भला सजन मन भावियौ ,
सीवांणीपति सूरमो येम उदैपुर आवियौ ।। २४८

दौहा– हलकारा मालुमँ करी, प्रोहित सुणी प्रचंड ।
सात वीस सुभटा सहत, आयौ रावँ अषड ।। २४९
सुभटा थट सनमुष मले, प्रोहित कर अतप्रीत ।
रावँ भला आयौ किधू, रापण पणवृत रोत ।। २५०

२७ वारता– प्रोहित कहै छै–रावत भला आयो, मोयर चाकरीरो हुकम दीज्ये ।

रावँ वचन

रावँ कहै छै– या चाकरी सहरँ वारँ गवर छै, वधा पकडज्ये ।

प्रोहित बचन

राव ठीक फूरमाइ, मेवाडा नै तरवारचा मार बंधा पकड लेस्या । लाषा वाता चूकस्या नही । रांणा भीमको ऊदैपुर तिणकी आबरू पाड घोडा ताता षड़स्या । लारँ वरा पूगसी तो वासु भी फूलधारा षेलस्या ।

रावर बचन

प्रोहित घणा रग छै । आप जमाषात्रे कीजै । झगडाको काम पडिया म्हाकी भी हाजरी लीजै । यण प्रकार प्रोहितकँ, रावँ बाहादरकँ वतलावण हूई । राव बाहादर चोगानमैं डेरा दीना । प्रोहित आ[प]णी सहलिया बाडी छोड बाहर डेरा कीना । चाकर घोड़ा बाधवा वास्ते मेषापर मेषचा वजावँ छै, अगाडी-पछाडी घोडा अटकावँ छै। दोनुही सिरदाराकी वछायेत, जाजिम चादण्या छटक रही छै। रसोईदार रसोईकी सजत कीनी छै। नैम स्यामके वषत रजपूताको मुजरो मोहलँ लीनो छै। त्यूक आयौ। हीरा लषियो–राणा भीमकँ, आपकँ नोष-चोष हूई छै। राज्ये ! हू तो अवँ हूकमकी चाकरँ छू । आप मोनँ काई फूरमावो छौ ? हीरा कागदमै समाचार साथै चालवा का लषिया, प्रोहित परषिया ।

दोहा– हूतो चाकर हूकमकी, दुषी घणी छू दीन ।
लारै मोनै लेवज्यो, श्राप तणी श्राधीन ।। २५१
धन जोवनका थे धणी, तन मन श्ररपू तोय ।।
साथि लीज्यौ बालिमा, मति बीसरज्यो मोय ।। २५२
श्ररज लिषी छै वालिमा, मानज्यौ मेरी ह ।
साथि चालु साहिबा, चरणाकी चेरी ह ।। २५३
प्रोहित ममत पछाणियो, जोडी हदो जोये ।
मत बीसरज्यौ बालमा, मर जाऊलो मोये ।। २५४

छप्पै– मरत नीर विन मीन श्राप विन मो दुप ऐसौ ।
व्रच्छ वना बेलडी कहो श्रवलवन कैसौ ।।
रसिया प्रोहित राण लोयेणा श्रति हित लागै ,
रहस्यु दासी रीत श्रापकी राणी श्रागै ।।
परगट मोन पकडज्यौ, कर लीज्यौ तन वध कस ,
वामि(लि)म मति बीसरज्यौ, श्राप बना मरस्यू श्रवस । २५५
प्रोहित लपियो प्रगट श्राज तीजा श्राडवर ,
साघ(ध)ण कामण सुषद श्रग श्राभूपण श्रवर ।
तीजा ऊछव ताम गावै त्रिय मगल गामी ,
पहर बषत पाछैलै श्राज पीछौलै श्रासी ।।
उण वषत श्राप सज श्रावैज्यौ, प्यारी वीरू घाट पर,
प्रगट तोनै पकडस्या, ये बाता रापण श्रमर ।। २५६
कर गवण केसरी चलत मन बात हरष चित ,
बणियाणी उर धार ऊमग श्राई सनमुष श्रत ।
हीरा पुछत हरष कैहो कैसी किम कीजै ,
कह्यौ श्रवै केसरी किनक सगार करीजै ।।
बीरू घाट कीनो वचन, मो तो येकण सग मिल ,
प्यारी साथ पधारस्या, श्रबलाषा पूरण श्रसिल ।। २५७
हीरा मनमै श्रति हरष बिवध पोसाष वनाई ,
तीज पहर तीसरै ऊमग पीछौलै श्राई ।
वीरू घाट बसेष केसरी सघ(ध) कहावत ,
प्यारी चाहत पीव षूटकन है जेज षटावत ।।
श्रछै उडीकत श्रातुरी, श्रतचचल जोवत गढी ,
प्रोहित श्राजि न पेषियो, तन तालाबेली चढी ।। २५८

दोहा– ऊदैयापूर निकसी गवर, तीज महोला ताम ।
अति आभूपण किनक पट, वण बण घण छबि वान ।। २५९

प्रोहितको र रावको पीछोल आगमण और हीरां बाध पकड़ जूध आरभते

२८ वात– अवै राव प्रोहित गवर देषबाकी असवारीकी तयारी कीनी । पोतदारनै अमल गलवाकी ताकीद दीनी । दोनु सिरदार कहै छै– घोडा जीन कीजै, कमरचा सताव बाधे लीजै । सारै साथ मल चोगुणा अमल चढाया; ऊगाव कर सोगुणा जोस मैं आया । रावका, प्रोहितका चवदा बीसी असवार घोडा घमसाणरी छी, पाषर, बगतर, आवध, कडाजुड बणवाया । राव तो पवन-वेग नाम घोडै असवार, प्रोहितकै नीलविडग प्रकार । दोनुं सिरदाराको कटक चढ चाल्यौ । मानु श्री रामचंद्रजीको कटक लका ऊपर हाल्यौ ।

राव बचन

बात– राव कहै छै– बध पकड, झगडो कर पीछोलामै घोडा डकास्या, चवदा बीसी असवारासु मगरो ऊतर जास्या । यू वाता करता पीछोलै आया, वीरू घाट दरसाया ।

दोहा– प्रोहित हीरा पेषीयो, तीष नोष छिव तोर ।
दूपी तिपातुर देषिया, मानु घणहर मोज ।। २६०

२९ वारता–अबै हजारा लोग तीजका तमासगीर, आवधा मै कडा बीर प्रोहितकै मेवाडाकै घमचाल वाग्यौ, तरवार पडी सो पचास आदमी मेवाडाका काम आया। प्रोहितजीका साथमै चैन बूझाकडकै लोह लागा। हीरानै पकडी । हीरानै प्रोहितजी नीलविडग घोडाकी पीठ पर विसालाका वध आपक(कै) पाछै चढाई । अर परत काली घोडीको असवार गुजरगोड़ आजारकै पाछै केसरीनै वैठाई ।

राव बचन

बात– इतै राव वाहादर कहै छै– पीछोलै घोडा डकावो, नही तो झगडा पर लोग जुडेलो । आपानें भाजवाकी प्रतग्या छै, सो मरणो पडैलो । जेज न कीज्ये, घोडा डकाईजे । अवै चवदा बीसी असवार घोडा पीछोलामै डकाया । अणीरा भमर जगमदर आया । जगमदरको वाग बाढचौ । नगी तरवार,या(पा)णी-पथ घोडा पीछोलाकै पैला पार चवदै बीसी असवारासु मगरो उतर गया । हीरा पकडी, वाग बाढचौ, ऊदैयापुरमै अनोषी कर गया । अबै ऊदैयापुरमै भयानक कुक पडी । हलकारै राणानू मालुमै करी । प्रोहित, कोडीधजकी बेटीनै वध पकडी । राजका सलैपोस सो-दौसै तरवारचाकी धार काम आया । वै तो चवदा बीसी असवारासु मगरो चढ गया ।

छप्पै– भीम राण साभले कहर प्रजले कोप कर ,
मूछ भ्रकुटत मिले धूत चष चोल रग धर ।
कहत वचन कोपियो पिरोहत जाण व यावै ,
मान मार मेवाड जीत आपणी जणावै ।।
ऊमरावा ऊपर हूकम, अतराई कालि फेरिया ,
मेवाड धण थट मिले, स घाट ईण विधी रोकिया ।। २६१
ऊट चढै आकलो यम राईको आयो ,
चढचौ चढची मुप चवै विबध निज भेद वतायौ ।
वीर धीर वे(पै)दल चढै चहूँवाण च कारण ,
चढै नगारै चोट डेल वाडै झाला डारण ।
प्रोहित अवै पधारसी, अठै वणेली आवैता ,
चीरवो घाट अचाणचक रोक्यौ इण विध रावता ।। २६२
वा बात करता यतै पणि प्रोहित आयौ ,
चढै घाट चीरवै दूठ जबर दरसायौ ।
चढे नगारै चोट दोहू चढ़े कटक है ,
सवल चढे सूरमा चढे कायेर भये चक है ।।
चहूवाण इतै झाला अचल, ऊत राव प्रोहित ऊरडै ,
वीर हाक-घमच विषम, झुके वदूका सो कड(डै) ।। २६३
हणण माच हैमराण गणण घोषा रवै डूगर ,
षणण वाजया ज पाषरा धुज पूरताल धरणधर ।
ठणण वदुका ठोर गोलिया गिणण गिण गनगत ,
टणण धनस टकार भणण पर तीर भणकत ।।
सिंघवा राग समागमण गणण भेर त्रमक वज्रे ,
चीरवै घांट परचा पडै, विषम थाट भारथ वजे ।। २६४
धरण फोड धडै धडे गहिर गडे त्रमा गल ,
चोल रग लड चढे वीरवर रडे दोहू ह[य ?]वल ।
पवन मदगत पडी भाण रथ पडे णभुयण ,
जव ऊरड जोगणी जुडे नारद रण जोयण ।।
गरडी वदुक धाया, गिगन तीर सो क जडतडे ,
चीरवै घाट परचा पडै, जग थाट प्रोहित जुडे ।। २६५

अथ रावै बाहादर युधवरणन

छव जाते त्रोटक– अव राव वहादर कोप कियू, लन्कारत सेल त्रभाग लियू ।

तन भीड कडी र वगत्तर यू, करवार बाहादर राव किधू ।।
कर जोप जग्यौ सिवनेत्र किधू, भिड भीड भुवा रंन ऊभ रयू ।
गण देपत चडै(ड) गत (तै,त) थन यू, मा(म) नु कोप तै झुड मयदन यू ।।
अति क्रोध वी (वि) रोध म अगम यू, जवरायल जग्यौ क भुजगम यूं ।
वण घु (घू) धल जोग विकट (ट्ट)ण यू,
पर कोप उलट (ट्ट)ण पट (ट्ट)ण यू ।।
यम राव वाहादर कोपित तै, मिल सु(सू)र समागम युध(द्ध) मतै ।
तव ऊपडै(ड) वाग तुरंगनकी, धर हेमल योर ध्रमकत यू ।।
मिल पाषर होट ठमकत यू, रण रोप चढे मुप सूरन के ।
नर भीत दिनकर नूरन के, चष जोल सुरग चमकत यू ।।
दरसत क आग द्रमकत यू ... . ।
मिल राव वाहादर जोध मिल(ले), भिड भारथमे तरवारि भले ।। २६६

३०. वात– ईण तरै महाभारथको झगड़ो जुडचौ झगडाको भार सारो राव ऊपर पडचौ । अठ्याव को परधान ममदयारषा षेत पडचौ ।

अथ महमदय्यारषांको गीत

वागी घमचाल कटक दोहू ऐ वैल कढि किरमाल कराली ,
प्रलैकाल भिली उण पुलमै किलम तुरगत काली ।
वाज अट झुझ वलोवल वीजल षाग विलगे ,
राव तणौ प्रधान प्रघल रण भेडंता षल दल भगे ।।
जुड घमसाण ग्रीधणी जोवण वीर वषाण वजाडी ,
रंग पठाण मेवाड पर रूठौ विढ(ठ)के वाण विभाडी ।
पिसणा घणा तणा मद पाडे पतद-लोहा पूरा ,
पूगौ मैहमदषा ऊचै पद वरेगो हूरा ।। २६७

अथ प्रोहित जुघ बरणन

छंद जाते पधरी– कोप्यो क अवै प्रोहित कराल, जग्यौ क सोर ढिग अगन ज्वाल ।
छूटचौ क वान असमान छोहै, टूटचौ क घोष षण बीज तो है ।।
जग्यौ क मानु योगेंद्र जोत, दग्यौ क तोप गौला उदोत ।
रूठचौ क भीम चढे जंग रीस, फूटचौ क सिध जल धार कीस ।।
जौप्यौ क जग सुग्रीव जोध, कौप्यौ क अगहन हनुवत क्रोध ।
फूकार सेस पुछटचौ फूणद्र, विछटचौ क सिव जटा वीर भद्र ।।
यण भाति प्रोहित कोप अग, जवरायल सुभट मिल सग जग ।

ऊपडत बाग हैमर अपार, घजकत कढी त[र]वार धार ।।
बीजलियो पाडो इम बहुत बार, कर बीज मनु घण चमटकार ।
मुप मार ललकार मड, प्रकार भले प्रोहित प्रचड ।।
ईत रमै ससिरबाहू अमाम, राजत प्रोहित फरसराम ।
चहूवाण देव झाला सुचित, ईत राव बाहादर यद्रजीत ।।
मिल राव प्रोहित जुग समेर, घण थाट सुरगम सुभट घेर ।
चालत पागा दहू गा प्रचड, रण धार वीर कटै रुड मड ।।
बिछडत सीस घावन विघाटै, फरसी क अग्र तरबूज फाटै ।
ऊछलत भेजी मगज येम, तरलत दहडी फाटैत एम ।।
कुटत सीस तरवार तग, साहमी क रग छूटचौ प्रसग ।
घरा तुट भूजा तरवार घावै, वण राये साप पड बोज भावै ।।
छाती पर बरछी वहैत छेक, किचकार धार छवि रत्र पेष ।
दोहू तरफ बगतर फोड दीन, मानु तुछ कढचौ जलधार मीन ।।
तन फोड कारीय यार तस, बय फोडि सिला ऊकसत बस ।
किरमाल धार हेमर कटत, मनु आन हौय मिल धर बटत ।।
घण पाग जोध पछडत घावै, भभकत रैत्र परनाल भावै ।
जोगणी पत्र भरत्र जेम; अथांण दुहारी दूध एम ।।
मिल स्यभु झेलत रुडमाल, बगु षेलत लेवत बाल ।
जोगणी वीर नार्चत जेम, अदभूत कान गोपग येम ।।
मिल बीर कहैत मुष मार मार, नाचत हरष नारद निहार ।
झूझार मरत किरमाल जग, अपछरा माल पहरत अग ।।
मानत विवाण चढ प्राण पेष, लेषत गवण कर यदु लोक ।
झडपडत गिगन मग ग्रीध झुड, मुष लेवत गुद पल रुड मुड ।।
झडपडत घाव रत कीच भीन, मनु त(तु)छ नीर तडफडत मीन ।
यक पोहर वजी केवाण भाण, भारथ देष थभ्यो क भान ।।
अदभुत जग मडची ऊषेल, वड पडे पेत चहूवाण भेल ।
झाला पडिया घण पेत जघ, अब जीत्यौ प्रोहित बल अभघ ।। २६८
ईण राव वाहादर वडी रीत, जोधार पडचौ यण रग जीत ।

छप्पै— रण केते नर रहे जिते भड सनमुप जुटे,
चढ झाला चहूवाण फूलधारा तन फूटे ।
चमु घाट चीरवै विपम पग झाट बजाडे,
कायल भागे केते अवर घायल ऊवारे ।।

मेवाड देस प्रोहित मडे बर गला अभग यू ,
बिजैत्र मागल बाजिया जीत्यौ यण बिध जग यू ।। २६९

३१ **बात–** अठी प्रोहित, राव बाहादर, उठी चहूवाण, झाला, येक पहर तरवारि बही। हीरा अर केसरी वडारणे परबतकी किनरीमै रही। राव बाहादरका सिपाही भला लडिया, अर तीन बीसी असवार षेत पडिया। प्रोहितका भी रजपूत भला घमचाल बागा, पचास तो काम आया, पचीसकै लोह लागा। घोडो नीलबिडग काम आयौ, प्रौहितजी गरडादे घोडी असवार हूवा रणषेत सुझायौ। अब चादस्यघ वालै पोतो रसालदार काम आयौ। चैन बुझाकडकै लोह लागा, चहूवाण झाला भागा।

अथ गीत चाद स्यघ वालै पोताका

धु(घु)रेत्र माला मचायौ जगं मेवाड चीरवो घाट वुग्रो जिण ,
वेला कला नाग सौदे घीया राडा धार तीजो नयण।
ज्वाला सो जगायो जेम ससघू करालो, रूप आयो चाद स्यघ ।। २७०
बगी हाक दवा सुगो गोलिया,
ऊजाले म छुठै जगै क्रोधबान मह् वोला बीर जग।
मुकान दव धुलासै नगी षाग षला माथै तोप,
दगी गोला जिम भेलियो तुरग ।। २७१
चंद्रहासा षागाके प्रचडा झुड बीर चालै,
षुलै रुडमुडाके प्रजालै लोही षाल।
पोतरै बिहारी वालरि माथडाके पिछाडे,
करे सुर घीरा घा(घा)वा बिहडा कराल ।। २७२
षरे गोषालानु मार मडे फूल धारा षैत घरैगो,
विजैत नाम भूझार सधीर।
करेगो प्रतिरा पुर लोही धार छके काली वरैगो,
अपछरा वाल पोता माहावीर ।। २७३

३२. **बात–** सातसै असवार झालाका भी काम आया, अर पांचसै असवार चहूवाणा भी मरवाया। यण प्रकार प्रोहित झगडो जीत लीनो। उदैपुरको राणौ भीम मांहा सोच कीनो।

गीत प्रोयेतजीको

घरे घण कटक चीरवै घोटे चढि झाला चहूवाण ,
चढे प्रोहित राण बका रण चापडै वर बीजै।
षग झाट वीट्टे वेहू तरफां वाज वंदूका गुणियण स्यंघु गाई,

सुभ सीतकाल सकल, गरम ऊरज वामांगना ,
प्यारी प्रोहित ऊर लय करी सिघ्र मन कामना ।। २९०

अथ वसत रति वरणन

ऊसन धरण आकास ऊसन चल पवन असभवै ,
जल थल व्याकुल जीव पुन मग देत निरपिवै ।
प्यारी प्रीतम परस चदन चरचितै केसर मलत ,
" कपुर अवर किसतुरी अरचित ।।
छुटत फवारा कुसमाद छवि, अति सुगध छिडकत अवर ।
सुप समाज प्रोहित सरस, प्यारी हीरा महल पर ।। २९१

दोहा– यण प्रकार प्रोहित अठ, तन काल सुप ताम ।
नीत नवीन प्यारी नग्प, हरपित पूरण हाम ।। २९२
रसक वृतीकी सीत रुत, हीरा परम सुहाग ।
अव वसत आई ऊमग, फवते होरी फाग ।। २९३
तरवर पत चदण त, वा सरवर मानसोरोर ।
छव रुत पतकि यथक छैवि, यू वसत रुत ग्रौर ।। २९४
अपछरमें ग्रौर न यसी, रभा छवि मारीप ।
पटरुतमें नही पेपजे, रति वसत सारीप ।। २९५
गजत ईधक वसत रुत, तरवर मजरि ताव ।
वहै रत पवन सुगधवर, गहै रत फूल गुलाव ।। २९६
वन उपवन फूलत विपम, कवल फूल जल कीन ।
मन मोहत फुलवाद मिल, निरमल फूल नवीन ।। २९७
कज प्रफुलत मोभ कर, निरमल पुजत नीर ।
रजत मधुर सुगध कच, गुजत भवर गहीर ।। २९८
आवा पोहो रत छवि अधिक, निरपत सोभ नवीन ।
लाग्नत मोनत स्वर लता, कोयल पग धुन कीन ।। २९९
मानत फूल सुगध मिल, सीतल मधुर समीर ।
वन ऊपवन पछी विमल, कलरव कोकल कीर ।। ३००

होली का प्याल वरनन

हीरा मनमें अति हरप, सोहे प्रोहित सग ।
अभैराम देवर अवर, रमत फाग रस रग ।। ३०१
अवर त्रिया मिल येकठी, गावत होली गान ।
ऊडत गुलाल अवीर अत, अरण भयो असमान ।। ३०२

केसर होद भराय कर, आगण फाग असेष ।
नीर पतग गुलाब नवै, विध बिध रग वसेष ॥ ३०३
प्रोहित प्यारी षेल पर, अति भारी छवि येम ।
कर धारी सोभा किनक, पिचकारी रग पेम ॥ ३०४
कर हीरा डोली करग, भरत रग भरपूर ।
रसिया बगसीरामकै, नाषत सनमुष नूर ३०५
रग भरत प्रोहित रसक, अदभुत हास ऊदोत ।
पिचकारी लागे प्रगट, हीरा थरहर होत ॥ ३०६
प्यारी फाग बसत पर, रसक तपी वर साल ।
लसत गुलाल सूरगमै, लसत अग छवि लाल ३०७ ॥
वकि चितवन तन वदन, मोहत छवि सुकमार ।
भामण डारत रग भर, प्रीतम पर पिचकार ॥ ३०८
चदमुषी अगलोचनी, सक्रम चपल सभाव ।
झेली पिचकारी झुलत, डोली बाह म डाव ॥ ३०९
केसर अग्र कपूरको, मोहत कीच म काय ।
रग पतग गुलाब रुच, राती अगण राय ॥ ३१०
अभैराम हीरा अवर, लेवत झयर गुलाल ।
देवर भोजाई दोऊ, षेलत फाग खुस्याल ॥ ३११
घमकत पग घुघरा तडत दमकत ।
सोभा तन कड ककण झमकत ॥
रसक हस चमकरत दन वदन चद्र दिक(विक)सत ।
घरण रमझम छवि ध्यावत ,
कुमकुम जल भर कर गद्गुगत डोली फटकावत ।
पिचकारी यथा र पतग, जल धिर फिर भर भर चपलगत ,
भाभी देवर ईधक चित, रग भा(फा)ग होली रमत ॥ ३१२ *

दोहा– भाभी डोलत वहत भर, कर देवर पिचकार ।
ऊठ गुलाव धक वोल इन, धरण गिगन इकधार ॥ ३१३

---

* [वम] घमकत पग घूघरा कर ककरण झमकत ,
रसक हास चमकत रदन वदन चन्द्र विकसत ।
तन सोभा दमकत तडत घरण रमझम छवि ध्यावत ,
कुमकुम जल भर गड्डुगत कर डोली झटकावत ॥
पिचकारी यथा र पतग, जलधिर फिर भर भर चपलगत ,
भाभी देवर ईधक चित, रग फाग होली रमत ॥ ३०९

छुटत दडी गुलाव छिव, फुलकत ऊर फुर फाव ।
देवर मुष पर डोलचा, सटकत वहत सताव ॥ ३१४
देषत घु घट ओट दे, वकी द्रगनि विसाल ।
लीन वसत गुलालमैं, लसत अग छवि लाल ॥ ३१५
अभैराम हीरा अवर, हीरा भाभी हेत ।
षेलत फाग बसत गुल, लायक फगवा लेत ॥ ३१६
रमत फाग वीत्यौ रिसक, सझ्या समय प्रसग ।
प्यारीनै प्रोहित कहै, रमस्या अव रतरग ॥ ३१७
रग प्याल रा व्यापगत, रात वष्यात ऊमत ।
चद गिगन ऊडन चमक, सजोगण हुलसत ॥ ३१८
सुष सज्या सझ्या समय, रगमहल रस रीत ।
परमल फूल प्रजक पर, प्रोहित वैठ पुनीत ॥ ३१९

प्रोहित वचन

कए वडारणि केसरी, प्यारी महल प्रजक ।
रग रु(लु)टाला राज्येकौ, आज भरे कर अक ॥ ३२०

केसरी वचन

प्यारी राज पधारज्यो, हीरा ईधक हुलास ।
माणीजै रत रग महिल, प्रोहित मदन प्रकास ॥ ३२१

हीरा वचन

प्यारी चाहत महल पर, जिण रो ईतनो जीव ।
कहै तोनु किण विधि कह्यौ, प्रगट अमीणै षीव ॥ ३२२

केसरी वचन

चाहत वेगी इधक चित, जादा कवण जवाव ।
प्यारी वेगी महल य(म), स्यामा लाव सताव ॥ ३२३
विध विध कर कहियौ वयण, प्रोहित हेत प्रकार ।
प्यारी आव महल पर, अव वेगी ईण वार ॥ ३२४
वले येम कहियौ वचन, भेटाला कर भावै ।
महला पदमण माणस्या, ललिता वैगी लावै ॥ ३२५
आप पधारीजै अवै, जेजै न कीज्ये जोये ।
वाटा जोवै वालमा, महिला हेत समोय ॥ ३२६

हीरां बचन

पिचकारी मो ऊपरै, नाष्यौ भर कर नीर ।
षेलत डारचौ ष्यात कर, श्राष्या बीच [श्र]बीर ॥ ३२७
पिचकारी झटकत प्रगट, रटकत प्रोहित राये ।
श्रटकी नहै पट ऊतटै, सटकत श्राष दुषाये ॥ ३२८
पिचकारी धारा प्रगट, षटकत श्राष दुषेम ।
लाषा वाता महलमै, श्राज न श्रास्या ऐम ॥ ३२९
पिचकारी कत जोर पर, श्रत डारी भर श्रग ।
श्राज[न] महिला श्रावस्या, प्रोहित सेज प्रसग ॥ ३३०
गड गड दडी गुलावकी, प्रीतम जोर प्रकास ।
श्राज नही म्हे श्रावस्या, तन दूषत तन त्रास ॥ ३३१
गोटत गैंद गुलाबकी, चाली फर हर चोट ।
पटकी लगी कपोल पर, श्रटकन घुघट श्रौट ॥ ३३२
डोली झपटी डाव कर, रपटी पाप(य) गिरीन ।
जोये वाता श्रटपटी, कपटी प्रीतम कीन ॥ ३३३
कहै दीज्ये तु केसरी, निरमल बात निसा[ये]पे ।
लोभी मैं श्रोलष लीया, श्रत कपटी छौ श्राप ॥ ३३४
कर गमण तब केसरी, श्राई महल ऊदार ।
मन मगेज मुलकत मली, प्रोहित हेत प्रकार ॥ ३३५

प्रोहित वचन

कहै वडारण केसरी, प्यारी कठै प्रबीण ।
गुणसागर गजगरत, ललत काम लव लीण ॥ ३३६

केसरी बचन

राजतणी वा रायधण, मन कर बैठी माण ।
श्राज न महला श्रावसी, रसिया प्रोहित राण ॥ ३३७
पिचकारी लग[गि] पीवकै, सीतल भयौ सरीर ।
षटकत लोही षेलकौ, श्राष्या बीच श्रवीर ॥ ३३८
कहियो हीरा इम कथन, मद मद मुसकात ।
श्राज न महला श्रावस्या, रग न रमस्या रात ॥ ३३९
कह्यौ वडारण केसरी, हीरा माण श्रथाह ।
श्राप विना नहै श्रावसी, नाजक घणरा नाह ॥ ३४०
ऊतर श्रायौ श्रांगणै, ऊभो सनमुष श्राय ।

हाथ पकड हीरा तणो, रसियो प्रोहित राय ।। ३४१
कर पकडी इम कहत है, चद बदनी मुष चोज ।
प्यारी हठनै परहरो, महला कीज्ये मोज ।। ३४२
नरषो मो पर शुभ नजरि, कर मत हठ बे काम ।
प्यारी चालो महल पर, तन मन अरपू ताम ।। ३४३
अरज करू छू आपसु, निपट पियारी नारि ।
महिला चालो पदमणी, बाद न कीजै बार ।। ३४४
प्यारी सागर प्रेमका, मती करो हठ भा[मा]ण ।
रगमहला चालौ रमा, सुन्दर चत्र सुजाण ।। ३४५

हीरा वचन

बक भुकट बोली बयण, ऊभी हाथ ऊभाड ।
आज न महला आवस्या, राज्ये करू ली राड ।। ३४६

प्रोहित बचन

हीरा सुणज्यौ हेतकी, निरषत सनमुष नूर ।
प्यारी ऊभो हुकम पर, कर मत नैण करूर ।। ३४७

हीरा वचन

दिल कपटी मैं देषिया, अत बल ले ऊपावै ।
पिचकारो मो ऊपरै, डारी भर भर डावै ।। ३४८
कोमल तन पर जोर कर, मो पिचकारी मार ।
पैला कीऐ पीडनै, लावै नही लगार ।। ३४९
दाब कर बाही दडी, ताकत चोट सताव ।
अत कोमल मो अग पर, गड गड पष गुलाब ।। ३५०
गैदा छटक गुलाबका, नटता बायौ नीर ।
अग चटक थरहरत अत, आप्या षटक अवीर ।। ३५१

केसरी वचन

कहै वडारण केसरी, हीरा देपो हेत ।
पीतम वडो अधीन पर, माना बचन समेत ।। ३५२

हीरा वचन

लाप वात चालू नही, टालु नहै मन टेक ।
तपसी वालक और नृप, त्रिया हठ छै येक ।। ३५३

बचन अफटा बहै गया, अब झुठो अवसाण ।
ऊठ्या कर मन क्रोध अत, रूठ्यौ प्रोहित राण ।। ३५४

प्रोहित वचन

रुप गरबकी राजवणि, मत मेलज्यौ माण ।
ज्येज नही अब जावस्या, पर घर करे पयाण ।। ३५५
सामा भेटण सासरै, हरपत मन हुलसात ।
गढ बूदी करस्या गमण, रहा नही इक रात ।। ३५६
रहस्या बूदी सासरै, अब चालाला आज ।
मुझ बिणा यण महलमैं, रहज्यौ नीका राज ।। ३५७
ऊठ चाल्यौ घर आगणै, रूठ्यौ प्रोहित राण ।
नहै वोला इण नारिसु, अब ठाकूरकी आण ।। ३५८
पीतम कारण पदमणी, ऊठ गमणी आधीन ।
कर गहै फैंटो कमरको, लोयण जल भर लीन ।। ३५९

हीरा बचन

मैं नु घणी विमुढ मन, आप गरीबनिवाज ।
त्यागीजै तकसीरनु, रसिया बालिम राज ।। ३६०
वाटौ तोनै जीभडी, कुटल वचन कहाय ।
रीस निवारो राजबी, मो पर कर मयाह ।। ३६१
मानै तागो बालिमा, प्राण तणै प्याराह ।
कथ निवारो कोधनै, नहै करस्या वाराह ।। ३६२
मानोजी रसिया भमर, जपु तिहारा जाप ।
प्रीतम मन हठ परहरो, अरज सुणीजो आप ।। ३६३
लोभी देषौ लोयेणा, एमी नजरि भर ऐम ।
मुष वाणी बोलै मधुर, प्रीतम करि हित प्रेम ।। ३६४
लाषा वाता लाडला, माणो महिल मनाय ।
हिवडै नवसर हार ज्यू, लेस्या कठ लगाय ।। ३६५

प्रोहित वचन

कर फैंटो तजि कमरको, लपट मती हट लोय ।
रीस चढी छै राजवणि, मत वतलावे मोय ।। ३६६

हीरा वचन

वतलास्यां म्हे वालमा, आप विना कुण वोर ।
प्राण अवारू पीव पर, जिदा कसन जोर ।। ३६७

राज कीयो छै रुसणो, ऊर मो दहृत कदोत ।
आप न मानो मो अरज, मरू कटारी मोत ।। ३६८

केसर वचन

आप तणी आधीनता, हीरा हाजर होय ।
जोवो इण पर शुभ नजरि, करो मती हठ कोय ।। ३६९
राषीजै षावद सरस, नाजक घणरा नेम ।
प्राण दुषी प्यारी तणौ, कीजै अति हठ केम ।। ३७०
चाल विलूबो इधक चित, वेलत रोवत चाण ।
लपटावो गल लाडली, रसिया प्रोहित राण ।। ३७१
मीठा बोलो बचन मुष, हीरा पर कर हेत ।
महला जोयण माणज्यौ, सेझा पेम समेत ।। ३७२

प्रोहित वचन

सुण बडारण केसरी, कथन पुराण कहंत ।
लछण बाद लुगाईया, अकलि य[प]छै ऊपजत ।। ३७३

हीरां वचन

करो पमो हीरा कहै, पीतम करजै प्यार ।
पगा बिलूमी पदमणी, आष्या नीर अपार ।। ३७४
प्रोहित हीरा कर पकड, लीनी ऊर लपटाय ।
अत देषत आधीनता, मनकी रीस मिटाय ।। ३७५

प्रोहित बचन

प्रोहित कहियो पदमणी, सुण लीज्यौ शुकमार ।
प्यारी थाका बचन पर, ऊपजी रीस अपार ।। ३७६

हीरा वचन

दोहा– आप बडा छो ईसवर, मैं कु बुधि गवार ।
ऐधुला माणो अवै, पीतम सेजा प्यार ।। ३७७

केसरी वचन

दपति विलसो सुष मदन, तन की मेटो ताप ।
रगमहिलमें राजवी, अबै पधारो आप ।। ३७८
प्यारी पीतम हेत पर, चालो महिल सुचग ।
रति मिंदर सुदर सकै, औपत मनो अभग ।। ३७९

फुल अपार प्रजक फब, ऋत परमल डहीकाय ।
रगमहिल विलि सरसकै, ऊसत बैठो आय ।। ३८०

हसत लसत निरषत हरष, सर दो करत सुभाय् ।
हीरा सोभत मन हरत, ऊभी सनमुष आय ।। ३८१
कला प्रकासत दीपकी, दूणा भासत दीप ।
रभा दिषा छैवि रूपकी, स्यामा षडी समीप ।। ३८२
कहु ता दीनो कुरव, प्रीतम हेत ऊपाय ।
गादी ढली गलीमकी, ऊपर बैठी आय ।। ३८३
मिले कसु वा माजमा, कैफ अपारी कीन ।
तन मन मिल दोहु तरफ, ऊमगत पेम अधीन ।। ३८४
पीतम प्यारी सेभ पर, अति छिव प्रेम ऊदार ।
करत हरष अत केसरी, बारत लूण अपार ।। ३८५
भामण प्यारी अक भर, पीतम परस प्रजक ।
बक सरीर विलासमैं, लसत कबुतर लक ।। ३८६
पीतमकै उर सेभ पर, चदमुषी चिपटत ।
मानु भादवै मासकी, लता व्रछ लपटत ।। ३८७

अर्द्धाली–प्रीतम प्यारी पेम पर, सरस थाहत पेम अथाग ।
सर[रस] लुटत रत रगको, प्यारी पीतम सेज ।।
चदना नागनसी चपर, ऊलही दुलही रेम(ज) ।। ३८८
प्यारी छै अत प्राणकी, राष प्रीतम रीत ।
रगमहिल विलसण रमण, प्रतदन इधकी प्रीत ।। ३८९

छप्पै– रति विलास अनुराग करत निसदन कैंतूहल ,
सुष सज्या सुषमादि महल माणत दपत मल ।
समै सार सिंगार रिसकै भला मन राजत ,
मास मास रुत मिलत सुष आनद समाजत ।।
सरसत बडारणि केसरी, रहत निरतर प्रीत रत ,
हीरा प्रीत हुलासकी, चली बात प्रोहित-चिरत ।। ३९०

दोहा– वात सही यण विधि वणी, जिण बिधि सुणी जणाय ।
कबी तेण इण बिधि कही, इण विधि हीरा आय ।। ३९१
कहू छद चद्रायेणा, कहु छपै सोरठा कीन ।
कहु कुडलिया बारता, दुहा प्रगट धर दीन ।। ३९२

राचत कहु सिंगार रस, कहु वीर रस कामकी ।
वणी वात हीरा विमल, रसिया वगसीराम की ।। ३९३
हीरा बगसीराम हित, वात वणी वष्यात ।
सूर वीर हरषत सुणत, लेषत रसक लुभात ।। ३९४

ईति श्री वार्ता वगसीरामजी प्रोहित हीराकी वात सपूर्णम् ।। शुभमस्तु ।। यद्रस पूस्तक द्रष्टा तद्रस लीषत मया । सुद्ध अशुद्ध मशुद्धो वा मम दोसो न दीयते ।। श्रीरामचद्राय नम : ।। श्री : ।।

++++++++++++++++++

(श्री नारायणसिंह भाटी, सञ्चालक-राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर के सौजन्य से)

रीसालूरी वारता

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अथ रीसालूरी[1] वारता[2] लिष्यते[3] ।

[दूहा— गणपत दव मनाय की, समस्त(रु) सारद माय ।
वात रसालू रायकी, कहूं रसिक सूषदा[य] ॥ १
लेष विधाताजि लीष्या, तीमही ज भुगतै सोय ।
सूगण नरां मन जाणज्यो, वात तणो रस जोय ॥ २
वेधालू मन वीधयौ, मूरष हासो होय ।
जांणै सोई सूजाण नर, अवर न जांन कोय ॥ ३
कथा रसिक कविराय की, जीभा कहत वनाय ।
रिसालू नृप विध कहू, वाचो चित्त लगाय ॥ ४
राग रग रसकी कथा, प्रेम प्रीयास विलास ।
वात भेद स.पै कहुं सूगणा पूरण आस ॥ ५][4]

१ अथ वारत्ता[5] — श्रीपूर नाम नगर, तिणरै[6] विषै राजा सालवाहन[7] राज करै छै । [[8] यूं ईम घणा दिन विता । तरै सालिवाहण देवगत हूंवो । तरै प्रधान उम्रावा भेला हूयनै वडो पूत्र समस्त कुमर नामै, तिणनै पाट वेसाणियौ । बालक-वयमै जूवानपणो आयौ । तरै सारी वातमै, राज-काजरी रीतमै समभीयो । भली भात राज करै छै । राजारो तप-तेज जोरावर बधीयो । वीण स[र्य्यै] सीह, वाकरी भेला चरै छै । भोमीया, ग्रासीया साराहि आणनै श्रीहजूररी चाकरी करै छै । दुनीया घणो सूष पावै छै । व्योपारी परदेसा(सी) घणा आवै, जावै छै । तीणरो हासल घणौ आवै छै । सारै ही सोभा राजरी घणी बधी छै । राजा समस्त देवतारा विलास ज्यू साता गणीसू करै छै ।

---

१. ख रीसालुकुमररी । ग रीसालुकुअररी चोपई । घ रीसालुकुवरकी ।
२. ख घ. वात । ३ घ. में नहीं है । ४ चिन्हान्तर्गत दोहे ख ग. घ. प्रतियो मे नहीं हैं ।
५. ख ग घ में नहीं है । ६ ख. रे । ग. कै । ७. ख. सालीवाहनरो पुत्र समस्त राजा । ग सालिवाह्नको वेटो राजा समस्त (घ. समसत राजा) । ८ कोष्ठकान्तर्गत पाठ ख. ग. घ में निम्न रूप मे मिलता है—

दूहा– षट रीत भोगी भमर ज्यू, वीलस्यै राय विलास वै।
मांणीगर मोजां दीयै, सहुकी पूरै आस वै।। ६

२ वारता—हिवै सूष-विलास करता घणा दीवस हुवा। राजारै पीण पूत्र नही]। [तीणंरो घणौ सोच हुवौ। घणा देवी-देवता मानै छै, षटु दरसणनै पोषै छै, छतीस पाषड, चोरासी चेटक घणा दाय-उपाय करै छै। पीण पूत्र कोई नही हुवौ। तठै राजानै घणौ सोच लाग रह्यौ छै। राज तौ करै छै पीण पूत्ररी चीता आग क्यूई आवैडै नही। मनमै विचार छै—पूत्र वीना राज किण कारैम।][1]

दूहा[2] – सिगालौ[3] अरि[4] षीलणौ[5], जिण कुल एक न थाय[6] बे।
तास पूराणौ[7] वाड ज्यू, दिन दिन माथै पाय[8] बै।। ७
पूत्र नही ईक माहरै, तद घर सूनौ होय बै।
ईम राजा नित चिंतवै, लेष विधाता जौय बै।। ८[9]

ख. तीको वडो सुरवीर, दातार छै, मोटी रीघनो घणी छै। तीणरै सात अस्त्री छै, पीण पुत्र कीणहीरे नही।

ग. घ तिण (घ. तीणी) राजारै सात रांणी छै। पिण (घ. पीण) कीणहीरै (घ कुणीरै) पुत्र नही।

१. कोष्ठवद्ध वाक्यावली ख. ग. घ. में निम्न रूप मे है—ख. तीणरे वास्ते राजा ऐ घणा देवी, देवता, षट् दरसण, छत्रीस पाषड, चोरासी चेटक, बीजा ही दाय उपाय करी पूछ्या, पुज्या तो पीण पुत्र नही। पुत्र वीना राजानै चींता उपनी। राजा इसो मनमे वीचारीयो—पुत्र वीना राज्य कीसा कांमरो।

श्लोक—अपुत्रस्य गृह सुन्य दीससुन्य च वंधवा।
मुर्षस्य रीदय सुन्यं सर्वसुन्य दरिद्रता।। १
अपुत्रस्य गत नास्ती स्वर्गं धर्मो च नेव च।
तसमात पुत्र मुष दृष्टचा पक्षात धर्मं समाचरत्।। २

ग. घ –राजा घणा दाय-उपाय कीधा तो पीण (घ पीण कुणीरै) पुत्र नही। राजानै चीता घणी—वेटा वीगर राज कीस्या (घ. कुणी) कामरो नही।

२. ख.–अथ पजावी। ग. घ. में ये दोनो दूहे नहीं हैं। ३ ख सीगालो. ४ ख अरी। ५ ख षेलणो। ६ ख होय। ७. ख. पराणी। ८ ख. घाव। ९ यह दूहा ख ग. घ प्रतियों में नहीं है।

३. वारता—Aईण भातसू सोच करता घणा दिन हुवा। ईकदा समाजोगरै विषै एक गायारै एवालो आयने पूकार घाली—जौ माहार गाया चरावा जावा, जिण रोहीमै सूर एक हाल्यौ छै, सू गायान दुष देवै छै, तीणरौ जावतो कीजौ, ज्यूँ गायान सूष होवै। तर राजा सूणँ नै मूछा हाथ फेरै नै वट घाल नै नगारचीन कह्यौ—नगारै सताब हुवै। ईसौ कैहनै रजवूत सीरदार सर्व तईयार हुवा। सारा ही सीरदार मूछा हाथ घाल नै हथीयार सरवस किया। घोडा पिलाण हुवा। नगारारी धूस पडी। सूरा पूरा असवार हूवा। राजा असवार हूय नै सिकार चालीयो।A

दूहा – **हथीयांरा पाषल जूडै, कलहलोया कै कोण बै।[1] ९**
हडवड आग हीसता, वन दीस आयै दौर बै।
एवालीयौ मारग चलै, वाजै नगारां ठौर बै॥[2] १०

४ वारता— [इण भात सूरनै सोधता, चालतान घणी वार हूई, पिण सूर लाधो नही। तठै सूरज आथव पीण लागौ। तरै रजपूता उमरावारा, सीरदारा सगलाइ राजाजीसू अरजै कीधी—महाराजै! सूरजै आथमो छै, तिणसू पाछा चाल्यौ। तठै राजा सूण नै कहै छै—वडा सीरदारा! वलै पाछा कुण आवसी? अठै ही डैरा कर दैवो, परभातरा वलै सूरजै सोधनै सिकार करस्या। ईसो वचन सू राजा कह्यौ। तठै डैरा रौहीमै कीया। रात घडी चार पाच गई छै। तद एक आथूनी काणी अलगौ थको एक भाषर उपर अगन वलतीरौ चानणौ दीठौ। तठै राजाजी चानणौ देष नै सारा ही उमरावानौ कह्यौ—जौ डूगर उपर अगन बलै छै, तीणरी षबर ल्यावौ। देखा उठ काई छै? तरै उमरावा सूण नै बोलीया—माहाराजै! आधी रातमै वादेव षबर करणनै जावा, सौ इण रोजगारमै काई मीलै? तरै बलै राजाजी कहीयो—ईण वातरी खबर ल्यावो तिणनै मोटी रीझ करू नै उणनै मोटा करू। तरा उमरावा कह्यौ—माहाराज! मारी तो आसग कोई नई, कुमूत कुण मरै, काई जाणा, उठै काई चरित्र छै?]

A–A चिन्हान्तर्गत पाठ ख ग घ में इस प्रकार लिखित है—

ख इसो चींतातुर थको राजा सदा ही रहे छे। हीवे एकदा समयरे वीषे राजा समस्त सीकार चढीया।

ग घ–तद ऐक सीमै (घ तदी एक दीन) राजा सीकार चढो (घ गयो)

१ २ – उक्त दोनो दूहे ख ग घ प्रतियों मे नहीं मिलते है।

[–] कोष्ठकान्तर्गत पाठ ख ग घ प्रतियों में निम्न रूप में वर्णित है—

ख सुअर वासे घणा अलगा गया। दीन अस्त हुउं। तरे वनमांही ज रहीया। गोठ गुघरी, वल त्यार हुई छं। सारो साथ जीम्या पछे रात घडी च्यार जाता राजाए डुगर उपर

Aतठै एक ईवाल्यो वोल्यौ—महाराजं । आपरो हुकम हूवै तो हू षवर ल्याउ । तरै राजाजी कह्यौ—तु षवर ल्यावै तो तीन मोटौ करू ।A

Bतरै इवाल्यो भापररै चानणै सामो चालीयो । रायन भाषर उपर चढीयौB । आगै देपै तौ Cबडी वडी कठफाडा बल रही छैC । केसरी, सीघ नाहर[1] वैठी[2] छै । Dश्रीगोर्पनाथजी जोगेस्वर मूद्रामै तपस्यामै बैठा छयं, ध्यानमै पल लगाई रह्य छै, आया-गयारी षवर नही राषै छै । ईण भातसू एवालीयो देष नै पाछो आय नै राजाजीनू सारा ही समाचार कहीया—माहाराज ! सिलामन, श्रीगोरपनाथजी तपसाम वीराजीया छैजी । सूण नै राजाजी सवा लाख रो रीभ दीवी ।D

आग वलती दीठी । तरे राजा उवरावानु कहीयो—आ अगन बले, तीणरी ठीक ल्यावो तो तीणनै रीभ देउ, मोटो करू, पटो वधारू । तदी उवरावा वीचार नै कहीयो—माहाराज ! जुध, लडाइ होइ तो जावा, पीण अकालमीचमे तो मे कोइ जावा नही । कांइ जाणा आगे कुण छै ?

ग घ घणो अलगो गयो । दीन असुर (घ पहाडामै दीन अस्त) हुवो । तदी वनमै (घ उठै) रह्यो । घणी रात गया पछै (घ घडी ४ रात गई छै तठै) राजाऐ डुगरी (घ डुगर) उपरै आग वलती दीठी । तदि राजा उमरावानै कह्यौ—अणी (घ ईण) डुगरी उपरै आग (घ अगन) वलै छै, तीणरी ठीक ल्यावो, तीणनै मोटो करू । तदी उमराव कह्यो (घ वोल्यौ)—कठैई (घ महाराज, कठेइ) रण, सग्राम-जुध होवै तो जावा, पिण अकालमीचतो जावा नही । काई जाणा, कोइ (घ काई) छै ?

A–A चिन्हाङ्कित पाठ ख ग घ मे इस प्रकार है—

ख तीण समे एक गोवालीयो उभो हतो । तीणनु उवरावा कहीयो—तु इण अगनरी टीक ल्यावे तो तोनु मोटो करा ।

ग घ तदी तीण समै गुवाल उभो थो (घ तठै गुवालीयो पीण उभो थो) तणनै उमराव वुलावे नै कह्यो—अण आगरी (घ तणीनै वुलायो, उमरावा कह्यो—आगकी) ठीक ल्यावै तो तोनै मोटो करा ।

B–B ख तदी गोवालीयो डुगर उपर चढीयो । ग तदी गुवालीयो डुगरी चढचो । घ तदी गुवाल डुगर उपरै चढचो । C–C. ख ग घ वडा वडा लाकडा (ख लकड) वलै छै । १ ख नाहर आगे । २ ग घ बैठा ।

D–D–चिन्हित पाठ ख ग घ प्रतियों में निम्न प्रकार है—ख श्रीगोरषनाथजी वेठा तपस्या करे छे । गोवालीयो इसो वरतत देष नै पाछो फीरचो । आयनै राजानै कहीयो—माहाराज ! जोगीस्वर वेठा तपस्या करे छे । राजा इसो सुणने राजी हुआ । गोवालीयाने रीभ-मोभ दीवी ।

ग गोरषनाथजी बैठा तपस्या करै छै । तदी देषी राजाजीनै आय कह्यो ।
घ तदी राजानै आयै कह्यो—माहाराज ! गोरषनाथजी तपस्या करै छै ।

Aरीझ कर नै राजाजी एकला उभराण पगा भाषर चलीया। चलता-चलता भाषर उपर चढ नै श्रीगोरखनाथजीरो दरसण कीधो। गोरषनाथ पल षोल नई। तरे राजा एक पगरै पान मूहडा आगै उभौ रह्यौ, दोय हाथ जोडि रहौ छै, श्री गोरषनाथजीरौ ध्यान करै छै। ईण तरै सवा पोहर ताई राजा उभौ रह्योA।

तठै[1] श्रीगोरषनाथजी पल षोली[2]। आगै[3] Bदेषे तो राजा एक पगरे पाण उभो दीठौ। तठै श्रीगोरपनाथजी तुष्टमान हुय नै बोलीयाB—राजा! माग तन तूठो, चाहीजै सो मागलेB। Cइसौ राजा सुण नै सिलाम कर नै बोलीयौC—माहाराज! आपरै[4] परसादकरनै[5] सारी वातरी[6] दोलत छै, Dपिण ईक पूत्र कोई नही। तिणरी मानै घणौ दूप छै सो आप तूठा छौ तो पूत्र दिरावौD।

[ईसो गोरषनाथजी सूणनै आपरा हाथम गुलाबरी छडी थी, सौ राजानौ दीधी नै कहीयौ—जै आबारौ रूष छै, तिणरे एक वार छडीरी दीजै, सौ अबारी करी ग्रेक पडसी, तिका ताहारी राणीनै षवायजै, तिणसू ताहरै पूत्र होसी, तिण पूत्ररो नाम रीमालू दीजै, ईसौ कह्यौ। तठै राजा छडी लै नै चालीयौ]—

A–A चिन्हान्तर्गत पाठ ख ग घ में निम्न रूप में वर्णित है—

ख पछे राजा समसत एकलो अलवाणो डुगर उपर चढीयो। आगे देषे तो श्री गोरषनाथजी ध्यानमे बेठा छै। राजा पण उठे एक पगवराणो सवा पोर ताई उभो रहे ने सेवा करे छे।

ग तदी राजाजी ऐकलाई डुगरी चढचा। गोरषनाथजी नै देष्या। तदी उठाईसु उभा रह्या। एक पगवराणा सवा पोहर ताई सेवा कीधी।

घ तदी राजा पालौ एकलौ डुगर उपरै चढचौ। गोरषनाथजीनै दीठा। तदी परक्रमा दे एकण पगवराणा सवा पोहर ताई सेवा कीधी।

१ ख इतरे। ग घ तदी। २. ख उघाड। ग उघाडे। घ उघाडी।
३ ख कर। ग घ नै।

B–B ख देषे तो राजा उभो छे। इतरे श्रीगोरषनाथजी बोल्या—राजा। माग माग, हु तोनु तूठो, जे मागे सो देउ।

ग घ कह्यौ—राजा माग माग, तोनै (घ मे नहीं है) तुष्टमान हुवा।

C–C ख तरै राजा हाथ जोड ने कहे। ग घ राजा कहै (घ कह्यौ)
४ ख ग घ आपरी। ५ ख ग दीधी। घ क्रपाथी। ६. घ मे नहीं है।

D–D चिन्हर्गभित पाठ ख ग घ मे यह है—ख राज तुठा तो प्रमाण। माहरे पुत्र नहीं, सो एक पुत्र दीउ। ग पिण ऐक मागु छु—सो ऐक पुत्र नही। घ पण बेटो नही।

[—] ख ग घ प्रतियो में ऐसा पाठ मिलता है—ख तदी जोगीस्वर एक च(छ)डी दीधी। जा, माहरे बागमे आवारो गोठ छे, तीणरी इण छडीसु एक केरी पाडजे;

ढाल पजावी[1]

दूहा – सालवाहण[2] नृपरावका[3] , श्रीपूरनगरक[4] राय[5] बे।
पूत्र नही जीस[6] कारणै, सेव्या सिद्धका[7] पांव वै ॥ ११
चाल्यौ आबां आगलै, धीमा पगला धरायवे।[8]

५ वारता—Aईण वीधसू राजा डूगरसू'उतर नै आवा हैठै आयो नै छडीरी दै नै आवो ले नै आपरी फोजमै आयौ। सारा ही उमराव 'षमा षमा' करनै हकीगत पूछी। राजा हकीगत सारी कही। उमरावा सूण नै घणा राजी हूवा। इतरे रात्र गई, परभात हूवौ। तरै उमरावा अरज कीवी—श्रीमाहाराज! अवे सोकार मनै करावो, नेगरमे हालो, श्रीगोरषनाथजीरो प्रमांण सिध करोA।

Bतरे राजा वात मानी नै कुच कर नै नगरमै आया। सभा जोडि नै सवा पोहर दिन चढीया राजा राजैलोकमै गयौ। तठा पछै राणीनै वुलाय नै आवो दीधो न कह्यौ—हे राणी! राते श्रीगोरषनाथजी सतुष्ट हुवा। ते फल दीधो। ओ थे फल षावौ, ज्यू थार पूत्र हौवै। तरै राणी श्रीगोरषनाथजीनै दिसाग सोलाम करै नै फल आरोगीयौ न तुरत आस्या रह्री। वडो हरष उपनोB।

थारी पटराणी गुणसुदरीने षवाडजे; ज्यु एक पुत्र होसी। माहरी रसालरे नामे तीण पुत्ररो नाम कु रसालु दीजे।

ग घ अतरायकमं(घ तदी) गोरषनाथजी कहै छै (घ कह्यौ आ)—माहरा हाथरी छडी ले जा, आवारै देजे (घ दीजै) कैरी एक पाडजै (घ एक कैरी पडे जदी) रसरै नामै रसालू कुअर नाम देजे (घ माहानामै रीसालुरै नामे बेटारौ नाम दीजै)।

१ ख दुहो पजावी। ग गोरषनाथजी वायक। घ. मे नहीं है। २ ग सालीवाहन। ३ ग नरपरावका। घ नृपरायरा। ४. ख श्रीपुरनगरका। घ. श्रीनगरका। ५ ख ग घ राव। ६ ख तस। ग घ जस। ७ ख सीध का। ग सीधांरा। घ सिद्धाका ८ यह अर्द्धाली ख ग घ. मे नहीं है।

A–A ख हीवे राजा नमस्कार कर नीचो उतरयो। आय सीरदारनु मील्यो। प्रभात हुओ। ग. घ तदी राजा आबो ले नै नीचो उतरयो।

B–B ख घोडे असवार होय वागमे पधारया। उठासु आवो ले नै नगर माहे आया। राजलोकमे जाय पटराणीसु मील्या। राजा समस्त गुणसुदरीनु कह्यो—आपणे भाग्य जाग्यो। श्रीगोरषनाथजी तुठा, एक आबो दीधो छे सो थे पावो। आपणे पुत्र होसी। तद राणी सात सलाम करी फल आरोगीया। तीण दीनथी गर्भ रह्यो।

ग नगरमै आव्या। राजलोकामै पधारया। तदी पटराणीनै कह्यो—आपणो भाग्य जाग्यौ। गोरषनाथजी तुष्टमान हूवा, सो फल दीधो छै, पुत्र होसी, ओ फल थे आरोगो। अतरायकमै पटराणी सात सलाम करी नै फल खाधो।

घ सैहरमै आया। राजलोकामै आया। तदी पटराणीनै कह्यो—आपणो भाग्य जाग्यौ। ओ फल दीधो छै। श्रीगोरषनाथजी तुसटमान हुवा छै, पुत्र होसी। तदी पटराणी सात सलाम करे नै फल षाधो।

दूहा- थाल भरी दाल चांवला, लहै कटौरे हीयै बै।
पडित पूछै वण मछली, पूत्र सहै कीध यक बै ॥ १२A

६. वारता—(अबे गरभ पालणा करता नव महीना हूवा, साढा सात दीन गया थका पूत्र जनमीयौ। श्री गोरषनाथजीरी वाचासू रीसालू नाम दीधौ। घररा प्रोहित ते डेरे गया छै)।

अथ[1] दूहा[2] –वाजा[3] छत्रीस[4] वाजीया, पली[5] वाज्यौ[6] थाल बै।
राजा[7] घर पुत्र जनमीयो[8] , रजवटकै रषवाल बै ॥ १३
राजा मिल नांम थापीयो[9] , कवर[10] रीसालू नांम[11] बै।
घर घर रग[12] वधावणा, नृप[13] घर मगल गांम[14] बै[15] ॥ १४
[नांटिक छद गुण गाजीया, गोरी गाव गीत बै।
पान सूपारी बाटता, घन अजूनो आदीत वे ॥ १५
मांगणहारा मंगता, दीजै त्यूनू दांन बे।
पडित वेली ज्यौतसी, वधतो वधारो मान बे ॥ १६
हीव घरे जोतसी तेडीया, वेला लेवण धाम बे।
आया राजा आगलै, साभै अपणा कांम बे ॥ १७
लगन लेई नै जोईयौ, मोहूरत रूडो न होय वे।
अगम तिगण सासौ लहौ, राजानै कहै जोय बे] ॥ १८

A–यह दूहा ख ग घ प्रतियों में नहीं है। (—)कोष्ठकान्तर्गत पाठ अन्य प्रतियों मे इस प्रकार है—ख नव मास साढी सात दीन पुत्र रो जनम हुउ। गोरषनाथजी रो वचन फल्यो। ग घ –महीना साढा सात दीन ७ जाता (घ. महीना प्रतीपुर हुवा तदी) पुत्र हूओ। गोरषनाथजीरी रसालरै नामै रसालुकूवर (घ रीसालु) नांम दीधो। घररो परोहीत (घ प्रौहीत) बुलायो।

१ ग. पडावाक। ख. ग में नहीं है। ख २ दुहो। ३ ख वाजो। ४ ख. छत्री से। ५ ख पेली। ख वाजी। ७. ख समस्त। ८. ख जनमीया। ९ ख समस्त घर पुत्र जनमीया। १० ख भया। ११ ख. रसालु। १२. ख. आणद। १३. ख घर। १४ ख. च्यार। १५ ग घ. प्रतियो में १३ वें और १४ वें दूहे की जगह उलट फेर से एक ही दूहा निम्न रूप में मिलता है—

समस्तपुर पुत्र जनमीयो, भया रीसालू नाम बे।
घर घर आणद वधांवणा, घर घर मगल चार बे ॥

[—] कोष्ठकान्तर्गत दूहे ख ग घ प्रतियों मे अनुपलब्ध है।

७. **वारता**—A हिवै पडित प्रोहित लगन, वेला, नक्षत्र जोय ने राजा आगै आयौ। आयनै बोलीया—माहाराज ! सिलामत, आपरै तो पुत्र हूवौ छै सो रगरली हुई छै, पिण मेह तो जोतसी छा मो माहने तो झूठ बोल्या ठोर नही छै। तिण वास्तै श्रीमाहाराज ! कहो तो साच कहा. कहौ तो कुड बोला ? तठै राजाजी बोलीया—प्रोहितजी ! थाहरा ज्यौतिसमै जिका समाचार हुवै, तिसा हिज कहौ, मै तो रीस करस्या तो माहरै हाण छै। तिणसू हुवै तिसि कहौ।A

B तठै पडित बोलीया—श्रीमाहाराज ! ओ बालक करडा नक्ष[त्र] मैं जनम्यौ छै ने कुडली माहै ग्रह षोटा आया छै, वेला पिण षोटी छै सो माता-पीतानै विघनकारी छै, मोत-घात ज्यू छै। इण बालकरी मूहडी वारै वरसताई देषणौ जूगत नही छै। इण वीधरा ज्यौतिसमै समाचार छै। श्रीमाहाराजरा मनमै आवै सो कराईजै, तठै राजाजी सूतनौ प्रोहितजीनै कहीयो—थे कहौ सोई ज प्रमाण छै।B

[तठै ब्राह्मन नै प्रोहितनै नालेर, सोपारी, तंदुल, पांन, फूल, रोकड चढायो दे नै सीष दीवी नै राजाजी धाय मातानै बूलाय नै केहै छै—माहरै कुवर हुवौ, तिणनै महिलामै गुपतपणै राषज्यौ, थेईज चाकरी धवरावा-निवरावारी करज्यौ। बालकरा जतन करावज्यौ नै बारै वरस ताई वार निकलवा देज्यौ मती। इण वातमै चूक पड्यौ तो गाढो ओलभौ षावस्यौ। इण भातसू धायनै राजाजी कहीयौ। तठै धाय बौली—श्रीमाहाराज ! सिलामत, आपरौ कह्यौ प्रमाण करस्यू। ईसौ कही नै धाय माता मेहलमै जाय नै गुपतपणै बालकनै लेइ नै आपरै मैहलमै राषीयौ।

A–A चिन्हान्तर्गत पाठ के स्थान मे निम्न पक्तिया ही ख ग घ. में उपलब्ध हैं—
ख. इतरा घररा प्रोहीत जोतषी आया। लगन, वेला लीधी।
ग. वेला लेवाई। घ तदी वेला लवाडी।

B–B–चिन्हमध्यगत वाक्यावली ख. ग. घ प्रतियो में निम्न रूप में वर्णित हैं—

ख जोतषीये वीचार राजानु कह्यौ— माहाराज ! करडा नषीत्र, कूड ग्रहमे जन्म हुओ छै सो माता-पीता मुष देषे सो मरे। तीणरे वास्ते वरस बारे सुधी कुअरजीने महीलामे गुप्त राषो; मुष देषो मती, बारे नीकलवा द्यो मती। कुवररो नाम रसालु दीधो।

ग तदी प्रोहीत कह्यो—माहाराज ! करडा नषत्रमै जन्म हुयो सो मा मुढो देषै तो मा मरै, बाप मुढो देषै तो बाप मरै नै मामा मूढो देषै तो मामा मरै। सो बारै वरस ताई मुढो देषो मती, मैहलामै राषो।

घ तदी प्रोहीत कह्यो—माहाराज ! सलामत, कुवरजीरो मुहडो बाप देषै तो मरै, मा मुहडो देषै तो मा मरै। नानारो वारा वरस सुदी देषो मती।

सारी वीध वालकरी करता थका ईग्यारै वरस हूवा। तठै एकदा समाजौगरै विषै राजा भौजरा घररा नै राजा मानरा घररा नालेर आया। तिणा सार्थे मन्त्रीसर आया छै। सू आय नै मीलीया, मूजरौ कीयौ, बाह पासाव कीया, आमी-सामी हकीगत, कुसल पूछीया। वडी षूस्याली हूई। तठै राजा मन्त्रीसरानू कहै—माहा ताई आवणौ हूवौ सौ काई कारण छै ? सौ म्हानै कहौ।]

Aतठै प्रधान बोलीयौ—श्रीमाहाराज ! राजा भौजजी, श्रीमानजीरी बेटी ईयारी सगाइरो नालेर ल्याया छा, आपरा कुवर दीषावो। इण कारण आयां छा। सो आप कुवरजी ने तेडावो, ज्यू नालेर बधावा इसौ सून नै राजाजी मनमै वीचारीयौ—'कुवरनै वरस इग्यारे हूवा नै इक वरस वलै घटै छै, सो बार काढणौ, मूढचौ देषणौ जोग नई, नै परधानै नालेर ल्याया सौ अबै ईणनै काई जाव देउ, सौ राजा समस्त मनमै वीचारीयौ। तठै आपरा ठाव पाच सात उमरावानै लै नै आघा जाय नै राजा समस्त मनमै वीचारीयै उमरावानै कहेयौ—तठै ईणरौ जाव काइ देवौ। तरै उमराव बोलीयौ—श्रीमाहाराजाजी, ईणरो उतर तौ औ छै—'अबारै तो ईणनै डेरा दीरावौ, षाणा दानारा जतन करावौ नै रातै सभा माड नै उमरावा, प्रधान सारा ही भेला हुय नै मनसौबौ कर न सारो ही जाबतौ कर देस्या।A

Bतरै राजा समस्त पाछौ आयनै प्रधानैनू कहीयौ—आज तो आप डेरा करावो, भोजन करावो, सूवारे जबाब सारो ही हुय नासी, इसौ कह्यौ तठ प्रधान बोलीया—जौ हूकम, आपरो कह्यौ सौ प्रमाण छै। इतरौ कैह नै प्रधान उठीयो। परधान रा डेरा दीराया। षाणा-दाणारा जैतन कराया।B

[—] कोष्ठकान्तर्गत पाठ के स्थान में ग घ. प्रतियो में निम्न पक्तिया ही उपलब्ध है—

ख–हीवे राजा इसो जाब सुण ने कुवर ने पाच धाया साथे महीलामै राष्या। इम करता वरस इग्यारे वतीत हुआ। तद उजेणीरो धणी राजा भोज तीण री बेटीरा नालेर आया। फेर राजा मानरी बेटीरा पीण नालेर आया।

ग तदी कुअर नै च्यार धाअ लगाई। महीलामै राष्ये। तदी वरस अग्यारांरा हूवा। तदी नालेर आयो।

घ तदी कुवरनै ऊचा अवास छै, मैहलासु अलगा छै। तठै च्यार धाया ले गई। धायानै कह्यौ—मैहलामै राषजौ। तदी वरस १२ हूवा। तदी नालेर आया।

A–A, कोष्ठकगत पाठ ख ग में नहीं है तथा इसके स्थान मे ग में निम्न पक्तियाँ ही उपलब्ध है—

ग. तदि राजा समस्तनै कह्यौ—सगाई करो।

B–B. चिन्हमध्यग पाठ ख ग घ प्रतियो में अनुपलब्ध है।

A हीव राजा समस्त रातरै पूहर सभा जोडनै सारा ही उमरावानै, प्रधाननै भेला करै नै मनसूबौ पूछीयो—अबै काई कीयौ चाहीजै। तठै इक प्रधान बोलीयो—श्री माहाराजा साहिवा ! सारा ही मनसोवा जाण देवौ। हु कहु सो कीजै—प्रभातरै ओ प्रधान आवै तरै श्री कुमरजीरा हाथरो षडी(षाडो) मगाय नै नालैर वंदावो ने जानरी तारी करो। पाडो हाथीरे होद मेलने परणाय लावास्या। इसौ राजाजी सून नै वात मानी। साराहीरै वात दाय वेठी। अबै सभा वोहोड नै मेहला दापल हूवा।

परभात हूवौ, तठै राजाजी सभा जोडी। तठै प्रधान नालेर लेने आया। तठै राजा समस्तजी वोलीया—जावौ, उप्रावा कुवररो य(पा)डो ले आवौ। तठै प्रधाग सून ने वोलीया—श्रीमाहाराजै ! सिलामत, पाडौ मगावौ छौ ने कुमरजीन नही तेडौ, तीनरौ काइ कारण छै ? तठै रातवालो प्रधान वो नामै 'जालमैसीघ' तिको वोलीयौ—श्री प्रधानना साहिवा ! माहरै घररी आ रीत छै—'वालक वारै वरसमै हूवै, तठा पछै सगलै माहादेवजीरी जात करै, तठा पछै तिन बालकरी माता-पिता मूहडौ देपे। सौ कुमर वरस इग्यारमै हुवो छै, एक वरस घटै छै। तिणसू आ रीत छै–माइत मूहडौ देपै नही। नै ताहरै मनमै कोई भरम हुवै तो थे देप आवो'। तठै प्रधानै वोलीयौ—म्हारै कोई भरम नही, थे करसौ सौड ठीक छै। तठै राजा समस्तजी कहीयौ—प्रधाना ! राजाजीरै जैज हूवौ तौ वारे वरसरो कुवरनै हुणनै देवौ, पछै सगाई करज्यौ। तठै प्रधान वोलीया—कोई कारण नई, आप पाडो मगावौ।A

B दूहा—हुकम भलो माहाराजैरौ, नालेर दीधां ताम वे।
जान तयारी कीजीयौ, ज्यू सीज सगलां कांम वे॥ १९
माहा[रा]ज घणी हूकमथी, जैज न होवै काय वै।
षासौ(डौ)वदाबौ पूजीयौ, टीका अक्षत दाय वै॥ २०

A–A चिन्हमध्यगत पाठ ख ग घ प्रतियो में निम्न वाक्यावली के रूप में ही द्रष्टव्य है—

ख तद राजा समस्त कह्यो—वरस बारा माहे एक वरस थाके छे, सो कुवरनु बारे तो काढा नही ने षडग मेलने परणावस्या।

ग वारै वरसमै वरस एक घटै छै सो वारणै काढा नही। घ तदी राजा समसत मनमै जाणौ—वारै वरस वरसमै एक घटै छै सो तो वारणै काढा नही।

B–B ख ग घ प्रतियो में चिन्हान्तर्गत १९ से ३४ पर्यन्त दूहे एव ८ वीं वार्ता के स्थान में केवल निम्न पक्तियां ही समुपलब्ध है—

८. वारता—हीवैं जानरी सझाई करी । वडा वडा उम्राव साथै कीया । भेला केसरीषा(या) कसूवा सीरपावै करचा । भेला गेहणासू जडाव जडीयौ छै । सौभा सूरजैरी कीरणरी जलाहल लाग रही छै । तुरग सोनारी साष ते करी सोभैतै, वडा वडा हाथी सीणगारचौ छै ।

दूहा– हय गरथ सीरणगारीया, गुघरैरा घमकार बे ।
षाडो मेघाडंबरै, बेसारचौ सूषकार बै ॥ २१
चढीया सहु जानीया घणा, जानी कीधा बनाव बे ।
मलपता मोजी थका, देतां नगारां घाव बे ॥ २२
उजेणीपूर आवीया, सभेला सिणगार बै ।
बांह पासावे सहु मीलया, सगली घरी मनवार बै ॥ २३
जाचक जै जै बोलीया, मे आगम जिम मोर बे ।
दानै करी राजी कीया, तोरण बाध्या तोर बे ॥ २४
राजा भोजजी , पूछै वात उदार बै ।
कवर नईको कारणै, मत्रीसर तिण वार बै ॥
वात क सारा नृप सूणी, राजी मन घर घयै[ध्यार]बै २५
हीव चवरी मडप तणे, फैरा लीया च्यार बे ।
दत्त घणा वड दायचा, दीधा राज अपार वे ॥ २६
तीहांथी मान नृपत तणी, चवरी पूहता जाय बै ।
पूरब विध सहु जाणज्यौ, हरष मगल फूरमाय बै ॥ २७
गाव मगल नारीया, परण्यौ षाडचौ नार बे ।
दत्त घणा नृप आपीया, कर कर बहु मनवार ॥ २८
जाचक बहु धन पोषीयो, सरीष किवी सारी जानै बै ।
चलता आया आंपणै, नगर वधाई मान बै ॥ २९

ख तठा पछे राजाइ जोतषीनु बोलाया । आछा लग्न जोवाडीया । व्याव मांडीयो । राजाए पोतारा उवरावा साथे रसालुरो षाडो मेलीयो । उबरावे षाडासु रसालुजीरे दोय राणीया परणे लाया ।

ग घ तवी आपरा उमराव षान (घ वाषो) सुलताण, मुगलां, पठाण रसालुरा (घ समसत राजा कुवरजीरा) हाथरो षडग मोकल्यो (घ षजर दीधो) । परणी ल्याया (घ जान करे हाथीरी आंबावाडीमें छै सो षजरसु पर परणी ल्याया) ।

हरष वधाइनै आवीया, महिलां ते दोउं नार वै ।
कुवर देषी मन रांजीयौ, ए अपछैर अनूहार वौ ॥ ३०
कुण छै वाल वडी, सहीया जपै तांम वो ।
श्रीमाहराजा कुमरजी, राजा-राणी ए धाम वो ॥ ३१
राजा तणौ षडग परणैनै, आज सूपी तुझ हाथ वो ।
राजा राणी वौ रावली, विलसौ तन घन नाथ वौ ॥ ३२
कुमर सूणनै चीतवै, कीम षडग परण्यौ जाय वे ।
मूझनै दीद वणाहये तौ, न कीयौ नृप कहायाय वौ ॥ ३३
एहनो काइ पटतरो, निगे लहै सू साचै वौ ।
इम चींतवी हसि हस मिल्यौ, थाईसू वातां राच वौB ॥ ३४

६ [वारता—इण भातसू सहेलियासू वात कीवी । समोभामा हडनै राणीयासू राजी-वाजी हूवा । घणी राणीजी वाता कीवी । इम करता दीन १५ तथा वीस हूवा । तठै भोज, मानग असवार, रथ, पालषी, चकडोल आणो आयो । वडा मत्रीसर लेवा सारू आया । आय नै समस्त राजासू मील्या । वाह-पसाव हुवा । आमा-स्यामा कुसल पूछ्या । घणी मानवार हुई । असल आराईरा फूल साभा माहै फीरीया । वडी गोठ गुघरीया हुई ।

हीवै रातरा पोररी राणीया कुवरजी पासै आई । घणा रग-विलासरी वात हूई । तितरा माहै कुवरजी वोलीया—थारा घरारा आणा आया छै सौ पीहर दोसा पधारो, मेह पिण वेगा आवस्या ।]

दूहा– रांणी सूण पीउतै भणै, वेगा पधारण वार वौ ।
विरहन पामस्या तुम तणौ, दिछडीया नीरधार वो ॥ ३५

[—] कोष्ठगत पाठान्तर ख ग घ प्रतियो मे निम्न प्रकार है—

ख हीवे कुवरजी दोय रांणीया साथे सूष-विलास भोगवे छे । राजा भोजरी वेटी माहा रूपवत छे । तीण सु आप लयलीन रहे छे । इम करता दीन पचीस वतीत हुआ । तदी उजेणीसु आणो आयो । दुजी राणी ने पीण आणो आयो । तदी राजा भोजरी वेटीनु कुवरजी कहे—थे थारे पीहर जावो, मे पीण वेगा आवा छा ।

ग दीन दस तथा वीस'रह्या । परणे ल्याया' पछे आणो आयो । तदी 'रीसालु' राजा भोजरी वेटीने कह्यो—हु पिण (घ. परणवा) आवु छू । '—' घ. प्रति मे चिन्हगत पाठ अनुपलब्ध है ।

सग सूहेलो पीउ तणौ, दुहिलौ विछडवार बै ।
पीउ र अक्षर जीभ थी, नहीं छूटसी नार बै ।। ३६
कुमर कहैजी गोरीया, वहली करस्या वार बै ।
सूगणा सरीषो लोयणां, वेध्यां बांम नूहार बै ।। ३७
राजा भोजरी मांनरी, थे पूत्र गुणवंत ।
रूपवती रलीयांमणी, सौ क्यूं भूल कंत बै ।। ३८
वेलारा साजन भणी, वीसर सोई गीवार बै ।
इण वोध माहोमाहैथी, कीधी वान करार बै[1] ।। ३९

१० [वार्ता—ईण वीधसू कुवरजी, राणीग्रा वाता कीवी । तठै कुवरजी ग्रापरा हाथरी सवा लाषरी मूदडी सहीनाण वासत रीझ दीवी – ग्रा मूदडी हाथ थे परीहजौ । न कडिया षजुर नावा सहित रीझ कीवी सू रीझ मान बेटीनै दीजौ । कवरजी बोलीया । राजा भोजरी बेटीनै कहै—ग्रापणै थाहारै ग्रो सनाण छै – माहरी वाडी माहै एक ग्राबौ ग्रमृतफल नामै छै, तिणरै सात कैरीयारो झूबषो छै, तिको सदाइ कालो लागो रहै छै, (प)डियौ देषो तद जाणजो जू कवरैजी ग्रावसी । ग्रो सनाण छै । तरै राजा भोजरी बेटी बोली—श्रीमाहाराज कुवार ! इण सेहनाणीरी षबर कुकर पडसी, आवा ग्राठै नै उठै हुग्रा, जोड किसि विध लागसी ? तठै कुमरजी कह्यो—ग्रो ग्राबौ देवासी छै । साथै चीतसामरौ ग्रावौ कराय देवौ झूबषा सहित सौ ग्रठै पडसी । तरै थाहरा चितराम मो झूबषौ पडसी तरै नगै पडसी । इसौ कह्यौ तठै भोजरी बेटी कहै—श्रीमाहाराज कुवार ! ग्रो सेनाणौ ठीक वतायो । इण भातसू परभातैरै राजा परधाननै बूलाव नै घणी भोळावण द्वेग्री नै राणीयान सीष दीवी । सौ ग्राप रा ठीकाणा पूहती ।]

---

१ ३६ से ३९ सख्या वाले दूहे ख. ग घ. प्रतियो में नहीं मिलते हैं ।

[—] कोष्ठकान्तर्गत पाठ भेद ख ग घ प्रतियों मे इस प्रकार मिलता है—

ख इम कहे ने हाथरी मुद्रडी, कररो षजर दीधो । वले कहीयो—थारी वाडीमे एक ग्रमृतफल नमि ग्राबो छे । तीणरो सात केरी रो जुवषो एकण चोटसु पाडु तद माने डायां जाणजो । इम सुषवीलास करतां प्रभात हुग्रो । तद ग्राणो करायो । वहु दोनु पीहर गई ।

ग. घ. तद 'नीसाणी दाषल' हाथरो मुदडो दीधो । रसालु षजर (घ रीसालु जन) दीधो । ग्रावारी सात कैरी पडे जदी मुनै ग्रायो जाणजे । तदी वहू दोई पीहरा गई ।
'—' चिन्हित पाठ घ में नहीं है ।

दूहा– नवल सनेह पीहर तणौ, पीण सासरीयौ परधान वै ।
सासरीयौ जुग जुग तणौ, सूष पीहर उन मान वै ।। ४०
कुलवटनी कामणि तणौ, सासरीयौ सीरदार वै ।
इस्वर गत जांणै षरी, आदर पु(कुं)जी नार वै ।।[1] ४१

११ वारता—इण भातसू षेम-कुसलथी पीहरै गई, माइतासूं मीली। साराहीनै सूष हुवौ। हिवै कोईक दिन विता। हिव कुवरजीरा मनमै पूठली वात रात-दिन मनमै लाग रही छै। इतरा माहै धायमानारी बेटी 'मूधमाला नामै' तिका कुमरजी पासै कि काम आई। तर कुमरजी तीणनै पूछैवा लागा— जो मोने वाहिर नीकलवा नही दैवै नै षाडानै परणायौ, मोनें वीद वणायतो न कीयौ, सू काई जाणीजै छै? इण वातरी षवर वतावै तो तुनै घणी मोटी करू, मूह माग्यौ धन देउ।

तठै इसा समाचार सूणन धायरो वेटी बोली—श्रीमाहाराजै कुमार! आपरो जनम हूवो छो, तर घररो जोसी नै घररो प्रोयत तिण तो लगन देषो न कहीयौ—श्री माहाराजा! इण वालकरो जनमै पोटी वेलारो छै, नषत्र षोटो छै, तीणसू वार वरस ताई कुमरजी नै गुपतै राषज्योजो नै वार वरस ताई मा-बापरो मूडो देषे नही। ज्यौ मूडो देषै तो विगाड उपजै, मोन घात ज्यू छै, सो कवरजी न तो[मह]ला दापल करज्यौ, इण भातसू प्रोहीतजी कहीयौ। तिणसू थानै मौलामै राषै छै नै मूहडौ देषै नही छै। इणही जै कारणथी दोय राणी परणाइ छै। इसो जाब कुमरजी सूणनै मनैम विचारीयौ[2]—

---

१. ३९ एव ४०वा दूहा ख. ग. घ. प्रतियो में अप्राप्त हैं।

२. इस ११वीं वारता की वाक्यावली ख. ग. घ प्रतियो मे निम्न रूप में वर्णित है—

ख हीवे एक दीन कुवरजी हजुरीया चाकरनु पूछे—मानु महीलां माहे क्यू राख्या, वारे निकलवा न्ही दीए सो कीण-वास्ते? तद सघलेइ हजुरीये अरज कीनी—माहाराज कवरजी! आपनु करडा ग्रहामे जनमीया। तीणथी वरस वारे सुधी महील माहे राषे छे। प्रोहीतजी जोतसीए कहीयो छे।

ग अर रीसालु कहुपाअनै कह्यौ—मानै महला में क्यु राख्या छै, वारणै क्यु नीकलवा दे नही? तदी धाय कह्यो—माहाराज! आपरा घररो प्रोहीत वारा वरस ताई राख्या छै।

घ अर रसालु कह्यो—धायनै पुछ्यो—मानै महलामै क्यु राषै छै, वारै क्यु नीकलवा दै नही? तदी रसालुनै धाय कह्यो—माहाराज! आपरा घर रै प्रोहितजी कह्यो—कुवरनै वारै वरस ताई मैहलामै राख्या छै।

दूहा– देषो छोरू(डू)मूष सदा, माईत देषै मास बे ।
बार बरसरौ बंध करौ, राष्यौ माता निरास बै ।। ४२
एहवो माता-पिता तणौ, मोह जगतमे जाण बे ।
मुझनू केदतणी बिधै, कीधो परवस प्रांण बै ।। ४३
सीह तणा जेवा बाछडा, किम बैंधीया रहै बध बै ।
होणहार सो होयसी, विधना कांमना अध बै ।। ४४
पूत्र तणी वांछा घणी, होव जगमै जाण बै ।
ईण थोडें हु जनमीयो, तो मुझ बध्या प्रांण बै ।। ४५
तो इहां बधमै सरचा, रेहवो उ जूगतो एह बे ।
होणहार सौ होयसी, बूरी य भली को जेह बै ।।[1] ४६

१२ Aवारता—ईण भातसू कुवर मनमै वीचार नै पचास मोहरारो सकलो दीयौ न वग्जे राषी—षवरदार, कठहि जाब काढजे मती । इसी कैहनै कुवरजी उठ नै महिला बारै आया नै चाकरानै कहीयौ—जे श्रीमाहराज कठै वीराज्या छै ? तत चाकर बोलीया—कुवरजी साहबजी ! श्रीमाहाराज तो सीकार षेलण गया छै । तठै इसो कुवरजी सूण नै महला हेठ उतरचा । उतर नै दरीषानै पधारचा ।A

Bसभा जोड तठै तिणही ज वार माहै राजाजीरौ प्रोहीत दरबार ग्रायो । नाव ग्राजवादास छै । तीणनै ग्रावतो देष न कुमरजी ग्रादमीयान पूछीया—ग्रो उजलायत ग्रापण दरवारम कुण ग्रावै छै ? तठै चाकर बोलीया—श्रीमाहाराजै कुवार ! ग्रो घररो प्रोहीत छै । ग्रापरी वेला लीधो तीको है । सो सूणन कुवरजी

---

१. ४२ से ४६ तक के वोहे ख. ग घ प्रतियो में अप्राप्त है ।

A–A चिन्हान्तर्गत पाठ के स्थान में ख ग घ में निम्नाश ही उल्लिखित है—

ख हीवे एकवा राजा समस्त सीकार चढीया । उठासु कुवरजी जाय दरीषानो कीधो ।

ग घ –तदी रीसालु म्हैलामैंथी उतरे बारनै दरीषानै ग्राया । राजा तो सीकार गया था ।

B–B चिन्हित पाठान्तर ख ग घ प्रतियो में निम्न प्रकार से उद्धृत है—

ख एहवे राजरो प्रोहीत जोतषी छे, सो ग्रादमी त्रीस-पेत्रीस लीयां दुरवार ग्रावे छे । एहवे प्रोहीत पुछ्यो—जे दरीषाने डावडो कुण बेठो छे ? प्रोहीतजी ! ए माहाराजकुमार छे । तद प्रोहीत षीजने कहे—ग्रबारुही ज डावडानु कांई उतावळी हती, वारे वरस मांहे मास ६ थाकता हता ।

जाणीयौ—जैहि पापो उहि ज कुकरमारो करणहार छै। इतैरा माहै प्रोहितजी सभाने देषने उला(ठा)पेला चाकरनै पूछीयो—ओ रै! ओ छै(छो)करो कुण छै? ईतरा आदमी कु बैठाछै? तठै कुवचन सूणने चाकर बोलोया—प्रोहितजी! श्रीमाहाराज कुवार दरीषाने पधारया छै। तठै प्रोहित वोलीयो—अरै आज कुवर दरीषाणौ कीधौ, सू कीणरा हुकमसू कोधो छै? B

[इसो चाकरानू सूणायनू बडी ठसक राष नै कुवरजी कनै आय नै वडी रीस कीधी नै कह्यौ—कुवरजी! इसा उतावला हूवा सो तो मास इक घटै छै, पछै ही बारै आया हूता। तठै कुमरजी बोलीया—प्रोहीत साहिबाजी! थे मोनू बारै बरस ताई महलामै राषीया, ईसो काई कारण जाणीयो? ततौ प्रोहितजी वोलीया—जे कुमरजि! नक्षत्र ग्रहारी तरफसू काम करचौ छै नै मास इक घटै छै, सौ वलै मलैम राषस्या। तठै कुवरजी बोल्या—प्रोहितजी! इतरा दीनै रचै हो सू घणी वात छै, अबै आपा सारू कोई नई। तठे प्रोहीत बोलीयो—आ वार तौ थाहरी कीतरीक वाता सारी वातम भोलो छु, थानू पीण अबारू मला दाषल करस्या। तठ कुवरजी रीस कर न उठीया। हाथम सोनारो गुरजै हूती सौ प्रोहितजीरा माथाम दीवी ने कह्यौ—तु म्हारै सीरायैत मारघम हुवो तो विर माहाराजरै वलै कोय नही? पीण राजवीयारै थाका सरोषा घणा छै। इसौ कहीयौ।]

ग घ—तदि ईतरायकमै (घ अतरामै) प्रोहित आदमी वीस-तीससु आवै छै। तदी (घ तदी कुवर देख्यौ यौ कुण आवै छै?) उमराव कह्यौ—ओ यापरा घररो प्रोहित छै। आपनै बारै वरसताई (घ ताई माहे) अणी राष्या छै। तदी प्रोहीत आपरा आदम्यासु पूछ्यौ—औ कुण बैठो छै? 'तदी आदम्या कह्यो—राजाजीरो बेटो रीसालुजी छै।' तदी प्रोहितजी षीज्या—छोकरानै अवारू ज काई हुवो छै? महीना पाच 'पछै' नीकालणो। थो। '–' चिन्हित वाक्य एव शब्द घ प्रति में अनुपलब्ध है।

[–] ख ग घ प्रतियो में पाठभेद इस प्रकार है—

ख—तठा उप्रत प्रोहीतजी आय(प) कुवरजीनु आसीर्वाद दीधो। तद प्रोहीतजी[नें] कहे—प्रोहीतजी! थे मानु महीला माहे क्यु राष्या? तद प्रोहीत वोल्यो-कुवरजी! आपने करेडे नषीत्रे, क्रूर ग्रहे महीलामे राष्या। तद कुवरजी कहे—ना ना, मानु तो थे राष्या छे। जदी प्रोहीत कहे—जाओ, मे राष्या छे उने फेर राषसा। इसो सुण ने कुवरजीनु रीस चढी। हाथमे सोनारी गुरज हती तीणरी प्रोहीतरा मायामे दीधी।

ग. घ—तदी प्रोहित 'आवो' आसरीवाद दीधो। अतरायकमै (घ तदी) कुअरजी वोल्या—क्युं प्रोहितजी! बारा वरसा ताई 'मानै' क्यु (घ. थे) राष्या था? तदी प्रोहित कह्यो—हु काई राषु, नषत्र प्रमाणे रह्या। तदी (घ तदी कुअर) कह्यौ—न, मानै तो थे राष्या छै। तदी प्रोहीत कह्यो—'ना' मैं राष्या, नै फेर राष्या (घ फर राष्या छै)। तदी कुअरजीनै रीस चढी। तदी हाथमै गुरज थी, तीणोरी मायामै पाडी (घ तीणरी उपाडनै मायामै दीधी।) '–' चिन्हित शब्द घ प्रति में अप्राप्त है।

A तरै प्रीयतजी डेरै थकसू डेर नाठा, सो रोही काणी नीसरया। आगै माहाराज समस्तजी सीकार करनै आंवारी छाह सरोव[र]री पालै विराजीया छै। तठै प्रोहीतजी जाय पूकार घाली—श्रीमाहाराजा ! श्रीराज ! आज कुमार महीला वारे नीकल्यौ नै सभा जोड न बेठा छै। तठै हु जाय नै सीष देतो छो, तठै कुवरजी रीस करनै माहारी आबरू गमाई नै मांहिरै माथामै सोनारा गुरजैरी दीवी। तठै राजाजी सूणनै न रीस करनै बोलीया—देषो हो ठाकुर, अबार थकी माहरा प्रोहितरी माजनौ गमायो, इसो त ईण पूत्र वीना इ सारसू, सोनारी छुरी पेटाम मारी न जाय, तो अबै कुअरनै काई करणौ। तठै प्रोहीतजी वोलीया—माहाराज ! घरमै राषै सौ तो फेर कोई विघनकार हुसी। इणनै नीनाणीनै सीष देवो। तठै राजाजी वोलीया—माहरै इण कवररो काम नही, इणनै दसवटौ दैस्या। देसोटा वीना कवर पाधरो हूव नई। तठै उमरावा सूणनै श्रीमाहाराजनै कहैण लागाA—

दूहा— एवडी रीस नै कीजीयै, बनै वासै बहु दुष बै।
बालक वयम नानडो, देषो मती हिव मूष बै॥ ४७
जो तुमै रीसवता हूवा, तो राषो घर मांह बै।
पीण दीसोटौ देवता, राजवीया नही राह बै॥ ४८
वस राज(जी)रो राषणी, कुण धणी आयत होय वै।
वनवास अती दुष घणा, क्या जाणां क्या जोय बे। ४९
राजा सूणनै वोलीयो, मूष मूषती माहरौ बोल वै।
नीसरयो ते साचो हूसी, साचो ओहीजै वोलै बे॥ ५०

A–A ख. ग घ प्रतियों में निम्न लिखित पाठ है—

ख तद प्रोहीत जाय राजा पासे पुकार कीधी। तद राजा कहै—वारै नीकलीया पहीले दीन घरर। प्रोहीतने हाथ उपाड्यो, पछे काई करसी ? सोनारी छुरी तो पेट मारणी तो कहीं नही। माहरे इण वेटा सु काम नही।

ग. तदी ब्राहमण राजा नषै गयो, कह्यो—माहाराज ! रीसालु माहरै दीधी। तदी कह्यो—माहरै अण वेटासु कांम नही। तदी कह्यो—अणनै म्हैलांमंसु नीकलतां तो वेला न हुई, दन पण को न हूवा अनै घररो प्रोहीत मारयो। अबै काइं जाणा काई करसी ? ऐसो मनमै चीतव्यो अर राजा दरवार आया।

घ. तदी ब्राह्मण सगला राजा नषै गया, पुकारया। तदी ब्राह्मण सगला बोल्या—माहाराज ! म्हानै रसालु कुवर मोनै मारचौ। तदी राजा मनमै डरप्यौ—अबै काई जाणा काई करसी ? इणीनै महलामै नीकलतां कौईक दीन नही हुवा, तदी घरारा प्रोहितनै मारचौ।

उमरावा वरज्या घणा, राज न मान्यौ कोय वै ।
वीघना लेष हुवै तीकै, उ टले टलीया टलाय वै ।। ५१
होणहार सौही ज हूवौ, स्यांणपथी क्या होय वै ।
राजा कोपे भी भरयौ, वरजण सकौ कोय वै ।।* ५२

१३ वारता—Aईण भातसू उमरावा घणाई वरजीया, पीण रीसरै वसै राजा वाद चढीयौ थकौ कालो घोडो, कालो सीरपाव लै नै आपरा जीव-जोगरा आदमीयानै साथै मेलीया न वले राजाजी कहीयो—करडावणै करै तौ माटी पणै काढेजौ कुवरनै काढसौ, तद दरवारमै आवस्यौ ।A

B इतरौ सूणनै सीरपाव ले नै दरवार आया । आगै कुवरजी आदमीयानै देष न मारी जूलसाई देषी । देषनै मनम विचारीयौ—दीस छै प्रौहितरो उपगार हुवौ । इतरो वीचार करता आदीमी कुवरजी साँमा आया नै मूझरौ कीयौ न बोलीया—श्रीमाहाराजरो हुकम हुवौ छै–आप औ सीरपाव कीजौ, इण घोड चडै नै वनम पधारीजै । इसा समाचार श्रीकवरजी सूणनै सारा ही साथसू मूजरौ करी नै वोलीयौ—बाबा ठाकुरै, वाईजा साहिवारौ हूकम प्रमाण न करू तौ हरामषोर वाजु , तीणसू आवै सारे ही साथसू राम राम छै, परमेसर मीलासी तरै मीलस्या । इतरो कन घोड असैवार हुवा नै सीरपावैसू हेत कीयो, राजारो मोह छोडीयौ । तरै आपरी धाय माता वलै षवास, पासवान सूनणै(णनै) दीलगीर हूवा पोचावान साथै चलीया । सारा ही नगरमै षवर हूई । हिवै कुवरजी सारा ही साथसू सेहररे दरवाजै आया । नठै आवै वीछडता आपरा सनैई कुवरजीनै कहे छै B—

---

* ४७ से ५२ सख्या वाले दोहे ख. ग घ प्रतियों में अप्राप्त है ।

A–A. चिन्हान्तर्गत अश का पाठान्तर ख ग घ प्रतियो में निम्न रूप मे वर्णित है—

ख. इसो चीलवी राजाइ चाकरी साथे कालो घोडो, कालो सीरपाव, त्रीपांनीयो बीडो मेलीयो, कहीजे—राजा मा जोग नही ।

ग अर चाकर हाथ तीन पानको बीडो मोकल्यौ । कालो घोडो, कालो सरपाव दे नै देसोटो दीधो–ये मा जोगा नही ।

घ. तदी राजा चाकरी हाथै तीन पानरौ बीडौ दीधौ । तदी कालौ घोडौ, कालौ सीरपाव दे नै सीष दीवी ।

B–B. ख. ग घ प्रतियो मे चिन्हित अंश इस प्रकार है—

दूहा– सीधावौ सीध करो, पूरौ थाहरी ग्रास वे ।
जतन करैजौ मारगा, मानै कीधो नीरास बै ।। ५३
राज विना दिन जावसी, सो इक मास समांन वै ।
पीण थे मांनै मत भूलज्यौ, थै म्हारै जीवन-प्राण बै ।। ५२
थांसूं कटती रातड़ी, रहती मै धणीयात बै ।
हिव मे परवस होयस्यां, कीणसू करस्यां वात बै ।। ५५
ईम केहतां ग्रांसू ढल्या, वीलषा सारा साथ बै ।
कुवरजी मील मील रोईया, सहु हुवा ग्रनाथ बे ।। ५६
साथ घिरयौ पूठो हीवै, कुवरजी मारग जाय वै ।
मनमै चीत धीरपै, लेष विधाता ग्राय बै ।। ५७
देषो सूषम दुषै हुवौ, होणहार सौ होय बै ।

ही वेलारै राणी तो कठिन छै, पिण ग्रापरै ग्र(प्र)साद सारो हि जाब हुय जासी ।

दूहा– गोरषनाथजीरी सेवा करी, दीघा पासा हाथ बे ।
जाउ कुवर रीसालूंवा, वेगो परण घर ग्राव बौ ।।A ५८

ख. तद चाकरे ग्राय कुवरजीनु तसलीम कर बीडो नीजर कीधो । तद रसालुए जाण्यो—राजाइ मानु सीष दीघी दीसे छै । एसो वीचार ग्राप बीडो वाव ने एकलो घोडे ग्रसवार होयने चालीया । कीणहीने कह्यो नही । तीण समीए धाय जाय कुवरजीरी मातानें कहीयो—ग्राज राजाजी कुवर रसालु उपर रीस कोधी, देसवटो दीघो । तद माता इसो सुण-ने पांणीपथो घोडो, तोवरा दोय मोहरासु भरने दीना । रसालु मातारा महीला नीचे होयने ग्रागे नीकलीयो—तद माता रसालुने देषने कांइ कहे छे—

ग तदी रीसालुनै तो ग्रागमच षबर पडी–मोनै सीष दीघी । तदी कीणहीनै पुछयौ नही । एकलो ग्रसवार होवे नै चाल्या । माउनै ठीक हुई—रीसालु कवरनै देसोटो दीघो । तदी माउ ऐक पाणीपांथो घोडो दीघो । तोबरा दोग्र मोहरारा भरे दीधा । रीसालु माउरा गोषडा नीचै नीकल्यौ । माता रीसालुनै काई कहै—

घ तदी कुणीनै पुछो नही । तदी ग्रसवार होयनै एकलौ चाल्यौ । तदी माउ कणीनै पुछयौ । तवी धाय कह्यो—माउजी ! कुवरजीनै देसोटौ दीधौ । माउ तदी घोडो १ पाणी-पथौ दीघो । तोवरा दोय मोहराका दीधा । तदी रसालु मारा मैहला नीचै नीकल्यौ । रसालु-नै माउ काइ कहै—

A. ख ग घ प्रतियो में ५३ से ५८ तक के दोहों के स्थान पर गद्यपद्यात्मक ग्रंश इस प्रकार उपलब्ध है—

ख दुहा—पीउ रे दुध रसालु आ, रुडा रे सुकन मनाय वे ।
रसालु चाल्या परणवा, वेग परणी घर आय वे ॥ ७

रसालुवाक्य

माय वीडाणी पीता पारका, हम ही वीडाणा जाय वे ।
षेवटीयाकी नाव ज्यु, कोइक सजोग मीलाय वे ॥ ८

तद माता मृग प्रते काई कहे छे–

काला रे मृग उजाड का, रसालु पाछा फेर वे ।
सोवन सीग मढावसु, गले रुपारी डोर वे ॥ ९

रसालुवाक्य

हीरण भला केहर भला, सुकन भला के साम वे ।
उठो र अरजुन बाण ल्यो, सीध करे श्रीराम वे ॥ १०

वारता—इतरो कहे रसालु आघा चाल्या । वनषड सारु षडीया । आगे वनगहनमे जातां सध्या समीए डुगर उपर आग बळती दीषी । तरे रसालु घोडो तले ही बाधी, डुगर उपर पालो चढीयो । उचो चढने श्रीगोरषनाथजीनु भेटचा । तद श्री गोरषनाथजी तुष्टमांन हुआ, कहीयो—आव बचा ! माग माग, हु तुठो । तदी रसालु कहे—माहाराजा साहीब ! आपरी दीधी सारी दोलत छे, पीण समुद्ररे पेले काठे राजा अगजीत राज करे छे, तीण अगजीतरी बेटी परणु, सो वर द्यो । तद श्रीगोरषनाथजी अनलपषीरी नलीरा पासा दीधा; जा बचा ! तु इण हमारा पासासु चोपड षेलजे; तु जीपसी । रसालुए तीन सलाम कर पासा उरा लीधा ।

दुहा—गोरषनाथजी सेवा करी, लीधा पासा हाथ वे ।
जाज्यो कुंवर रसलुआ, वेगा परणी घर आव वे ॥ ११

ग दुहा—पीया दुध फली करो, (रीसालु वा) रूडा सु कन मनाय वे ।
रीसालु चाल्यौ परणवा, वेग परण घरी आव वे ॥ ३

रीसालु मातानै फेर पाछो काइ कहै–

दूहा—माथ षीडाणी वाप वड, हम ही माझ वडा ।
षेवटीआकी नावजु, कोईक सजोग मीलाव वे ॥ ४

मातावायक–

दूहा—काला मृग उजाडका, रीसालु पाछा फेर वे ।
सोवन सींगी मढावसु, रूपाकी गल डोर वे ॥ ५

तदी रीसालु मृगनै काइ कहै–

दूहा—हीरण भला कैहर भला, सु कन भला कै स्यान वे ।
उठो उरजण बाण ल्यो, सारंगा सब कारु वे ॥ ६

अथ वात– ईतरी वात अतरो कहै रीसालु आघो चाल्यो । आगै देषै तो रीसालु डुगरी उपरै आग वलै छै । बलती दीठी तदी डुंगरी चढचौ । पल मेल्यां थका गोरषनाथजी बैठा छै । पगे लागा । गोरपनाथजी कह्यो—रे बच्चा ! माग, मांग, तुष्टमान हुवा । तदी

[१४ वारता—ईसी समाचार सूणनै श्रीगोरषनाथजीरे पगे लागी नै कुवरजी घोड चढनै प्रभाते चालीयो । सो समुद्र तीरै गया । तठै समुद्रै उपर पाणीपथो घोडो चलायो सौ पार पूहता ।

रीसालुं कह्यो--माहाराज ! आपरी दीधी सारी दोलत छै, पिण एक मागु छुं—समुदररै पैलै कानै राजा आगजीत छै, तीणरी बेटी हू परणु । तदी गोरषनाथजी नलीरा पासा काढनै हाथ दीधा । अणी पासासू षेलजे । जा बचा ! जीतसी । तदी रीसालु पगे लाग नै पासा लीधा ।

गोरषनाथजीवाक

दुहा—गोरषनाथजीरी सेवा कीधी, दीधा पासा हाथ वे ।
जा जा कुवर रीसालुवा, वेग प[र]ण घर आव वे ।। ७

घ दुहा—पीया दुधा थली करौ, (रसालु) ऊठा हीसुं सुकनवां दीवे वे ।
रीसालु चाल्यौ परणवा, वेग परण घरी आव वे ।।

तदी रीसालु माउनै कांइ कहै–

माय वडारण बाप वड, हम ही माह जी वडा ।
पेवटीया षीवै नाव ज्यु, कोइ क सजोग मीलीया ।। ३

तदी माता मृगलानै काइ कहै–

काला मृग उजाडका, रीसालु पाछो फेर वे ।
सोवन सींग मढावसु, रूपाकी गल - डोर वे ।। ४

तदी रीसालु फेर काई कहै–

दुहा—हरण्या भला कैहरी भला, सुणी भला कै स्याम वे ।
उठो राजन वाण ल्यो, सरैगा सब कांम वे ।। ५

अतरा बोल वचन कहै नै आघो चाल्यौ । आगै डुगर उपरै आग वलै छै । आग बलती दीठी तवी डुगर उपरै चढयौ । तदी गौरषनाथजीनै दीठा । तदी एक पगवरांणी सवा पोहर तांई सेवा कीधी । तदी गौरषनाथजी पल उघाडी नै कह्यौ—रे बचा ! तु बैठ । तदी रसालु पगा लागौ । तदी गौरषनाथजी तुस्टमान हूवा । तदी रसालु बोल्यौ–माहाराज ! आपरी दीधी भारी दौलत छै, पीण एक वात मागु छू—समुद्रतटै अपजीत राजारी बेटी हु परणु । तदी गौरषनाथजी नलीरा पासा करे दीधा । अणी पासासु षेलजे, जा बचा ! जीतसी । तदी गौरषनाथजीकै पगे लागौ, पासा लीधा । तदी गौरषनाथजी काई कहै—

गोरषनाथजीवाक

दुहा—गोरषनाथजीरी सेवा कीधी, दीधा पासा हाथ वे ।
जा बचा तुं जीतसी, वेगौ जीत घर आव वे ।। ६

दूहा– समूद्रै घोडै चालीयौ, पांणीपंथौ जाय बै ।
　　नीरै आय न उतर्यौ, नगर नणै निरषाय बै ।। ५९
　　हिवे कुवरजी हालोया, आया नदीया मझार बै ।
　　आगै अचंभम देषीयौ, चमक्यौ चित मझार(बै) ।। ६०

१५ वारता—इतरे कुवरजी नदीमै आया । आगै देषो तो घणा रूंड-मूड मिनषारा माथा पडा देषीया । तठै कूवरजीनै रूड-मूड माथा हसीया । तठै कुवरजी वोलीया—रे रूंड-मूड ! हसीया, जिणरौ कारण वतावो । तठै माथा कहै—

दूहा– कुंण तु इहा आयो अठै, किण ठामे किण ठोर बै ।
　　कीहाथी आयो कीहां जावसी, साह अछै किनू चोर बै ।। ६१
　　इण देसै तु आवीयौ, माणसषांणौ देस बै ।
　　ओ सोर ताहरो तूटसी, तुम हमरा कन पडसी आय बै ।। ६२
　　इण कारण हसोया अमे, अव तु ताहारो वोल वे ।
　　मे साचा तुझनै कही, चोकस थांरी पोल बे ।। ६३]

[—] १४ वीं, १५ वीं वारता तथा ५९ से ६३ तक के दूहों का पाठ ख ग घ. प्रतियों में निम्नाङ्कित है—

ख वारता– रसालु सलाम कर नीचो उतरचो । इतरे प्रभात हूओ । घोडे चढ आघो चाल्यो । चालता चालता कीतरेके दीनें समुद्र आयो । नावमे वेसने समुद्र पार उतरचा । आगे अगजीतरो देस आयो । आगे चालता राजा अगजीतरो सहीर आयो । तीण सहीर कनारे रसालु गया । दरवाजा कने मनषारा माथा पडचा छे । तीके माथा रसालुने देष ने हसवा लागा । रसालु पूछचौ—थे क्यु हसो छो ? माथा कहे—इतरा माथांमे थारो मायो आवे पडसी ।

मस्तकवाक्य

क्यु चाल्यो रे मानवी, माणसषाणा देस वे ।
ओ सीर थारो तुटसी, आय पडसी हमे पास वे ।। १२

ग अथ वारता– अतरायकर्मं रीसालु असवार होवेनै चाल्या । चाल्या चाल्या समुद्र पार हूवा । तदी अगजीत राजारो सैहर आयो । आगे देषै तो मनषारा माथा पडचा छै । जके माथा रीसालु नै देष नै हसवा लागा । तदी रीसालु कह्यो—थे क्यु हसौ छौ ? तद मुंडीक्या कह्यो–माका अतराका माथा पडचा छै, तणीमै थारो पीण मायो पडसी । तदी मुंडका फेरे रीसालु नै काई कहै—

मुंडीवाक्य

दुहा– काहा चालो रे राजवी, माणसषाणो गाम वे ।
सीर थारो पीण तुटसी, तुं आसी माहरी ठाम वे ।। ८

१६ [वारता—ईसा समाचार कुवरजी सूणनै माथानू कहै छै—हु तो अगरजी राजारी बेटी परणवा आयौ छु, राजा समस्तरो बेटौ छु। अठै माथा वढ छै, तिणरो कारण काई छै ? तठै माथा कहै छै—अरे रीसालू कवर ! राजारा पोलरा मूढ आगै नोबत द(ड)कौ देवै छै, सो हार-जीत कर छै। हारै, तिणरौ माथो वाढनै अठै नाष छै। सो इतरा माथा इण रीत भेला हुवा छै। सू इतरा माहलो काई जीतो नही। सो तु पीण जीतौ कोई नई।]

तठै कुवरजी माथानू कहै[1] —

दूहा— म्है[2] राजा राजवी, म्है[3] रावां उमराव[4] बै।
के तो सीर द्या आपणौ, क राजारो ल्याय बै॥ ६४
म्हे मारघा किण रामरा, ईण रीतै ईण ठोर बै।
जीतने परण्या सूदरी, राजासू कर जोर बै॥[5] ६५

१७ वारता—इसा समाचार माथानूं कह न चाल्या सहर तु रत। सेहरमै जाय नै किल्लैरै दरवाजे जाय ने उभा रहिया। नोवतरो डको दीयो। एक दोय डको देन प्रमाण राजा माहै सूण्यौ। मनमै जाणीयो—कोई क तौ आजै राजा फेर आयौ छै। मनमै राजी हूवौ अबार जीत लेसू। इतरै रीसालूरौ डकौ सूणत प्रमाण राजा अगरजीतजी जाणीयौ कोई क तो रमवावालौ आयौ। तठै राजा वार नीकल नै नोबतषान आयौ। कवरजी मुझरौ कीयौ, माहोमाह मीलीया। राजा अगरजीत पूछीयौ—कठासू आया, कीणरा बेटा नै थे क्यू आयाछौ ? तठै रीसालू बोलीयौ—माहाराज ! सेरसू आयो छु। राजा समस्तजीरौ बेटो छु। माहरौ नाम रीसालू छै। थासू चोपड जीतवा आया छा। ईसो कहीयो।[6]

घ तदी रसालु असवार हूई चाल्या। रसालु समुद्रा पैसार हुवा। तदी आगै अपजीत राजारो सैहर आयो। तदी अगजीत राजारा सैहर पाषती मनुषना माथा पड्या छै। तहां रसालुनै देषी नै हस्या। तदी रीसालु कहियौ—थे कु हस्या ? अतरा माका माथा पड्या छै, पणथमांको पणाथौ अठै पडसी। फेर मुंड्याक्या काई कहै—

दुहा— काहा चाल्या वे राजवी, माणसषाणो गाम बे।
सीर थारो पीण तुटसी, तु आवसी ईण ठाम बे॥

[—] कोष्ठान्तर्गत पाठ ख ग घ प्रतियों में अप्राप्त है।

१ ख रमालु वाक्य। ग तदी रीसालु मुडीक्यानै काई कहै। घ तदी रीसालु काई कहै। २ ख मे। ग मेह। ३ ख में नहीं है। ग मेह। ४ ख उपरला राव। ग घ उपरलो राव। ५. यह दूहा ख ग घ प्रतियों में अप्राप्त है। ६ १७वीं वार्ताका गद्यांश ख ग घ में इस प्रकार है—

तठे राजा अगरजीत विछायत कराय ने चोपड मगाई। रमवा बेठा तठै हारजीत कीवी। कुवरजी कैहै—म्हे हारा तौ पाणीपथौ घोडौ परा देवा, थे हारो तो ईसडौ घोडो उरो लेवा। इसो कोल करनै रमवा बैठा। तठै राजा अगरजीत वोलीयौ। पछै दूजी रामत वले माडी। तठै राजा अगरजीत वोलीयौ-तठै सीरपावरो साटौ कीयौ। तठे वले कुवरजी हारीया। तठै तीजी रामत माडी। तठै राजा अगरजीत वोलीयौ—अबै कांई हार-जीत करस्यौ? जौ म्हौ हारीयौ तौ माहरौ माथौ थे लीजौ न थे हारीया तौ थाहारौ माथौ मे लैस्या। ईसी हार-जीप कीवी। तठै कुवरजी वोलीया—दूरम छै। आप कहौ सौ परमाण छै। पिण आव(प)तो मोटा छै। इण वातरौ लीषत करवौ, साप घालौ। तठै राजा अगरजीतजी लीषत करायौ। हार-जीत करा सू सघ लीया। तठै कुवरजी लघु-लाघवी कला सू गोरषनाथजीरा पासा काढ मेलीया, आगला छीपाय लीया। हिवै सायदवाला आयने बेठा छै। जीवततम झूठ बोलै नही, झूठी साप भरे नई। इसडा आदमी षाणदानरा बेठा छै। तठै दोनू ही चोपड रमता कुवरजी श्रीगोरप-नाथजीरा परतापसू जीतीया। सारा ही साष भरी।

ख. रसालु इतरो कहे ने सेहर माहे गया। नोबतषाने जाय डको दीधो। फेर दोय, तीन डका दीधा। षेलवाकी तलासमे रहे। जद राजा अगजीत जांण्यो—आज दोय तथा तीन जणा षेलणनु आया दीसे छे। जद राजा अगजीत जीमतो उठी रसालु कने आया, जुहार कर मील्या।

ग अथ[1] रीसालु कह्यौ[2] अर[3] आघा[4] चाल्या[5] सैहरमै आया,[6] दरबार आव्या[7], नोवत नषै गया[8]। कोई राजासु षेलवा आवै, 'ततरा डाका नगाराकै दै', जतरा[9] जाणै[10] षेलवा आव्या[11]। तदी रीसालू[12] जाता ही[13] डाका दीधा। [तदी राजा अगजीत जाण्यो-आजे जणा दोअ-तीन षेलवा सारू आया दीसै छै।] तदी राजा जीमतो[14] उठ्यौ, रसालु नषै आया।

घ १ अतरो। २. कहै राजा। ३ नहीं है। ४ आघो। ५ चाल्यो। ६ रसालु सैहरमै आव्यौ। ७ गयौ। ८ दरीषानै जाय बैठो। '–' जदी दोय तीन डाका दै। ९. तदी। १०. जाणै कोई राजासु। ११ आयो छै। १२ रसालु। १३ जाय दोय-तीन [—] नहीं है। १४ जीमता।

— ख. ग घ प्रतियोमें चिह्नित अश निम्न रूप में प्राप्त है—

ख पछे ष्याल माडीयो। तद रसालुए पेली रामत तो घोडो हारयो। बीजी बाजी मोरांरा तोबरा दोय हारया। तीजी बाजी फेर माडी। तद रसालुए राजारा पासा परा छीपाया। श्रीगोरषनाथजीरा दीधा पामा काढया। राजा अगरजीतने कहे—अबे कीण वातरी हार-जीप करसा? तद रसालु कहे—माथारी हार-जीप करसा। तीजी बाजी रमता थका रसालु जीतो।

[तठै कुवरजी बोलीया—हिवै माहाराज माथो दीरावो। तठै राजाजी बोलीया—म्हारो माथो परो देसू थानै, पिण आप राजी हूवौ तो राजलोकसू मीलीयावू। तठै कुवरजी बोलीया—दुरस छै, भलाई मीली आवौ। ईतरी सूण-नै राजाजी माहै गया। राणीयासू मीलीया। सारी हकीकत कही। तठै राणी दलगीर हुई। तरै राजाजो दुहौ कहै छै]—

दुहा— उचो मीदर मालीया, अवल सेभ्फडली रूप बै।
रिद्ध भडार ए देसडो, तो सरसी रांणी नूप बै ॥[1] ६६
सारा विडाणा हिव हूवा, जासी हमारा सीस बै ॥
सीस घणारा डूचीया, अब आया मूभ्फ चोर बै ॥[2] ६७

राणीवायक्य[3]

किणस्यू[4] राजा थे रम्या,[5] किणथी बाजी अनूप बै[6] ।
मैं थांनू[7] राजा[8] वरजीया, मति[9] षेलौ वाजी[10] भूप बै ॥ ६८

राजावायक[11]

होणहार सौ[12] नही मिटै[13], लैष लिष्या छैठी[14] रात बै।
भलो वूरो[15] सहु माहरौ[16], करसी विधाता मात बै ॥[17] ६९

ग घ ख्याल माडचो (घ दरीषाना उपरै चौपड माडी, ख्याल मांडचौ)। पहलि तो (घ तदी पैहला तो) घोडो हारचौ। पछै मोहरारा भरचा दोय तोबरा हारचा (घ पछै तोबरा दोय मोहराका हारचौ) तीजी (घ पछै तीजी) बाजी माडी। राजारा तो पासा छपाडे मेल्या (घ छीपाडे राष्या)। गोरषनाथजीरा दीधा (घ गोरषनाथजीरा) पासा काढघा। तदी कह्यौ—अवै काई लगावस्या (घ पछै ख्याल माडचौ। राजाजीरो माथो लगायो। रसालु कह्चौ—हु पीण माथो लगावसु)। तीजी बाजी रीसालु जीता (घ तदी रसालु बाजी जीत्या।)

[—] कोष्ठवर्त्ती अश ख ग. घ में निम्न रूप में वर्णित है—

ख तद राजा अगजीतने रसालु कहे—थारो माथो दीयो। राजा कहे—माथो त्यार छै, पीण थे एक बार मनु राजलोकमे जाणद्यो। रसालु कहे—भलाई पीधारो। जद अगजीत राजालोकमे जाय राणीने काइ कहे छे। राजा वाक्य—

ग घ तद राजानै कह्यौ—मायो ल्यावो (घ ल्याव)। तदी (घ. तदी राजा) कह्यौ—ऐक बार (घ मोनै एक वार) राजलोकांमे जावण द्यो (घ. जावा द्यो)। तदी रीसालु कह्यौ—भला (घ. में नहीं है)। तदी राजा आगजीत कह्यौ—हु छु, राजा चाल्यो (घ तदी राजलोकमै जाय कहै। अगजीतवाक्य

१ २ ख ग घ. प्रतियोंमें उक्त दोनो दूहो के स्थान में निम्न एक ही दूहा उपलब्ध है—
ख उचा महिल[18] आवास है, गया हमारा छूट[19] बे।
सोर हमारा जीतीया, आया परषडी[20] चोर बे ॥

३ ख राणी वाक्य। ग. घ. राणी (घ. तदी रांणी) काई कहै। ४. ख ग घ कीण

समस्तसूत[1] रीसालूवो[2], श्रीपूरननगरका राव वे।
षेलत बाजी हारीयौ[3], जीता[4] हमारा डाव[5] वे ।।[6] ७०

राणीवायक[7]

रांणी कहै सूण रावजी,[8] म[9] करौ चिंता[10] काय[11] वै।
सूंकलीणी हू[12] बुध थी,[13] काज करेस्यूं समाय वै[14] ।। ७१

१८ वारता—Aईसो राजानै राणी कहीयौ। राजी राजी हूवौ। तठै राणी आपरी दासीनै बोलाय नै कहै—समस्तरायरी वेटै रीसालूनै जायने केहजे—श्रीकुवरजी साहैवा! राणीजी कहै छै-माहरी वडकुमारपुत्री आपनै दीधी, आप परणीज ने घरे पधारौ। माहाराज कुवर! भला ही पधारया मारो भाग जाग्यो, मार तो राजा वाला सगा छो, येक मारी कीन्या परणौ। ईमौ सूणने वडारण वारे आय नै कुवरजीनू कहीयौ—माहाराजकुवार! राणीजी आपन आसीस कहिछै नै वडी बेटी अनै इनात कीवी छै, सौ आप परणीजौA।

नषं। ५ ख राजींद हारीया। ग घ राजा हारीयो। ६ ख कीणने दीया अनुप वे। ग घ. कीण नषं दीओ सीस वे। ७ ख थाने। ग घ तोनै। ८. ख राजींद। ९ ख ग घ मत। १० ख ग घ तुम। ११ ख ग राजा वाक्य। १२. ख ग सो (ग तो) राणी। १३ ख मीटे। ग मटै। १४ ख ग लेप (ख लेषे) लीष्या (ग लष्या) छठो। १५ ग भला बुरा। १६ ग माहरा। १७ यह दूहा घ प्रति में नहीं है।

१८. ग. घ. म्हैल। १९ घ छुट। २० ग. षड। घ षग।

१. ख ग. समसतसुत। २ ख रसालुआ। ग रीसालुआ। ३ ख. हारीया। ग जीतीयो। ४ ख उण जीत्या। ग जीत्या। ५. ख ग सीस। ६. यह दूहा घ. में अप्राप्त है। ७ ख राणीवाक्य। ग तदी राणी काई कहै—दूहा। घ. में नहीं है। ८ ख ग घ राजवी। ९ ख ये मत। ग घ मत। १० ग घ. सोच। ११ ख. ग घ. राज। १२. ग हू सुकलीणी। घ जौ सुकलीणी। १३. ख ग घ असतरी। १४ ख तो करु तुमारो काज वे। ग घ. करू तुमारा काज वे।

A–A ख. चिन्हित अश ख ग ग में इस प्रकार हैं–राणी राजा प्रते इसो कहेने दासीने बुलाई कहीयो—थु जाइने रसालुने कहे—कुवरजी! ये राजारो माथो लेने काइ करसो? राजा अगजीतरी बेटी परणो। तरे दासी आय रसालुने इसो जाब कह्यो।

ग राजा राणीनै ऐसो कह्यौ। दासीनै बुलावं कह्यौ—रसालु नषं जा कंहजे-माहाराज! भला पधारया, माहरै माथं भाग्य, आप पधारया तो कन्या परणो।

घ तदी राजानै कह्यौ। कहै नै दासीनै बुलाई। रसालु नषं जाय कहै—ज्यौ माहाराज! भला पधारीया, माहरै माथै भाग्य, राज! कन्या परणौ।

[कुवरजी इसौ सोणने बोलीया—थे कहो सो परमाण छै। पिण मार एण वातरी षूस कोई नई ने वलै कुवरीनी मथै घणा आदमी मूवा, सौ आ कुवरी माहा पापणी छै, सौ म्है इणरो मूढो देषा नई। इसौ सूणन दासी पाछी जायनै रांणीनै हकीकत कही। तठै वलै दासीनै राणी कह छै—जा, तु कवरजीन कजै—श्रीमाहाराज कुवार! परणीजो, न आप माथो लेस्यो तीणनै आपने हाथमे काई आवसी? माहरो राज षराव हूय जासी। आप सगै छो, षत्रीवस छो। इतरो अरजै माहारी मानो। तठै कुवरजीनै दासो सारा समाचार कहीया। तठै कुवरजी बोल्या—दुरस छै, पिण ईन तो म्हे कोई परणोजा नही नै दुसरी कवरी हूव तो परणाय देवो, नही तर मै परा जासा। तठै दासी बोली—माराज-कुवार! दुजी तो वेटी मास दसरी छै, सो बालक छै। तिका थानू परणावा कूकर? तठै कुवरजी वोला—मानै दस मासरी डोकरी परणावोजो। म्हारे कौइ अटकाव नही।]

A तठै दासी सूणनै राणीनै कही। तठै राणी मास दस री कन्यारो व्याव कीनो। घणा कोड कीया। सूसरै जमाइने घणौ प्यार वध्यौ। हीव कुवरजी दिन २० रह्य सीप मागी। तठै राजाजी वौल्या—कुवरजी साहब! इतरा वेगा पधारो, निणरो काइ जाब जाणीजै? तठै कुवरजी कहीयौ—श्रीमाहाराज धीरजै,

---

[–] ख ग घ प्रतियो में निम्नाङ्कित पाठ है—

ख. तद रसालु कहे—इण हत्यारीरो नांम मत लीयो। इणरे वास्ते घणा पुरस मुआ छै। सो नही परणा। तदी दासी कहे—मे तो कन्या परणावारे वासते करता हता। माथो लीया राजरे हाथे काइ आवसी? अर ओ गुनो मांने बगसीस करो अर आप परणो। रसालु कहे—आ तो कन्या न परणा। दुजी वे तो परणां। इसो समाचार दासी आय राणीनु कह्यो। राणी कहे—दुजी कन्या तो मास छरी छै। सो परणे तो परणावा। दासी जाय रसालुने कह्यो—दुजी कन्या तो मास छरी छै। तदी रसालु कहे उवाहीज परणसा।

ग घ तदी (घ. तदी रसालु) कह्यो—'कन्या तो नही परणां' ('–' घ में नहीं है) अणहुतसरी कन्यारो (घ ईण हत्यारीको) नाम ल्यो मति। राजाको माथो ल्यावो। तदी (घ तदी दासो) कह्यौ (घ कही)—माहाराज! माथो लीधां कांई हाथमै आवसी? 'माने गुनो बगसो' ('–' घ. में अप्राप्त है) थे कन्या (घ राजकीन्या) परणो। तदी (घ तदी रींसालु) कह्यौ—आ तो नही परणू, ओर कोई होवे (घ. हुवै) तो परणू। 'तदी राण्या कह्यो—माहाराज! मे तो ईणरै वासतै करता था' ('–' घ में यह पाठ नहीं है)। तवी राणी कह्यौ (घ कयौ)—ओर तो छ मासरी छै (न ओर तो माह सरीषी छै)। 'तदी राणी ओ कह्यौ' ('–' घ में नहीं है)। तदी रीसालूजी कह्यो (घ. रसालु कहीयौ) वाहीज (घ. उवाहीज) परणस्या (घ परणसु)।

म्हारै वारै वरस वनवास करणी छै। सो तो कीया ही जा(ज)वणसी। तीणसू मानै सीप दीराइजै, ठीक लागसी। तरै राणीजी कहायी—कुवरजी साहब! वालक कुवरी छै। सो थे लै जावो तो थाहरी मला छै अने रिण देवो तो मोटी वात छै। तठै कुवरजी कहीयो—थे कहै सो दुरस छै, पीण मेह तो लेजावस्या। दाण-पाणी छै तो मे वेगा ही मीलसा। तठै टीको ओझणो करने कुवरजीने सीप दीवी। हीवै कुवरजी राजाजीसू मीलनै घोडै चढीया। तरे वाइनै साथै चलाइ कुवर रीसालूजी च्याल्या जाये छे। वाछेथी राणी सोकरीने कह्यो—जायो, वाइने ले आवो, जू वाइने ववरावा। ती वारे दासी आवने कह्यो—वाइ तो सासरै पधारीया। तठै राणी दूही कहो छैA—

दूहा[1] —जलज्यो[2] पासा पेलणा, जलज्यो[3] पेलणहार वे।
दस मासारी ह डीकरी[4], ले गयो कुवर सार[5] वे॥ ७२

A–A चिह्नित अंश की वाक्यावली ख. ग घ में अधोलिखित है—

ख. तदी राजा अगजीत पडीतानु बुलाया। आछा लग्न जोवाया। आला-नीला कलस फर घणा ऊछावसु रसालुने परणाया तठे कुवरजी दीन १५ रह्या, चालवारो कह्यो—जेउ जणो आणो करवो, मांने सीष दीयो, मारे अस्त्री मा साथे मेलो। तद राजा अगजीत कह्यो—वाइ नानी छै, मोटी होसी जद मेलसा। जद रसालु कहे—आणो त्यार करावो, ज्यु चाला। तदी राजा अगजीत पोतारी राणी छाने आणो करायो। वाइने वीदा कीधी। रसालु सारा सीरदारासु मील, घोडे असवार होय वीदा हुआ चाल्या जाए छै। पुठाथी अगजीत राजारी राणी दासीने कहे—वाईनु ल्यावो, ज्यु दुध पावा धवारा। तदी दासी कहे—वाइजी तो सासरे पधार्‍या। राणी कहे—वाइ नानी छै। भुप लागी होसी, मा वीगर कीम कर रेहसी? तदी दासी कहे—काइ वीलाप करो छो? राणी कहे—पेटरी उपनी छे, तीणथी मोह आवे छे।

ग. तदी रीसालुजीनै परणाव्या। घणा महोछव कीधा। दन दस रहे नै चालवा लागा तदी कह्यो—माहरी परणी मा साथें मेलो। तदी कह्यो—वाई नानी छै, मोटी होसी जदी मेलस्या। जदी रीसालु कह्यो—मे तो लेई जास्या। तदी वाईनै साथै ले चाल्या। वाईनै साथै दीधा। तदि रसालु मनमै चितव्यो—अगजीत राजानै उरो वुलावो, अवै तो सगा हूवा छा। राणीनै कह्यो—थांरा राजानै उरो वोलावो, माहोमाहे जुहार करा, मेल करे नै मे चालां। तदी राणी कह्यो—मोटा छो, वहुजाण छो, राणीआ थे राजानै कहो। राजा रीसालु माहो माहे जुहार कीधो, घणो रस रह्यो। रीसालुजी चाल्या तदी राणी दासीनै कह्यो—वाइनै ल्यावो, धवावु। ते दासी कह्यो—वाई सासरै गया।

घ. तदी रसालुनै ओछव-महोछव करेनै परणायो। दन १० तथा वी[स] २० सु चालवा लागो तदी कहे—माहरी परणी मो साथे मेलो। तदी मा कह्यो—वाई नांनी छै, मोटी होसी जदी मेलस्यां। तदी माउ दासी कह्यो—वाईजी तो सासरै गया। तदी माउ काइ कहै—।

१ ख राणी वाक्य। २ ग जलजो। घ जलयो। ३. ग घ. जलजो। ४ ख

१९ वारता—[हेव रीसालू कवर चाल्यौ । सू कठइ तो वसती लाभै छै, कठैई क रोहीमै रहै छै नै राणीनै भूष लागौ तरै व्याई हीरणीनै पकडनै चूघाय देवौ । ईण रीतसू जावता चालता ईक दिनरै समै मारगमै हालता येक कस्तूरीयो मृग केरके हेठै कुवरजी दीठो । तरै लघू-लाघवी कला करने मृगलानै पकड लीधो । कोई क गाम आया तठै हिरणनू घणू सीणगार करायौ । भला गुघरा गलामै राषीया । पटु गलारे बाधीयौ । सौनारा सीघ मढाया । मूषमलरी गादी मोरा उपर राषी । ईसा जतनसू हिरणनै लिया वहै छै । तठै येक दिनरै समै येक रुष उपरे सूवटो ने मेणा बेठा कल कर छै । कोणीहीरा पढाया छै । मीनष-री भाषा बोलै छै । तठै कुवरजी लघू-लाघवी कलासू सूवा ने मेनानै पकड लीया । कीणही गावमै आयनै पीजरौ करावणौ तेवडचो । इसौ विचार करता एक स्यौगवास नावं गाव आयौ । तठै कुवरजी सूथार रो घर पूछ नै सूथाररै घरे गया । जायनै सूथारनें कहै छै]—

दूहा– रे सूथारजीरा डीकरा, पिंजरीयो घड देय वे ।
तास मोहर इक मोलडी, ले तु पिंजर देव वे ।। ७३

मेरी छ मासकी कुवरी । ग घ छ मासकी डीकरी । ५. ख रसालु कुमार । ग. घ कुंअर रसाल ।

[–]. ख. ग घ प्रतियो में निम्न वाक्यावली प्राप्त है—

ख एहवे समे रसालु कुमर आगे चाल्या जाए छे । जाता थका ऐक कस्तुरीयो मृग, एक हरणी जाड नीचे उभा छे । सो रसालुए पकड्या । रांणीनु धवरावे । मृगनु पण पाली मोटो करे छे । फेर मारगे जाता एक सुबटो, एक मेना दीठा । सो पकडीया, साथे लीधा । तेहने भणावे छे, गुणावे, पवाडे, षेलावे । मृग, हरणी, सुबटो ने मेना इण चाररा ही घणा जतन करे छे ।

ग ऐस्यौ राणी कह्यौ । अबै रीसालु चाल्या जाय छै । जठै राणीनै भुष लागै तठै हरण्या पकडेनै चुषावै । ईम करता वरस ऐक हूवो । एक दीन वीषै चाल्या जाय छै । जातां थका ऐक म्रग हरणी स्मेथ झाड नीचै रसालुयै विठा । तदि हरण, हरणी आपड्या । कस-तुरीया म्रगनै तो राष्यो । हरणीनै तो छोडे दीधी । सो वनमृगनै तो मातो करै छै । ऐक समै रीसालु कोइक गाम गया । तठै सूवो, मैना दीठी । ती वारे रीसालु सुवो-मैणा लीधी । घणा जतनसु राषै छै ।

घ तदी रसालु चाल्या-चल्या जायै छै । जठै भुष लागी जठै हीरणी पकडी नै चुषावै छै । ईम करता वरस पच । इक दीन समीयौ सौ वनमृग दीठौ । तणीनै उरो पकड, नै सौ वनमृग्नै तो राष्यौ अर मैनानै छोड दीधा । तदी एक गांममै आया । तठै सुवौ, मैना दीठा तणीनै उरा लीधा ।

तुरत मोहर लेई करी, घडीयो पंजर घाट वे।
सूवडौ मैना बेसाडीया, जडिया बेहु कवाड वे ॥ ७४
जतन करै च्यारु जीवतणां, एक ल्यौ कुंवर अपार वे।
पांणी-पथौ हयवरौ, च्याव्यै ज्यां तां जात वे ॥* ७५

२० [वार्त्ता—इण विध सूषमै च्याराहिरा जतन करता थका घणा दिन हुवा छै। इतरै द्वारका नगरी आया। आगै दरवाजा माहे वडीया। तठै नगरी सूनी दीठी। तठै सूवानै कुवरजी पूछीयौ—औ काई जाणीजै। सूनी नगरी सगली दीसै छै? तठै सूवौ, मैना कुवरजीन कहै छै—श्रीमाहाराज कुवार! आजसू छ महीना पहली अमै आया छौं। सू अठै म्हारा साथरो सूवौ वैठो छौ। म्हे पिण उडता आया छा। तठै मील वेठा वाता कर छा। तठै म्है पोण पूछीयौ—औ नगर सूनो क्यू दीस छै? तरै उण सूवौ कह्यौ—इण सेहरमै राक्षस होल्यौ छै। सौ आदमीयानै मार पाधा। घणा ज्यान कीया। तिण डरसू वलै मनष्य हुता सो नामी गया। ईण तरे आ वात सूणी छी। सौ कुवरजी साहैबा ईसा वचन माहेना उण सूवै कह्या। ईण प्रकारै ओ नगर सूनौ हुवो छै।]

[तठै कुवरजी कहीयौ सू मारी हकीकत सूणनै सैहरमै चालीया। हाटै २ वाजार सूणा पडीया छै। तेल, घीरत, मौहरा, कपडौ, चावल, दाल, दुसाला, गैहणा, मोती, माणक, हीरा, पना, पूपराज, पीरौजा, वासन, थाली, वाटका अनेक प्रकार की वसता पडो छै। पीण कोइ धणी नई। इण भात देपता देषता राजा भूवनमे गया। तठै सतभूमीयै अवासै चढीया। मेहलामै डेरो कीयो ने सूवाने कुवरजो कह्यौ—हु रसोई लेनै आवू छु, जीतरै जाबतौ कीजौ। इतरौ कुवरजी वजारमे आयनें कासेटीयारी हाटमै थाली, लोटा, चरी लीवी नै आटो, घरत, पाड् लेने पाछा आया। रसोई जीमण करने जीमीया। ताजा हुवा। हिवै सूवानै कुवरजी कहीयौ—हु राणीरे वास्तै व्यई हीरनो ल्याउ छु, थे जावतो कीजौ। ईसौ केहनै घोड चढी नै रौहीमै जावता एक तुरतरी व्याई हीरणी वच्चानै चूघावती देषी नै वचा सूधी लघू-लाघवी कलासू राणीनै वास्तै पकड

*७३–७५ तक के दूहे ख. ग घ में अप्राप्त है।

[—] ख. इम करता वरस पाच हुआ। ऐक दिन कीरता द्वारीका नगरी गया। देषे तो सर्व सुनी पडी छे।

ग ईम करता घणा दीन हूवा। एक दिनकै वीषै धारावास नगर आव्या। आगै देषै तो धारावास नगरी सुनी पडी छै, दैता मारी छै। नगरी मे लोक कोई नही।

घ तदी धारावास नगरी गया। नगरी सुनी दीठी, देवता मारी।

लाया। राणीनै चूघाई, हीरणीरा जतन करनै आछी जगा राषी। षान-पाणरी जतनै मोकलो कीयौ। हीवै दीन अस्त हूवौ। तठै कुवरजी सूवानै कह्यौ—थ जावतो घणी करज्यौ, हु राक्षसरी जाब करी आऊ छु। तठै सूवो बोलीयौ]—

दोहा— राकस धूतारो अछै, मार्‌या पूरना लौक बे।
आप ईकलडा वाहरू, जतना करज्यौ जोग बे॥ ७६
था वीना सारी वातडी, सूनी हौय सोसार बे।
कुवर कहहै रे सूवटा, आइ राकस हार बे॥ ७७
मारी नै माथौ ल्यावसू, तौ आगल ततकाल बे।
ईम कहीयो लने बारने, उभौ कुमर न उजाल बै॥ ७८
गोरषनाथजीनै ध्याईयौ, मनमै साहस धीर बे।
इतरै राकस आयौ, वरड करड कुक्कार बे॥ ७९
दत कटका कुदतो, पवन उडावै धूल बै।
ईम चलतो पोले निकट, आयौ राकस मूल बै॥ ८०
कुमर चल्यौ सांमो जवे, काढी षडग मूष बोल बे।
बल सभाय रे भूतडा, मांरु वाजत ढोल बौ॥ ८१
तब राकस रूपै रवौ, ददुर पग धूज बो।
हुकार वक्कर हुलसीयौ, कुंवर षडग करि पूज बै॥ ८२
श्रीगोरषनाथजीरे ध्यानसू, षडगथी काढ्यौ सीस बो।
राकस वले नही चालीयो, मारयौ विस्वा वीस बौ॥ ८३*

२१. Aवारता—ईण भातसू रापसनै मारनै माथो लेन कुवरजी सूवा कनै आया। सारी हकीकत कही नै कुवरजो सूवानै कहीयौ—सू-वाजी! दाणा-

---

[–] कोष्ठवर्त्ती अश ख ग में निम्न रूपमें वर्णित है।

ख घर, हाट, बाजार, सर्व सुना पडीया छे। रसालु राजद्वारे गया। देषे तो सर्व सभाइ पडी छे। पीण सर्व नगरी माहे जीवमात्र इके ही नही। पछे रसालु नवषडे महीले चढचा। उठे डेरा कीधा। घोडो नीचे परो बाधीयो। राणीरा मृग, सुवटो, हीरण, मेनारा, घोडारा जतन करे छे। रसालु राणी ने कहे—आ नगरी आपे वसावसा। एहवो वीचार करता दीन तीन हु[आ]।

ग तबि पैला-पैल रीसालू आव्या। सुना घर, हाट देष्या। नवषडं मैहल चढचा। तिठै आप बीसराम लीधो। आपरो सुवो, मैणा, मृग, घोडो, राणी सूर्ष रहै छै। ईम करता दिन तीन हूवा।

घ तदी राजारी पौल गयो। मैहला चढ्यौ। राणीनै मैहलामै ऊतारी। घोडौ पायंगा बाध्यौ। सुवौ, मैना उचा बाध्या। सुवो मैनासु घणो हेत।

* ख. ग प्रतियो में उक्त आठो दूहो के स्थान पर निम्न गद्याश उपलब्ध है—

रहै जामी । तठै सूवौजी कहै—श्रीमाहाराजकुवार ! श्रा वात जोग छै । था करता सारी वात श्रामीण हुसी ।

हीव कूवरजी सदारा सदाई परभातरै समै घोडै चढरणै नीकलै । सौ पाच सौ पाच पाच कोस ताई सहिररे गिरदाव घोडौ फेरै । तठै कोईक वटाउ निकलै तिननै ल्यावै, हवेली भौलाय देवै । धान, द्रव्य मोकलौ वतावै । ईण भातसू वस्ती करवा माडी । ईण भातसू वरस इग्यारे हुइ गया छै । थोडीसी सहरमै वसती हुई । पाचसै ५०० घररी जमीत हुई । राणी वरस ग्यारेमे हुई ।A

हिवै हिरण इकदा समाजौगै मृगलो नै कुवरजी वाता करता मृगलौ वोलीयौ—श्रीमाहाराजकुवार ! म्हारा जतन श्राप घणा करौ छो, षाण दाणारी कुमी काई न छै । पिण म्हे गोहिरा जिनाव[र] छो । सो रोहिमै फिरनै चारा, पाणी छै तौ श्रा नगरी सारी पाछी वसाय देवस्या । ज्यू श्रापणौ धरतीमै नामगौ

ख रसाल महील उपर बेठा छे । एहवे एक राषसनु रसालु श्रावतो दीठो । तीको राष्यस माहाक्रोधवत, वीकराल, क्रूड-नेत्र हाथमे काती छे, इसो दुष्ट राष्यस छे । तीणनु सहीरमे श्रावतो जाणी रसालु दरवाजे श्राय उभा रह्या । कमाड जडघा । इतरे श्राधी रात्र गया देत्य श्रायो । कमाड तोड ने भाहे श्रायो । रसालुए श्रावतो देषी षडगरी दीधी । देता थका माथो, धड श्रलगो जाय पडघो । जद रसालुए षाच श्रलगो समुद्रमे नाष दीधो ।

ग रिसालु दैतने हल्यौ । दैत जाण्यौ । श्रधरात्रे श्राप हल्यो जाणयै श्राप दरबाररै दरवाजै ऊभा रह्या । कमाड जडचा छै । रात पोहर दोय गई छै । श्रतरायकमै दैत श्रायो । रीसालुरा हाथमै पडग काढचौ छै । कमाड तोडे दैत श्रायो । रीसालुयै जाण्यौ, षडगरी दीधी । माथो श्रलगो जाय पडघौ । तदि रीसालु दैतनै श्रलगी जायै नाष्यौ ।

घ प्रति मे न तो उक्त दूहे ही हैं और न इस राक्षस का वर्णन ही है ।

A–A ख पछे रसालु महीला गयो । राणीनु कहै—जीण नगरी उजड कीधी हती, तीणनु श्राज मे मारीयो । हीवे श्रा नगरी सुषे वससी । ईसो सुणीने सर्व राजी हुश्रा । हीवे सुषे समाधे रहे छे । कस्तुरीयो मृग सूर्य उगा पहीलो चरवा जाए छे । पोहर १ दीन चढता घरे श्रावे छे । पछे रसालु सीकार जाए छे । दीन पाछलो पोर एक रहे, तरे घरे श्रावे छे । इम सदा ही रहे । इम करता राणी वरस इग्यारेरी हुई ।

ग राजी होई राणीनै श्राय कह्यो—गाम उजड कीधो छै, तिणीनै तो मारचौ छै । श्रवै गाममै वसती करावा । श्रस्यो मनमै वीचारचौ । तदी रिसालु पोहर दीन चढता सीकार जायै छै पोहर दीन पाछलो रैहता सीकारथी श्रावै छै ।

घ रसालु कूंवर सीकार जायै । पाछलो पोहर रहै जदी पाछो श्रावै । राणी वरस श्राठरी हुई ।

तरा मन षूसी हुवै । तीणसू थे आग्या देवै तो रोहिमे चरवा जावा । तठै कुवरजी बोलीया—हीरजी ! आ वात तो थे सा कही । पिण थान बध षोलनै सीष देवा नै पाछा आवो नही तो पछै थानै कठै जोवता फिरा । तठै हीरण बोलीयो— श्रीमाहाराजकुवार ! आप सरीषा हेतु माणस छोड ने जाता रहु, सो आ वात कदेही जाणज्यो मती ।

दूहा— जो सूरज आथूणमै, उगै दिनमै हजार वे ।
आगन जो सीतल पण करे, तो पिण हु नही बार बे ।। ८४
उत्तम जननी प्रीतड़ो, कीणही क वेला होय बे ।
ते छोडीनै वीसरे, ते जग मूरष होय बे ।। ८५
कुवरजी छाया माहरी, काया नानो मित बे ।
राज सला राजी हुवो, तो मूझ सोष द्यौ हित्य बे ।। ८६
घणा दीनारी प्रीतडी, कीम मुझ छांडी जाय बै ।
रूडा राजिद परषज्यौ, जीवूं ज्या लग काय बे ।। ८७
कुवर कहै अहो हीरणजी, थां म्हां ईधक सनेह बे ।
जावो चरवा रोहीया, वहिला आज्यां तेह बे ।। ८८]

२२ *वारता—इण भातसू कूवरजी होरणने सीष दीवी । हिवे सदाई रोहिमै चर-पी आवै । एकदा समाजोगन द्वारकासू सात कोस उपर जलालपटन नगर छे । तठे हठमल पातसाह राज करै छै । उण राकसरा भयसू घणा पीरानू पूजता ने राकसने मारीयो सूणीयौ ने नगर वसावानौ नाम सूणीयौ । तरे पातसा घणौ राजी हूवौ । घणी सीरणी-वधाइ वेटी । तिको हठमल पानसा आपरा नगरसू कोस दोय उपर द्वारका सहमी नदी मीठा पाणीरी हुती, तीण माथै वाग लगावानी सला थी, सू राकसरा भयसूं हुवो नही । ने(ते) भय मिट्यो जाण ने नदी उपरै वाग लगायौ छै । माहीवला फूल हुवै छै । घणी वेला, घणी वेलडीया, गी(नी)लोतरी चीभडा, षरबूजा, नीला गोहु, साल, दाल घणी नीपजै छै । इसडो वाग छै ।*

[-]. ग घ में कोष्ठकगत पाठ अप्राप्त है तथा ख. प्रति मे केवल इतना ही अश प्राप्त है—तदी रांणी मृग, सूबटा, मेर्नारी जावता करे । ष्याल, वीनोद, हास्य रामण करे । इसी तरेसु दीन गुवार करे ।

- चिह्नगत पाठ ग घ प्रति में अप्राप्त है तथा ख प्रति का पाठ निम्न प्रकार है—पाषती एक सहीर छे। तठे पातसाह हठमल राज करे छे। तीणरे नवलषो बाग छे ।

[सौ येकदा समाजोगमे हीरणजी मजलसा करता कोस पाच ताई जाय निसरचा । तठै आगै वाग आयौ । देपनै माहै ऐठा मल फल-फूल पाया; पिण वागमै जावतो घणो दीठो । तठै तौ पिण हीरण वीचारीयौ— जौ आ जागा भली छै, मारो चारौ पिण मौकलौ छै, पिण दिनरा तो वेत लागे नही, अवै रातरी चरवानै आवस्या । इसौ विचारन हीरण पाछो वल्यौ । सू कुमरजीनै आयनै कह्यौ । तठै कुवरजी बोलीया—आज तौ हीरणजी मोडा कु आवीया ? तठै हीरणजी सारी हकीकत कही । तठै कु वरजी सूणनै हीरणीने कहै—

दूहा— **भौम पराई विगाडीया, वागां हदा फूल वे ।**

रषेयआ जडीमै पडौ, तौ हुयसी सहु धूल वै ।। ८९

हिरणवाक्या

थांह सरीषा म्हारा वांहरू, सो क्यू डरपां जाय वे ।

षांसा म्है फल-फूलडा, नीलडा मांहरे दाय वे ।। ९०]

२३. Aवारता—ईसौ सूणत प्राण कुवरजी मू छा हाथ घालनै राजी हुयनै कहीयौ—हिरणजी ! हिवै हु थाहरै पूठीरपौ छु । आप नित्य सदाई हगाम करौ । हीवै हीरण सझ्या पडीया जावै सौ आधि रातरौ पाछौ आवै । यू करता घणा दीन हुवा । अवै तिण वागवाला रपवाला माली पातसाहरौ निजरानै फल-फूल लागा दीसै । ईण भातसू दातरा सेहनाण देपनें पातसाह वोलीयौ— अरै वनमाली ! आज काल फल-फूल ईसा सेहनाण सहीत ने थोडा आवै, सो काई जाणीजै ? तठै माली वोलीयौ—माहाराज ! आज काल कोई क जानवर हील्यौ छै । सौ दीनरा जावता घणी करा छा, पीण रातरा वीगाड कर जावै छै । तठै पातसाह रीस करनै वोलीयो— अब गुलाम काफर, ईतनै रौज हमकु षवर क्यु कही नही ? मरदुद अपना माल पराब हुवौ छै, सो तु(ह)मारे ताई सोच नही छै, पीण आज तोने गुण माफ कीया । पिण आज वागमै हम आवगें, बीच अछी जगा वनवाय रपणी हम आवगौ, उस जनावर की सीकार करेगे ।A

[—] कोष्ठगत गद्य एव पद्य ख ग घ प्रतियो में अनुपलब्ध हैं ।

A–A. ख ग घ प्रतियों का पाठान्तर इस प्रकार है—

ख. जठे मृग जाय पातसाह हठमलरे वागमे हमेस चरने आवे छे । इस करतां घणा दीन वतीत हुआ । एक दीन पातसाह तीरे वागवान फल-फुल ले गयो । पातसाह हठमल फल-फुल काणा-कोचरा दीठा । वागवानने पुछचों— क्यु वे वागवान ! वहुत दीनसे एसा फल-फुल क्यु लाया, सो कारण काइ छे ? तदी वागवान कही—हजरत, सलामत कवलेयान, अधरातकु वागमे हमेस क्या वलाय आवती हे, सो वाग वीगाडे छे । पातसाह वाक्य—

दुहो— क्यारी[1] केसर द्राषकी[2], फल्या फेल अनार बे ।

कण चटे[3] इण वागमे, पुछु उणकी[4] सार बे ।।

[ईसौ सून नै माली बागमै आय ने छानी जायगा आछी कर राषी । फूलारी विछायत आछी कीवी छै । ईतरै सझ्या पडो । तठै हठमल पातसाह आपस तन-मनरा दोय चाकर ले ने कबान, तीर, आवध लेने वाग पधारीया । माली या(आ)यनै हारज(हाजर) हुवौ, मूजरो कर नै जागा बताई । तठै पातसाह तिण जायगा बेठ नै मालीनै कहै—

दुहा— क्यारा केसर नीलडा, फूली केल अनार वे ।
इण कोटै इण वागमै, आसी ते लहसी सार वे ।। ६१
माली कहै पातसाहजी, मूझकु सीष दिराय वे ।
भोजनकी वीरीया हुई, सौ हु जाउ बार वे ।। ६२
सूण सूण साहिब हठमला, आवेगा तेडा चोर वे ।
हमकु दीजै सोषडी, बहलौ आउ इण ठोर वे ।। ६३
पातसाह अग्या तेहनै, दीघी माली जाय वे ।
हिव ते हीरणजी हालीया, चारो चरवा आय वै ।। ६४
सझ्यासू घडी च्यारडी, रात गई तिहा हिरण वै ।
धीमे पग ठवतो वहै, देषी न(चं)दनी कीरण वै ।। ६५]

ग घ. अनै (घ में नहीं है) कसतुरचो (घ कसतूरीयौ) मृग हठिमल पातसाहरी वाडी चर चर घर आवै छै नीत प्रतै (घ चरै चरै आवै) ईम करता घणा दिन (घ. दन घणा) हूवा । ऐक दिनकै समै वागवान फल-फूल लेई पातसाहजी हजुर गयो (घ. फल-फूल ले आयौ, पातसाहरी नीजरै फल-फूल कीधा) । कोई आधो, कोई आषो (घ. कोईक काणो) ईस्या (घ. ईसा) फल-फुल (घ. फुल-फल) देष्या । अतरायकमै (घ. तदी) पातसाहजी बोल्या— (घ. पातसाह बौल्या) क्यु वे बागवांन ! 'ईतरा दिनमै ईस्या फल-फूल क्यु ल्यायो' ('—' घ में नहीं है) । तवि (घ तद) वागवांन कह्यौ—माहाराज ! 'कोई आधी रात्रै आवै छे, कोई बलाय छै, सो वाग वीगाडी जाय छै, नीत प्रतै आवै छै' । ('—' घ कोईक अधरात रो वागमै आवै छै, वाग वीगाड जायै छै) । तदी हठीमल पातस्याहनै वागवान कांई कहै छै (घ. तदी पातसाह बौल्यो—आप आयमतारा वेगा पदारज्यौ । वागवांन काई कहै)— । वागवान वाक्य । १ ग घ क्यारा । २ ग घ. दाष का । ३ ग घ ईण कोट । ४ ग घ. पुंछु अणकी ।

[—] ख ग घ प्रतियों में निम्न पाठ मिलता है—

ख वारता—पातसाह साझरे समीए घोडे असवार होय वागमे पधारचा । पातसाह घोडो वाध, कबांण कसनें बेठो छे । वागवान पीण कनें बेठो छे । एहवे रात्र पोहर तीन गई । तरे वागवान पातसाहनु कहे—हजरत, आपरे चउ(रु)आ आया हे । तेरे मरजी होवे सो करणा । पीण हमकु तो घरा दीसा सीष देणा । वागवान वाक्य—

सुण सुण साहीब हठमला, आया तुमारा चोर बे ।
हमकु तो घर सीष द्यो, करयजे राजींद जोर बे ।।

२४ [वारता—तठै कुवरजी हीरणने हालतो देपीनै आपनै ठीक हुई। तठै कुमरजी हीरणनै वोलाय नै केह छै—

दुहा— सुणीयै मृगजी आजरी, रयणी गई रे सबे ।
अंग-फूरक ठीक पीण, ए सूकनै दुषल सबै ।। ९६
सौ तुम आज इहा रवै, कालै करज्यौ काम बै ।
आज अजाडी उपजै, तीणसू रहौ ईहा धाम बै ।। ९७

हिरणवायक्य—

सूणीयै रीसालूराय की, चरीया वीण मुझ प्राण बे ।
रहता नही साहिब इहा, प्रभु करसी सौ प्रमांण बे ।। ९८
चालता ठी(छी)क छटकीया, सौ वहिलौ आवस बे ।
ईम कही हीरण उतावलो, चाल्यौ मारग देस बे ।। ९९
घूघरीयांरा सौरसूं, भागो जावे एण वे ।
तुरत वागमे आवीयो, हठमल ज्याण्यो नेण बे ।। १००]

A २५. वार्ता—तठै पातसाह गुघरीयारा झमकसू धरतीरा धमकारसू तीरकवाण सावचेत करनें रूषारा ओटामे जोवै छै। छानो-मानो चालै छै नै मनमै जाणै छै—आज मारा वाग विगाडनवालानू मारसू। ईसौ चिंतव्यौ थकौ रूपारी विडमै आवै छै। तठै हठमलरी छाया डीलरी हीरणमै पडी। तठै हीरण उचौ देपीयौ। तठै तीर साधिया थकी पातसाहनै देपीयौ। तठै हीरण पाल साधनै वागरी भीत कुदीयौ। तठै पातसाह लारै भागौ। सो हिरण सताबीसू आपरे

वारता—तद पातसाह हठमले वागवानकु सीष दीधी।

ग घ ऐस्यो पातस्या[ह] वागवानकै ताई कह्यौ—भला पातस्याह ! सलामत, आप दीन आथमता ऐकला पधारज्यो। तदि पातस्याजि दीन आथमतै ऐकला पधारचा। वागवान वागमै एकलो वैठो छै। आधी रात्र गई छै। अतरायकमै वागवान घुघरा वाजता साभलनै पातस्याहजीसु कह्यो—माहाराज मानै सीष दिजै, थारो चोर आयो छै, अवै आपरी आप जाणो। वागवान पातस्यानै काई कहै[1]—

दूहा— सुणो पातस्या[2] हठीमल[3], आयो थारो[4] चोर वे।
माने तो घर सीप द्यौ, करज्यौ[5] साहीव चोर वे ।।

अथ वारता—तदी पातस्याहजी कह्यौ तु घरजा।

१ घ मे यह गद्य नहीं है। २. घ पातसाह। ३ घ. हठमला। ४ घ थाहरो। ५. घ कोज्यो।

[—] ख. ग घ प्रतियो में कुवरजी एव हिरणका गद्य-पद्यात्मक सवाद अनुपलब्ध है।

A–A ख ग घ प्रतियों में २५, २६ एव २७वीं वार्ताओ की वाक्य-रचना इस प्रकार है—

ठीकाणे आयी, नै पातसाह षोज जोवतो चद्रमारे चादणासू लार आवै छै। रात आधीरा पातसाह षिण सतभोमीया हेठो आयी। हिरण पातसाने देषने छीप बेठौ नै पातसाह जोवे छै। तितर पषारो जावताईरो माहे कुवरजी कीयौ। तठै पातसाह षषारो सूणने वीचारीयौ-ओ हिरण रीसालूरौ छै ने रीसालू जागै छै; कदाचित षबर पडजावै तौ परावी हुवै; तौ अवार तौ कठैई छानौ रहणौ जोग छै नै परभाते हिरणनै सौधनै सीकार करस्या। ईमौ वीचारनै महीलारे पूठवाडे जावण लागौ। तठै महिलारै पूठै आगली वाडी फल-फूलारी हुती नै रीसालूरा परतापसू घणी फली-फूली छै। तिका वाडी पातसाह देष नै माहें जाय सूतौ।

तठै रिसालूनै हिरण याद आयो—रषे आज छीक हुई छै, हिरण कुशले आवै तो भलो। यू सोच रीसालू करै छै। तरै पौहर एक हुई। तठै कुवरजी हिरणरै पूटै आगा। हिरणनै देष्यौ नही नै हिरण पातसाहरा डरसू अलगौ ढुढामै छीपीयो। नै कुमरजो सौच करै छै।

दूहा— रे फूटरमल हिरणला, रयणी गई सहु साथ वे।
आयो नही रे हिरणला, हुवौ वैरी हाथ बे॥ १०१

ख एहवे मृग घुघरा वाजता वागरो कोट डाक माहे परचो। हठमल कहे—सुण बे, घणा दीन का जाता हता, अब काहा जाएगो। इसो मृग सुणके पाछो भागो। तब पीछे हठमल घोडे असवार होय मृग पुठे दोडीयो। मृग जाणे—आज मने मारसी। मेले नही(नई) पाछो जोवतो, जीभ काढतो, डरतो पाछो जाए छे। वासे हठमल होयके यु कहे—अब तेरी ठीक ल्यु। तदी मृग फीरतो फीरतो रात्ररो मारग भुलो, दीसा चुक हुउ, रसालुरा महीला नीचे होय आगे नीसरचो। तद हठमलवाक्य—

दुहा— जष्य राष्यस वेताल हे, साहुकार के चोर बे।
भागा भागा कहा जात हे, क्यु न करे फीर सोर वे॥ २२

मृग वाक्य

होणहार सो बुध उपजे, भवीतव्य कीणही न हाथ वे।
तेरा नाम हे हठमला, आवो कर मुझ साथ वे॥ २३

वारता— मृग इसो हठमलनु कह्यो। रसालुरा महीला दीसा मृग पाछो फीरचो। हठमल पीण पाछा फीर मृग दीसा दोडचो। मृग नासने नवषडे महीले चढचो। हठमल वीचारे— क्यां जांणा, काइ जीनावर छे? कठे ई वेस रह्यो होसी। ओर दीना मृग चरने पाछो आवतो जद रसालु सीकार जाता। जीण दीन मृग आया पेली सीकार चढीया। वासाथी मृग राणी तीरे घुजतो, डरतो, नासतो, भागतो, जीभ काढतो, आयो। राणी

२६ वार्ता—इसौ विचारनै कुवरजी राणीनें आयनै कहीयौ—आज हिरण आयौ नही, तिणरी षवर करणे जावू छू, थे जाबताई करज्यौ। हिरण आवै तो जाबतो कीज्यौ। इतरौ कही नै घोडे चढी नै हथीयारा कमीयौ थकौ रोहीरो मारग सोधतो जाय छै। इतरै सूरज उगौ जाणनै हिरण उठ नै च्यारै ही कानी जोवतौ, हलवै हलवै हालतो थकौ महिला आयौ। आगै कुवरजीनै नही दीठा। तठै राणीनै पूछै छे—

दूहा— किहा गया कुंवरजी प्रभातका, किण ठामै किण ठोर वे।
रांणी कहै रे हिरणला, ताहरी बाहर जोय वे ॥ १०२
रातै नायौ तु हिरणीया, तिणसू षबरनै काज वे।
किहा तु हुतौ हिरणला, कहै तु कारण आज वे ॥ १०३
कुवरजी सोच घणो कीयो, तारै कारण रात वे।
तु इहां कुंवरजी रोहीया, ताहरी कहि तुं वात वे ॥ १०४

हिरणवाक्य

हिरण कहै रांणी रातरी, वात नही कही जाय वे।
मै जीवत मिलीया तिकौ, लहज्यौ अचभो माय वे ॥ १०५
वागां नीलडा चरणनू, पूहता बाहर षी(धी)ठ वे।
लागी हु आगै चल्यौ, इहा हुं आयौ नीठ वे ॥ १०६

वीचारीयो—आज मृगने डर घणो छै, सो काइ क तो कारण दीसे छे ? तदी राणी नव-षडे महीले चढी। उप[र]ली भोम चढने देषे तो एक नर रूपवत, कबाण कसीया वाग माहे झाडांरा गोठ जोवे छै। इसो देषने राणी हठमलनु कहे—

ग अतरायकमै घुघरा वाजता थका वागमै डाके पड्यौ। अतरायकमै हठीमल पातस्या वोल्या—घणा दिनरो जातो थो, पीण आज ठीक पडसी। अतरो साभले म्रग पाछोही ज दोड्यो। तदी हठीमल पीण पाछै हुवो। म्रग मन थकी जाण्यो—आज मोनै छोडै नही। पातस्याहजी कहै—घणा दीनरो जातो थो पिण आज ठिक पडसी। म्रग पाछो नाल नै जिभ काढतो दोड्यो। तदि म्रग रातकै समै डरको मारचौ दसा भुल गयो। तदि म्हैला आगलि नीकल गयो। ते पातस्या मृगनै काई कहै—

दूहा— जाण्या रीण्या विवताल है, साहूकार कै चोर वे।
भाग भाग काहा जात है, षयु न करै तु सोर वे ॥ १८

पातस्या मृगनै काई कहै—

दुहा— होणहार बुध उपजै, भवतव्या कणीहार वे।
तेरा नाम छै हठीमला, आयो कर मुज साथ वे ॥ १९

अथ वात— ऐस्यो मृग कह्यो—कहे नै म्रग दोड्यो। आगै जातां मारगै सोच्यौ—हु तो दसा भुले गयो, मैहल तो पाछै रह्यो। तदि मृग पाछो फिरयो। मैहलामै आयो। पाछै

छीपायौ तबेला ठाणमै, बाहर पूठै जोर वे ।
जाणू महिलरी वाडीया, बाहर होसी को र वे ।। १०७
तिनसू आयो था कनै, इतरै उगौ भोर वे ।
थांसू मीलवा आवीयौ, वीती मूझमै जोर वे ।। १०८

२७ वार्ता—राणी हिरण-वाता साभलनै मैला चढी, पूठलो वाडीया सामो देषै छै । तठै हठमल पातसाह पिण सूतौ जागीयौ । सौ दाढीरा केसानै फूरकावै छै, आलस मोडै छै । तठै राणी जाणीयौ—हिरणरी बाहर दीसै छै । पिण वरस सोलै अठारै रहतानै हूवा, सो कुवरजीरा तप-तेजसू कोई आपणै नैडो फूरक्यौ नही, नै ओ परौ आदमी वाडीमौ आयनै सूतौ छौ नै परभात हुवा जाग्यौ । निरभय थकौ उभौ, तिकौ तौ कोई तरेदार दिसै छै ? इमौ राणी वीचार न वतलावण कीधी—A

दूहा— वाडी मेहला आदमी, साह अछै किनू चोर वै ।
रूषा छीपायौ क्यूं रह्यौ, ढीलौ हुवौ जू ढौर वै ।।[1] १०९
पर घर पर घरती तणा, भय नही मांनौ छौ मन वे ।
भौम वीडाणी होयसी, घरणी भौमनौ तन वै ।।[2] ११०
काची कली मत लूवीयै, पाका लागेगा हाथ वै ।
जीवत जावैगा मानवी, नहि कौ विजा साथ वै ।।[3] १११

पातस्याह पीण आवै छै । आगै मृग हाफतो-कापतो राणी नयै आयो, राणी आगै आय ऊभौ रह्यौ । रीसालू सीकार गयो छै । तदि राणी वीचारयौ—आज मृगने डर क्यु छै ? तदी राणी नवषडै मैहल चढी देष्यौ । देषै तो एक आदमी वाणसु झाड हेरै छै—जाणे मृग झाडमै छप्यौ छै । तदि हठीम्ल पातस्यानै काई कहै— ।

घ. तदी पातसाहा वागमै आया । अतरै घुघरा वाजता सुणीया । तदी पातसाह वौल्यौ—घणा दीना रो जातो थौ पण आज ठीक पडसी । मृग साभलि पाछौ नाठौ । पातसाह पाछै आवै छै । मृग राणी कनै आयौ । जदी राणी जाण्यौ-आज मृगनै डर घणौ छै । जदी गोषडै आये नै देषै तो एक आदमी कवाण-तीर लेनै आवै छै। मृग डरको मारयौ छीप्यौ छै । जदी राणी काई कहै—

१ ख ग घ का पाठान्तर निम्नलिखित है—

राणी वाक्य

दुहा— वागां 'मांहेला' मानवी, साहुकार 'के' चोर वे ।
'दरषत ही' छीपतो फीरे, ढाढो 'गमायो के' ढोर वे ।। २४

'–' ग घ माहीला । कै । वागां माहि । हेरै कै ।

२ ३ दोनो दूहे ख ग. घ प्रतियो मे अप्राप्त है ।

पातसाहवाक्य[1]

किसका बै[2] आंबां आवली[3] , कीसका बै दाष अनार बै[4] ।
किण पूरष हदी गोरडी, कीसका बै दरबार बै[5] ॥ ११२

राणीवाक्य[6]

रीसालू हदी गोरडी, उनका ह[दा] दरबार बै ।
तु कारण क्यू पूछ बै, तांहरै पष वार बं ॥
ईहां तु उभो किम रह्यौ, कैसौ तु हुसीयार बै[7] । ११३

[२८. वारता—ईसी वात कही । तठै हठमल पातसाह वाडी वाहरै आयौ । तठे राणी पातसाहरौ रूप देषतै मूस्ताग हुई । नैण-वाण आमा-सामा छुटा । तठै पातसाह मनमै जाणीयौ—जै आ तौ मृस्ताक हुई तौ फतै हुई, सारी ही वात सभ्कै । ईसौ वीचारनै हठमल बोलीयौ—अरी राणी ! मारो घोडौ तीसायौ छै, थौरोसौ पानी पावौ तौ भलौ काम करौ । तठै राणो कहै—

दूहा— तौरा नाम हठमला, हठिया छै मैरा भी नाम बै ।
विषकी वेली जौ चरै, तो ईण आंदर आम बै ॥ ११४
विष बेलीका ईहा षरा, वाग ई चतुर सूंजांण बै ।
आसी चरवा घौडलौ, तौ हु करिस प्रमाण बै ॥ ११५

---

१ ख हठमलवाक्य । ग तदी हठमल पातस्याह काई कहै । घ तदी पातस्याह काई कहै ।

२ ख कीसका रे । ग घ कीण हदा । ३ ख ग आवली । घ आवली वे राणी ।

४ ख कीसका रे दारम द्राष वे । ग घ कीण 'हदी तु' ('–' घ हदा) अनार वे ।

५ ख. ग घ. कीण हदी तु गोरडी, कीण हदा दरवार (ख दुरवार) वे ।

६ ग राणी हठीमल पातस्यानै काई कहै-घ अप्राप्त है ।

७ ख ग घ प्रतियो में ११३वें पद्य एवं अर्द्धाली की जगह निम्न दूहा प्राप्त है—
रसालु हदा आवा आवली, रसालु हदा दारम द्राष वे (घ रसालु सीच्या अनार वे) ।
रसालु हदी हु गोरडी, उण हदा दुरवार वे ॥ २६

[—] ख ग घ प्रतियों मे २८, २९ तथा ३०वीं वार्ताओ एवं पद्यो का पाठभेद अधोलिखित रूप में मिलता है—

ख वारता—राणी हठमल प्रते इसो जाव दीधो । तद हठमल कहे—मारो घोडो तरस्यो छे, सो पाणी पावो । जदी राणी डरवा लागी । तद हठमलवाक्य—

पातसाहवाक्या

मे हठीया छु हठमला, हठ पातसाह मेरा नाम बे ।
अमृत-वेली मे चरूं, जो सीर जावै तौ जाय वै ।। ११६

राणीवाक्य

अमृतवेली जो चरौ, तौ धरस्यौ ईहा सीस बे ।
तब आवौ इण मेहलमे, जीवन विस्वा वीस बै ।। ११७
सूण-हो साहीब हठमला, सूरां हदा काम वे ।
कायर षडग न बावसी, रकण देसी दाम बे ।। ११८
सूरा पूरा सौ हुसी, आसी तै मैहल मझार बे ।
साई सीसनै दोय नै, आवौ मेहल अटार बे ।। ११६
हठमल मन काठौ करी, मौह्यौ रूप सनेह बे ।
चढवा लागौ चूपसू, पर त्रिय जोडव नि(ने)ह बे ।। १२०
एक षड चढ दूसरै, तीजै षडै जाय बै ।
सातमै चढनै वोलीयौ, थौडासा पाणी पाय बै ।। १२१
म्हे परदेसी दीसावरा, आया तालो जाय बे ।
नानासी नाजक गोरडी, थोडासा पाणी पाय बै ।। १२२
राणी झारी भर लेई, सीतल आछौ नीर वै ।
अवल सूगधा सामूडी, उभी आय नै तीर बै ।। १२३
झारी हठमल हाथ लै, पाणी पीवन हाथ बै ।
झूकीयो सूंगणीरका चूवै(झूवै), जाणै गहलौ वाथ वै ।। १२४

राणीवाक्य

कर ढीला घट सांघूडा, नीर ढुलो ढल जाय बै ।
पथीडौ तिरस्यौ नही, नेयणा रहीयौ लूभाय बै ।। १२५

हु हठालु हठमला, हठीया हमारा नाम बे ।
मेरी पाग बत्रीस वड, उपर छोगा च्यार वे ।। २७

राणीवाक्य

तु हठालु हठमना, हठीया तुमारा नाम बे ।
वीषकी वेलडी जो चरे, तो सीर धरी इहां आव बे ।। २८

हठमलवाक्य

हु हठालु हठमलो, हठीया हमारा नमा बे ।
ए अमृतवेलडी मे चरु, जो सीर जावे तो नाष वे ।। २६

इसो कहे हठमल महोले चढचो ।

हठमलवाक्य

हम परदेसी पंथीया, आया तीरस्या आज वे ।
जो सूगणी मन रजी कै, आपौ तौ सीझै काज वै ।। १२६
षरीय उ(डु)हेलि छातीयां, बाधी नैणा-बांण वै ।
ताकी त्रीस लागी षरी, रांणी करीयै पिछाण वै ।। १२७
रांणी सूण मोहित हूई, कोधी घणूं मनूंहार वे ।
रीसालू हदी गौरडी, चोरडी करवा त्यार वौ ।। १२८
माणस ते नही ढोरडा, पर त्रीय राषै नेह वै ।
नारी पत छोडो तुरत, पर पूरषासूं नेह बै ।। १२९
ते नारी गढसूरडी, होवै जगमैं हराम वै ।
त्यूं ए रीसालूरी गोरडी, हठमलसू हित काम वै ।। १३०

२९ वारता—इण भातसू जाव-साल करनै हठमल नै राणी बिछायत बैठा । माहो सनेहरी वाता करता, चौपड रमता पातसाह सारी ही वीध रीसालूरी पूछ लीवी, मनरी वात सारो ही लीवी । चतुराईरी कलासू राणीनै मोहत कीवी ।

हठमलवाक्य

एक षड चढी दुसरे, तीसरे षडे आय वे ।
मे परदेसी पथीया, थोडासा पाणी पाव वे ।। ३०

वारता– हठमल इसो कहीयो । तरे राणी कुजो भर पाणी पावा गई । हठमल पाणी पीवा लागो ।

राणीवाक्य

दुहो– कर चीदा दारु घणो, नीर ढुले ढुल जाय वे ।
पथी नही तु तरसीयो, नेणा रह्यो लोभाय वे ।। ३१

वारता—जद हठमल पातसाह राजी हुऊ । राणी पीण षुसी हुई । दोनु नव षडे महीले चढ्या । चोपड षेल्या ।

हठमल वाक्य

दुहो– चोपड षेले चतुर नर, दस दस मोहर लीगाव वे ।
नटण न पावे सुदरी, द्यो धुर अप्पर दाव वै ।। ३२

राणीवाक्य

नाहर सेती अधीक वल, साहीव चतुर सुजाण वे ।
हस हस वाता करत सु, वगा (डा)सु कीसो गुमान वे ।। ३३

वारता—इम आमा साहमा दुहा–गाहा कहीया, रम्या-षेल्या, भोग-वीलास कीया । हठमल रसालुकी षवर पुछी—सीकार कीण वेला जाए छे, कीण वेला पाछा आवे छे तीका कहो । तद राणी कहे—पोहर १ दीन चढता जावे छे, पोहर १ दीन पाछलो रहे, तरे आवे छे । इसो सुण ने हठमल असवार होयने घरे गयो । तठा पछे महीलारे वारणे मेना हती सो वोली—भला भाभीजी ! सषरा हुआ, थाने छ मीनारा पाली मोटा कीया था, सो आज आछी कीनी, पीण रसालु भाइने आवणद्यो ।

दूहा– जे पर पूरषां कामनी, हील-मील षेलणहार वे ।
ते पतिनैं काकर-समो, गिरणैं नित की नार वे ॥ १३१

३० वार्ता—इसो पातसाह मनमैं वीचारी नैं राणीनैं कहो–'तेरे ताई पातसाहकी मूदी करू, तैरा हाल हुकम, तैरा हुकम सारी पातसाहीमैं करूगा । तेरी आण-दाण कोई लोपन पावैं नही । धनकी धनीयानी करूगा । हुस वातकै वीचै जौ कछू कूड है तो पूदा मैरै ताइ मफा देवेगा । या वातमैं कसीर न जाणीयौ । तुमारा हीताकी कबूलायत इस तरफ रहैगी । अरी मेरा नगर नेहडा है । अब तुमारा मनकी तुम करो ।' तठै राणी वोली—पातसाह ! सीलामत, अबी ले चालौ तो ठीक है, नही तो रीसालू आवैगा तो वेत वनैंगा नही । तठै पातसाह राणीनैं लैनें उठीयो । तठै सूवो नै मेणा पीजरमैं बेठो थी । तरै मेना केहवा लागी—

दुहा– दस मास हदी परणीया, कुंवर रीसालू तौय वे ।
सेवतां सोलह वरसमैं, कीधी तो मनमैं जोय वे ॥ १३२
रीसालूं कुवरने छोडनें, क्यू जावैं घर ओर वे ।
पर पूरषासू नेहडो, किम कीजै निज जौर वे ॥ १३३

ग ऐस्यो हठमल पातस्याहनै कह्यौ । तदी पातस्याहजी काई कहै—थोडो सो पांणी पावो, तीरस लागी छै । तदी राणी नीची उतरवा लागी । तद राणी पातस्याहरो नांम पुछ्यो । तदी पातस्याह राणीनैं काई कहै—

दूहा—मेरा नाम छै हठीमला, नवहथा हठी होय वे ।
मेरी पाघ वतीस वड, उपर छोगा च्यार वे ॥ २३

राणी पातस्यानैं काई कहै-राणीवाक्य

दूहा—तु हठीमल तु हठीमला, हठीया तेरा नाम वे ।
रषी वेली जो चरै, सीर धरीया आव वे ॥ २४

तदि हठीमल राणीनैं काई कहै—

दुहा—हु हठवा हठीमला, हठीया मेरा नाम वे ।
रषी वेली जे चरै, सीर जाऐ तो जाग्र वे ॥ २५

तदि म्हैल चढ्या । राणीवाक्य—

दुहा—ऐक षड दुजै षड, तीजै षड आय वे ।
मे परदेसी पांथीया, थोडो सो पाणी पाव वे ॥ २६

वात—राणी पांणीको कुजो भर लाई । पाणी पीवा लागा । राणी काई कहै—

दूहा—कर छीदो क्यु कर पीवै, नीर ढुल ढुल जाय वे ।
पथी नही तीसाईयो, नयणा रह्यो लोभाय वे ॥ २७

३१. वार्ता—A. इसा दूहा मेणा राणीनै कह्या। तठै राणी पीजरो पोल नै मेणानै काढीनै पापा षोस नापी ने छुरी लेवाने उठी। तठै सूवै विचारीयो—राडडी मेनैन मारसी तो अवै डाव काढणो। दूसो विचारने पीजरा माहैथी सूवो नीकल नै मैनाने चाचमें पकडै नै उडीयो। सू सेहर बारे दिषणा दिसै कानी माहादेवरो देहरो छो, तिणरै वारणै एक मोटो आवो छै, तिणरे पेडरै पोषाल छै, तिणमै मेनानै वैसाण नै कहै छै—

दूहा— कामण हीयडा कोरणी, जीवत रही तुं आज वे।
हिव सारी सीध होयसी, नेह विलूधी नाज वे॥ १३४

३२ वार्ता—हिवै नाअकण राड कनासू जीवती छुटी छै। सो हमै पापा-परा वेगी ही आवसी। षीण पीणोरा जतन करवो करसू। कीण ही वार्तमे कसर

वात—तदी पातस्याह रजावंध हुवा। नव षडे म्हैल चढचा, चोपड षेल्या। तदी रीसालूकी वेई पुछ्यो—कदी सीकार जाऐ छै, कदी आवै छै? तदि राणी कह्यो—पोहर दिन सकार चढता जाऐ छै, पोहर पाछलो रैहता आवै छै। तदि हठीमल पातस्याह नै राणीरो चीत-मन एक-मेक हुवो। जाणे-अस्त्री रभा छै, ईणसु भोग भोगवु, ऐसी तो देवतारै घर नही। तदि हठीमल भोग-वीलास करी नर-भवनो लाहो लीधो, ऐक-मेक हुवा। पोहर दोय रहे नै सीष मागी। तदि राणी कह्यो—तुम्हे नीत-प्रत ईण वेला आवजो, ईम कैहनै सीष दीधी। आप घरे गया। ईतरै मैणा वोली—भला, भाभी! थे ऐसा हूवा। थानै महीनाका पाल्या था। सो थारा तो ऐसा लषण छै। पिण रीसालु भाईनै आवाद्यो।

घ—वारता—तदी पातसाह वोल्यो—थोडो सो पाणी पावो। तदी रांणी पावण लागी।

दूहा—कर छीदो पाणी पीवै, नीर ढुली ढुली जाय वे।
पथी नही तीसाइयो, नैणा रह्यो लुभाय वे॥ १७

तदी राणी पातसाहारो नाम पुछ्यो—

दूहा—मेरा नाम हठ भला, नवहठ हठीया होय वे।
मेरी पाघ वती पुड, उपर लुगा च्यार वे॥ १८

वारता—तदी राणी कह्यो—उचा पदारो। पछै नव षडे चढयो। रसालु वेई पुछ्यो—कदीयक सकार जायै छै? पोहर दीन रैहता आवै छै। पछै पातसाहा राणी माहो-माहे हसै, रमै छै। मानव-भवरो लाहो ले नै सीष मागी। तदी राणी कह्यो—थे सदाई आवज्यो। पातसाह घरो गयो। पछै मैणा वोली—भाभीजी! थे पण आछा हूवा! भाई रसालुनै आवादो।

A-A चिह्नांतर्गत पाठ ग ग घ प्रतियो मे इस प्रकार प्राप्त है—

ग इतरो कहीयो। तरे राणीनु रीस चढी। सो पजरा माहेथी मेनाने काढने मार नाषी। तदी सुवटे जाणीयो—मोनु पीण मार नाषसी। तद ल्ल-पल कर मीठे वचने कहीयो—बाईजी! मोनु गरमी घणी होवे छै, सो वारे काढो। तद राणीइ पीजरा माहेथी सुवाने वारे काढीयो। तव सुवटो उडने आवे जाय वेठो।

कोई पडण देउ नही। नै लारै राणी नै पातसाह सोच कीयौ । पातसाह कही–बेटै सूवटै घणी कीवो । अबै तो काम तरेदार छे। दूसो विचारै छै। तिण वेला सूवौ उडने सतभूमीया मेहला उपर आय बेठौ राणी नै पातसाहनै दूहो केह छै A—

[दूहा– है सूगणी म्हे पषीया, किणरे आवा हाथ वे ।
पिण छल कर म्हे छै तरचा, बलि माहरो नही नाथ वे ।। १३५
पिण थै जावो गोरडी, पातसाहरे साथ वै ।
माहरो धणी जब आवसी, तद म्हे हौस्यां सूनाथ वे ।। १३६
साइद भरस्यां गोरडी, चौरडी कीधी चोर वै ।
साहां घर पू हती गोरडी, करि करि बहु मनवार वे ।। १३७
पिण को दाय-उपायथी, लासां थानै इण ठोर वे ।
रीसालूरी तु गोरडी, म्है मैतै कीधी जोर वे ।। १३८
भला तुम्हे सुषीया हुवौ, म्हे दुषीयारो देह वे ।
साहिब करसी सौ भला, पषी पषी सा लेह वे ।। १३९
आजूनौ दिन अति भलो, जीवत रहीया म्हेह वे ।
हिव सारा ही थौकडा, करस्यां सारा जेह वे ।। १४०

३३ वार्ता—तठै पातसाह नै राणी सूवाग दूहा सूण्या । तरै मनमै जांणीयो–जे सूवटो काम पराव करे तो आज तो ओ काम न करणौ, सूवारै कोइ वता करस्या । इसौ पातसाह विचारने राणीनै कहै—है राणी ! आज तो थें अठे ही ज रहौ, साथै ले जाऊ तो सूवौ छटैपग छै, सौ उडनै कुवरजीनै कहै । कुवर घोडौ दपटायने आपाने पोच ने दोन्हाहीनै मार नाषै । तिणसू आज मानै सीप हुवै छै नै सूवारे येक पवनवेग घौडो छै सो ल्यावू छू । तिण माथे थानै चढाय नै एक घोडी मे लेज्यावस्या ।]

ग ईतरो कह्यो । ती वारे राणीनै रीस चढी । तदी मैणाको गलो पकडचौ, पीजरा माही थी काढीनै मारी । तदि सुवटो डरप्यो, जाण्यौ–मोनै पीण मारसी । तदी सु वै चकोर थकै दाव कीधो । मोनै गरम घणी होवै छै । सुवानै पीजराम्हैथी परो काढचो । तदी सु वो मैणानै मारी तदी सुवो ऊचो जाय बैठो ।

घ. तदी राणीनै रीस आई । तदी मैणारौ गलो काटचौ । तदी सुवौ डरप्यौ । सुवौ कैहवा लागौ–मोने गरमाई घणी हूवै छै । पीजरा माहीयी परो काढीयो । सुवो उडे नै नवषडा मैहल उपरै जाये बैठौ ।

[–] ख ग घ में कोष्ठगत दोहे एव गद्यांश अप्राप्त हैं ।

A तठे राणी सूणने बोली—पातसाह ! सिलामत, आप कया सू प्रमाण छै । तिण षौज रमाया सारा हि थोक होसी । आप दिन पाच सात तौ घोडै चढिनै इण ही वेला पधारबो करो, विलास करे नै पधारबो करो । दिन पाच-सात पछै दाव लागसी, सो ही करस्या । धिरां काम सिध हूवै ।

दूहा— उतावल कीया अलूभीयै, सनै सनै सहु हौय वे ।
मालो सींचै सो घडा, रीत आया फल होय वे ।। १४१
कांम विचारीने कहो, रहसी तिणारी लाज वे ।
ऊठ कहो उतावला, तो विणसाडै काज वे ।। १४२
षिजमत-ब घी रावली, जांणो चित्त मझार वे ।
रीसालूं नै छोडस्यू, कोइ क डाव अटार वे ।। १४३
सूष करस्यू सारी वातरी, पषीडारी पूकार बे ।
लागवा नही द्यू एक ही, करस्यू हुय हुसीयार बे ।। १४४
आप षूसी पीड पधारीयै, दुष म करो कोई आज बे ।
साहिब सारा ही हुसी, आंपणा चित्या काज बे ।। १४५

३४ वार्ता—इसा समाचार पातसाहनै कहीया । तठै हठमल सैंणासू सीप करनें घरा दीसा हालीयो सो घरे पूहता । ने राणी दीलगीर हुयने सूती । सूवौ सतभौमीया मेहला चढीयो थको कुवरजीरी वात जोवै छै । A

B इतरै सागी वीरीया हुई । तठै कुवर घोडो षिलावता आया । आगे सूवानै मेहीलरे इडारे वेठो दीठो । तठै सूवानै कुवरजी पूछै—

दूहा— आज उजाडा देसमै, फरहरीयां पषाल वै ।
चिहु दिसी जावौ चमकतौ, नैणा करीय विसाल वे ।। १४६
पींजरीयारा पोढणा, सौ इहा किम तुमे आज वे ।
क्या विध वीत क दाषीयौ, कैसा हूवा आज काज बे ।। १४७ B

A-A चिह्नगर्भित पाठ ख ग घ प्रतियों में नहीं है ।

B-B ख ग घ. प्रतियों में गद्यांश एवं पद्यों के स्थान में निम्नांश ही प्राप्त है—

ख एहवे रसालु आया । तदी सुवटो रसालु प्रते काई कहे छे—

ग अतरायकमै रीसालु जी पीण आव्या । अनै सु वो बोल्यो । सुवो रीसालुनै कांई कहै—

घ अतरै रमालु आयो । सुवो काई कहै— ।

सूवावाक्य[1]

पच्च[2] पंषेरू सात[3] सूवटा[4], नव[5] तीतर दस[6] मोर बे।
राजा रीसालूरा मेहलमै[7], चोरी[8] कर गयां चोर बे॥ १४८

रीसालूवाक्य[9]

चोर इहा कुण आवीयो, एहवो इहा कुण सूर बे।
साच कहै रे सूवटा, मत बोलेजे कूर बे॥ १४९[10]

सूवावाक्य[11]

अहो अहो कुंवरजी रीसालूवा, मे नही बोलां झूठ बे।
रहै पिंजरारा वासिया, सो किम मंदिर पूठ बै॥ १५०[12]

[३५ वार्त्ता—तठै कुवरजी मनमै वीचारीयो—सूवो-मेणा पिंजरमै हुता, सो सूवो महिला उपरे बेठो; तिणरो कारण काईक तो छै? इसौ विचारनै कुवर मेहला चढिया। तठै सारा हि चरित्र दीठा। सेझ रू दोली, विछाता सल दीठा, पानारा पिक ठामर दीठा। तठै राणीनै जगायनै कुवरजी पूछै छै—

दूहा— आज मेहिल आछो वणौ, पर हथ लीधो लूंट बै।
साचो कहै वै सूवटो, रांणी कहो पर पूठ बे॥ १५१
स्यू कीधो रांणी एहवो, चारित्र सलूणा नैण बे।
लट काली नारी कहो, साच कहो मोरी सैण बै॥ १५२

३६ वार्त्ता—है राणी! सूवै वात कही, सौ साची कै कूडी? तठै राणो विचारीयो—इण सूवो हरामषोर मारा चरित्र कुमरजीनु कहिया दिसै छै, पिण माहरा चरित्र आगै कुवरजी कठै पूगसी, कठा ताई साच कढावसी? इसो विचारनै कुवरजीनै राणी कहै छै—]

---

१ ख सुकवाक्यं दुहो। ग. घ. दुहो। २ ख पाच। ३. ४ ग. घ उड गया। ५ ग घ दस। ६. ग. न. दोय। ७. ख. राजा रसालुरे मालीये। ग घ. रीसालु हदा धवलहर। ८. ग. घ कोई चोरी। ९ १०. ११ १२. ख ग. घ में अनुपलब्ध हैं।

[—]. ख. ग घ. प्रतियों में केवल निम्न वाक्य ही प्राप्त है—

ख. वारता—रसालु सुवटारा इसा वचन सुण ने राणीने कहे-जुउं राणी! सुवटो कांई कहे छे? राणी कहे—

ग. वारता-ऐस्यो त्रीभाव सुण नै रीसालु रांणीनै काई कहे—रांणी! सुवो काई कहै छै?-तदी कह्यौ—

घ. वारता—तदी रसालु कहै—राणी! सुवौ कांई कहै छै? तदी राणी कहै—

दूहा– कूडी बोलै छै सूवटौ, मेना गई अवनास बे ।
तिणसू चूका ढोलडा, राज सूण्याया तास बे ।। १५३A
हम की लोयण लोइया, हमथी तोरचा हार बे ।
हम ही सेझ ही रूंदली, हम ही न्हीष्या तबोल बे ।। १५४B

[कुंमरजीवाक्यं

पिलंग छपीयां छाटीयां, ढीली भई यबदांण वे ।
तीर भया वीष हो रीया, किम कर चढीय कबांण वे ।। १५५

राणीवाक्यं

ऊ एकलडी महीलमै, तोणथी कीधी चोल बे ।
साच न बोल्यौ सूवटौ, गलां हंदी रोल बे ।। १५६]

A. इस दूहेके स्थानमें ख ग घ. में केवल निम्न वाक्य ही प्राप्त हैं—
ख. सुवटो जुठ वोले छे । ग जुठो बोलै छै । घ सुवो धूल षायै छै ।
B ख ग घ में निम्न दो दूहे प्राप्त हैं—

रसालुवाक्यं

दुहो– कीण ए लोयण लोइया, कीण ए तोडचा हार वे ।
कीण ए सेजा मुगदली, कीण राल्या तंबोल बे ।। ३५

रांणीवाक्यं

हम ही लोयण लोइया, हम ही तोडचा हार वे ।
हम ही सेझा मुगदली, हम राल्या तबोल वे ।। ३६

ग तदी रीसालु राणी नै काई कहै छै[1]—

दूहा– कीण[2] ही लोयण लोईया[3] वे राणी[4], कीणही[5] तोडचा हार वे ।
कीणही[6] सेजा रूदली, कीण ही नांष्या[7] तवोल वे ।। २९

रांणीवाक्यं

मे ही लोयण लोईया[8] वे कवर[9], मे ही तोडचा हार बे ।
मे ही सेजा रूढली, मे ही नाष्या[10] तबोल वे ।। ३०

घ. १. तदी रसालु कहै—। २ घ कण ही । ३ घ लुईया । ४. घ में नहीं है । ५. घ कीण । ६ घ. कीणी । ७. घ राल्या । ८. घ लुहीया । ९. घ. मे नहीं है । १०. घ. राल्या ।

[—] कोष्ठगत संदर्भ एवं १५५ तथा १५६वाँ दूहा ग घ में अप्राप्त है तथा ख प्रति में एक ही दूहा प्राप्त है जो इस प्रकार है—

रीसालुवाक्य

पलग छीपाए छाटीये, ढीली भई अबदांण वे ।
तीर भाया हम ले चले, कीम कर चाढी कबाण बे ।। ३७

A ३७ वार्त्ता—इसो सूण नै कु वरजी उ चा जोवा लागा। तठै छातरै पीक नीजर श्रायो। तठै कु वरजी बोलीया—रांणीजी साहिब ! श्रोर काम तौ थे कीया, पिण छातरे पिक किण लगायो ? श्रो पीकरो तौ जोधार हुवै नै सवा मण लोह डील उपर राषै, तिण विना इतरो उ चो न लागै। तरै राणी बोली—माहाराज कुवार ! श्रो पीक तो मे लगायो छै। ढोलीयै चीती सूती थी तरे मै छातनै वाह्यो। तठै कु वर बोलीया—दूरस कह्यौ छै, पिण काना सूणीया तो न पतिज्यू, श्राप्या दीठा पतिज्यू। सौ श्रो ढोलीयो छै, तिण माथै सूय ने पीक बाहा। तठै राणी ढोलीया चित्ती सूय ने पिक नाष्यौ। सौ पीक पूठौ माथा उपर श्राय पडयौ। इम दोय-तिन वार घणी मेहनत कीवी, पिण पीक पूठो श्राय पडै। तठै कुवरजी बोलीया—राणीजी ! घणी मेहनत कीवी, थाहरा गुण निजर श्राया।A

Bइतरै सूवौ पिण महिलरा इडासू उडनै कुं वररो हाथरो श्रगुठा उपरे बेठौ। सूवासू कु वरजी सारी हकीगत केह दीवी। मनमै जाणीयौ—जे कोई पूरष बलवत जोरावर छै, पिण दाणा-पाणी छै तो सारो हि जाबतो कर लेस्या। इसो विचार ने कु वरजी सूवानै पूछीयो—सूवाजी ! मेना कठै गई ? तरै सूवो मनमै जाणीयौ—जै श्रवै सागै वात कहु तौ राणीरो नाम हूवो, तरै सूवै कह्यौ—माहाराज कूवार ! मनै छोडनै जाती रही। तरै कुं वरजी बोलीया—सूवाजी ! श्रस्त्ररी कीणही री नही छै।B

Cयू वाता करता कुवरजीरो बोल हीरण सूणीयौ। तठै हीरण कु वरजीसू मीलवा श्रायो। वीती, तीका बात श्रहमी-सामी पूछी। तठै कु वरजी जाणीयों—निश्चौ हठीयौ पातसाह कहीजै, तीकोइ ज दिसै छै। इसौ विचार नै हीरणनै वरज ने कु वरजी सोय रह्या।C

A–A चिन्हगत पाठभेद ख ग घ प्रतियो में निम्नोल्लिखित है—

ख. वारता– रसालु कहे—देषा, थे मा देषतां नवषडाके छाजे तबोल नाषो। तदी राणीइ पान-बीडी चावने छाजा सार तबोल नांष्यो। सो राणीरे पाछो माथा उपर श्राय पडयो। जद रसालु कहीयो—थांरा गुण जांण्या, थे वेसे रहो।

ग वारता– तदि रीसालु कह्यो—म्हा देषता नापो। तबोल नवषडं छाजै नाष देषालो तो थे साचा। तदि पान चाव्या। तबोल नाष्यो। माथा ऊपरै पाछो श्रावी पडयौ। तदी रीसालु कह्यौ—श्रबै बैसो। म्हे जाण्या या(था)नै।

घ तदी रसालू कहै—माह देषता पान तमाषु षावौ, नवषडयाकै छाजै ताबोल नाषो। तदी राणी पीक नाष्यो, सो पाछो माथा उपरै श्रावी पडयो। रसालु कह्यौ—थे ठकाणै बैसो, थहरो जाणौ।

B–B यह श्रश ख. ग घ प्रतियो में श्रनुपलब्ध है।

C–C ख ग. घ प्रतियो में चिह्नित श्रप्राप्त है।

Aपरभातरो पूहर हुवो। तठै घोडै असवार हुई यनै सूवानै ले सीकार चढिया। राणीनै जाबता दिवी। तठै सूवो नै कुवर सहिर बारे जायनै घोडो छानी जायगामे राषीयो नै सूवो ने कुंवरजी छानैसै उगरवाडै होय ने मेहलरी वाडीया आयने बेठा।

Bतठै सवा पूहर दिन चढीयो। तठै हठमल पातसाह नवलषै घोडै चढी नै राणीरा मेहला आयो। तठै सूवानै कुवरजी कहीयो—जावो, थे षबर ल्यावो। देषा, राणी एकली छै कै दोकली छै? तठै सूवोजी छानेसे महिला देषने पाछो कुवरजी पासै आयो। आय ने दूहो कहो—B

[दूहो– करसू कर मेलावीया, सेझां लेत सवाद बै।
डर किणरो नही कुवरजी, अब मत करी थै वाद बे।। १५७

३८ वार्त्ता—तठै कुवरजी हथीयारा सझिनै पातसाहरो मारग जाय रूधीयो छै। पाणीपथो घोडो पीलावै छै। तठै सूवाने कुवरजी कहीयो—जा, तु षबर दे आव। तठै सूवो उडनै मैहिला उपर आय वेठो। टहुका दिया नै समस्या-बध दूहो केह छै—

दूहा– आइयो लेष आलाहका, दूष-सूषका विरतत बै।
आवेगी यारो मोतडी, पर-बधी कुलवत यै।। १५८

३९ वार्त्ता—इसो दूहो केहने किलोल कर वेठो छे। पाषा फरफराट करै छे। रोम रोम चाचसू समारे छै। इण भातसू घडी येक चरित्र करने पातसाहनै सूनाय नै बोलीयो—

A–A ख ग. घ में निम्न पाठ है—

ख इम करता तीको दीवस वतीत हुउ। बीजे दीन रसालु सीकार चढीया। सुवटानु साथे लीयो। महीला नीचे छाना जाय वेठ रह्या।

ग तदी रीसालु दुजै दीन सीकार जातां सुवानै लारै ले गया। आप सीकाररो मीस करेनै मैहलामै ऐकत जाए वैठा।

घ दूजै दीन सकारको मस करेनै गयो। सुवा नै हीरणनै ले गयो। सो आघोसो जाये नीचली भुममै छानोसो वैठो।

B–B ख. ग. घ. का पाठ इस प्रकार है—

ख इतरे हठमल फेर आयो। उचो महीले चढयो। रसालु चढण दीधो।

ग. अतरायकमै पातस्याजी आया। हठीमल उचा चढया। रीसालुयै चढवा दीधो।

घ अतरै दोनरकै वषत हठमल पातीसाह मैहल ऊपरै चढयो। रसालु जावा दीधो।

[—] ख. ग घ. प्रतियो में कोष्ठगत गद्यपद्यात्मक अश अप्राप्त है।

दूहा— आईयो कुंवरजी आवीया, सेहर कनै आश्रांम बे ।
रमो रे पथीडा समझिने, उड जावो निज धांम बे १५९
इम टहुक्का सरला दीया, सतभौमीनै धांम बे ।
रांणी-हठमल तिहा सूण्यो, उठीया छोडी कांम बे ॥ १६०]

* ४०. वार्त्ता—इसा समाचार सूणनै पातसाह सावचेत हूयने, हथीयार पडिहार लेइने, आपरै घोडै आय नै पागडै पग दीधो । तठै राणी घणी वीरहमे मत्त हूई । तठै पातसाह राजा-मारी चाल पकडनैं केह छै—

दूहा— रयणी दुषकी राश भी, भरसी गुंण सताब बे ।
ढोली सहु ढीली पडी, जावो कलेजा काप बे ॥ १६१
मे विरहणी विरहा तणी, फीट सूवटा तुझ फोट बे ।
सूषरी घडीय छुटाय दी, जीवत वीधी चोट बे ॥ १६२
हठमल हठ कर चालीयौ, निज मारग मन रंग वे ।
आगे रीसालू देषीयो, तुरग कुदावे अभग बे ॥ १६३*

[४१. वार्त्ता—पातसाहजी आपरा मारगमै चालता आगै रोसालू कुवरनै घोडौ कुदावतौ दीठौ । तठै पातसाह जाण्यौ—आज चोट हुसी । इम चालता आमा-साहमा मिल्या, वतलावण हुई । तठै कुवरजी कहै—रे हठमला वावला ! माहरा महिलां माहि चोरी कीधी, तिणरो जाब दिरावो । तठै पातसाह बोलीयौ—तेरा मेहिलका चोर मे हू, तेरे करणा हुवै, सू ते करलै । तठै कुवर बोलीयौ—तु सूरबीर छै तो पेहली हथीयारां हाथ करो । तठै पातसाह बोलीयौ—हु हाथ करस्यूं तरै थे कीतरीक वार रेहस्यौ ? यू मनवार करता कुवर-पातसाह मूछा वट घाल्यौ । तरै रीसा करनै पातसाह सवा मणरो भालौ कांधै हुतो, सो कुंवर साहमौ वाह्यो । तठै कुवरजी कलासू टालोयौ । सो भालो दूर जातो पत्यौ । तठै रीसाल आपरो भालो लेने पाछो वाह्यौ । तिण पातसाहरे छातीमे षूतो बाहिर पार निकल गयो । तरे हठमलजी घोडासू हेठा पडीया । तठे कुवर हेठो उतर ने पातसाह कनै आयने कहै छै—

दुहा— नार पराई विलसतां, कांटा षूर तूटाय बे ।
सीस साई जव दीजीये, मीच पडै सूचि काय बे ॥ १६४

— ४०वीं वार्ता का गद्य-पद्यांश ख. ग घ प्रतियो में नहीं है ।

[—]. कोष्ठकान्तर्वर्त्ती ४१वीं वार्ता के गद्य-पद्यात्मक अंश की वाक्यरचना ख. ग. घ प्रतियो में इस प्रकार वर्णित है—

सूण रे हठीया पातसा, ताहरो बल हिव फोर बे।
हठमल धरती लोटातो, चोरी पडी सीर चोर बे।। १६५
हिव रीसालूं सीस कूं, वाह्या अपणा षग्ग बे।
हठमलका सीस कपीया, ते भारगने वगाव बे।। १६६]

४२ वार्ता—तठै पातसाहनौ कालजो काढ, नै घोडारा तोबरामै घाल, नै माथारो लोही छागलामै लेने सेहरमै कुवरजी आया। आगै कीणही री हाटमे चरी लेइ, ने तेलरा घडा भरीया था सूनी हाट माहै, तिण चरीमे तेल लेने लोही भेला कीया, नै आपरे घोडे असवार हुय, ने नवलषो घोडो हाथे षाचने आपरा मेहलारी वाडीमै वाघ दीयौ, नै आपरो घोडो सदाई जागा वावीयो, ने सूवाने कहीयो—पातसाहनै मारीयौ छौ। इतणे केहने तोबरो, चरी जे(ले)ने मेहला कुवरजी आया। आयने राणीने कहीयौ—जे आज सीकार आछी कीवी छै। बडा सीरदारारा साथ भेला हुवा छा सो मेह तो आरोगीयासा ने ताहरै वास्तै लाया छा, सो सभाल लीज्यौ। इतरो कहीने हेठा उतरीया ने हीरण कने गया। अवे थै निसक थका तिण वागमै हगाम करि आवो। इसो केहनें सूवाने कहीयौ—जावौ, थे राणीनै जितावणी कर देवज्यौ। तठै राणी मास तोबरासू लेने राध्यौ ने तेलरो दीवो कीयो छै। हिवै मासने राघने षाधौ। तठै सूवो थाभै वेसने राणीनै सूणावै छै—A

ख हास-वीलास कर पाछो उतरता रसालुए वाट वाधी हती, तीण माहे आय पड्यो। रसालु बोलीयो—हठमल! तु घणा दीनारो जातो हतो पीण आज हुसीयार हुज्यो, हुं मारीया टाल मेलु नही। तद हठमल कहे—हु ताहरो चोर छु; तीण वास्ते पेलो लोह तु कर। तद रसालु कह्यो—पेली लोह तु कर। जदी हठनल कहे—माहरा हाथरी लागा तु कोणने मारसी? तो ही पीण रसालु पेली लोह न कीधो। तरे हठमल नवहथो जोध-घोडे चढने सवा मणरो भलको साधने रसालुने भलको वाह्यो। तद रसालुए असवार थके टालीयो। अर रसालुए भलको साध हठमलनु वाह्यो। जद मायो आय आगे पडीयो।

ग तीहा जाए भोग-वीलास कीधो। पोहर एक ताई रहे नै पाछो उतरयौ। तदि रीसालु बोल्यो, कह्यो—हठीमल! घणा दीनरो जातो थो, आज ठीक पडसी; अवै तु सभाव। तदी पातस्याह कह्यो—हू तो थाहरो चोर छुं, पंहली तो तु दै। तदी रीसालू कह्यो—हू तो पंहली लोह न करू। तदी हठीमल कह्यो—मेरा हाथकी ध्याकर पीछै कोसकै देगा? तदि हठीमल पातसाह नवहथै घोडै चढयौ छै। तदि सवा मणको भलको साध्यो। रीसालु टाल्यो। रीसालु हठीमल सांमो भलको सध्यौ, हठीमलरै दीधी। माथौ अलगो जाअ पडयौ।

घ. पातसाह रमे-षेले नै नीचे उतरयो। तद रसालु कह्यौ—घणा दीनरो जातो थौ पण आज ठीक पडसी। रसालु भलको सावै नै हठमाल पातसाहरै दीवी। पातसाह हेठौ पडयौ। मायो वाढीयो।

A ४२वीं वार्त्ता की वाक्य-रचना ख ग घ प्रतियोमें निम्न रूप में लिखित है—
ख जद रसालुऐ हठमलरो कालजो काढ लीधो। चरवी की तेल काढीयो। पछे घरे

दूहा[1]– पीउ[2] कचोलै पीउ[3] वाटके, पीउ[4] दीवलैरी[5] धार वे।
पीउ तो[6] पेटमे सचरची, अजे न धापी[7] नार[8] वे॥ १६७[9]
हाथ पीउ[10] मूष[11] परजले[12], छिन[13] भर[14] रह्यौ[15] छिपाय[16] वे।
जीवतड़ां[17] जूंग मांणीयो[18], मूवा[19] पीछे[20] रांणी[21] षाय वे॥ १६८

राणीवाक्य[22]

थे दीनां मे[23] जीमीया[24] मृगला[25] हुदा[26] साहब[27] वे।
जो जांणत[28] पीउ मारीयौ, तो[29] करती कटारी[30] घाव वे॥ १६९[31]

४३ वार्ता—इसी वात सूवेजी राणीने कही। कुँवरजी छाना थका बाता सूणी। तरै मनमैं वीचारीयौ—आ अस्त्ररी मांरे कामरी नही।[32]

आया। कालजो ने तेल राणीनु दीधा। राणी जाण्यो—मृगरो कालजो दीसे छे। सो कालजो राधी षाधो। संध्याए तेल दीवे सीचीयो। तदी सुवटो राणी प्रते कांइ कहे छे—

ग तदि रीसालु हठीमलरो कालिजो काढि राणी नषै ले गओ। रांणीऐ राध्यो, षाधो, दीवलै बाल्यो। तदि सुवो बोल्यो—

घ. पातसाहरो कालजो राणी नषै आण्यौ। राणी तीरासु रांधायो, दीवामैं घाल्यौ। तदी सुवो बोलीयो—

१ ख सुकवाक्य। २. ३ ४ ख प्रीउ। ५ ख. दीवलाकी। ६. ख में नहीं है। ७. ख. आयो। ८ ख सार। ९. यह दूहा ग घ मे नहीं है। १० ख प्रीउ। घ सैण। ११ ग मुष। घ मुवै। १२ ग पीउ। घ सैण। १३ ख षीण। ग पीउ। घ सैण। १४. १५ ग दिवलो। घ दीवलै। १६ ख छीपाय। ग घ जलाय। १७ घ जीवतां। १८ ग माणीयो राणी। १९ ख मुआ। ग. घ मुवा। २० ख पछे। ग केडै। २१. ग पीन। घ में नहीं है। २२ ग. राणी सुवानै काई कहै। घ में अप्राप्त है। २३ ख दीघो मे। २४ ख. जीमीयो। २५ २६. ख. काइ मृग हवो। २७ ख. साव। २८. ख. जांणु। २९ ख मे नहीं है। ३०. ख. कटारीयां। ३१. ग -प्रति में यह दूहा इस प्रकार है—

मै जांण्यो मृग मारीओ वे सुंवा, मुझ देषणरी चाह वे।
जो हठीयो मुओ जाणती, तो करती कटारचां घाव वे॥ ३२

घ प्रति में यह दूहा नहीं है। ३२ ख. ग घ. मे ४३वीं वार्ता के निम्न वाक्य ही प्राप्त हैं—

ख वारता – तरे रसालु जांणीयो–आ अस्त्री मा जोग नही।

ग वात – तवी रीसालु जांण्यौ–आ यसत्री मां जोगी नही।

घ वारता – रसालु मंनमैं जाण्यौ–असत्री मांह जोगी न्हो।

दूहा– देपो हुंती दस मासनो, पाली किण विध पोष वे ।
हिव पर घर मडप करी, अस्त्रीजातरी ओप वे ।। १७०[१]
केहनी अस्त्री न जांणज्यौ, कुडो नेह रचत वे ।
पूठ पराई नारीयां, न धरे एक ही कंत वे ।। १७१[२]
सासरीया पीहर तणा, कुलनैं करती षराब वे ।
परपूरूषां मनडो रंजे, सकल गमावे आब वे ।। १७२[३]

४४ वार्ता—इण भातसू कुवरजी चितवना करे छे। इतरे रात गई देषनें, सारी जाबता करने, राणीने मेहलामैं जडनैं दूजै मेहलामे सूता। हिरण चरवा गयो। सूवो मेणा पाम गयो। जतन-जाबता साराहीरी हुई। हिवे परभात हुवो। तठै कोई क जोगो, अस्त्रीरो विजोग हूवो, नगर देपने पुकारवा आयो। आगे नगर कठेई क सूनो, कठेई क वस्ती देपने कोणही कने पूछीयो—रे भइया ! इ नगरका राव कहा है ? तठै आदमी बोलीयो—अहो जोगीजी माहाराज ! म्हे तो राजारा मेहलासू घणा आगलै रहा छां। ए साहमा सतभोमीया आवास सौनेरा कलम चिलकै, तिके रावरी जायगा छै। म्हे तो रावजीने कदेई देपीया न छै। थाहरे काम छै तो थे जावो। तठै अतीत रावजी जायगा आय। सारी ही सूनी दीठी।[४]

दूहा– नही घोडा रथ उटीयां, हाथी ने सूषपाल वे।
चाकर-बाबर को नही, ए नृप केहा हवाल वे ।। १७३[५]
इस चितवता आवीयो, रीसालू मेहलां हेठ वे।
घोडो देष्यौ हिरणेने, वसती जांणी नेट वे। १७४[६]

४५. वार्ता—तठे मेहला हैठै अतीत उभो रेहनैं पूकार कीवी—अरे बाबा। मेरा धणी कोउ नाहि है, तेरे पास आया हु, सो मेरो वाहर करीयौ माहाराज ! मेरी अस्त्रीके ताइ माटी पणैं एक जोगी लेगया, सो मेरी दिराय देवो। ज्यूं मेरा जीव सोरो हुवै, तेरे ताइ बडा पून्य हुवेगा। इसी पूकार कीवी। तठै रीसालू सूणने हेठो उतरीयो, जोगी पासै आय हकीकत पूछी। तठै जोगी रोयवा लागो। तरे रीसालू कहै—[७]

---

१ २ ३ तीनो दूहे ख ग. घ प्रतियो में नहीं हैं।
४ ४४वीं वार्ता का अश ख ग घ मे निम्न वाक्यो में ही लिखित है—
ख इतरे प्रभात हुओ। एक अतीत मेहला नीचे आय उभो रह्यो।
ग तदी सवार हुवो। एक अतीत म्हैला नीचै आये ऊभो रह्यौ।
घ मे यह अश विलकुल ही नहीं है।
५ ६ दोनों दूहे ख ग घ में नहीं हैं। ७ ४५वीं वार्ता के स्थान मे निम्न वाक्य ही ख ग प्रतियों मे उपलब्ध हैं—ख. वीलाप करतो रोवे छे। तरे रसालु पुछ्यो—क्यु रोवे

दूहा– जोगीडा रसभोगीया[1] , भर भर नयंण[2] मत[3] रोय बे ।
आसी[4] म[5] जांणो[6] आपरी, घर तुंमारा[7] जोय बे ।। १७५[8]

जोगीबाक्य[9]

राजा मेरी वालही, मो प्यारी मन मांह बे ।
बलै न मूझ एहवो मिलै, सूं दर रूप सराह बे ।। १७६[10]
मे अस्त्री विन सूनडा, जीवडा जात है दोड बे ।
माडाइ जोगी ले गयो, मांहरां जीवरी मोर बे ।। १७७[11]
मे मरहुं त्रिस कारणे, करीये मांहरी सार बे ।
तेरे आगै पूकारीया, सूणीये मांहरी पूकार बे ।। १७८[12]

४६ वार्ता– तठै कुवरजी मनमैं वीचारीयौ-जे राणीनै इण जोगीनै परी देउ तो पाप कटै । इसौ मनमे विचार करने जोगिने कहै छै[13]—

दूहा[14]– आय सजोगी ध्यांनसैं, रहोयें[15] जटा वनाय[16] बे ।
म्हाहरी परणी प्रेमकी[17], चाढी[18] ताहरैं[19] पाय[20] बे ।। १७९

४७ वार्ता– इसो सूणनै जोगी राजी हुयनै केह छै–तेरा परमेश्वर भला करीयो, मेरा जीव पूम कीया । तुमारी राणी पाउ जहा मेरे किम वातकी कुमी है । तठै कुवरजो ले नै पाणीरी [झा] रीसू सकलप कीधी, नैं राणीनैं मैहलासू काढ नैं जोगीने परी दीवी ने कहै छै[21]–

छे ? तरे जोगी कहे—माहरी अस्त्री मने मोकसे हुओ जाणी मने छोड ओर जोगी लारे गई । तीण वास्ते रोवु छु । रसालुवाक्य—। ग गोरष जगायो । तदि रीसालू काई कहै— घ प्रति में इस वार्ता का कुछ भी अश लिखित नहीं है । १ ख रसभोगीडा । २ ख नेण । ३ ख म । ४ ५ ६ ख- ओया न होवे । ७ ख हमारा । ८ ग ओर घ प्रति मे यह दूहा नहीं है । ९ १० ११ १२ सन्दर्भ एव दूहे ख ग घ में अप्राप्त है ।

१३ ४६वीं वार्ताका अश ग घ प्रतियोमें अप्राप्त है तथा ख प्रतिमें इस प्रकार लिखित है—

वारता—रसालु जोगीनु रोवतो देषी मनमा वीचारीयो—आ अस्त्री इण जोगीने द्यु तो भली । रसालुवाक्य—। १४ ख दुहो । १५ ख रहो २ । ग रहि । १६ ख वनाव । १७ ख माहरी अस्त्री परणी जीके । ग माहरी अस्त्री परणी । १८ ग चोहडी । १९ ख ग तुमारे । २० घ में यह दूहा नहीं है । २१ ४७वीं वार्ता घ प्रतिमें नहीं है किन्तु ख ग प्रतियोमें इसका रूपान्तर इस प्रकार है—

ख वारता—रसालु एसो कहि योगीने अस्त्री-दान दीधो । हाथ पाणी घालीयो; श्रीकृष्णारपुन्य कीधो । जोगी बहुत राजी हुओ ।

ग वारता—तदि रीसालू असत्री दीधी । तदि जोगी हुयो । जोगीरा हाथ मै पाणी मुक्यो, राणीनैं परै वीधी ।

दूहा– **जावो रांणी विडांणीया, जोगी लार जूगत वे ।**
थे मदा सीर गयो हिवै, पर वणीयां गत चित्त वे ।। १८०[1]

४८ वार्ता– इसो कहिनै जोगीने सीष दीवी । अबे मृगला ने सूवा ने मेना न सर्वने साथ लेने कुवरजी असवार हुवा सेहर बारे आया । तठै सूवे विचारीयो– कुवरजी सह तो आज नगर छोडीयौ ने कठेइ क आघा जावसी । तठे सूवो केह छै[2]–

दूहा– **अहो रीसालू कुवरजी, क्यूं छोड्या रूडा धांम वे ।**
किण दिस मजल करावस्यौ, किण पूर केहने गांम वै ।। १८१[3]

कुवरजीवाक्य[4]

सूवा किण देशे चलां, सूरां किसा विदेस वे ।
जिहा अपणां अन्न-पांणीया, जिहां करस्या पर सेव(वेस)वे ।। १८२[5]

४९ वार्ता– तठै सूवेजी वोलीयो–माहाराजा कुवर ! आप घडी एक पग थभजो, सो मेनाने लेने आउ । तठै कुवरजी बोलीया–मेना तो जाती रही थी, सो अबे थे कठासू ल्यावज्यो ? तरे वासली हकीकत सूवै सारी कही । तठै कुवरजी जाणीयो–जे सूवो वडो पर उपगारी छै । राणीने जीवती राषी, नही तो हु आ वात सूणतो तो राणीने मार नाषतो । पिण स्यावास इण पषीरी बूद्धमे ।[6]

दूहा– **उत्तम जीव हुवे जिके, जिण तिणसू उपगार वे ।**
करता न जांणें हाण वे, राषे सूष पर कार वे ।। १८३[7]

५० वार्ता– इसो विचारने कुवरजी बोलीया–जे सूवाजी मेनाने किण तरे ल्यावस्यौ, हु साथे हि चालू, पीजरामे लेने आघा चालस्या । इसो कहीने कुवरजीने सूवो माहादेवजीरे देहरे ले गयो । आगे कुवरजी माहादेवजीरो दरसण कीयौ, पूजा कीवी, अरक पूफ घणा चढाया, दुपद कीया, सूत कीवी । पछे मेना ने सूवाने पीजरामे घालने कुवर आघा चालीया ।[8]

---

१ यह दूहा ख ग घ प्रतियोंमें नहीं है ।

२ ४८वीं वार्ता के स्थान पर ख ग घ प्रतियोंमें निम्न वाक्यांश ही उपलब्ध हैं—

ख रसालु घोडे असवार होय आगे चाल्या । मृग, सुवटो साथे छे । राजा मानरी देस साह पडीया ।

ग पछै रीसालु असवार होय नै मृगनै साथे लेई परो गयो ।

घ सवेरे छोडे परी रसालु परा चाल्या ।

३ ४ ५ ६-७ ८ गद्य-पद्यात्मक अंश ख ग घ में नहीं है ।

[हिवै राणी सामीजी कने ऊभी थकी विचारीयौ-ग्रो काम षोटो हुवो, सामीरा लारे किसो तरे जाउ, पिण दाणा-पाणीरी वात इसीहोज हुई, हूंणहारने कोई पूग सके नही।

दूहा— दईवांधीन लिष्या जिके, अकण भिसलें सीस बे।
जेसा दुष-सूष सीरजीया, जेसा लहै नर दीस बे ॥ १८४
रामसरीसा भोगव्या, वारै वरस वनवास बे।
तो हु गीण (तौ) केतली, दईव लिष्या ते ग्रास बे ॥ १८५]

५१ वार्त्ता— इसो मनमे राणी पीछतावो कीयो ने मनमे वीचारीयो—जे दाणा-पाणी छै तो सारा ही थोक करस्यू। इसो विचारने राणी जोगीनै कहै— सामीजी माहाराज! अठे तो सून्याड छै ने अठासू सात कोस उपर जलालपूर पाटण छै, तठै हठमल पातसाह जा (राज) कर छै, तठै हालो, जाय वस्या, आपणौ गुदराण करस्या। तठै सामीजी राणीनै माथे लेने चालीयो। सेहर बारे जायने जलालपूर पटनगे मारग लेने चालोया। आगै हालता थका मारग माहे पातसाह मूवो पडीयो छै। तठै राणी देप ने मनमे विचार छै—देषो, पातसाहसू रंग-विलास करता, तिके आज माष्या भिण-भिणाट करै छै ने कागला सीस कुचूरे छै।*

दूहा— हठीया[1] रावत[2] वाकडां[3], तो विण[4] रेन[5] विहाय[6] बे।
तेज[7] पराक्रम[8] ताहरो[9], 'सो हिव'[10] कागा[11] षाय[12] बे ॥ १८६

[–] कोष्ठगत गद्यपद्यांश ख ग घ प्रतियों मे अप्राप्त हैं।

* ५१वीं वार्ताके चिह्नित अंश का पाठ-भेद ख ग घ ड, प्रतियों में इस प्रकार है— ख 'पुठाथी'[१] राणी 'महीलासु'[२] 'नीची उतरी'[3] 'अतीतनु कहे'[४]— 'मो साथे आवो'[५] 'जदी जोगी साथे हुओ'[६] 'राणी चाली चाली'[७] 'हठमल मुओ पडचो हतो, तठे आई'[८]। 'राणी वाक्य'[९] —।

'–'. १ ग पछे। घ पाछासु। ड हिवै वासाथी। २ ड महीला थी। ग में नहीं है। ३ घ में नहीं है ४ घ जोगी तीरै आई। ड जोगीने कयो। ५ घ में नहीं है। ड मौ साथे हुवो। ६ घ ड में नहीं है। ७ घ जोगी, राणी। ८ ग हटीमल पातस्याह मुवो पडचौ छै, जठै आवी नै त्रीभाव देष्यौ। घ हठमल मुवौ पडचो, जठे आई ऊभी। ड हठमल पातसा मारीयौ हुतौ जठे आइ। ९ ग राणीवाक्य झुरणा। घ काई कहै। ड राणी वायक।

1 ग घ हठीआ। 2 ख सामत। ग घ सावत। ड सामी। 3 ख घ ड वकडा। 4 ग छीण। घ वन। 5 ख रयणी न। ग रयण। घ रह्यो न। ड रेण। 6 ख वीहाय। घ. जाय। 7 ग काले। घ काले। 8 ग मुडके। घ मुषे। ड प्रताप। 9 ग घ कागले(लै)। 10 ख ड अब। ग ऊड ऊड। घ उर उर। 11 ख काग ने कुता। ग पडे। घ परे। ड काग कुत्ता। 12 ग विजाय। घ रोजाय।

हरिया[1] हुयजो[2] वालमा[3], ज्यू[4] वाडीके[5] सिग[6] वे ।
मो नगुणीकै[7] कारणै, करक[8] वेसाण्या[9] काग वे ॥ १८७[10]
[रावत भिडियां वाकडा, ताहरा हाथ सलूर वे ।
मो निगुणीकै कारणै, काया कीधी दूर वे ॥ १८८
हरीयां वागारां राजवी, फूलां हंदा हार वे ।
तोतो छेती बहु पडी, कूडै इण ससार वे ॥ १८९
बालापणरी प्रीतडी, पूरण कीधी पीर वे ।
लागा हाथ छयलका, हिव तोसूं हु वो सीर वे ॥ १९०
कारीगर किरतारका, छयल किया तसू हाथे वे ।
जीहां पीउ थांरी छाहडी, तीहा पीउ माहरो साथ वे ॥ १९१
मो सरषी निगुणी तणे, कारण काया छोड वे ।
हु आभागणी जीवती, रहीय करडका मोर वै ॥ १९२
फिट फिट कुबधी सज्जनां, कीनो नहो मूझ साथ वे ।
षबर न का मूझनै पडी, तो मीलती भर बाथ वे ॥ १९३
रस रमतां मैहुला विपे(षे) चोपड पासा सार वे ।
ते छोडी धर पाथरचा, सीस धड जूवा वारे वे ॥ १९४
प्रेम गहिली हु थइ, मांहरा पीउरे सग बे ।
यू नहीं जांण्यौ हठमला, तो करती रगमे भग बे ॥ १९५
जांण न पाई हठमला, नवि पूगो मूझ डाव बे ।
जे हु मारचो जाणती, तो करती कटारचां घाव वे ॥ १९६
रूडा रांजिद जांणज्यौ, मूझने चूक न कोय वे ।
जे हुं जाणती मारीयौ, तौ हु करती दोय वे ॥ १९७

---

१ ख हठीया । ग हरीआ । घ. ङ. हरीया । २ ख ङ होज्यो । ग होऐ । घ होयो । ३ ख ग घ. ङ वलहा । ४ ख ज्यु । ग घ ङ ज्यु । ५ ख वाडी-केरा । ग घ वाडीको । ङ वाडीकै । ६. ख साग । ग घ सग । ङ वाग । ७ ख ग नीगुणीकै । घ. मगणकै । ङ निगुणीके । ८ ख कमे । ग करक । घ कराक । ङ करकै । ९ ख वेसारचा । ग वसाया । घ वैठा । ङ वेसारचौ । १०. इस दूहे के पहले एक और निम्न दूहा ख प्रति में मिलता है—

काला मुहके कागले, उड उड परहो जाय वे ।
माहरा प्रीउकी पासली, हम देषत मत षायवे ॥ ४४

[–] कोष्ठान्तर्गत दूहे ख ग घ ङ प्रतियों में अनुपलब्ध हैं ।

व्याप्यारी ज्यू वटाउडा, वालद ज्यूं विणजार वे ।
लदीयां लोथ पडी रही, कागा कुचरे षार वे ॥ १६८
पाना फूला मांहिला, सीस रखूंगा सोड वे ।
के नाराज्यू साजना, लहु मूझ हीयडै जोड वे ॥ १६६
अव वेगा मिलज्यौ हठमला, भाज्यू माहरा देह वे ।
ज्या हठमल ज्या हु षरी, साचो जाणज्यौ नेह वे ॥ २००]

५२ वार्ता—इमा विरहरा दूहा कह्या । मनरा मनमे समझ कीया । पिण केहणकी वात नही वणै । इमो विचारने राणो सामीजीने कहां—सामीजी माहाराज ! पर उपगार रो काम छै । हिव हु का धर्म छै—ओ मडो पडीयो छै, तिणनै अगन भेलो करणो जोग छै । तठै सामीजी वात मानी । वात मानणे रोहिमे लकडा भेला कीया । चारे पाई दे नै वहरवी माहे पातसाहरी वूथ मेली । तठै मामीजी कहे—आ तो हीदु तो नहि दीसै छै, ए तो तुरक दिसै छै । तठै राणी दुहो कहै छै ।[1]

दूहा— मांणस देह विडांणीया, क्यां हींदु मूशलमांन वे ।
आग जलाया कायने, हींदु-धर्म निदांन वे॥ २०१[2]

[५३ वार्ता—तठे चहमे वूथ मेले ने उपरे चेजो करने कमघसू आग लगाई । झालो-झाल हुई । तठे सामीजीने वाणी कहै—माहाराज ! इण तलावसू पाणीरी तुवी भर ल्यावो, ज्यू मडाने भीटीया छै, सो छाटो लेवा ने आघा चाला । तठै सामीजी तुंबी लेने तलाव कानी गया ने लारे राणी कहै—

---

१ ५२वीं वार्ता निम्न प्रतियो में निम्न रूप में है—

ख वारता—इसो कहे राणी घ्णी झुरणा कीधा । पछे अतीतनु केहे—वनषड मांहेसु लकडा ल्याव्यो, ज्यु आपे इणनु दागद्या । जदी जोगी वनमे फीरने लकडा ल्यायो ।

ग ऐसो राणी कह्यो । घणा झुरणा कीधा । पछै अतीतनै कह्यौ—लाकडा लावो जो आपे अणीनै दागदा । तदि अतीत लाकडा ल्यायौ ।

घ. में उक्त अश ही नहीं है । ङ इसो राणी कहै नै झूरणा घणा झूरीया छै । पछै अतीतनै कयो—सूका लाकडा वनमाहिथी ल्यायो ।

२ ख ग घ ङ प्रतियो में यह दूहा नहीं है ।

[–] ख ग घ ङ प्रतियों में ५३, ५४ तथा ५५वीं वार्ताओं के गद्य-पद्यांशो के स्थान पर केवल यही गद्याश उपलब्ध है—

ख चेह चुणने रांणी माहे बेठी ।

दूहा– हठमल मीलज्यो साहिबा, वहला म रहज्यौ दूर वे ।
आई अगन प्रजालने, लहज्यौ हित भरपूर वे ॥ २०२
अगन सरण ताहरो करू, माहरो पीउ मीलाय वे ।
साहिब साषी मांहरो, साथ दीज्यौ सभाय वे ॥ २०३

५४ वार्ता—इसा दुहा कहिने परमेसररो नाम ले ने 'हो हठमल ! थारो साथ वेगा हुयज्यौ, इसो कहीने चहीमे पडी, राम सरण हुई । तठे सामीजी सीनान कर ने तुंबी भरने पाछा आया । तठे राणीनै चेहमे वलती दीठी । तठे सामीजी कहै—

दूहा– रडी राजी ना हु ई, कुमर थकी कर कूड वे ।
मे विदनांमी रच गई, नार देई तुझ धूड वे ॥ २०४
सत कीधो ने साह बण, हिंदु- तुरक समांन वे ।
जस षाटी जालमतणौ, जलण घरचौ ए प्रांण वे ॥ २०५
रडी भूडी ते करी, माण मूकायो मोह वे ',
षार दीधौ मूझ छातीयां, भलो करी मूझ दोह वे ॥ २०६
तो सरसी नार तणा, षेलतणा मन षेल वे ।
प्रांणतणा पासा ढल्या, मे मत कीधा मेल वे ॥ २०७
कामण कारीगरतणी, कांमण केथ पडेह वे ।
सात कीयो सासें गई, भलो दिषायो नेंह वे ॥ २०८
साली मो मन माहरी, भूडी राड भडांण वे ।
तो सरसी वाली वरस, देषी लोह थडाह वें ॥ २०९

५५ वार्ता—इसा दुहा सामीजी राणोनै वलतीने सूणाया, पिण ज्या राज्यासू मन वेधीया तेके दूजी तथ न जाणै । हिव राणी हठमल लारे सत की[धो] सो बल भस्म हुई । सामीजीने दो वडा साल हुवा । मो घणो वोषास करवा लागा, पिण गरज काई सरे नांह ।

अगन लगाई । राणीइ हठमल पुठे सत कीधो । अतीत रोवतो पाछो गयो–जा रडी, तेरा बुरा हुइगा

ग आग ल्यायो । लाकडा सलगाया नै रांणी माहे वेठी । लाकडा लगाया, हठीमल साथै सत कीधो ।

घ तदी राणी छाती-माथा कुट नै हठमल वासै सत कीधो ।

ङ पछै चेहे चुणी ने राणी चेहे माहै वैठी हठमल पातसाह साथै बली, सत कीधो ।

दूहा– एक गई दूजी गई, हिव तीजी की मेल बे ।
नारी नही का आपरी, कुंडी जगमैं केल बै ॥ २१०
विधना तु तो वावली किसका ले किसकुं देस(य) बे ।
रोतो सांमी चालीयो, पाटण मारग लेय बे ॥ २११
नारी न जाण्यौ आपरी, जगनें न सूंणी कोय बे ।
मूणस मरावे हाथ सूं, पाछैसू सती होय बे ॥ २१२]

A५६ वार्त्ता—इसो सामीजी सोच करता पाटण गया । काइ क मढीकी वसती लेने गूज करवा लागा ।

हिवै रीसालू कुवरजी मारग चालीया जाय छै । कठेइ क वस्तीमे रहै छै, कठेड क रोहीमे रहै छै । साहसीकपणै रेहै छै—

श्लोक—उद्यमं साहस धीर्य बल बूधी पराक्रम ।
षडेते जस्य विद्यते तस्य देवोपि सक्ते ॥ २१३

५७ वार्त्ता—तठे कुवरजीने हालतानै मास क हुवो छै । तठे राजा मानगे नगर आणदपूर नामे, तिण नगररे सरोवर आयो । सेहरसू नेडा छै, वडो पिणघट छै । वासली पोहर रातरासू पीणघट सरू हुव छै, सो दोय घडी रात जावै, जठा ताई वाहवो कर छै । इसी पोठ पीणघट री छै । वले सरोवर दोला वाग छै । भली हरीयाल वाडोयारी चारू फेर छै । वडी आडाग कडषा उपर भला नीला रुष-दरषत सोभे छै ।

दूहा– सरवर निरमल नीरडै भरीयो हसा केल बे ।
वागा फूली सुगीधीयां, वास वलै वहु मेल बे ॥ २१४
सोभा मानसरोवरा, जिम वण रह्योयो तलाव बे ।
घोडो आवै अटकावीयो, पाणी पीवण आव बे ॥ २१५

५८ वार्त्ता—इण भातसू कुवरजो पाणी पीवै छै । तठै पीणहारिया साथे राजा मानरी वेटी सोनारो घडो ने जाडावरो इढाणी लीया थका तिण सरोवर चाली आवै । तठै रीसालूजी आपरा वागारी चाल उपर बेह लागी देपन तिण पाणीसू घोवण लागा छै । इतरे पणिहारी तलावम आई । सारा ही कुवरजी

A–A चिन्हान्तर्गत ५६, ५७, ५८वीं वार्ताओ के गद्य-पद्यात्मक अश का पाठान्तर ख ग घ ङ मे निम्नगद्याश के रूप में प्राप्त है—

ख हीवे रसालु कीतरेके वीने राजा मानरे प्राहुणा गया । तलाव उपर गया । घोडो चपारे गोढे बांधीयो । कपडा धोया । स्नान सपाडा कीधा । कुवरजी पाग बाधे छे । इतरे राजा मांनरी कुवरी सहेलिया साथे पांणी भरवा आई । सो रसालुनें देषने पाणीरो घडो नषसुं भरवा बेठी, रसालु सामो जोवती रहे, पीण रसालु जोवे नही । तद कुमरीवाक्य ।

कानी जोवै छै नै राजा मानरी बेटीन जोवै छै। रमदती नागीतणा नैण-पताग वह रहा छै। तठै राजा मानरी बेटी एक आगलो आगूठासू कलस भरेने उचाय ने वाहिर ल्याउ।A

दूहा– सरवर कपड[1] धोइया[2], मूथरा[3] सल[4] सिर पाव[5] वे।
पेह उतारे पेगकी, तो हि न समझै दाव वे॥[6] २१६
नष अगूठे अगूली, भरीयी कलस अभ्रूग वे।
अजे यस मारू साहिवो, वोलै नही ओ वूग वे॥२१७[7]

रीसालूवाक्य[8]

देस[9] वीडाणो[10] भूय[11] पारकी[12], तु राजाकी धीय वे।
तुझ[13] कारण हु[14] माररपू[15], कुण[16] छोडावण[17] हार[18] वे॥२१८[19]

ग अबै रीसालु कतरायक दीनामे राजा मानरै पाहुणा गया। तलावै वैठा, कपडा धोव्या। ईतरै राजा मानरी बेटी छोरचा सार्थ पाणी आई, पणीहारिया सार्थ तलाव आई। रसालु कपडा धोआ पाग वाधवा लागा। नर्षमु घडो भरचो रसालु सामी देषती जार्य, पिण रीसालु देषै नही। तदि रीसालुजीनै राणी काई कहै—।

घ. तदी रसालु चाल्यो चाल्यो राजा मानरै जमाइ आयो। तलावरी पाल कपडा धोया। अतरै राजा मानरी बेटी पाणी भरवा राल आई नषसु घाडो भरचो। रसालु देषै नही। तदी राणी काई कहै—।

ङ अबै रीसालु कितरेक दिन राजा मानरै पावणा हुवा। तलाव कपडा धोया नै पाग वाधै छै। इतरै राजा मानरी बेटी पणीयारीया सार्थ सोनारो घडो, जडावरी इढोणी पाणी भरवा वैठी। कुमर रीमालून देष ने सगली जोवा लागी छै, पिण रीसालू सामो जोव नही छै। कुमरिवाक्य —।

१ ख ग घ ङ कपडा। २ ख धोवीया। ग धोईया वे। घ धोईया वे कुवरा। ३ ग घ वाधी। ४. ख अगी। ग घ पाघ। ङ आगी। ५ पाघ। ग घ अजब। ङ पाग। ६ ख ङ नषसु घडलो मे भरचो, अजे अन (ङ अजे न) वोल्यो वग वे। ग घ नषटयासु घडलो (घ चुकल्यो) भरचो, अजु न चोग्यो वग (घ वुग) वे। ७ यह दूहा ख ग ङ प्रतियो में अप्राप्त है। घ प्रति में इसका रूपान्तर इस प्रकार मिलता है—

झगो धोयो फेंटो धोयो, धोई सुथण पाग वे।
नषल्यासु चुकल्यो भरचो, तो ही न देष्यो ठग वे॥ २६

८. ध में नहीं है। ९ ग घ भोम। १० ख वीडाणा। ग घ पराई। ११ ख भुइ। ग घ पर। ट भूइ। १२ ग घ मडली। १३ ग घ तुज। १४ ख मुझ। ग घ मुज। १५. ख ग मारीजे। १६ ख ग तो कुण। घ तो मुआ। १७ ख ग छोडावै। घ न मलै। १८ ख. ग जीव। घ अग। १९ ङ प्रति में इस पद्य के अतिम दोनो चरण अप्राप्त है।

कवरीवाक्य[1]

चदन[2] कटाउ . [3], चरहमे[4] जालूं[5] अग[6] वे।
मो[7] कारण तुमै[8] मारज्यौ[9], तो[10] दोनू[11] वसा स्वर्ग[12] वे।।२१६[13]

५६. वार्त्ता—इसा दुहा माहो केहने सेहरमे गई। तठै कुंवरजी सेहरमे आया। राजारी मालणरो घर पूछ नै मालिणरे घरे आया। पूरजी(जा) मे सू मोहर से(ए)क मालनने दीधी ने मालनने कहै—जावो, थे राजाजीसू मीलीयावौ नै कहज्यौ—श्रीमाहाराजाधिराज! आपरो जमाई माहरे घरे उतरीयो छै। इसो सूणनै मालिण मान राजा कने जाय ने सारी हकीकत कही। तठै राजा मान आपरो कुवरने मेलने रीसालूने मेला दाषल कीया। तठे राजा मान कुवरजीसू मीलीयो ने कहै—कुवरजी! एकला क्यू पधारीया? तठै सारी देसवटारी वात कही। तठे राजा घणी धीरज दीवी। हिवै कुवरजी महिलामै घणी षूसालीसू बेठा छै। तठै रात्र पूहर एक गई। तठै कुवरी सीणगार करने मेहला आई। आगै कुवरजी मेहीला किमाडने [जडीने] कपटी निद्रामे सूता छै। हिवै राणी घणा जवाव समस्या कीवी, पिण बोलीया नही।*

---

१. ख ङ कुमरी वाक्य। ग घ राजकुवरी वा०। २ ख ग ङ चपण। ३ ख कटावु चेह रचु। ग काटसलो रचु। ङ कटावु सेंहरसू। ४ ख चेहर च। ग. सलो रचु। ङ चैमें। ५. ख ङ. जालु। ग. बालु। ६ ग ङ आग। ७ ख ग मुझ। ङ मुज। ८ ख. ग. तुझ। ङ तु। ९ ख ग ङ मारीजे। १० ख घ में नहीं है। ङ तो। ११. ख तुम हम। ग दोनु। १२. ख ङ. खरग। ग. सुरग। १३. घ. में दूहा निम्न प्रकार है—

अगर चदणरा ज(ल) कडा, देवाऊ जगी ढोल वे।
कागा रोलै कर मरु, तो पयीकी गैल वे ॥ २८

* ५९वीं वार्त्ताकी वाक्यावली ख ग घ ङ प्रतियोमें इस प्रकार है—

ख इम कही कुमरी घरे गई। रसालु पीण घोडे असवार होय सहीरमे गया। सघले लोके कह्यो—राजा मानरे जमाई आया छै। समस्त राजारो पुत्र रसालु कुमर नांम छे। यु करतां रसालु दुरबार गया, साराई साथसु मील्या। रसालु थाल आरोगीया। घोडारे दाणारी, सारी वातरी जाबता हुई। रात्र घडी २ जाता रसालु महीलां दाषल हुआ। रसालु पोढीया छे। कमाड जडया छै, पोहरायत बेठा छे। इतरे पोहर १ रात जाता राणी आइ। ज(क)माड जडया देषने राणी समस्यावध दुहासु हेला दीये छे।

ग ईतरो कहीनै घरां गई। रीसालू आया गाममै तदि नगरमै षबर हुई—राजा मांनरै जमाई आव्या। रीसालुकुवर राजा समस्तरी बेटो मील्या, जा(रा) झा जुहार माहो-माहे हूवा, डेरा दिवाडया, सगलो जाबतो कीधो। रात पडी रीसालुजी मैहलांमै पोढया छै। पीलसोत बलै छै। रांणी आवी। कमाड जडे वीधा छै। तदी राणी हेलो पाडयो। कमाड षोल्या नही। ऐस्यो त्रीभाव बण रह्यो छै।

राणीवाक्य[1]

दूहा— कडकड नांषू[2] काकरा[3] , वाजैला[4] किमाड[5] वे ।
के थे मूवा[6] के[7] मारीया, के[8] झांकोया[9] अमार[10] वे ॥ २२०
साहिवडा[11] तुमै[12] सांभलो, 'रयण सारी य[13] विहाय[14] वे ।
सवा कोडरो[15] मूंदडो[16], भांज्यौ[17] वज्र[18] कीमाड[19] वे ॥ २२१[20]

रीसालूवाक्य[21]

ना[22] म्हे[23] मूवा[24] नवि[25] मारीया[26] , ना[27] म्हे[28] जपया[29] अमारवे[30]।
सूरवर[31] बोल्या वोलडा[32], वोही[33] वेण[34] सभाल[35] वे ॥ २२२

घ अतरा दूहा कहैनै घरे गई । रसालु गाममें आयौ । राजा मानरै घरे गयौ । राज मान जावता कीधी । रात पडी रसालु सुतो छै । अतरै राणी आई कींवाडकै दीधी । रसालु बोल्यौ नही ।

ङ इतरो कहिनै घरै गई । रीसालू गाव माहै आयौ । तद सघले लोकै कयौ—राजा मानरै जमाइ आयो छे । तिणरै नाम रीसालू छै, राजा समस्तरो वैंटो छै । तद महिला माहै डेरा दिराया, जावता कीधो । रात पडी तद रीसालू महिला पोढीया छै, कपट नीद कर सुतो छै । राणीं आवी समस्या कीधी । पिण उघाडै नही

१ घ राणी कांई कहै। २ ख नाषु। ङ नाषु। ३. ख काकडा। ४ ख वाजे लोह। ङ वाजै लाल। ५ ख कमाड। ङ किवाड। ६. ख ङ मुआ। ७ ८ ङ कै। ९ ख जप्या। ङ झपीया। १० ख तुझ नाग। ११ ख साहीवजी। १२ ङ थै। १३ ख सारी रयण। ङ सारी रेण। १४. ख गवी हाय। ङ गइ विहाय। १५ ख. कोडरी। ङ कोडकी। १६ ख मुदडीं। ङ मुदडो। १७. ख भाजी। १८ ङ वजर। १९ ख कमाड। ङ किवाड। २० ख. प्रतिमें यह दूहा २२१ वें से पहले है तथा इन दोनो दूहोके स्थान पर ग घ प्रतियोमें निम्न एक ही दूहा प्राप्त है—

कै मुआ कै मारीआ'वे कुवर, कै झफी आई नार वे' ।
सवा कोडको मुदडो, 'भाज्यो' बजर 'कमाड' वे ॥३९
'—' घ कै झपया अवार वे। घाठो। कीवाड।

२१ ख रसालुवाक्य। ग. रीसालुवाक्य-दूहा। घ में नहीं है। २२ ख न। ग नै। घ ना। २३ ख. ग. घ में नहीं है। ङ मै। २४ ख घ मुआ। ग मुआ। ङ मुया। २५ ख नह। ग नै। घ न। ङ ना। २६. ग. मारीआ वे राणी। २७ ख न। ग नै। घ. नहीं। ङ ना। २८ ख ग घ ङ में नहीं है। २९ ख जप्या। ग झफीआ। घ झपया। ङ ज्यापो। ३० ख अहीराव। घ. अवार। ङ कालो नाग। ३१ ख सरोवर। ग घ ङ सरवर। ३२ ङ वोल्याडा। ३३ ख वेही। ग घ वेई। ङ उवांका। ३४ ख वयण। ग घ वोल। ङ. वैण। ३५ ख चीतार। ग घ चींतार।

[६०. वार्ता—इमो कुंवरजी कहीयो। तरे कुंवरी चूप करने महिलरे वारणे बेठी, ने रूपी वडारण छै, तिणनै कने वेसाणने कहे छै—

दूहा– मृगलो सूवो मेनडी, एकण रे वहे (रेहवे) लार बे।
सो तो हंस रिसावी सो, सरवर वात सभार बे॥ २२३
भूलै चूके भोलडी, वयण वटाउ जाण बे।
कहिया साहिब किम कीजीयै, रीसवि मती य सूजाण बे॥ २२४
हे वांदी या (था) हरा हाथरो, आसरो आज अपार बे।
रातडीयारी वातडी, निसा समे यार बे॥ २२५

६१ वार्ता—इण भातसू वडारणसू दूहा कहीया। तठै रीसालू जोइयो जे रातरी वात सासरीयामे गई, तो इण लूगाईरी तो पारप लेणी, पछै वात करणी। इसो विचारने कपट-निंडा(द्रा)मे सूता छै। इतरा माहे वरषाकालरो मास छै। श्रावणरो महिनो छै। तठे उत्तराधरा पमी(गी, गा)री चाली थकी घटा आई छै। मोर, पपीया, कोइला कहुका कीया छै। डैडरिया डरू डरू कर रह्या छै। धरती हरीयो काचू पहरणरी आस धरी छै।]

राग मल्हार

दूहा– वरषा रीत पावस करे, नदीया प(ष)लके नीर।
तिण विरीयां सूंकलीणीयां, धणीयास्यू धरचौ सीर॥ २२६
परवाई झीणी फूरे, रीछी परवत जाय।
तिण विरीया सूकलीणीयां, रहती पीव-गल लाय॥ २२७

[—] कोष्ठगत ६० एव ६१वीं वार्ताओकी वाक्यरचना ख ग घ ङ में इस प्रकार है—

ख वारता—इसो कहीयो। तरे रांणी इसो सांभली पाछी फीरी। तरे रसालु वीचारियो आ अस्त्री पतीव्रता होसी तो राजलोकमे जासी, नही तर ओर ठीकांणे जासी। इसे समीए थोडो जरमर-जरमर मेह वरसे छे।

ग वात—ऐस्यो राणी कही परी गई। तदि रीसालु कह्यौ—आ यसत्री कसी क छे? पतीव्रता होसी तो रावलामै जासी, नही तर ओर जायगा जासी। झीरमर-झीरमर मेह वरसै छै। ऐसो ओभाव वीण रह्यो छै।

घ प्रतिमें इस प्रकारका कुछ भी अश नहीं है।

ङ वारता— राणी इसो कहिनै फेर पाछी गइ। तद रीसालु वीचारीयो—जो आ असतरी प्रतीवरता होसी तो राजलोक माहै जासी, नही तर ओर ठिकांणे जावसी। तिण समै थोडो-थोडो मेह वरसे छै।

पालो पांणी पातसाह, चढो उत्तराधि कोर ।
तीण वीरीया धणीयांयति, मोरडीयां ज्यूं भिगोर ।। २२८
आभे अडबर बादली, वीज चमको होय ।
तिण वीरीया कचू कसै, पीवनै राषे नोय ।। २२९
कोरण उतराधि करण, धोरण चो(चो)ली कुवाल ।
धणीयां धण सालै धणी, वणीयो इम वरसाल ।। २३०[1]

६२ वार्ता—इण भातरी वरषा रीत बणी छै । तिण समीये छोटी-छोटी बूंद पडै छै । विजलीयारो झबको हुवै छै । तठै कुंवरीरो जीव सेणसूं विलूधो छै ने कुंवरजी कपट-नीद्रामें सूसाडा करै छै । तठै राणी वडारणने दूहो कहै छै ।[2]

दूहा— आज सलूणी रातडी, मोही अलूणी होय बे ।
एकौ कामण सीझीयो, वांदी विधुता जोय बे ।। २३१
रामन रातडीयां तणी, पूरो हौवै पास बे ।
तुं मूझ बालापणा तणो, पूरावै मन आस बे ।। २३२

दासीवाक्य

नीदडीयारो नेहडो, लागो कुवर सू जांण बे ।
अब ठठो (उठो)सै चालो भली रे, रेण अधारी आंण बे ।। २३३
चालो मीलीय सेणसू, रावत सूता सू छोड बे ।
एक घडीमें आंपणौ, काज करेस्यां कोड बे ।। २३४*

A६३ वार्त्ता—इण विध छानेसे वाता करने उठी, सो मेहीलासूं उत्तरी । तठै कुमरजी साहमीक होयने ढाल-तलवारसूं कस्या, सो लारे चालीया, लगबग हालीया छै ।

दूहा सोरठ—ए आजू णी रात, षवर पडैसी मूझ षरी ।
वैरण हदी वात, षरी मथा ज्यौं षेलणा ।। २३५

---

१. २ २२६ से २३० तकके दूहे तथा ६२वीं वार्ताका गद्यांश ख ग घ ङ प्रतियोमें अप्राप्त है ।

* २३१वें पद्यसे २३४वें तकके पद्य (दूहा) ख ग घ. ङ प्रतियोमे अप्राप्त हैं ।

A–A चिन्हान्तर्गत ६३, ६४, एवं ६५वीं वार्ताओंके गद्यपद्यात्मक अंशोके वाक्यभेद ख ग घ. ङ प्रतियोमें इस प्रकार मिलते हैं—

ख. राणी सोनाररा घर दीसा चाली । रसालु पिण ढाल-तलवार लेने रांणी वासे चाल्यो । राणी सोनाररे घरे जाय कमाड कुटीयो । रांणी सोनार प्रते काइ कहे छै—

६४ वार्ता—इण भातसू कुवरजीरो अस्त्री चिंतवती, आपरो सेण 'जात सूनार रीणधवलनामै' तीत(ण)री हवेली जाय नै सवा लाषरो मूदरो हाथरा अगूठामाहिसू काढनै फैकीयौ, सो चोक विचालै जाय पडीयौ। तिणरा गुघरा वाज्या। तठै सूनाररो बाप जागीयौ। तठै बेटानै जागावा जाय ने दूहो कहै छै—

दूहा— उठीयौ कुवर वीवालूवा, भीजै राजकुवार बे।
राजा रूठैगो गांव लै, नही तर घोडी त्यार बे ।। २३६

६५ वार्ता—इसौ कहता प्राणनाथ सूनाररो बेटो जागीयो ने कीवाड पोलने कुवरीरे लातरी दीवी ने बोलीयौ—कुतरी राड! वरषा रीतरी रात माहे मोडी आई, सो वले किमा माटियाने रीझावणने गई थी। तठै कुवरी हाथ जोडनै बोली—साहिबजादा! इतरो कोप मती करो, काई करू? आज माहरो पावद आयौ, तिणसू परवस पडी थी। उण दईमारचा नीद आई देष ने वेगी आई छू। मारो जोर लागौ हुतो, वेगी आवती, पिण इण बातसू अटकी रही। तठै सूनार कवरीने माहे लीवी।

दूहा— झिरमीर झिरमीर वरसीयो, मेह भलो तिण रात बे।
भीना कपडा नीचोइ सो, करवा बेठा वात बे ।। २३७

६६ वार्त्ता—हीवै सूनार ने कुवरी रग विलासमे मगन हुवा छै, नं कुवरजी किवाडरी इदलो पाग(प)दैने (सू)नाररा महीलरे पसवासै जाय विराजीया छै, सारा ही चरीत्र देषे छै, मनमै जाणे छै—देषो, लूगाया चरित्र, जीव ठीकानै कदे ही रहै नही। A

राणीवाक्य

दुहो— उठो उठो कुवर सोनारका, काइ भीजे राजकुमार बे।
राजा रुठो तो गाम ल्ये, उठो घोडा त्यार बे ।। ५२

वारता—रांणी इसो कहीयो। तरे सोनाररे वेटे उठने कमाड षोल्यो। राणी माहे गई। आगे सोनार सुतो हतो। सो उठने राणीरा माथामे पावडीरी दीधी ने फेर कहीयो—इतरी मोडी क्यु आई? तरे सोनारनु कहे—आज आपणा सहीरमे राजारो जमाइ आयो छै, सो तिणनु सुवाड ने आई छु, तीण वास्ते ढील हुइ। रसालु बारे उभो सारी वात सुणी। हीवे रसालु छांने बेठा छे। राणीइ सोनार साथे सुष-वीलास करतां रात्र सुषे गुदारी।

ग रीसालु ढाल-तरवार सभाये नै पुठै हुओ। राणी सोनारकै घर गई छै, कमाडकै दिधी। राजकुवरी सुनाररा बेटानै काई कहै—

दुहा— उठो कुवर सुनारका, भीजै राजकुवार बे।
राजा रूसै तो गाम लै, नही तो घोडांरो माल बे ।। ४१

[दूहा– माटी सूती छौडनै, जावे षेलण नार वे ।
पर-रसभीनी कांमणी, ते हूई जगमे षराव वे ।। २३८
मौ सरसौ पीउडौ मीलयौ, छोड नै हेत सू नार वे ।
ग्राधीनी सषावस भरै, तो ही ए डरपी लीगार वे ।। २३९
नारी नही का ग्रापरी, पूठ पराई थाय वे ।
जो हित तन-मन दीजता, पिण न पतिजै जाय वे ।। २४०
पूरष भला गहिला थई, राषै भरौसौ नार वे ।
कदेही ग्रपणी नही हुई, नारी जग निरधार वे ।। २४१
सो कोसां सजन वसै, दस कौसा हुवै नार वे ।
तो नारी तेहने झूरे, पीउरी न जाणै पूकार वे ।। २४२
ग्रासू लूधी सेणरी, धणीयण ग्रास लिगार वे ।
गौठ पराई राचवै, जीवत छडै लार वे ।। २४३
धणी सासती नारी नही, सेणा सहिल ग्रपार वे ।
प्रेम गहैली सेंणनै, ग्रापै तन घ (ध)नसार वे ।। २४४

६७. वार्त्ता—इमा दुहा कुवरजी मनमे कह्या ने चरीत्र जोवै छै। तीतरा माहे सूनार बोलीयौ—ग्राज ग्रभागने थाहरै धणी कठासृ ग्रायौ ?, ग्रापरा सनेहमें ग्रतरास घाली । तठै कुवरी बोली—पोउडा, उण वेईमानने याद मत करो न ग्रावार रगरी वीरीयामे याद करणी नही । पिण ग्राप जमै पानर रापौ, दाय-उपाय करनें ग्रापरो मूजरो मोडो-वेगो साझ जासू । तठै कुवरजी सूणनै प्र(घ)णा षूसी हूवा । स्यावास है, इसी ग्रस्त्रीया हुवै तद माझ हाथे ग्रावै ।]

घ तदी राणी सुनारकै घरे गई । पाछासु रसालु गयौ । थोडोसो मेह वरसै छै । राणी सनारनें हेलो पाड्यौ, सुनारको कीवाड पोलेयौ । राणी माहे गई । सूनार उठे नै पावडीकी दीधी । रांणी कह्यो—राजारै जमाई ग्रायो थो, तीणनै सुवाणनै ग्राई छु । तद राणी-सुनार माही-माहे हसै-रमै छै; ससारसु लाहीनो लीधो ।

ङ रीसालु पिण हाथमांहि ढाल-कवाण लेंनें राणीरै पूठै चालीया जावै छै। राणी तो सोनारकै घरै गइ, किवाड कुटीयौ । तद सोनार वेटाने काइ कहै छै—

सोनारवाक्य—

दूहा– उठो कुमार सोनारका, भीजै राजकुमार वै ।
राजा रुसै तौ गाव लै, नही तर घोडा च्यार वै । ४७

वारता—तिवारे किवाड पोल्यो । माहे गइ । सोनार सूतौ थो, सो ऊठनै पगरी दीधी नै कयो—इतरी मोडी क्यु ग्राइ ? रीसालूरी वात साभली । तद कुमरी कयो—ग्राज राजारै जमाइ ग्रायो, तिणनै सूवाडा नै ग्राइ छु । च्यार पोहर सूती रही, परभात होण लागौ तद रीसालूनै ऊघ ग्राई, तिवारे ह ग्राइ छु ।

[—] कोष्ठगत पाठ ख ग घ ङ प्रतियोंमे ग्रनुपलब्ध है ।

[दूहा– एक छोडी दूजी छोडस्यां, तीजी करस्यां त्यार बे ।
काई क नारी सूगणली, परष लहैस्यां सार बे ।। २४५

६८. वार्ता—इसो मनमोवो कुवरजी कीयो । ने सूनार नै कुवरो घणा रगमै वेठा छै ।

दूहा– पीउ प्यारी पीउ प्यारडी, मच रही माझल रात ।
सेणा सेण चपेलीया, कसवी करीयां वात ।। २४६
कचृ कस्यौ दिल हथ कीयो, मीलीयो तन सोनार ।
जांणै केलना पांन पर, कपूर ढुल्यौ नीरधार ।। २४७
वका लोइण लोइसा, कटि कबाण कसि षम(ग) ।
सेझ समूद पर नाव ज्यू, तीरता चले तुरग ।। २४८
आडा कसीया कामनी, नैण-सरासर देत ।
घा(धा)वा मचोया घोलीया, सैण सवादि लेत ।। २४६
विसरा-वसरी चोसरा, अमला करडी ताण ।
सेझा रग पलाणीया, अमला किया पिछाण ।। २५०
नारी ना-ना मूष रटै, बिमणो वधै सनेह ।
जांणै चदन रूषडै, नाग[ण] लपटी देह ।। २५१]

A६६ वार्ता—इसा रग-विलास मच रह्या छे । हाको-हाक लाग रही छै । सू रमतो पोहर पक्की हुई । तठै कुकडारा सा(ना)द हूवा ।

दूहा– कूकड कू कू कहुकीया, झल्लरो ठाकुर द्वार बे ।
साद सूण्या चेतन हूई, झागी कुवरी सार बे ।। २५२
अहो अहो रैणी वीगती, पूह पेहली हुई एह वे ।
किण विध जासू मूझ घरे, नवला टुटने नेह वे ।। २५३A

[—] कोष्ठान्तर्वर्त्ती अश ख ग. घ ङ प्रतियोंमे अप्राप्त है ।

A–A चिन्हगत अश के स्थानमें ख ग. घ ङ प्रतियोमें केवल निम्नाश ही प्राप्त है—

ख प्रभातरो समो हुओ । तरे राणी सोनार प्रते काई कहे छे ।
रांणीवाक्य दुहो ।

ग सुनारकानै राणी कांई कहै । दुहा– ।

घ अतरै प्रभात हूवो । राणी कह्यो—परभात हूवो ।

ङ हम फैर कुमरी काइ कहै छै । कुमरवाक्य । दूहा– ।

दूहा— उठो[1] नीवूध्यका[2] आगल[3] , कांई क[4] वूध्य[5] उपाय[6] वे।
'गलियांरा नर कि(फि)र रह्या,'[7] 'हिव किण विध घर'[8] जाय वे ॥२५४

सोनारवाक्य[9]

पेहरज्यो[10]माहरी[11]पावडी[12], पाथै[13]वरो[14]तरवार वे।
'माथै पाग बाधी करी, कांचली ओढ(ढ)ण आधार वे'[15] ॥ २५५
लाबी लाबी भीपडी, भर भर मारग चाल वे।
पपारा पासी करी, चौघंटाकी चाल वे ॥ २५६[16]
कोई न लेपैआ लपै, वले तुं अकल आचार वे।
इण विध कुण तुझ ओलपै, कुण कहै तुझनें नार वे ॥ २५७[17]

७० वार्ता—इगी वात रीसालू सूणनै वेड दोपला पगनें महिलसू हेठो उतरनै मारग आधी वेठो। इतरे कुंवरी सिरपाव करनै काधै तरवार तोलती आवै छै। तठै कुंवरजी बोलीया—[18]

दूहा— पावरीयां[19] पटकालीयां[20], कटीया[21] रलतां[22] केस वै।
हम[23] हदी तु गोरटी, 'किण सिपलाया वेस वै'[24] ॥ २५८

---

१. ड. उठो। २. ख. ग घ ड. बुधका। ३ ख ग. घ ड. आगला। ४ ख. ग. घ. कोई क। ड. काइ क। ५ ख ग घ ड वुध। ६. ख. ड वताय। ग घ. वताव। ७ ख. गलीयारे फीर नवी सकू। ग. घ. गलीआंरा मानवी फीरै (घ फरै)। ड गलियारै नारी नर फीरे। ८ ख हु किसे मीस घर। ग हु कणी मीस घर। घ. हू कणीरै मस। ड किण मिस हु घर। ९. ड ओवाक्य। १०. ख. पहीर। ग घ. पैर। ड पहिरण। ११. ख. ग घ. ड हमारी। १२. ग पावडी वे। घ. पावडी वे कुवरी। १३. ख. ड पाथे। १४ ख ग. घ. धर। ड. धरी। १५. ख लाबी लाबी डाक भर, कुण कहै तोने नार वे। ग. घ लाबी लांबी भीप भर, कुण कहेगा नार व। ड लांबी थीप भरी कुण, कहै राजकुमार वै। १६ १७. ये दोनों दूहे ख ग घ ड प्रतियोंमें अप्राप्त हैं। १८ ग घ में····· वार्ताका अश अप्राप्त है तथा ख ड में प्राप्त अश इस प्रकार है—

ख वारता— हिवे रांणी पावडी पहीर, मरदी सीर-पाव कर ढाल-तरवार लीया चाली रसालुरी चोकीमें आय पडी। तव रसालुवाक्य दूहो—।

ड. वारता—पावडी पैहर नै तरवार लेनै चाली। तरे रीसालूकि चोकी माहे आय पडी। रीसालूवाक्य दूहा—। १९. ख. ड पावडीयां। ग घ ड पावडली। २० ख पट-कालीया। ग पटकावमां(सी)। घ पटकावमी। २१. ख. कडीये। ग घ कटर्या। २२ ग रूलांता। घ. रलांता। २३ घ कोण। २४. ख तुने कोण सीपाया वेस वै। ग. कोण मीपाया भेस वे। घ. कुणी कराया भेष वे। ड तोनै किण सीपाय वै।

राणीवाक्य

'भोलै म भूल रे भाइया'[1], नेणकै[2] उणिहार[3] बे।
रातै[4] करहा[5] उछरे, 'ताकी हु'[6], चारणहार बै ॥ २५९[7]

रीसालूवाक्य

रातै[8] करहा[9] उछरे[10], दीहा[11] उतारा[12] होय बे।
मारू[13] मूध[14] कटारीया[15] वर क्यू वीरडा[16] होय बे ॥ २६०

७१. वार्त्ता—इसो दूहो रीसालू कहने चाटी दीवी, सो एक पलकमे मेहलमै आय सूतो घरराटा करे छै। इतरै पीण कुवरी मनमै सकती थकी, डरती थकी रोलबोल मेहलामे गइ। आगै वेस उतार ने आपरो सागी वेस करनै तुरत कुवरजीकने मैहलमै आई। आगै देषै तौ कुवरजी पोढोया छै, कपट नीदडलीमै मगनानीद हुवा छै। तठै कुवरी देषने मनमे वीचारीयौ—औ काई जांणीजै, मोने भरम तो कुवरजीरो पडीयो थो ने कुंवरजो तो सूता छै, ने मोने इसडा जाबरो कारणहार कुण छो ? इसी चीतामे हुई थकी वीरीया चसू(चू)कती जाण ने कुंवरजीरी पगातीया बैसने दुडबडी देवा लागी। तठै कुवरजी कपटनिद्रासू आलस मोडवा लागा, उछासी लेवा लागा। तठे कुवरोजी कहे—[17]

---

१. ख भुलम भुलो रे भाइडा। ग भोलै तो भुलो रे भाईडा। घ भोललो भुलो तु भायला। ङ भोले मां भूले भायडा २. ख नेणाके। ग ङ नैंणारे। घ नृणकै। ३ ख ङ अणुहार। ग. घ ऊणीहार। ४ ख रात ज। ग रात नै। ५ ग करसा। ६ ख तीहारी। ग. जाकी। ७ इस दूहा के दोनों अन्तिम पाद ङ प्रति में अप्राप्त हैं तथा घ प्रतिमें इस प्रकार मिलते है—मारा वापरा करहला, मैर चरावणहार वे। ८ ख ग घ रसालु वाक्य। ९ ख घ न करहा। ग ज करसा। ङ करहा ना। १० ख उचरै। ङ ऊछरे। ११ ख वीहे। ङ विहां। १२ ख घ ङ न तारा। ग ज तारा। १३ ख मारु। १४ ख मूह। ग घ बुद। १५ ग घ कटारड्यां। १६. ख वीरा कीम। ग घ ङ क्यु वीरा।

१७ ७१वीं वार्त्ता का अश ख ग घ ङ में निम्न प्रकार है—

ख वारता—इसो रसालु कहीयो। तरे राणी वीचारयो—रसालु होसी तो गाढी भुंडी होसी। इसो वीचार करता राणी राजलोकमे गई। रसालु पीण राणी पहीला महीला माहे आइ। कुवरजीनु सुता देषने राणी वीचारयो जे रसालु इसा नही, अजेस भोला छे। रसालु आय सुता, तीणरी राणीनु षबर नही। पछे रांणी पग दाबवा लागी।

ग ऐसा वचन रीसालु माहो-माहे कह्या। तदि राणी सोची—रखे रीसालु न छै। तदि कुवरजी म्हैला गया। रीसालु रांणी पैहली जायनै सुता छै। राणी जाण्यो—ओर कोई होसी। देषै तो भर नींदमै सुता छै। रीसालु ईस्या नीदमै छै। तद पग दाबवा लागी।

घ वारता—तदी राणी जांण्यौ—रसालु कुवरको वचन छै। राणी मनमै डर षाधौ। रांणी सताब घरे गई। राणीं पैहलां रसालु जाय सुतो छै। रांणी जाय पग दाबवा लागी।

दूहा— उठ विडाणा देसरा, कांमण जागी जोर बे ।
रेण गई उगा सूरज, अब तो मांने निहो(हा)र वे ।। २६१[१]
साहिब तो सूता भला, करडी वांगां तांरण बे ।
घण नही लीवी नीदडी, ढीला हुवा सधाण बे ।। २६२[२]
साई साजन प्रेमका, घण दीधा छीटकाय बे ।
वरपा रुतरी रातडी, दुषम दई विताय बे ।। २६३[३]
सोल वरसरी वीजोगणी, निठ मील्यौ भरतार बे ।
हस्या न बोल्या हे सषी, आइयो लेष अपार बे ।। २६४[४]
आज रूपाली रातडी, झिरमिर वरस्या मेह बे ।
पीउ मन षांची पोढीयो, नवली नार ने नेह बे ।। २६५[५]
कोड छडाया कागला, पीउडा कारण पाय बे ।
विधना हदि वातडी, आजब करी मूझ साय बे ।। २६६[६]
पिण हिव सूता रिसालूवा, पिण पूह फाटी प्रेम बे ।
जागो नही निंदालूवा, उठो सूरज षेम बे ।। २६७[७]

[७२ वार्त्ता—इसडा दूहा कुमरजी सूण्या तद मनमे जाण्यौ—देपो, सच-वादी हुवे छै। इसो विचारने कुवरजी वले आलस मोड नै आष्या मसल ने लाल करने सेझसू उठ्या। जाणै सारी रातरो नीदालूवो उठे, तिसी रीतरो सहिनाण दिषायो। तठे एहवो सरूप देषने राजी हुई ने जाणीयो–जे मोने मारगमे जाब दीयो छो, सू दईमारचौ कोई इसडा कामागे करणहार हुसी, सेहरमे लूड-भूड कोई घणा छै तो वे झप मारो, उणा(मुवा)रो डर नही। कुवरजीरो डर राषी-ती, तीनरो अब भरूसो आयो। इसो चित्तवने राणी बोली— ।

ड वारता—इसो रीसालू कयो। तद राणी वीचारीयौ—रीषे रीसालू हूवै। तिवारे महिलां माहै सताव गइ। रीसालू राणी पहिला गयो। राणी आयने देषे तो कुमर सूतो छै। तिवारे पग दाववा लागी छै।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ये दूहे ख. ग घ ड प्रतियोंमें अनुपलब्ध हैं।

[—] कोष्ठकान्तर्गत गद्यपद्यांश के स्थान पर ख ग घ ड में केवल निम्न गद्यांश ही प्राप्त हैं—

ख रसालु जाग्या। जदी राजी हुआ। जदी राणी लाष रुपीयारा गहीणारी रीझ हुई। इतरे प्रभात हुओ।

ग रीसालु जाग्यो, राजी हूवो। घडी दोय दीन चढचौ छै।

घ. रसालु जागे नै रजावध हूवा। सवेर हूवौ।

ड तरे रीसालू जाग्यो, राजी हुवो। घडी एक दिन चढीयौ।

दुहा– आज कुंवरजी रीसालूवा, मूझ पर सारी रेंण बे ।
नींद ण(न) लीधी धण घडी, जागी न जांणी सेंण बे ।। २६८
सेयण रीसालूं हुय रही, धन विलपी सारी रेंण बे ।
चूक किसो सो मूझ कहो, माहरा पीउ सूषदेन बे ।। २६९

कुवरजीवाक्य

म्हे क्यू रीसालू थाह थकी, कुण कह्यो एह विचार बे ।
राज सरीषी पदमणी, कदेय न भूलू चितार बे ।। २७०
परभूमी षडवा थकी, थांकां कुवर सू जाण बे ।
जिसूं नीदडी धांपीया, मत हो नारि अजाण बे ।। २७१
थांह सरसी मांहरे, भाग तणें परमाण बे ।
ते भूले सो ई ढोर बे, लहज्यो साच पिछाण बे ।। २७२]

७३. वार्त्ता—कुवरजी इसा दूहा कहीया । तठे कुवरीने कुवरजीरो पतीयो । तरे राणी उठने भारी, पालो, दातण लेने कने आई । तठै कुवरजी बोलीया—इतरा वेगा ही करा, सो काइ कारण ? राणी कहै—माहाराजा कूवार ! वासी मूहडे राजसू वात करा, सो जोग नही । तठे कुवरजी दांतन-कुरला कीया, आमल-पाणी कीया, याका-वागा, हाका-डाका हूवा । तठे कुवरजी वडारणने कहे—जायै 'रामजोग' रिण धवल सोनारना बेटाने बूलाय ल्यावौ, ज्यू काई क टुम करावा । आगे ही चालपणे टुम हाथे आई थी, तिकी आज ताइ रही, तीणसू नवि घडावस्या । तरे वडारण सूनारने जोयने कहीयो—अहो कारीगरजी ! थानै कुवरजी बूलावै छै, वेगो आव । तठै सूनार वोलीयो—जवाईजी कठे विराजीया छै ? तठै वडारण कहीयो—जे राजलोकमै छै । तठै सूनार राजी हूवो—जे गेहणी घडावसी । इमो विचारने सूनार मेहला आयो, कुवरजी-सू मूजरो करने वेठो । तठे कूवरजी आपरी कटारी उपर सोनो चढावणरे वास्तै सोनारने कहै छै । तिण समे राणीरी नीजर सोनार माहे पडि । कुवरजी दोढि लाबहु देषने दुहो कहै छै—[1] -

---

१ ७३वीं वार्ता का पाठान्तर ख ग घ ङ प्रतियों में इस प्रकार है—

ख तरे कुवरजी दातण कर अमल आरोग्या । तरे रांणी कहीयो—माहाराज कुमार ! हेमकुट सोनार आयो छे, सो घाट भला घडे छे । तरे कुवरजी कहीयो—उणने ज तेडावो । तदी सोनारने सहेलीया वोलावण गई । रसालु वेठा स्नान करे छे । राणी सोनारी भारी लीया पाणी नामे छे । इतरे सोनार आयो । तरे राणीरी अर सोनाररी नीजर एक हुई । तदी रांणी पाणी नामती हती, सो धार चुक गई, धार धरती जाय पडी । तदी रसालु राणी प्रते काइ कहे छे— ।

रीसालूवाक्य—[१]

दूहा—[२] तास[३] तीषां[४] लोयणा[५], श्रोस[६] चगी[७] वेणाह[८] बे।
धार[९] विछुटी[१०] धर[११] गई[१२], नर[१३]चढियो[१४]नेणांह[१५]बे ॥२७३

राणीवाक्यं

रहो रहो केथ[१६] श्रणभावना[१७], श्रणहुंती 'कहि ताहि'[१८] बे।
हींवडै[१९]हार अलूझियो[२०], सो[२१]सूलझायो[२२] नेणाह[२३] बे ॥ २७४

७४ वार्त्ता—इसो कहि तब प्राणनाथ कुवरजी झारी लेने सोनारने कहै—माडि रे! हाथ, मारी अस्त्री तोने दोनी, श्रीकृष्णारपून्य छै। तठै सोनार

ग तब दातण कीधो। श्रमल-पाणी करेनै रजपुतानै कह्यौ—जावो, सोनार गली माहिलानै तेडे ल्यावो। तद रजपुत दोड्या गली माहिला सोनारनै तेड ल्याया। सोनार मनमै जाण्यो—जमाई श्रायो छै, गैणो घडावता होसी। सुनार श्राव्यो। रीसालु सापडै छै। राणी पाणीरी झारी लेयनै एक धारा कुढै छै। राणीकी सोनारकी नीजर ऐक हूई। तदि रीसालु काई कहै—।

घ श्रमल-पाणी करे सपाडो करवा लागा, रजपुतानै कह्यौ—जायनै बांमणारी सेरीयामै सुनार रहै छै, तणीनै बुलाय ल्यावौ। सुनार जाण्यौ—राजाजीरै जमा[ई] श्रायो छै, सो गैहणौ घडावता होसी, राछ पीछे ले श्रायौ। रसालु बैठो सपाडो करै छै। राणी झारो भरनै कुढै छै। सोनारकी नीजर, राणीकी नीजर, एकठी हुई। धार छूटी धरती पडी। तदी रसालु कहै—।

ङ तद दातण करी श्रमल श्रारोगनै दरीषानै श्राय बैठा। रजपूतानें कयौ—जावौ, सोनारनै बुलाय लावौ। तद रजपूत गलीयामै सोनारको घर है, तिहा जाय बुलाय लायौ। सोनार जाण्यो—जमाई गेणौ घडावसी। इसो जाणी सौनार राजी हौयनै श्रायो। तरै राणी सोनारसू लागी नीजरौ-नीजर मिली दीठी नै तारौ-तार मिली।

१. ख तदि रसालु राणी प्रते काइ कहे छे—रसालुवाक्य। ग तदि रीसालु काई कहै—। घ तदी रसालु कहै—। २ ख दुहा। ३ ख. तारा। ग. तारा। घ तारू। ङ तीषा। ४ ख ग. घ तीपा। ङ. राता। ५ ग लोश्रयणा। ६ ख. श्रर। ग उर। ङ ऊच। ७ ङ सगी। ८ ख वयणाह। ग नयणाह। घ नैणाह। ङ. वैणांह। ९ ग घ धारा। १० ख वीछुटी। ग घ तुटी। ङ विछुघटी। ११. ग. घ धरती। १२ ग घ पडी। १३. ख कोइ नर। ग घ में नहीं है। ङ को नर। १४ ख. देख्यो। ग. घ निरख्यो। ङ चढीयौ। १५. ख नयणाय। ग दोय नयणाह। घ दोय नैणाह। ङ नैणाह। १६ ख ग घ. ङ कत। १७ ख श्रभावणा। ग घ श्रभामणा। ङ श्राभावणा। १८ ख कहौ वाय। ग घ कैहणाह। ङ कैहो नाह। १९. ख ग हीयडै। २० ख ङ श्रलुजीयौ। घ उलझीयो। २१ ग घ ङ मे नहीं है। २२. ख ग. सलुझायो। घ सुलझायो। ङ सूलजायो। २३ ख नयणाय। ग नयणाह। घ नैणां। ङ नैणाह।

हाथ माडीयो। कुवरजी राणीने परी दीवी। सोनार ले घरे गयो। तठै राजा ने राणीनै षवर हुई। तरे जवाईने अलाधा बूलायने ओलभो दीयो। तठे रीसालू कहै—[1]

दूहा—[2] रतन कचोलो रूवडो[3], 'सो लगो पाथर फूट बे'[4]।
'जिण जिण'[5] आगल ढोईयो[6], केसर बोटी[7] काग बे॥ २७५

सासूवाक्य—[8]

'तलगु दल निलज उपरे'[9], 'नीर निरमल होय बे'।[10]
'टुक पीव हो रीसालूवा,[11] नीरमल[12] नीर न[13] होय[14] बे॥ २७६

रीसालूवाक्य—[15]

साप[16] छोडी[17] कांचली, देवा[18] छोडया[19] देव[20] बे।
रीसालू[21] छोडी[22] गोरडी[23], मन भावे[24] सो लेव[25] बे॥ २७७

---

१ ७४वीं वार्ताका पाठ ख ग घ ङ प्रतियोमें इस प्रकार है—

ख. वारता—राणीरा इसो वचन सुणीने रसालु सोनारने कहीयो—हाथ माड, आ अस्त्री तोनु दीधी, मा जोगी नही। तरे सोनार हाथ माडीयो। रसालुए हाथ पाणी घाल्यो; श्रीकृष्णारपुन्य कीधो, अस्त्री सोनारने दीधी। सोनार राजी हूओ अस्त्रीने घरे ले गयो। ती वार पछी राजलोकमे सांभल्यो। तदी सासु ने राजलोक, राजमानप्रमुष सर्व जणे ओलभो दीधो। तरे रसालुवाक्य।

ग वात—तदि सुनारनै रीसालु काई कहै—हाथ मांड। सुनार हाथ माडचो, जदि पाणी कुढचो नै असत्री परी दीधी। अम जोगी नही। असत्री सुनारनै दीधी तदी राजा, राणी वात सुणी। तदि रीसालुनै ओलुभो दीधो। तदि रीसालु काई कहै छै—।

ङ वारता—रीसालू सोनरने कयो—जा रै, हाथ माड, तोने आ अस्तरी द्यु। आ अस्तरी मा लायक नही। तरे सोनारनै दीधी राजायै जाण्यो, रीसालुनै ओलभो दिनो। रीसालूवाक्य।

२ ख दुहा। ३ ख. रुअडो। ग रावरो। ङ रूयडो। ४ ख ग फुटो पथर लाग बे। ङ सा लगो पथर फूट बे। ५ ख ग जीण जीण। ६ ग जीण कह्यो। ङ ढाइयो। ७ ख वोटचो। ८ ख. सासुवाक्य। ग राणी राजानै काई कहै—। ङ वारता-तदी राणी रीसालूनै देषने काइ कहै छै—सासुवाक्य। ९ ख तलगुदल जल नील पर। ग तिलगुदल ऊपर ऊजल। ङ तली गुदल नील उपरै। १०. ख ग. नीर उस्या ही होय बे। ङ पिण नीरमल नारी नां होय बे। ११ ख. दुक दुक पीयो रसालुआ। ग टुकरे पीवो रसालुवा। ङ टुक एक पीवे हो रीसालूया। १२ ङ पिण निरमल। १३ ख नार न। ग नारी। ङ नारी ना। १४ ख कोय। १५ ख रसालुवाक्यं। ग तदि रीसालु काई कहै। १६ ख सापे। ग साप ज। ङ सापा। १७ ग छांडी। १८ ख देवल। ग भीत्या। ङ देहरे। १९ ग छाडचो। २० ग लेव। २१ ख रसालु। २२ ग छाडी। २३. ग असत्री। २४ ख ग ङ मानै। २५ ख लेय। ङ लैह।

सासूवाक्य

रीसालूया[1] 'रीस कसांइया'[2], 'यां रीसडी'[3] जल[4] जाव[5] बे।
घरणी[6] ग्रस्त्री[7] 'नें छोडीयें'[8], 'लाप लोक'[9] 'कहि जाव[10]' दे[11]॥ २७८[12]

रीसालूवाक्य[13]

दूहा– म्हे[14] समसत[15] रायक[16] पूतडा[17], रीसालूं[18] मेरा नांम बे।
परणी हींडे पर घडै[19], तो[20] क्यू[21] राखे सांम[22] बे॥ २७९[23]

[७५. वार्त्ता—इसी वाता करने रीसालू सूसरा कनासू उठ ने नीचै तवैलेमे ग्राय ने घोडे ग्रसवार हुय, ने हीरण ने सूवा ने मेणा ने पिंजरो लेने, धारा नगररो मारग पूछने मारगेमे चालीया जाय छै। तठै लारें साहूणोया राजा माननै कहियौ—माहाराजा, ग्रापरो जवाइ तो चढ गया छै। तठै राजा दोय-च्यार सिरदार साथे ले ने ग्राप घोडे चढिने कुवरजीने जाय पूहता। तठे राजा कहै—

दूहा– कुवरजी हव इम कित करी, तोडचो माहसू प्रीत व।
जगमे भूडा लागसी, थे तो हुवा नचां(चीं)त वे॥ २८०
म्हारे पुत्री इक वले, छोटी छै परण्यौ ति(ते)ह वे।
राजवी थांरा एहवा, छाणा न हुवे ए नेह बे॥ २८१

रीसालू वाक्य

श्रीमाहाराजा जांणज्यौ, सूरा एह सताप बे।
सिर उपर रूठा फिरे, त्याने केहा पाप बे॥ २८२
ग्राप कही सो म्हे परणीया, पूठा पधारो राज वे।
वले य न ग्रावै रीसालूवो, कोटि पडैज्यौ काज बे॥ २८३

---

१ ख रसालु। २ ख रीस कसायला। ड ग्रस कसाइ सांइया। ३ ख थारी रीसडली। ड रीसालूग्रारी। ४ ड जड। ५ ख ड जाय। ६ ख ड परणी। ७ ख ड ग्रसत्री। ८ ख कीम छुडीये। ड छोडि ने। ९ ड लोषु लोका। १० ख. कहीवाय। ड की जाय। ११ ख ड वे। १२ यह दूहा ग में नहीं है। १३ ख रसालुवाक्य। ग मे नहीं है। ड रीसालु वाक्य। १४ ख में नहीं है। ड मे। १५ ख ड समन्त। १६ ख राजाको। ड रायका। १७ ख पुगडो। ड पुगरा। १८ ख. रसालु। १९ घरे। २०. ख सो। २१ क्यु। २२ ख पास। २३ यह दूहा ग. प्रतिमें ग्रनुपलब्ध है एव इस दूहे के ग्रन्तिम तीन पाद ड प्रति में ग्रप्राप्त है।

[—] कोष्ठगत ७५ एव ७६वीं वार्त्ता के गद्यपद्याश का रूपान्तर ख ग ड. प्रतियोमें गद्य के रूप में इस प्रकार है—

७६ वार्त्ता—तठै राजा मान घणाई निवारा किया पिण कुवरजी न मानी । राजा घरे आयो ने रीसालू उज्जेणीने चलीया ।]

A तठे देवीर (रे) देहरा माहै जाय उतरीया । नै राजा भोजरो बेटीरे चित्रामरो आवो थो, तिणरै सात कैरोयारी झूबषा नीचै पडोयो दीठो । तठै राणी जाणीयो—'जै म्हा आयासू झूबषो पडसी, सो कुवरजी नही आया नें झूत्रपो पडीयो तो अबे कुवरजीसू मे कोल कीयो छो—आप नै आया तो हु काठ चडसू, तो आज तो वले वाट जोवनी, तै परभाते काठा चडसू ।' इसो विचारता परभात हुवो । तठे आपरा माता-पितासू मील ने सीष माग नें कौलरो जाब कर नै चहिने नदी उपरे रचाईने ढोलडा घडकीया ।

दूहा— **ढोल घडकै तन दडै(है), विरहीणी सतीया होय ।**
पीउ मीलाश्रो तो मीलै, तो किम दुषीयो कोय ।। २८४

७७. वार्त्ता—हिवै कुवरी चह नेडी वासदेव सिलगायो छै, धूवा-धोर लाग रह्या । तठै कुवरजी देहरासू उठैने तिण वेला तठे आवता धूवौ देषने कुवरजी कहै—A

ख वारता—इतरो कहे रसालु घोडे असवार हुआ । जद राजा मांन कहीयो—दुजी वेटी परणो । तरे रसालु कह्यो—उवा पीण उण सरीषी होसी तीण वास्ते नही परणां । सीष करी तीहाथी चाल्या ।

ग वात—अतरौ कह्यौ अर रीसालु असवार होयनै चाल्या । अतरै राजा मान कह्यौ—मारी दुजी वेटी परणो । जदी रीसालु कह्यो—उही ज उसी ज होसी । रीसालु चाल्यो उजेणी नगरी राजा भोजरै चाल्यौ ।

ड रीसालु असवार हुवा चालवा लागा । जद राजाजी कयौ—मारी वेटी दुजि परणाउ । तद रीसालु कहै—वा पिण उसी ज हुसी तिण वासतै ना परणा । तिहाथी चाल्यो रीसालु उजैणी नगरी आयो, तिहा राजा भोज राज करे छै ।

A–A चिन्हगत अश का पाठ भेद ख ग ड प्रतियों मे इस प्रकार प्राप्त है—

ख हीवे उजेणी नगरीइ राजा भोजरी वेटी रसालु परण्या छे, तीका कुवरी रसालुजीरी वाट जोवे छे । गामरा आवा साथे हुआ छे । कुवरी घणी चींता करे कुवरजी गया नही । तरे राणी काठ चडवाने त्यार हुई छे, तलावरी पाल गई छे । चेह चुणीजे छे । लुगाया सतरा गीत गावे छे । तीण समीए काठरो ढोल वाजे छे । इतरे रसालुजी जाय पहुता । हीवे रसालु सहीररा लोकाने काई कहे छे—।

ग आगै राजा भोजरी बेटी काठा चढै छै—रीसालु आयो नही । अतरै रीसालुं चाल्या आवै छै । वाटै लोक रीसालुनै मीलया । रसालु लोकानै पुछें कांई कहै—।

ड आगै राजा भोजरी वेटी काठे चढै छै तरे रीसालू लोकांने पूछै—।

दुहा[1]– सेहर[2] उज्जेणीके[3] गोरमे[4], 'क्यां ए'[5] धूवा-धोर[6] वे ।
काागारोलो[7] 'मच रयो'[8], 'ज्यूं वाजैगी'[9] ढोल वे ।। २८५
वचन हतो सो पूगीयो, तिण कारण चढै काठ वे ।
रीसालू-वचन षोटो थयो, तिण कारण ए घाट वे ।। २८६[10]

७८ वार्त्ता—इसो सूणत प्राण रीसालू घोडो दपटाय नै तलावरी पाल पपारो कर नें उभो रहियो नै लोकानूं कुका करताने वरजने रीसालू दूहो कहै छै—[11]

---

१ ख ग रसालुवाक्य दुहा। २ ख सहर। ग सैहर। ३ ख उजेणीरे। ग उजेणीकै। ङ उजैणीके। ४. ग. गोरमै। ङ गोरवे। ५ ख क्यु माडी। ग. क्यूं मांड्यो। ङ क्या मडी। ६. ख घुआ-धपरोल। ग ङ घु (ङ घू) आ–धकरोल। ७ ग कागारोल्यो। ङ. कागारोला। ८ ख. मच रह्यो। ग क्यु मच्यो। ङ. मचीया। ९ ख. वाजे क्यू जगी। ग क्यु वाजे जगी। ङ वाजै सिगी। १० ख ग. ङ प्रतियोमे यह दूहा इस प्रकार मिलता है—

ख सहीररा लोकवाक्य

राजारे भोजरी कुवरी, रसालुआ घर नार वे।
नाया कुवर रसालुआ, काठ चढवेकी त्यार वे ।। ६६

ग तदि लोक रीसालूनै काई कहै—

दुहा– राजा भोजरी डीकरी, रसालु वधी नार वे।
आयो नही कुवर रीसालूवो, काठा वंठ कुवार वे ।। ५३

ङ नगरलोकवाक्य

राजा भोजरी डीकरी, रीसालूआ नर नार वै।
आयो नही रीमालूओ, काठे चढे कुमार वै ।। ६१

११ ख ग ङ प्रतियो का पाठ इस प्रकार है—

ख वारता– इसो साभलने रसालु घोडो दोडायो। तलावरी पाल गयो। देषे तो सर्व लोक-लुगाइ मीत्या छे। अवे रसालु जाय राणी प्रते काइ कहे छे—।

ग वात– ऐस्यो रीसालु साभल्यो, घोडो दोडायो, तलावरी पालै आव्यो। लोक मील्या छै। रीसालु राणी नपै आव्यो, राणीको मन जोवा लागो—आ पिण लालचणी छै कै नही ? देषा ईणनै कहू। तदि रीसालु काई कहै—।

ङ वारता– इसो रीसालू लोका पासै साभली नै घोडो दोडाय तलावरी पाल आय उभो रयो नै कहै छै—

दूहौ[1]- रूपासूं[2] धोलो[3] करूं, सोनारी[4] चकडोल बे।[5]
- रीसालू[6] नामने[7] छोड दै[8], जोरू[9] हमारी होय[10] बे ॥ २८७

कवरीवाक्य[11]

अवर[12] तारा[13] डिग पडै[14], धरण[15] अपूठी[16] होय[17] बे।
साहिब[18] वीसारू[19] आपणो, 'तो कलि उथल'[20] होय बे ॥ २८८

[७९ वार्त्ता—इसो दूहौ केहने रीसालू रजावद हूवो। मनमे वीचारीयो-अजे ससारमे सत छै, विना थभा आकास षडो छै। इसो मनमै चितविनै चहथी नेडो गयो, लोकारा विचला भिडावमे उभो रहिनै दूहो कहै छै—

दूहा- सूगणी तुं चिर जीवज्यौ, जगमै नाम कढाय बे।
राजा भोजरी डीकरी, वस उजालण भाय बे ॥ २८९

८० वार्त्ता—इसो दुहौ कुवरी सूणने चहने छोड ने आबारा पेड तले जाय उभी रही, गुघट पाट दीये। तठै सारा हि उम्रावा, प्रधाना आवि वहार देषने जाणीयो—महे, रीसालू कुमरजी आप छै, पिण पूरो पारप लीजै। इसौ सारा उम्रावा चितवने वोलीया—श्रीमाहाराजा कुवार! आप भला पधारचा, आप म्हानै मोटा कीया, पिण एक म्हारा मनमाहै छै, तिका कर देषावो तो राज तो पूरो पतिजो आय जावै। तठै कुवरजी कहै—भला उम्रावा, थे के दिषालौ, मासू

---

१ ख रसालुवाक्य। ग रसालुवाक्य दूहा। २. ख रुपासु। ड रूपाकीसु। ३ ख धवली। ड धालि। ४ ख सोनासु करु। ग सोनै कराउ। ड सोनाकी करू। ५ ख वीलोय। ग लोअ। ६ ख रसालु हदा। ग रीसालु हदा। ७ ख ग ड नाम। ८ ग ड छोडदै। ९ ड अर जोरु। १० ग होअ। ड होय। ११ ख राणीवाक्य। ग. कुवरीवाक्य दुहा। ड राणीवाक्य दूहा। १२ ड जो अवर। १३ ख तार। ग तारो। ड ता[रा]। १४ ख. ध्रु डोगे। ग धु डगे। १५ ख ग. ड धरणी। १६ ख अपुठी। ग अफुटी। १७ ग होअ। १८ ख सांइ न। ग सायब। ड सायत। १९ ख वीसारु। ड विचारू। २०. ख. जो थल उथल। ग ज्यो कुल दुजो। ड जो कली दुजा।

[—] कोष्ठगत ७९, ८०, ८१, ८२, ८३ एव ८४ वीं वार्ताओकी शब्दावलिया ख ग ड प्रतियो में निम्न रूप में लिखित है—

ख. वारता—रसालु राणीरा वचन सुणी घुसी हुआ। आ अस्त्री सुकुलीणी वीसे छे। तदी रसालु कहीयो—हु समस्त राजारो पुत्र छु। माहरो नाम रसालु छे। तीं वारे राणी कहे—सात केरीरो जुबको एकण चोटसु लोकां देषतां पाडो तो रसालु षरा, नही तर थे रसालु नही। जदी रसालु सात केरीरो जुबको एक चोटसु उडायो। तदी राणी घुघट-पट षाचीयो। सर्व लोक राजी हुआ। राजा भोजने हलकारे जाय कह्यो—वधाइ दीजे, रसालुजो

हुसी तो कर देषामसा । तठै उम्रावा बोलीया—श्रीमाहाराज कुवार ! अमारी बाई सासरासू पीहर ल्याया छा जठे आपरी साथेलीयासू मोली, तरे राजारी वडीसी फते कीवी छी, तिण आपरी साथेलीयाने माहरी कुंवरी कह्यो छो—म्हारो षावद इसडो तीर वाहवठा(णा)छा सो रूषरा सात-आठ फल एक तीरसू भूवपी नाप देवै छै, इसो जाब म्हे पिण साभलीयो छो, तिणसू आपनै तसती हुसी, पिण ओ आपरे मूहडा आगै आवारो रूष छै, तिणरै ऐ सात भूबषारी डाली छै, तिका डाली रह जावै नै भूवषो आय पडै । तठै कुवरजी मनमै विचारीयौ—देषो, दइवा राष्या इणा उम्रावा आव वात कही नै कदाचित मभै नही तो हेल हुमी ।]

दूहा– **वीरह विडांणा मेहलथी, साथीडा सोरदार बे ।**
दोरो हुवो दुहेलडी, मिलीयौ इण भरतार बे ।। २६०
साई बाजो राष बे, तो सूधौ सहु काज बे ।
पच पतीजौ पामै बै, वलि रहै सगली लाज बे ।। २६१

८१ **वार्त्ता**—इसो विचार परमेसरने समरने कबाण चढाय ने तीर भूबषा नै बाह्यौ, सौ सात केरीया जूई-जूई आय पडी । भूबषौ सारा ही उम्रावा पडियौ दिठौ ।

दूहा– **तीर सपल्लल चांपीयो, लागा आबा डाल बे ।**
पषारा सूधो निकस, भूबषो पडचौ पराल बे ।। २६२
उम्रावा साषीधरा, दीठा कैरी भूब बे ।
जाण्यौ कुवरी छै सही, कूड नही तिल वात बे ।। २६३

८२ **वार्ता**—हिवै पचा सारा ही साषीधर हूवा । सारा ही षमा-षमा कैह ने कहे—श्रीमाहाराजकुवार ! आप तसती घणी फूरमाई, गुणौ बगसाविजै, दरवार पधारीजै । इतरौ कहीयौ तठै कुवरजी उम्रावारे साथे घोडै असवार हूवा ने कुवरी चकडोलमे वेसने दरबाररे महिला गई । वासैसू वधाईदार राजा भोजने जाय वधाई दिवी ।

पधारचा । इसो सुणी राजा षुसी हुआ, परधांनने कह्यो—सामेलारी ताकीदी करो । तदी परधान सारो सहीर, बाजार सीणगारीयो, हाथी, घोडा, कोतल सीणगारचा, नगारा नीसाण फररा सर्व त्यार कीधा । राजा भोज सामेलो करी कलश वदावे कुवरजीनु माहे लीधा ।

ग वारता—राणी कह्यो । रीसालु कहै—आ असत्री सूकलीणी छै । तदि कह्यौ—हू राजा समस्तरो वेटो छु । तदि [राणी] कह्यौ—सात कैरीकौ झुवको ऐक तीरसू पाडो तो हू जाणू तो ये रीसालु परा । तदि सारा लोक देषवा लागा । तदी रीसालु कुबाण ले तीर

दूहा– श्री माहाराजा भोजजी, तांहरो जमाई अबार बे।
आयो जीवतदांनमे, दीधो कुंवरी उतार बे।। २६४
राजन रूडा होयज्यो, सीषा सारा काज बे।
वाजी परमेसर षरी, राषि दोन्यारी लाज बे।। २६५

८३ वार्त्ता—इसा समाचार श्रीमाहाराजा भोजजी साभलने षूसी हूवा, घणी वधाईया वाटी। इतरै उम्रावासू मीलीया थकां श्रीमाहाराजारे सभामे आया, मूजरो कीयो। राजा भोज घणी मनवार कुवरजीने दीनी। भली भात सू वाहा पसाव कीया। आछी विछात विराजीया। कुशल-कुशल पूछीया। कुवरजी आपरी वीती वात सारी देसोटा धूरा-धूरा कही। राजा भोज घणी धीरप देवी नै दूहो कहै छै—

दूहा– पूत्र पितारा हुकममे, जे रहे जगमै जोय बे।
ते सारीसो जग इणै, वले न वीजो कोय बे।। २६६
पाछो बोलो वोलडा, वादै कर रीसाय बे।
ते सूता पितुं अलषामणो, होय सदा दुषदाय बे।। २६७
जेसा पूत्र ज्यू वाल्हा, जेसा अवर न कोय बे।
पिण जग मावीता तणौ, सूषमे दुष को जोय बे।। २६८
भली वूरी माइत तनी, नवि कीजै देषै पूत्र बे।
पूठत मावीतथी, ते सफू जाषै सूत्र बे।। २६६
पूत्र ईसा जगमे हुवै, माइत तणा मजूर बे।
रहै सदा मूष आगल, नही अलगा नही दुर बे।। ३००
प्रेम विडाणा पारषा, जगके मोह अकथ बे।
कर जोडि पितु आगले, रहैं सदाई साथ बे।। ३०१
ज्यू पितु जपे तु षरो, कालो गोरो कथ बे।
तेहवो हुकम चढाईये, सीस सदा समरथ बे।। ३०२

मेल्यो, सात कैरी को झुवको पाड्यो। सारा रजावध हूवा राजा भोजरै जमाई रीसालु आव्या।

ड वारता—रीसालू इसो राणीरा मुषथी साभलीने घणा रजावध हूवा, आ असत्री सूषलीणी छै, घणु जोग्य छै। तद कुमरी कयो। सात केरीरो झूबको एकण कवाणीयासू पाडो तो षरा। तरे सर्व-लोक देषता सर नांष्यो। तरे सात केरीरो झूवषो आगणै आय पडौ। राजा प्रजा सर्व राजी हुवा। राजा भोज साभल्यो, जमाइ आयो।

८४. वार्त्ता—इसा दूहा राजा भोजजी कहीया। कुवरजी [रो] घणो मन द्रढ हुवो, षूस्याली हुई। राजा भोज नवा सिरपाव कराया। भलाकडा मोती निजर-निछरावला कीवी।]

दूहा– लोक करत बधामणा, घर घर मंगल माल बे।
नगर गली घर नोवती, बाजै ठोर बे बाल बे॥ ३०३[1]
हर्ष तणी गत होय रहि, नगर लोक ले पेस बे।
पूरमे रलीयायत घणी, सकल नमावत सीस बे॥ ३०४[2]
वंदी जम छोडावीया, के पषी मृग माल बे।
नर-नारि आसीस दे, जीवो कोडीक काल बे॥ ३०५[3]
भला ई पधारचा कुमरजी, भलो हुवो दिन आज बे।
आस्यां बधी कांमनी, ताका सूधरचा काज बे॥ ३०६[4]
आज सूरज भल उगीयो, हुवै बूठा मेह बे।
नीजीवत हुवा जीवता, भवला वधीया नेह बे॥ ३०७[5]
भलाई पीयारो नेहडो, नीहचो फलीयो नार बे।
कोड वरस राजस करो, सूष विलस्यौ अण पार बे॥ ३०८[6]

*८५ वार्त्ता—हिवै नगररा लोका आसीसा सृथरो दीवी। साराहीसू कुवरजी मान कर-करनै मील्या। नगरमे पडोहे वाजीयौ। हर्षरा वधावा-गीत

१ २ ३ ४ ५ ६ ख ग ड प्रतियोंमें इन छहो दूहोंके स्थान पर निम्न दूहे ही प्राप्त हैं—

ख दुहा– लोक करे वधामणा, घर घर मगलच्यार वे।
नगर सहु को यु कहे, भले आया कुवर रसालु वे॥ ६०
नगर चोहटे नीसरचा, सहु को नमावे सीस वे।
नर नारी आसीस द्ये, जीवो कोर वरीस वे॥ ७०

ग साहूकारवाक्य

दूहा– लोक करें वधाम[णा], घर घर मगलचार वे।
सहू मील लोक ईयु कहै, आयो कुवर रीसालु वे॥ ५६

सेठवाक्य

दूहा– नगर चोहटै नीसरचौ, सहु नमावै सीस वे।
नर नारी आसीस दै, जीवो कोड वरीस वे॥ ५७

ड दूहा– लोक करै वधामणा, घर घर मगलाच्यार वै।
वधी जन छोडि दीया, के पषी मृग माल वै।
नर नारी आसीस दै, जीवो कोडी वरीस वै॥ ६४

- चिह्नान्तर्वर्ती ८५, ८६, ८७ एव ८८वीं वार्त्ताओके गद्य-पद्यांशका वाक्यविन्यास ख ग ड प्रतियोमें इस प्रकार मिलता है—

गवीज रह्या छै। इतरै रात्र पूहर सवा गई। तठै कुवरजी मेहला दाषल हुवा। इतरे कुवरी सिणगार कीया कुंवरजो पासै आई।

दूहा– कालो कांठल भलकीया, बीजलीयां गयणेय बे।
चमकती मन मोहीयो, कचू छाकी देय बे॥ ३०९
पिंडस पतल कटि करल, केल नमावे अग बे।
लोयण तीषां ठग भर, आई मेहल षतग बे॥ ३१०
जाणै मान सरोवरे, मीलष्यो हस विसाल बे।
सेझा आई सूदरी, छुटो गज छछाल बे॥ ३११
पूरो पूनम जेहवो, मूष विच चूपे जडाव बे।
कालो वादल कोर पर, वोज षोवे जिझेकाव बे॥ ३१२

८६ वार्त्ता—इण भात सू कुवरी सीणगार सझनें कुवरजी पासै आय ने सरदो कर ने हाथ जोडने ऊभी रही। तठै राणीरो रूप, मटक-चटक देषने मनमे कुवरजी घणा राजी हुवा।

दूहा– जि नर रूपे रूवडा, ते नर निगुण न हुवत बे।
जी मण भोज कूमारका, मोह्यौ मन तन कत बे॥ ३१३

८७. वार्त्ता—इसो कुवरजी वीचारने राणीने घणी राजी कीवी। घणा कवित्त, दूहा, गाहा करीने माहे-माहि चरचा कीवी। तठे कुवरजी राणीनै कहै—साबास, थाहरो कोल भलो उजलो दिषायो, म्हे तो मारा मनमे जाणता था—लूगायारो समाधाका आलम कहीजे, तिके लूगाया छै।

ख. वारता—रसालुजीए इण तरेसु महीला दाषल हुआ। सघला सायसु मील्या। नीजर-नीछरावलां हुई। इम करतां च्यार पोहर दीन वतीत हुग्रो। सध्याइ रगमहीलमे जाए पोढीया। राणी पीण स्नान, मजन कर भला कपडा पेहरीया। सर्व आभुषण पहीर वाल-वाल मोती सार, घणा अतर-फुलेल ढोलीया। कपडा सघला इकगरकाव (इक रग का) कीया। इण भात घणा उछाहसु सुरापानरी सुराही लीया रात्र घडी दोय गयां, महीला आई। रसालु जीम लीया। घणा उछाह कीया। वात वीगत मन-तनरी कीधी, सुष-वीलास कीया, लयलीन हुआ। तीण समीए रसालुजी राणी प्रते काइ कहे छे—

रसालुवाक्य

दूहा– सर वर पाय पषालता, तेरी पायडली षस जाय बे।
हु थने पुछु गोरडी, थने क्यु कर रयण वीहाय बे॥ ७१

राणीवाक्य

सर वर पाय पषालता, मोरी पायलडी षस जाय बे।
अबर तारा गीणता थका, यू मोकु रयण वीहाय बे॥ ७२

दूहा– कूड कपटनी कोथली, रमती पर पूरषांह ।
लजा सकण जा(ता) नही, प्रीतम मन पिछतांह ।। ३१४
जगमे नारि रूवडि, वसत करी जगनाथ बे ।
पिण साचे मन चाल वे, तो पिउ थाय सूंनाथ बे ।। ३१५
मगल जारी मागरण, चीला छोड कुचीन बे ।
चाले मन पिउ नहि गिरणै, ज्यूं मद मानो(तो)फील बे ।। ३१६
पिण तो सरषी बालही, जो नवि मिलती मोह बे ।
तो हु प्रतीत न जांणतो, नारि तणां अदोह बे ।। ३१७

वारता– इसो सुणि रसालुजी राजी हुआ । राणीरे घणा ग्रहणा, वेस-वागा कराया । हीवे रात दीन सुषे भोगवे छे ।

दुहो– मो मन लागो साहीबा, तो मन मो मन लग ।
ज्यु लुण वीलुघो पाणीया, ज्यु पांणी लुण वीलग ।। ७३

वारता– इसी रीतसु सुष-वीलास करता मास पच वतीत हुआ । तदी रसालुइ राजा भोज पासे मीष मागी ।

ग. वात– रसालु नै म्हैलांमै डेरा दीवाडचा । तदी रीसालु म्हैलामै सुता छै । राणी आई । राणीनै काई कहै—

रीसालुवाक्य

दूहा– सरवर पाव पषालता, तेरी पायल क्यु सही जाय बे ।
हू तोनै पुछु गोरडी, तु क्यु रयण विहाय बे ।। ५८

तदी राणी काई कहै

दूहा– सरवर पाव पषालता, मेरी पायल क्यु कसी जाय बे ।
अबर तारा जोवता, ज्यो मो रैण वीहाय वे ।। ५९

वात– तदी रीसालु राजी हूवो । तदी रांणीनै ग्रहणो दीधो । जडावरो सीसफुल, जडावरा आकोटा बीदी सहेत दीधी । सोनारी घड, रतना रो हार, नवसरो वरहार, चद्रसो उजलो चद्रहार, माला सोनारो, दोय हाथरा वाजुवध, हाथरी बीटी, जडावजडी, नगजडचां हीराकणीरी वीटी, जडावरी जेहड, दोई पायल, दोय पग पांन मय मेषला, हजार पाचसैरा दीधा । ऐस्यो पच फुल्यो गहणो कुवर रीसालुजीरी रांणीनै दीधो । गैहणा-गाठा घडाव्या । राजाजी राजी हूवा, वधाई वाटी । घणा भोग-वीलास दस पनरै रह्या । एक दिनकै सम्यै राजा राणीसू कह्यौ—मांनै सीष देवाडो ।

ड वारता– रीसालुनै महीला माहै डेरो दीरायो । रीसालू महिलां माहै सुता छै । तद राणी आय रीसालूनै काइ कहै छै—

दूहा– सरब याय पषालतां, तेरी पायल घीस जाय वै ।
हु तोने पुछू गोरडी, तौनै क्यु कर रेण विहाव वै ।। ६६

राणीवाक्य

सूकुलीणी नारि तिका, पति सग रहै अछेह बे ।
जीवतडा नहि वीसरे, न वलगाई नेह बे ।। ३१८

८८. वार्त्ता—इण भातसू माही-माहि दुहा कहिनै राजि हुवा । नवा नेह लागा, विरह-विछोहा भागा । पेहरी केसरीया वागा, मिट गया दुषना दागा, चोवा-चदन लागा । इण भातसू माहौ-माहै ससाररा सूष विलासता घरणा मास हुवा । हिवै एक दिनरे समै कुवरजी राजाजी कनै सीष मागी । तठै राजा भोजजी घरणा दुपी हुवा ।*

दूहा– राज सरीषा प्राहुणा, वले न आवै कोय बे ।
मिलीया दुष गलीया सहू, जूगत थई सहु जोह बे ।। ३१९[1]
अग उमाहो कुवरजो, कीयौ कोसी वीस आज बे ।
राज सला धारी धरण, सो कहि जबो काज बे ।। ३२०[2]

कु वरजीवाक्य

बारै वरस वनवास रा, भोगवीया माहाराज बे ।
अब घर जइये वचनथी, सोल वरस धर साझ बे ।। ३२१[3]

A८९. वार्त्ता—इसा समाचार सूणनें भोजजी टीको ओझणौ सारो ही कीयो, दत दायजो घरणा दीया, घणा मनवारासू दीया, घणा मनवारासू लीना । हिवै राणी पिण छानो माल आपरो बेटीनें दीयो, घणी राजी कीवी ।

दूहा– सहस दाय हैवर दीया, इकवीस गैवर दीध बे ।
सहस धोरी दूरणा करला, जगमग झूलां लोध बे ।। ३२२
चाकर पचसय चेरीया, वलि हथियार विशारन बे ।
चतुरगणी लछमी दई, टलीया आल पंपाल बे ।। ३२३

९०. वार्त्ता—इसा द्रव्य देनै कुवरजीनै सीष दीवी, घरणा आसू आया । माता-पिता घणा रूदन कीना ।A

राणीवाक्य

दुहा– सरवर पाय पषालता, मैरी पायलडी षीस जाय वै ।
अवर तारा गिणतां थकाय, मौरी रेण विहाय वै ।। ६७

वारता– रीसालु राजी हुवो राणीरे घेहेणौ घडावै । राजा राजी हुवो वधाई वाटी । घणा दिन रया । रीसालू राजा तीरे सीष मांगी ।

१ २ ३ ये तीनों दूहे ख ग घ. में नहीं हैं । A–A चिन्हान्तर्गत गद्य-पद्यांश का वाक्यभेद ख ग. ड मे गद्यरूपमें इस प्रकार मिलता है—

दूहा– धन धन मातारो नेहडो, धन धन पाले जेह वे ।
धन धन पीउ धन प्यारीया, धन धन कुवर सनेह वे ।। ३२४[1]
माय बाप लीया तिहा, विरह घूराया निसाण वे ।
एहवा पाहुणा डा (ई) सदा, भल आज्यौ भगवांन वे ।। ३२५[2]

६१ वार्त्ता—इसा विलास, विरह, मिलाप माराहीसूं करने कुवरजी नगारो देनै चढिया सो धारावती नगरी आया। आयने वरस पाच ताई रह्या। वलै वसती घणी वसाई। तठै माहादेवजीरी सेवावजीनू कहीयौ—श्रीमाहाराज जोगेमराज ! ओ रीसालू कुवर आपरी घणी भगत कीवी छै सो इणनै काइ क देवो। तठै श्रीमाहादेवजी वोलीया—रे कुवर ! सतुष्टमान हुवा, मागै सौ हि ज देवा। तठै कुवरजी वोलीयो—श्रीमाहादेवजी माहाराज ! आप तूठा छो तो आ नगरी सारी ही वस जावै, आगली हुती, तिणसू सवाई हुई जावै नै म्हारै सवा लाप फौजरो वाधैपो हुवै, इतरो वीध मोनै दिरावौ। तठै श्रीमाहादेवजी वोलीया—तु चावै सौ सारी ही विध हुय जासी। इतरो हुकम लैनै कुवरजी घरे आया। हिवै कितरा इक दिननै आतरै राणीरै गर्भ रह्यो। नव महीना पूरण हूवाथी पूत्र हुवौ। तिणरो नाम रतनसीह दीयौ।[3]

दूहा– सूरज किरण ज्यू तन झिमै, सूदर फूल गुलाव वे ।
रतनसिंह नामै घरौ, दीधौ नाम सूलाव व ।। ३२६[4]

ख वारता– तरे भोज राजा आछो मोहरत जोय वेटीनु सीष दीधी। घणो दतू-डायचो, घोडा, हाथीदल, कटक देइ ओझणो पोहचाया।

ग तदि राजा भोज वेटीरो चलाववारो महूरत पुछ्यौ। तदि राजानै पाडता भलो मोहूरथ दीधो। तदि राजारी वेटी चलाई। घोडा, हाथी, रथ, पायक देनै चलाई भली भातसु पोहचाया।

ङ तद राजा भोज मौरत पूछौ। वेटी साथै घणा कटकदल दैनै डाइचो दे चलाया नै भली तरैसू पोहचाया।

१ २ दोनो दूहे ख ग ङ प्रतियो मे नहीं हैं।

३ ६१वीं वार्ताके स्थान पर निम्न गद्यांश ही ख ग ङ प्रतियों में प्राप्त है—

ख रसालुजी घोडे असवार होय सघलाइसु मील श्रीपुरनगर सारु वीदा हुआ।

ग. तदि [रीसालु] चाल्या चाल्या धीरावास नगर आया। उठै जाऐ वरस पाच रह्या। उठै नगर वसायो। उणी राणीरै वेटो हूवो छै। रतनसाह नाम दीधो।

ङ चाल्या चाल्या धारावती नगरी गया। उठै वरस पाच रया नै नगर वसायौ। राणीरै वेटो हुवौ। तिणरो रतनसिंघ नाम दीधौ।

४. यह दूहा ख. ग. ङ. मे नहीं है।

६२. वार्त्ता—इण भात रहता थका श्रीमाहादेवजीरा प्रतापसू घणा दास दासी वधीया। चारू ही कानीरा भौमीया, ग्रासीया श्राणनै चाकर रह्या। नगरी सारी ही ग्रागासू सवाय वसती हुई। घणा विनज-व्यापारसू डाण-जगात घणी श्रावै छै। तिणसू कुंवररे षजानौ क्रौडा रूपीयारौ हुवौ। कुमे किनी वातरी नही।B

Cतठै इण विध रहता थका वरस पाच वलै हुवा। तठै रातरा पौहरा कुवरजी सूता छं। सूता मनमै वीचारीयौ जे वनवास ही भोगवीयौ, राज ही भोगवीयौ, पिण घरै गया विना विश्रारी षवर किसी पडै, तो श्रवै माईतासू मीलनौ ने धरतीमै नांम करणौ। इसौ विचारनै श्रापरा उम्रावानै प्रभातै सभामै वूलाया, मनसोबा कीया। तठै मोटो माहाजन श्रकलबादर, तीणनै दीवाणपद देईनै द्वा(धा)रावती नगरी सूपी, भला समसेरबादर रजपूत मूहडा श्रागै राषी घणी जाबताई दीधी। हिवै श्राप नगारो दिरायनै सवा लाष घोडी साथै लीयो।

दूहा- दल वादल भेला हुवा, देता नगारां ठोर वे।
जांणै भाद्रव गाजीयौ, चढीया वहतां सजोर बे।। ३२७

६३ वार्त्ता—इण भातसू वहता थका श्रापरी नगरीसू कोस एक उपरै श्राणनै श्राचाचूकडा डेरा कीया। प्रभातै राजा समस्तजीनै पवर पडी। मनमै भयभ्रात हुवा—जे कीणरी फोज है। तठै नीजरबाजाने मेलीया। तिकै जायनै षवर पाडी— कैठै जावसी, क्यू श्राई छै? तिका हकीकत कहौ। तठै कोई क उम्रावा वोलीयौ—श्ररे राईका! थाहारा राजानै केहनै इण नगरीरी जाबतानै श्राई छै। फोज उमीर-सीरदारारी छै। इसा राइके समाचार सूणनै राजाजीनूं

B यह अंश ख ग ड. में नहीं है।

C–C चिन्हान्तर्गत गद्य-पद्यांश के स्थान पर ख. ग. ड प्रतियोमें निम्न गद्यांश ही प्राप्त है—

ख कित्तरेके दीने चाल्या थका श्रीपुरनगर नेडा गया। राजा समस्त जाण्यो—कोइ वेरीदल धरती लेवा श्रायो दीसे छे। इसो वीचार राजाए उवरावानु साहमा मेल्या—श्रा कोणरी फोज छे, कठे जासी? इतरामे हलकारा श्राया राजा समस्तने श्ररज कीधी—माहाराज! रसालु कुमर परणेने श्रावे छे। इसो सुणीने राजा समस्त राजी हुश्रा। हीवे राजा समस्त सामेलारी सभ्क कराय रसालु कुवर सामा श्राया। मोती थाल भर वधायो। नर-नारी मील मगल गाया। घणा उछव महोछव हुश्रा। सर्व लोकांनै मन भाया। यु करतां रसालु राजलोकमे श्राया। माता सु मील्या पछे महीला दाषल हुश्रा। हीवे रसालु सुषे रहे छे। तठा पछी पांच राणी फेर परणीया। राणीयां सघाते मनवछीत सुष भोगवे छे। इम करता एकदा राजा समम्त देवलोके पहुता। तरे रसालु घणो धर्म पुन्य करी चदण श्रग

कहीयौ—श्रीमाहाराजा ! फोजरी तो चौकस कोई नही, पीण वूरै मतै छै, आप जावताई करीजै । तठै राजाजो घणी जावता करवा लागा, घणा नाल-गौला वूरजा उपर कसीया । रावत, सूरवीर घणा दल भेला हुवा । पिण रीसालूंरी फोज चूप-चापसू वेठी रहै छै । किणहीरो तिणामात्र उजाडै न छै ।

यूं करता छ महीना हुवा । तठै राजा समसतजी आपरा प्रधानने कहीयौ—थै फौजरा नायकसू मीलौ, देषा, काई रग-ढग छै ? षबर जीसी हुवै तीसी ल्यावज्यौ । तठै प्रधान असवारी करने हजार पाच असवारासू फोजा सामो नीसरचौ । आगाउ साढोयो मेलीयौ । प्रधान मीलवान आवै छै, इसौ कहाय दीयो । तठै साढि(ठि) यै हकीकत कही । तठै सारा ही सावधांन हुवा छै । प्रधानजी आवै छै ।

दूहा— दल दिषणादी देषीया, झांझा फरहर झंग बे ।
वाजै नोबत बवली, रीसालू फौजा रंग बे ।। ३२८

६४. वार्त्ता—इसा दल देषतो प्रधान रीसालूरी फोजमै आयौ । आयनै माहो-माहै मीलीया, बाह पसाव कीया । प्रधान कुवरजीनै घणा वरससू उलष्या नही । कुशल-कुशल पूछीया, विछायत बेठा, अमल-पाणी कीया । तरै कुवरजी पूछीयो-जै प्रधानजी साहिबा ! आप क्यू पधारीया छो ? तठै प्रधान कहै—श्रीमाहाराजाजी मेलीया छै आप कनै । सौ आप कीण काम पधारीया छो । आप कजीयो पिण म करौ, आघा पिण न जावौ, तिणरौ काई विचार छै ? आपरा मनमै हुवै सू कुवरजी माहैव ! आप कहौ, आपरा मनमै हुवै सू मने कहौ, ज्यू माहाराजसू मालिम करू ।

काठसु दाग देरायो । वारे दीवसे प्रेतकार्य कीधो । पछे आछे मोहर्त्ते शुभलग्ने शुभवेलाए रसालु पाठ वेठा । प्रोहीत तीलक कीधो । सघले सीरदारे, ममुधीए आय मुजरो कीधो । भोमीया, काठलीया सर्व आय पाय नमण हुआ । रसालुए अदल राज पाल्यो । घणा दीन सुष भोगव्यो ।

ग उठासु चाल्यो आपकै श्रीपुर नगरै आव्या । राजा समस्तै जाण्यो—ओ दल-वादल कीणीरो छे । अतरायकमै राजा समस्तजी हूकम कीधो—स[र]दारने उरो वोलावो । चाकरै कह्यो—प्रमाण । चाकरा जायनै प्रधाननै उरो तेडयो । आप हजुर आयो । तदि आप हुकम कीधो—ओ कटक कीणीरो छै ? तु जाअ षवर ल्याव । ओ घोडो चढे सामो गयो । जायनै पुछ्यो—ओ कटक कणी राजारो छै ? माने कहो । माहरे राजाजी पूछायो छै । अतरायकमै माहाराज कुवरजीनु आपरे फोजदार जाए मालक कीधी—माहाराज ! अणी सैहररो राजा, तणांगे फोजदार षवर करवानै आव्यो छै । तदी आप हूकम कीधो—उरो वुलावो । तदि हजुर आयो । मुजरो कीधो । आप कह्यो—आघो आवो । आप पुछ्यो—क्यु आया छो ? जदी उणी ही हाथ जोडनै कह्यो—माहाराजा आपरी षवर करवाने मोकल्या छै ।

तठै रीसालू जी बोलीया—म्है थाहरा राजानो कागल बीड देवा छा सौ हाथौ-हाथ देज्यौ। थाहरौ राजा वाचनै मानै सीष देसी तौ परा जावस्या, कजीयौ करसी तौ कजीयौ करस्या, श्रो जाव छै। तठै प्रधान बोलीयौ—दुरस फूरमाई, श्राप कागल लीप दीरावौ। तठै रीसालूं कागल लिषै छै—

दूहा— सीध श्री सकल गुणनिधांण, तपतेज प्रमाण, प्रबल राजपरताप, तपतेज कायम, जगत दुष चूरण, गरीबके सरण, छोरूकै पाल, माहारसाल, परम सूषकारी, राजकृपाथी सूत सूष भारी श्री श्री श्री १०८ श्री १०००००० श्री श्री माहाराजाधीराज माहाराजाजी श्री श्री श्री समस्तजी चरण कुमलायनूं—

दूहा— श्री सिध श्री श्रीहजूरनै, लिषत सूत कल्यांण।
तन मन जीवन सूष करन, पूरण परम निधान ॥ ३२९
सकल श्रोपमा जोग्य है, पितु-माता मनू रग।
सूतको मूजरौ मानज्यौ, दिन दिन अधिको रग ॥ ३३०
सूष बहु तुम परसादथी, तन धन श्री माहाराज।
सदा रावलो जांणज्यौ, चाकर साधत काज ॥ ३३१
तुम फूरमायो जा परो, सो काहां जावै भांम।
पूत्र तुमारो रीसालूवो, श्रायो मीलवा काज बे ॥ ३३२
जो मिलवो मूष देषवौ, जो कौई मूहुरत हौय।
प्रोहितजीनै पूछ कर, श्राछौ दिन ल्यौ जोय ॥ ३३३
पिता हूकम वनवासकौ, सौ लह्यौ सीस जढाय।
वरस बहुत बारे भम्यौ, अब श्रायौ तुम पास ॥ ३३४
श्रीमाहाराजा हूकम द्यौ, तो हु श्राउ राज।
चरण तुमारा भेटवूं, ज्यू मूज सूधरे काज ॥ ३३५
सल्ला होय सौ कीजीयौ, पूठौ दीज्यौ जाब।
जै कहौस्यौ सौ मानस्यूं, करस्यू कांम सताब ॥ ३३६
गुनेहगार हुं रावलो, साहिब चरणां दास।
छोरू कुछोरू हुवै, पिण तात न छोरत श्रास ॥ ३३७

तदि श्राप हूकम कीधो—मे थांरा राजाजीरा बेटा छ्या, वरस बारमै श्राया छा, सगलै साथ राजाजीरै कुसल-षेम छै? माहरौ राजाजीरो हील श्राछो छै? मे तो वरस घणांसु श्राया छां, सो ठीक नहीं। जदी उणी कह्यो—माहाराज! घणो सुष छै, चैन छै, वले श्राप पधारच्याथी वसेष चैन छै। जदि कुवरजी कह्यो—थे जावो, राजाजीसु मालम करो। उणी कह्यो—प्रमाण। उ घणा उछाहसु दरबार श्राव्यो, राजाजीसु कह्यो—माहाराज! कुवर

छोरू आस करै घणो, षिउंसू झीलवा कोड ।
सांचौ जाब दिरावज्यौ, ज्यू पूगै मूझ होड ।। ३३८
कागद वाचनै भेजीयो, आप तणो कोई दास ।
मूकैज्यौ ज्यूं आवस्यू, तात चरणकै पास ।। ३३९

रीसालुजी आव्या छै। जदि आप घणा कुस्याल हूवा। रावलामै राणीसू कवाओ। राजाजि हुंकम कीधो—कोटवालनै तेडाव्यो। कोटवाल हजुर आव्यो। हूकम कीधो—तु सारो चोक, गली झटकावो, धुलो सगलो बाहीर नषावो।

कोटवालवाक्य

दूहा– सैहर सगलो झटकावीयो, चोहटा कीधा स्याफ वे ।
अब क्या आग्या देत हो, पुरो मनाकी आस वे ।। ६०

राजावाक्य

दूहा– कुवर भलै घर आवियो, हूई बहूत जगीस वे ।
रीध बहूली ल्याईयो, ल्यायो कुवर एह वे ।। ६१

अथ वात— राजाजी सामेलोती आ'र कराव्यो। हाथी, घोडा, रथ, पायक, ढोल, नगारा, ताल, मृदग, पषावज, मजीरा, फररा पांच सबद वाजा लेनै राजाजी सामा चाल्या। रीसालुजी राजाजीनै देषी नीचा उतरया, सात सलाम करेनै आय पगे लागा। राजाजि सुषपालथी नीचा उतरया, बेटानै उरगथी गाढो भीरयौ, कुसल षेम बुझयौ। तदि रीसालु हाथ जोडेनै कह्यौ—श्रीजीरै पगे लागता गाढो चैन हूवो। पाछा असवार होयनै सैहर दिसा चाल्या।

साहूकारवाक्यं

दूहा– धन रे नाम रीसालुवा, धन अस नगरीका भाग वे ।
बहू रीध ले आवीयो, अब क्या पुछौ तोही वे ।। ६२

वात— चोहटामै असवारी नीकलै छै। माणक चोकमै आवीआ। तिहा नगर सेठारा घर छै। सेठरी वेटी गोषै वैठी छै। अतरायकमै कुवरजीनै दिठा।

कुवरजीवाक्य

दूहा– देषो सहेली आयकै, एह राजाको रूप वे ।
ईस धरणी औ राजवी, उपम घु न आव क्याह छै (वे) ।। ६३

वात— अवै चाल्या चाल्या दरबार आव्या। वोढयाथी नीचा उतरया, लछमी नाराअणजीरै पगे लागा। राजलोक सगला गोषै वैठा देषै छै। तठै रीसालुजीरी वैन देषै छै। वैन भाईनै दीठा काई कहै।

राजारी कवरीवाक्य

दूहा– वधव भलै घर आवीयो, दुवै वु ठा मेह वे ।
मोतीडै वधावस्या, मिलस्या बाहु पसाव वे ।। ६४

घात— आप रावलारै मुंढै जाय उभा रह्या। उमरावानै सीष दीधी—आप डेरा करो, कमर षोलो, उतारो करो। उमराव मुंजरो करेनै आप-आपणै ठीकाणै गया। रसालुजी मैहला माहे गया, माताजीरै पगै लागा। आप बैनसु मील्या। बेहनै उवारणा लीधा। माउ कैहवा लागा—बेटा! अतरा दीना माहे कोई कागद-समाचार अतरा वरसामै कोई मेल्या नही।

माउवाक्य

दूहा– बेटा तु सुलषणो, ज्या सरवर तु देष बे।
तुम विना हू हरी बधवा, जल विनां ज्यु मछी बे॥ ६५

बेटावाक्य

दूहा– मातामै मीलवा तणो, घणो ज कीधो चत बे।
अब तुम चरणे लागस्या, सफल फल्या वछत बे॥ ६६

बैनीवाक्य

दूहा– वीरा तु सुलषणो, गयो कुण प्रत देस बे।
ल्याया सौ कहो मुने, मे छा ताहरी बैन बे॥ ६७

कुवरजीवाक्य

दूहा– सुण बाई वीरो कहै, मै गआ समुद्र पार बे।
घणा तमासा देषीया, देख्या त्रीआ चीरत बे॥ ६८

बैनवाक

दूहा– सुण वीरा बैनी कहै, कुलवंती ते होय बे।
त्रीया चीरत्र जाणै नही, जो आवै सूर ईद्र बे॥ ६९

वारता—माउ, बैन कैवा लागी—वीरा! थे कीणी कीणी देस गया, (कुण कुण देस गया) कुण कुण तमासा देख्या, कतुहल देख्या, देख्यो होवै सो मां आगै सगला कहो।

जदि रीसालु कैहवा लागा—बाई! मे समुद्र परै राजा अगजीत छे, तीणरी बेटी परण्यो, सौ मेलनै उरा आव्या। पछै राजा भोजरी बेटी परण्या। पछै राजा मानरी बेटी परण्यां, ते मेले आया। आ कन्या परणे ल्याया सो पतीव्रता छै। उणीरा तो लषण पातला, मा जुगती नहीं, तणीथी परी मेली। तव बाई कैहण लागी—वीरा! उणीमै काई अवगुण दीठो। तदि आप कहै—हू परणेनै पाछौ फीरचौ जदि ऐक सैहरमै उजड दीठो। तिणीमै मे मेलि थी, जणीमै मे रह्या। सवेरै हू सीकार जातो। तदि हठीमल पातसाह मृगरै वासै ऊ आव्यो। रांणी म्हैलामै थी, देख्यो। तदी मै जांण्यौ। उणनै मे परो मारचौ। ईतरै ऐक सीन्यासी मारा मेहला नीचै गोरष जगायो। जदि मे उणीनै षाणो दीवो। हू गोषमै वैठो थो। जत्रै जोगीऐ मायामैथी मांदलीयो काढचौ। तणीमैथी लुगाई काढी। तणीनै षांणो दीधो। दोई जणा रमे, षेले नै जोगी सुता, लुगाई बैठी थी। तणी सायलम्हैंथी वतीस वरस-को जुंवान काढचो तणीनै षांणो दीधो। तणीसु भोग-वीलास गाढो किधो। करे नै पाछौ सायलमै मेल्यो। जदि जोगी जांण्यो (ग्यो)। अतरो तमासो रीसालुजी दीठो। देषनै आय नीचो

उतरयो। देषै तो आप जोगी सूतो छे। तदी रीसालुजी कह्यो—बाबाजी ! नमो नारायण। कह्यो—बाबाजी आधो आव।

रीसालु वाक्यं

दूहा– रे बाबा तु जोगीआ, दीसो बोहोत सुग्यान बे।
तुम ही कीधा ख्याल दो (हो) सो दिषाडो मुझ बे ॥ ७०

जोगीवाक्य

दूहा– थे छो राजा बहुगुणा, क्या ल्यो मेरा अत बे।
देसा देसा भमता फीरो, कीधा ऐता सरब बे ॥ ७१

वात— तदि कुवरजी कह्यो—थे तमासो कीधो सो मोनै दीषावो। तदी जोगी जांण्यो—ओ राजा चकोर छै, कला माहरी दीठी छै। जदी जोगीऐ मादल्यो माथामाथी काढयो, माहथी लोगाई काढी। तदी लोगाईनें राजा कहै—तु जणीथी राजी होवै तीणनै काढ, में तोनै उपगार करस्या। तदी लुगाई साथल माहेथी जुवानने काढयो। जदी रीसालु कह्यो—अणथी राजी है। जदी उण कह्यो—आप कहो जिम। जदी जोगीनै रीसालु कह्यो—आ असत्री था जोगी नही। जदी कह्यो—माहाराज। जदी लुगाई नवानै दीधी। जोगीनै आपरी असत्री दीधी। हाथै पाणी कुढयों। वले घणा त्रीआ-चरीत्र दीठा।

हजार सातरो माल पगे मेल्यो। मातानै गैहणो जडावरो दीधो। बैननै सरपाव ईकतीस दीधा। सगलानै सतोष्या, पोष्या, राजी कीधा। मैहलामै जायनै पोढया। असत्री सघातै कांम, भोग, सजोग घणा कीधा। सवेरै नणद भोजाई मील्या। नणद भोजाईनै नीद आवती देषनै कह्यो—

नणदवाषय

दूहा– नयण थारा भुभला, दीसै छै वहू नीद बे।
रजनी सहू वह गईं, तो ही न धाप्या तेह बे ॥ ७२

भोजाईवाक्य

दूहा– थारो वीरो वहुवली, तीम अरूजण वाण बे।
रयणी वात वहू गई, ईण वीध राता नैण बे ॥ ७३

वारता– तदी नणद कैहवा लागी—पुरषरो ऐहवो जोवन होवै छै, थे आजी ज जाणो छो। पिण एक दीन दादोजी सकार गया था। सो मृग उछेरयो। ईतरै समदै घोडै चढया था। सो घोडो पाछै दीधो तीतरै मृग अलोप हूवो। अतरायकमै पटा झरतो, मद छकतो, मेहनी परै गाजतो, घटानी परै कालो, ईस्यो हाथी भाई सामो आयो। तदी भाई मनमै वीचारयो—पाछो फरू तो अमरावामै हासी होसी। तदि हसतीरै दतुसलै जायनै हाथ घाल्यो। दतुसल काढैनै उरा लीधा। माथा माहे झाटकी। हाथी मुवो। उमराम वषाण कीधो—माहाराज ! भाईरो वल ईसो छै।

अतरै वसत रीत आइ। वनासपती, सगली फलवानै लागी। वड, पीपल, आंबा, आवली, दाडाम, सहतुत, वोलसरी, आसापाल्व, केवडा, केतकी, पाडल, चपो, मोगरो, जाय सदा

भेटे चरण सूषी थवूं, करूं वधावा कोड ।
[चरणाम] ? करू वधामणा, एक हुं बेकर जोड ।। ३४०

६५. वार्त्ता—इसी चीठी लीषनै प्रधानरै हाथे दीधी । प्रधान चीठी लैनै माहाराजने दीधी, सारी हकीकत कही । तठै राजाजी चीठी बिड षोलनै वाची । साराहीनै अचभो नै षूस्याली हुई । हिवै राजा समस्तजी सहर सीणगारीयो । कुवररै वास्तै वधामणा कीया । घणा षूसी थका राजाजीसू पूत्र मील्या । घणा वधायनै माहै लीया । माता-पितासू मील्या । सारा ही सहरमै हर्ष, मगलाचार हुवा । मातारो वोलीयो कुवर कायम कीयो ।C

Dदूहा– राज पाट सहु विलसतौ, लिषमीकै भडार बै ।
रांणी पांच भली परणीयौ, रभारे अवतार बे ।। ३४१

वसत, व्रदांम, वीजोरा असी भातरा अनेक भातरा रूष पालव्या छै । तणी समै राजाजी नषैसु सीप मागें नै नवलषा वागमै सघला राजलोकमै पधारचा । रिसालुजी तठै तबु षडा कीधा । रावल्या तबु षडा कीधा । वसत रीत आवी ।

कुवरजीवाक्य

दूहा– अव वसन्त ही आवही, फल्या आव अनार वे ।
तस्कै कारण कुवरजी, चाल्या सहैरकै बार वे ।। ७४
दूहा– ज्याह नवलषा या (वा) ग है, भात भांतका रूष वे ।
तीहा है बगला नवनवा, चोवाराकी मोज वे ।। ७५
दूहा– तीहा छै वचा अती भला, नल छुटै भरपुर वे ।
केसरकी चोकी कीया, रमै तीयांकै सग वे ।। ७६
दूहा– राणी सहू साथै लीया, षेलै आप वसत वे ।
मुठी हाथ गुंलावकी, नांषै माहोमाह् वे ।। ७७
दूहा– रात दीवस तीहां (ही) रहे, नही जाणं ससी-सुर वे ।
सुरगलोक म्रतलोगमै, जाणै सहै ज मुज (सुर) बे ।। ७८

वात— वागमै रमे, षेले नै घणा दीन ताई रहेनै पाछा सैहरमै आया । कुवरजीरै दोय वेटा हूवा । घणा दीन ताई कुवर पदवी भोगवी । पछै पाटै बैठा । सगलै देसै आंण-दाण चलाई । दुसमण सघला आय मील्या । कवर पधारचा । अमरावांनै घणा वधारचा; उणानै मोटा कीधा । तीणानै सीरपाव दीधा, घोडा हाथीनी पट दीधा, उमराव कीधा । प्रतापीक राजा हूवो, साहसीक हूवो परनारी सहोदर, प्रदूषरो कातरो ।

दूहा– भागवान अरू साहसी, रावां हवा राव वें ।
मन वाछ[त] सहू फल्या, फल्या मन जगीस वे ।। ७९

वारता—सुषै राज पालै छै । देवतानी परै सुष भोगवै छै । ईद्रनी परै रीघ दीसै छै । न्यायवत राजा वीक्रमादीतनी परै माहान्याअवत हूवो । अकल, रूपना धणी । असी तरै राजा न्याअवत राज पालै छै । सहू लोक धन धन करै छै । घणा षटदरसणरो प्रतीपाल हूवो ।

गुणवती नारि तणा, विलसै भोग-विलास वे ।
जाचक जय जय नित कहै, पूरै पूरजन ग्रास वे ।। ३४२
रीसालू हुंदी वातडी, कूडी कथी नही कोय वै ।
गावै चारण नरबदो, हस्ती आपौ मोज वै ।। ३४३
वात रीसालू रायकी, हु ती आगै जेह वे ।
माहै कवि भेल्या अछै, दूहा वात सनेह वे ।। ३४४
छोटीनै मोटी करी, कविता मन कर हु स वै ।
आनद मगल होयज्यौ, जय जय करज्यौ वेश वै ।। ३४५
कवियां मन जय पामवा, हुयसी वाच्चणहार वे ।
चतुर भवर सू गणी नरां, चा(वा)चौ कर मनवार वे ।। ३४६

६६. वार्त्ता—इतरी वात रीसालूरी कही । सारि विध पून्यरी छै । वातरो वणाव षूब कीयौ छै । चतुर पूरषानै रीझरै वास्तै, मीठी लागनरे वास्तै कीवी छै । मूरष पूरपानै दातकथा ज्यू छै । ग्यानी पूरपानै सील, गुण, ग्यान छै ।

दूहा— मनरजण अतिसूपकरण, राग रग रस रीत ।
वात रीसालू रायकी, वाचै ते पालै प्रीत ।। ३४७D

रीसालूरी वात सपूर्ण . सबत १८७८ रा वृपै मिति माहा वद ७ गुरवासरे लिषत षूवरा नागोर नगरमध्ये ।।श्री ।।[1]

ङ उठासु चाल्या श्रीपुर नगरे आया । तरे राजा ओठीनै साहमौ मेल्यौ ने कहवाडीयौ—ये कठाथी आया, ने कठै जास्यौ ? तिवारे रीसालू सघली वात आयारी कही । तरे मा-बाप राजी हुवा । उछरग करी सामा आया । मोतीया थाल भरै वधाया । नर-नारी मील मगल गाया । हाट, वजार सब उछव छाया । सरब लोक मन भाया । राणी पच मिली परणीया । ढोल, दमामा, नोपत वजाया । घणा उछवसू पधारीया । राणी बहु सुष पाया ।

D–D चिन्हगत अश के स्थान पर ख ङ प्रतियो में निम्न एक दूहा ही प्राप्त है—

ख दुहा— राजा रसालुरी वातडी, भली कथी कर बोज वे ।
गावे चारण नरवदो, हस्ती पावे मोझ वे ।। ७४

ङ दूहा— राजा रीसालू हदो वातडी, कूडी कथा न कोय वै ।
गावै चारण नरवदा, हसती पायो मोज वै ।। ६८

ग प्रति में उक्त अश के स्थान पर कुछ भी लिखित नहीं है ।

१ ख इती श्रीरसालुकुमररी वात सपूर्ण · ली० । प० अनोपवीजय ग । सवत १८७५ रा आसाढ सुद ३ दने ।

ग. ईती श्रीरसालुकुवररी वारता सपूर्ण समापता सुभ भवतु । समत् १८१० वर्षे मती वैसाप वदि ५ दिने वार आदित्यदीने लि० क्री० रामचद ग्राम कागणीमध्ये ।। श्री ।।

ङ श्री इति श्रीरीसालू कुमररी वात · दूहा ढाल वध सपूर्ण स० १८६२ रा मिती चैत सुद ७ अर्कवासरे ।। मेडतानगरै ।। श्री

वात नागजी-नागवन्तीरी

अथ श्रीनागजी नै नागवन्तीरी वात लिख्यते

१ चवदै चाल कछरो धणी जाखडौ अहीर तिणरी नगरी मे दुकाळ पडीयौ। तरै जाखडै अहीर कामदारानु[1] कहीयौ—साभळो छो, चवदै चाळ कछरो लोक[2] माळवै जाण पावै नही। आपणै कोठारसु सब लोकानै[3] चाहीजै सु[4] धान रुपीया वैगेरा[5] देवो। तरै[6] कामदारा कह्यौ—साहबजी, दुरस्त[7] छै। तारै सारा उमरोवानै, लोकानै धान कोठारसु दीयो। सारै ही लोक सुखसु रह्यौ[8] ने वारा मासा काळ काढीयो, ऊपरै आऊगाळ[9] आयो। तरै रईत लोक ओर ही सब लोक हरखवान हुवा[10]। अवै तो जमानो हुसी[11]। पिण दूजै वरस वळै काळ पडीयो।

दुहा— **मन चिंतै बहुतेरीयां, किरता करै सु होय।**
उलटी करणी देवरी[12], मतो[13] पतीजो कोय॥ १

२. वात[14]—तरे[15] कामदारा अरज कीवी—महाराजा! एक तो काळ काढीयो नै वळै ओ दूसरो काळ पडीयो। अबै आपरो हुकम हुवै सु करा। तारे जाखडैजी कह्यौ—सुणो छो, जठा ताई आपणै कोठार माहे अन धन छै[16] तठा ताई सब लोकानै देवो। किण ही नै वीपरण देवो मत। आपणो सुख-दुख रईत[17] भेळो काढणो छै। जे रईत सुख पावसी[18] तो वळै कोठार, भडार घणाई भरस्या। तिणसु जठा ताई कोठारमैं छै तठा ताई किणहीनै ना कहो मती नै कोठार षूटीयाँ[19] पछै जिकु होवणहार छै तिकु हुसी।

दुहा— **लाख सयाणप कोड बुध, कर देषो सब[20] कोय।**
अणहुणी हुणी नहीं, होणी हुवै सु होय॥ २

---

१ ख कामदारानै। २ ख धणी लोक। ३ ख सर्वलोकनै। ४ ख दिरावो। ५ ख वगरै। ६. ख तरा। ७ ख दुरस। ८ ख सुखसु खुसीसु रह्यो। ९ ख आऊकाळ। १० ख लोक वडो राजी हुवो उ घणो हर्ष हुउ। ११ ख. अबै तो परमेस्वर जमानो करसी। १२ ख देवकी। १३ ख मता। १४ ख वार्ता। १५ ख यतरै। १६ ख. आपणै कोठार भाडार छै। १७ ख सर्व। १८. ख पासी। १९ ख निठीया। २० ख सहु।

३. वात[1]—तारै कामदारा नगरमैं, मुलकमैं, पटैमैं, सारै[2] कहाडीयो-वावा, थारै जोईजै सु कोठारसु लेवो । अवै जिणरै धान न हुवै तिको कोठारसु धान लेवै । खरची न हुवै तिणनै रोकड देवै[3] । यू दैतो-दैता दूजो काळ वळे काढीयो, पिण करमरै[4] जोगसु वळे तीजो काळ पडीयौ नै कोठार भडार पिण खाली हुवा । तारा कामदारा राजासू[5] कह्यौ—महाराज ! सिलामत, खजानो श्रीदरवाररो माहे थो सु तौ सब पायौ[6], रईतरै काम आयौ[7], हमै तो लोक निभै कोई नही । तिणसु अवै तो विषौ कीजै तो भलो छै[8] । तरै जाखडै कही—च्यारे ही तरफ साढीया मेलो, सु जठै घास पाणी मोकळा देखो[9] तठै चालो । तरै ओढी[10] मेलीया सु तीन ओढी[11] तो पाछा आया नै एक ओढी[12] वागडरै मुलक धोळवाळो राज करै छै, तठै गयौ । सु उठै घास-पाणी मोकळा दीठा । तरै जायनै धोलबाळानु कह्यौ—जाखडै अहीर राम-राम कह्यी[13] छै । कह्यौ छै—माहरै मुळकमैं तीन काळ पडीया सु[14] कहो तो थाहरै देस आवा नै मेह हुवा परा जावसा[15] । तरै धोलवाळै कह्यौ[16]—भलाई पधारो, ओ मुळक थाहरो हीज छै । तरै ओढी पाछो चाल्यौ[17] । सु जाय नै जाखडानू कहीयो—हूँ जायगा देख आयो छु । सारा समाचार कह्या । तरै जाखडो चवदै चाल कछनु लेनै वागडरै मुलक आयो । तरै धोळबाळो सामो जायनै ल्यायो नै कामदारानु कह्यौ[18]—गामरै माहे लोक-रैतनु[19] वसाय देवो नै राजलोक छै, सु तलहटीरै महला राखो, कामदारानै साथै[20] ले जावो । तरै सारानु ठिकाणै-ठिकाणै[21] उतारा दीया । हमै धोळबाळैरै बेटो नागजी नामे छै अनै जाखडैरै बेटी नागवती[22] नामे छै । सु रहता घणा दिन हुवा ।

एक दिन वागडरै मुळक भटी दोडीया । तरै लोका आयनै कह्यौ[23]—दोय-दोय राजा वैठा छै नै भाटी मुळक विगाडै छै । तरै धोलवाळै दरवार करनै वीडो फेरीयो । सो वीडो किण ही झालीयो[24] नही । तरै[25] नागजी राजलोक

---

१ ख वार्ता । २. ख गावरा लोकांनै । ३ ख वरावै । ४ ख करमै । ५ ख राजानै । ६ ख सर्व परो दीयो । ७ ख प्रति में नहीं है । ८ ख तिणसु कठैई जाई तो भला छै । ९ ख घणो हुवै । १० ख उठी । ११ ख उठी । १२ ख उठी । १३ ख कहीयो । १४ ख तीणसु । १५ ख जास्या । १६ ख कहीयो । १७ ख. हालीयो । १८. ख कहीयो कामदारानै थे साहमा जायनै ल्यावो । तरै सामां जायनै घणै हगमसु लाया तरै कामदारानु कह्यो । १९ ख लोकडानु । २० ख थे । २१ ख ठिकांणा माफक सगळाइ नै । २२ ख नागवती । २३ ख आण कहीयो । २४ ख. फाळियो । २५ ख तिसै ।

माहिसु आयनै सिलाम करी वीडो उठाय लीयो। तरै रजपूत सब बोलीया-कुवरजी साहिब! बीडो खावणरो न छै, मरणरो छै[1], तरै नागजी कह्यौ-हू भाटीया ऊपर[2] जासु। तरै राजाजी कहियौ-तू टाबर छै, कदे ही राड देखी न छै। पिण नागजी कह्यौ मानै नही[3]। तरै लोका कह्यौ-महाराजा! रजपूतारा बेटारो काहू[4] छोटो, सिंघरो बचो नानो हीज थको हाथीयारी गजघटा[5] भाजै छै।

दूहा- **छोटी केहर बोहत्त गुण, मिलै गयंदां मांण।**
लोहड बडाइ नां करै, नरां नखत्त प्रमांण॥ ३[6]

४. तिणसु आप कोई फिकर करो मति नै कुवरजीनै मेलो। ताहरे राजा कह्यौ-भला, जावो। तरै नागजी आपरा दाईंदार हजार पाच असवार लेनै चढीयो, नै भला घोडा लीया, नै पोसाख तथा डेरा तथा घोडारी सभाई इकरग केसरीया करनै चढीया, सु जायनै भटीयासु कजीयो कीयो। भटी भाज गया। जिकै थम्या[7] तिणानै मार लीया। फतैनावा करनै पाछो वलीयो। सु सैहरसु कोस एक ऊपर मानसरोबर तळाव छै, तेथ[8] आय डेरा किया। आसोजरो महीनो थो। सु तळावरै कनै जाखडारी घर-घराउ खेती थी। सु रखवाळो[9] न थो। खेतरो रखवालो कोई हूतो नही। नै नागजीरै एक बड़ी भोजाई परमलदे इसै नामे छै। सु नागजीनु जीमायनै जीमै। सु महीना दोय एक तो हवा देख तळाव उपरै हीज रह्या[10]। सु भोजाई जायनै जीमाय आवै[11]। पछै एक दिन कह्यौ-नागजी माहाराजकुवार! थे गढ दाखल हुय जो, मोनै फोडा पडै छै। तरै नागजी कह्यौ-भाभीजी! ओ तळाव ऊपर खेत किणरो छै? अठै खेतरो रुखवाळो कोई नही, तिणसु म्हे खेतरी रुखवाळी करा छा, इसो कह्यौ। तरै परमलदे पाछी आई। आपरै[12] धोलबाळानु कह्यौ-तळाव ऊपर खेती किणरी छै[13], सु रखवालो कोई नही[14]? जो कोई रुखवालो म्हेलो तो नागजी गढ पधारै। तरै धोलबाळै चाकरानु पूछीयो। तरै चाकरा कह्यौ-खेती तो जाखडाजीरै हुयी छै। तरै धोलबाळै जाखडानु कह्यौ-तळाव ऊपर खेती राजरै वुई छै तो रखवाळो मेलो, ज्यु नागजी घरै आवै, टाबर छै, सु वाद चढी छै। तरै जाखडो तलहटी गयो। जायनै लुगायानु

---

१ ख उ बीडो मरणरो छै। २ ख उपरा। ३ ख न छै। ४. ख काइ। ५ ख गजघटा। ६ ख प्रतिमे यह दूहा नहीं है। ७ ख सम्या। ८. ख तठै। ९ ख खेतरै रखवाळो। १० ख प्रतिमें नहीं है। ११ ख. आई। १२ ख तरै। १३ ख. हुई छै। १४ ख प्रतिमें नहीं है।

कह्यौ। तद[1] कह्यौ–चाकर तो वीजा[2] खेत रुखवाळ छै, अठै किणनै मेला ? तरै लुगाया कह्यौ–जे परमलदेजी नागजीनै जीमावण नित जावै छै[3] अोर ऊ खेत ही उठै हीज छै[4] तो च्यार दिन नागवतीनै परमलदेजी सागै[5] मेलसा। सु दिन दिन तो खेत मे रहसी नै रात पडीया घरै उरी आवसी। नागजी जाणसी–खेतरो रुखवाळो आयो तरै नागजी उरा पधारसी। तरै धोळवाळे कह्यौ–ठीक छै। तरै परमलदेजीनै कहायो–सुवारे नागजीनू जीमावण जावो तरै तळहटीरै महलासु नागवतीनै साथे लीया जाज्यो। तरै परमलदेजी कह्यौ–भली वात छै। तरै परभाते परमलदेजी जाती थकी नागवतीनै पिण पालखीमें वैसाण[6] लीनी। सु मारगमै जाता परमलदेजी नागवतीनै कहै छै–नागवतीजी ! माहरै नागजीरै हालतारै कुकुरा पग मडै[7] छै। तरै नागवन्ती वोली–परमलदेजी ! इसो भूठ क्यु वोलो छौ, मिनखारै[8] कदे कुकुरा पग मडै छै[9] ? तरै परमलदेजी होड मारी, कह्यौ–जे नागजीरै कुकुरा पग पडै तो थाने नागजीनू[10] परणाय देवा, जे नागजीरै पग न पडै तो थे थारी दाय आवै, तिणनु मोनै परणाय दीज्यो। इसो कवल[11] करनै खेत गई। तरै परमलदेजी तो नागजी कनै गई। अर नागवन्ती जठै खेतमे मालो छै, तठै गई। अवै परमलदेजी नागजीनै पूछै छै–

सोरठा– **सपाडै[12] वैठाह, साहला नै[13], सरवतड़ी[14]।**
जे दहेल मुकाक, कागद मडा[15] नागजी ॥ ४

नागजीवाक्य

भावज सपाडै वैठाह[16], साह हला नै[17] सरवतड़ी।
चढ़ चोकी ऊभाह, जद[18] साखी च्यार[19] सिंदूरका ॥ ५

५ वार्ता—तरै परमलदेजी वोली–नागजी ! जाखडा अहीररी वेटी नागवती, तिणसु मैं होड मारी छै। नागजी रै कुकुमरा पग पडै[20] छै। तरै नागवती म्हारी कही वात मानी नही। तरै म्हे कह्यौ–जे नागजीरै कुकुरा पग पडै तो म्हे थानै नागजीनै परणाय देस्या[21] अर जे न पडै तो थे मोनै परणाय देज्यौ[22], इसी होड मारी छै। तरै नागजी कह्यौ–भाभीजी ! जाखडौ नै

---

१ ख तरै लुगाया। २ ख सगळा। ३ ख परमलदेजी खेत जावै छै। ४ ख. प्रतिमें नहीं है। ५ साथै। ६ ख. वेठांण। ७ ख उपडै। ८ ख. मनुष्यारै। ९ ख. उपडचा था। १० ख नागजीसू। ११ ख कोल। १२ ख सापडै। १३ ख साळानै। १४ ख सरवनडी। १५ ख मभा। १६ ख सापडै वैठा साह। १६ ख सालानै सरवनडी। १७ ख जद ऊभै। १८ ख सापारचा। १९ ख उपडै। २१ ख देवा। २२ ख परा दीज्यो।

धोळबाळो माहोमाहि पाघडीबदल भाई छै। सु नागवती म्हारै कासु लागै। तारै परमलदेजी काई वात मानै नही नै दूजै दिन नागवतीनै साथै लेनै नागजी कनै आई नै चौपडरो खेल माडीयौ। सु नागजी नै नागवती एकै भीर हुवा अर परमलदेजी नै वडारण एकै भीर हुवा। सु रमता नागवतीरो पलो उघड गयो, सु पसवाडो, पेट, छाती उघाडा हो गया[1]। तरै नागजी देखत समा[2] मुरछागत होय पडीया[3]। सु कितीक वारनै[4] वले सावचेत हुवा। तरै भोजाईनै कह्यौ–माहनू नागवती परणावो। तरै भोजाई बोली–कुवरजी! यु तो विवाह हुवै कोई नही, नै छानै वीवाह हुसी। सो रजपूतारा वेटानै सीख देवो। तरै नागजी दरबार माड नै[5] सारा रजपूतायनै सिरपाव बगसीस करनै[6] सीख दीवी नै कह्यौ–होळी ऊपर वेगा आवजो। सु सारा सिरदार[7] विदा हुवा। पछै भूजाईनै कह्यौ–तयारी करो[8]। तरै परमलदेजी नागवतीनु पूछीयो–काई खवर छै? बोल पाऊ। तरै नागवती कह्यौ–दुरस छै। खेतमे जवार मोटी थी सु डोका ल्यायनै पाणीरी मटकीया थी, सु मगायनै वेह रची[9] वीवाहरी तैयारी कीवी। तरै नागवन्ती कह्यौ–परमलदेजी! छानै वीवाह करज्यो। आगै म्हारी सगाई हाकडा पढीयारसु कीवी छै। तरै नागवन्तीनु परमलदेजी कह्यौ–भली वात। हमै ब्राह्मण[10] वीना तो वीवाह हुवै नही। तिणसु एक ब्राह्मण वाहरला गावारो सहरमैं कण-विरत करणनै आयो[11] थो, वसती माहे जातो थो। तिणनु परमलदेजी वोलायनै कह्यौ[12]– तू वीवाह कराय जाणै छै? तरै विरामण कह्यौ–हू सब जाणू छू। ताहरै परमलदेजी दूहो कहै छै–

दूहा– हू जाणू तू जाण, निर[13] तीजो जाणै नहीं।
नागजी तणो पुरांण, तोनु लिखु देवजी[14]॥ ६

६ **बात**—इसो ब्राह्मणनै कह्यौ[15]। नागजी नागवतीनू परणीया। पछै दूजै दिन आवता नागवती नै परमलदेजी दोनु[16] तवोळीरै पान लैवण गया, तवोळीनै हेलो दीयो। तरै तवोली वाहर आयौ[17]। इणारै मुख सामो देख मसत हुवो[18], देखतो हीज रह्यो[19]। तद दूहो कहै छै–

---

१ ख होय गया। २ ख उघाडा देखनै। ३ ख गया। ४ ख खिणेकनै। ५ ख करनै। ६ ख प्रतिमें नहीं है। ७ ख प्रतिमें नहीं है। ८. ख माहरै विवाहरी त्यारी करो। ६ ख प्रतिमें नहीं है। १० ख विरामण। ११ ख. जातो। १२ ख कहीयो। १३ ख नर। १४. ख तोनै लेखु देवता। १५. ख प्रतिमें नहीं है। १६ ख दोन्यु। १७ ख आयनै। १८. ख. इणारै मुहडा साहमो जोवण लागो। १९ ख प्रतिमें नहीं है।

दूहा सोरठा— तम्बोली आपो पांन, दोय बीड़ा बाँधे करी ।
गई तमीणी स्यांन, कांईरे मुख साह्मो भणै ।। ७

तम्बोळी कहै—

सोरठा— आंख्या आकस वांण, तांख करे नै तांणीया ।
न डरै तेण दीवांण, सो माढु नैणा ही माणीया ।। ८

७ वारता—तबोळीरैसु[1] पान ले तलाव गया । सु हमैं रात दिन नागवती नैं नागजी खेतमैं ऊचो मालो छै जठै वैठा रहै छै, रगरळीरी वाता करवो करै छै । यु करता माहरो महीनो आयो । सु खेतरो धान तो धणी ले गया । तरै परमलदेजी कह्यौ—नागजी महाराजकवार ! हमैं गढ दाखल हुयजो नही तो लोक भरम धरसी नै आ वात छानी न रहसी । आ वात छानैरी छै, गुपत राखणनु ज्यु छै[2] । तरै नागजी कह्यौ--सु हारे गढ जावसी[3] । हमैं नागजी गढ चढै छै नै नागवंती कमर बधावै छै नै दुहो कहै छै—

दूहा— कमर बंधावत कु वरकु, विरह उलट गयो मोहि ।
सजन बीछड़ण कब मिलण, काहा जांणें कब होय ।। ९
हे विधना तोसु कहू, एक अरज सुण लेत[4] ।
वीछड़ण अक'ज मेट कर, मिलबैको लिख देत[5] ।। १०

नागजीवाक्य—

दूहा— गोरी हीयो हेठ कर,[6] कर मन धीर करार ।
सांई हाथ सदेसड़ो, तो मिलसां सो सो वार ।। ११

८ वारता—नागजी कमर वाध हालीयो । तरै नागवती गळैमैं वाह घाल नै नागजीनु छातीसु भीडनै गल-गली होवण लागी । तरै परमलदेजी कह्यौ[7]—

दूहा— गोरी बांह छातीयां, नागकु वर न झुराय[8] ।
जाणै चदन रूखड़ै, वेल कलु वी[9] खाय ।। १२
गोरी दागल हाथड़ा, नाग कु वर कर सेल ।
जांणै चदनं रूखड़ै, अधर विलवी वेल ।। १३

९ वारता—परमलदेजी कहै छै-नागवती अवै तु हसनै सीख दे ज्यु नागजी गढ पधारै । तारै नागवती कहै छै—

---

१ ख. हिवै । २ ख प्रतिमें नहीं है । ३ ख. जावसा । ४. ख लेह । ५ ख देह ६. ख हय फरि । ७ ख कहै छै । ८ ख नठाय । ९ ख कलुवा ।

दूहा– जावो जीमां(भां)[1] ना कहू, वधो सवाई वट ।
ऊगडसी[2] थां आवीयां[3], हतां रथा को हट[4] ।। १४
सिधावो नै सिध करो, पूरो मनरी[5] आस ।
तुम जीवकी[6] जांणं नहीं, मो जीव छै तुम पास ।। १५

१०. वारता—परमलदेजी कहै[7] (इसो कहै)–वेदल थकी सीख दीवी । नागजी आवा हेठै घोडो बाधो थो[8], सु घोडै असवार हुवो । तारै नागवती दूहो कहै छै—

दूहा– सजन दुरजन हुय चले, सयणा सीख करेह ।
घण विलपती[9] यु कहै, आबा साख भरेह ।। १६

११. वारता—नागजी नागवतीनै कहै छै–तू वारोवार[10] वेदल हुय मती । जे परमेसरजी कीयो तो वैगाही मिलसा । यु नागवतीनै धीरज[11] देनै नागजी तो गढ दाखल हुवा नै नागवती तलहटी दाखल हुई । हमै नागजीरी चेसटा धोलवाळै दीठी । तरै मनमै जाणी[12] अवै कूवर निरालो नही । तरै नागजीनु एक खिण[13] वारणै नीकळण न देवे[14] राजा आपरै कनै राखै, नै[15] नागवतीरै विरह कर दिन-दिन गळतो जावै छै, नै नागवती नागजीरै विरह कर गळती जाय छै । सु नागवती आपरा महला[16] चढै नै भरोखामै आयनै भाखैं नै दूहो कहै—

सोरठा– नागजी नगर गयाह, मन-मेल मिलीया[17] नहीं ।
मिलीया अवर घणांह, ज्यांसु[18] मन मिलीया[19] नहीं ।। १७

१२. वारता—इण तरै सदा[20] भरोखै आवै तरै ओ दूहौ कहै । हिवै नागजी दिन-दिन डीलमै गळतो जावै । सु सारा मुलकारा वैद बुलाया, पिण नागजी चाक न हुवै । तरै राजा सहरमै पाडो[21] फेरचो–नागजीनै ताजो करै, तिणनै लाखपसाव देवा । सु वैदानै तो वेदन लाधी नही ।

दूहा– राजा वेद[22] बुलायकै, कुवर देखाई बाह ।
वैदा वेदन काल ही, करक कलेजां माहि ।। १८

---

१ ख जीभ्यां । २ ख ऊघरसी । ३ ख आयांह । ४ हे तीरथांरा हट । ५. ख मनांरी । ६ ख जीयकी । ७ ख प्रतिमें नहीं है । ८ ख बँधायो । ९ ख विणपती । १० ख बारबार । ११. ख धीरप । १२ ख घोलवाले मनमें जाणीयो । १३ ख खिण मात्र पिण । १४ ख देवै नहीं । १५ नागजी तो । १६ ख महिला उपर । १७. ख मिलीयो । १८ ख. त्यांसु । १९. ख मिलियो । २०. ख सदाई । २१ ख पाड्हो । २२ ख वैद्य ।

करक कलेजा मांहि, उकसै पिण निकसै नही ।
गल गया हाड'र मास, नेह नवलै नागजी ।। १९[1]

१३ वारता—इण तरह सदा झरोखै आवै तरै श्रो दूहौ कहै। तिसे एक मुसाफर वैद आय नीकल्यो। सुं नागवतीरै मोहल नीचै[2] झरोखैरी छाया ऊभो छै। तिकै[3] नागवती झरोखे आय दूहो कह्यो सु इण वेद साभळीयो। तरै वैद विचारीयो जे दीसै छै-इणरै नै कुवररै प्रीत छै पिण मिलाप[4] न छै[5]। [तरै वैद विचारयो जे दीसै छै—इणरै नेहसु नागजी][6] गळतो जावै छै तो अबै जायनै हू इलाज करू । इसो विचारनै नागवतीरै महल नीचै डेरो कीयो नै ते [नै] जा रोपीयो। दोढी जाय[7] मालम कराई[8]-नागजीनु हू चाक करसु[9]। तरै राजा वैदनै माहै बुलायो, नागजीनु देखायौ[10]। वैद नागजीनु देख दूहो कह्यौ[11]—

दूहा– **सिसक-सिसक मर-मर जीवै, ऊठत कराह-कराह ।**
नयण-बाण घायल कीया, ओषद[12] मूल न थाय[13] ।। २०

वलै कहै छै[14]—

प्रीत लगी प्यारी हुती, बाला थई विछेह ।
नोज किणहीनै लागज्यो, कामण हंदो नेह ।। २१
चख सिर खत अदभुत जतन, बधक वैद निज हत्थ ।
उर उरोज भुज अधर रस, सेक पिंड पद पत्थ[15] ।। २२

१४ वारता –'इसो वैद विचारयौ'[16]। तरै नागजी वैदनै[17] कह्यौ-आ वात उतावली कहो मती। नै सवा किरोडरी मुदडी हाथमें थी सू वैदनै दीवी। तरै वैद राजानु कह्यौ-कुवरजीरो माचो अलायदो एकात घालो[18]। तरै माचो अलायदो घाल नै वैद पाछो आयनै वले तेजारो काढै छै। इतरै नागवती झरोखै आयनै दुहो कहै छै—

सोरठा– **नागजी ! तुमीणा नेह, रात-दिवस सालै हीये ।**
किणनै कहीयै तेह, नित-नित सालै नागजी ।। २३
नागजी समो न कोय, नगर सारो ही निरखीयो ।
नयण गुमाया रोय, नेह तुमीणै नागजी ! ।। २४

---

१ यह सोरठा 'ख' प्रतिमें नहीं है। २ ख प्रतिमें नहीं है। ३ ख जितरै। ४ ख. मिलापण। ५ ख न हुवो छै। ६ [—] ख प्रतिमें नहीं है। ७ ख जायनै। ८. ख करायो। ९ ख फरस्यू। १० ख दिखायो। ११ ख कहै छै। १२ ख नैणा। १३ ख ओषध। १४. ख थाह। १५. ख प्रतिमे नहीं है। १६ ख प्रतिमें यह दूहा नही है। १७ '—' ख प्रतिमें नहीं है। १८ ख वैदनू।

सोरठा– **नागजी तणै सरीर, क्या जांणु वेदन किसी ।**
इसो न कोई वीर, जिणनै पूछु नागजी ॥ २५

तरै वैद दूहा कह्या, सुणनै कहै छै—

दूहा– **कुच कर ओखद भुजपटी, अहैरपती दे ताव ।**
उन नयनके घावकू, ओखद[1] एह लगाव ॥ २६

१५. **वारता**– वैद बोलीयो—हे नागवती ! आज ढोलीयो हू एकायत अलायदो[2] घलाय आयो छु, सु थे नागजी कनै जाज्यो, [थाह्‌रो मनोरथ सरसी][3] ।

तद नागवतीरै गलै माहे सवा कोडरो हार थौ, सु काढनै ऊपरासु नाखीयो । सु वैदरा खोला माहे आय पडीयो । सु वैद तो चढनै वहीर हूवो । हमै होळीयारा दिन था । सु गढमें गेहर वाजै छै, 'गेहरीया रमै छै[4]' । सु उठासु नागजी हाथमै सेल लेनै ओ ताक आय ऊभा छै । तिसै नागवन्ती आपरी मानै कह्यौ—थे कहो तो गढमें गेहर वाजै छै, सु जायनै देख आऊ । तरै माता कह्यो—जावो । तरै नागवन्ती सातवीसी सहेल्यासु गढमे आई । आगै धोल-बाळो नै जाखडो दरबार माडीया[5] बैठा छै । बडा बडा उमराव मुसदी[6] बैठा छै, मोटीयार डाडीया[7] रमै छै[8] , गेहर अवल वाजै छै । सु नागवन्ती तो नागजी रै वासतै आई, सु सारी गेहरमें फिरी । पिण नागजीनै दीठा नही । तरै दुहो कहै छै—

दुहा– **ढोल दड़्कै[9] तन दहै, गेहरीया नाचत ।**
चालो सखी सहेलड़ा[10], कठै न दीसै कत ॥ २७

१६. **वार्ता**– तरै एक वडारण जाणीयो—आ[11] नागजीरै वास्ते आई छै । ईसो जाणनै वडारण फिरती फिरती नागजीनै देख आई नै नागवतीनें दूहो कहै छै—

दूहा– **सेल भळ्का[12] कर रह्यो, माठू(ढू)ड़ा घूमत ।**
आवो सखी सहेलड़ां, आज मिलांऊ कत ॥ २८

१७ **वारता**– तरै वडारणरै माथैमै नागवन्ती देनै[13] छानैसै पचास रुपीया दीया, तिवारे वडारण कह्यौ—एक वले ही देवो पिण हालो । तरै नागवन्ती

---

१. ख ओषध । २ ख इलायघो । ३ [–] ख प्रतिमें नहीं है । ४. '–' ख प्रतिमें नहीं है । ५ ख कीयां । ६ ख मुतसदी । ७ ख गैर । ८. ख रम रह्या छै । ९ ख घड़ूकै । १० ख सहेलडी । ११ ख प्रति में नहीं । १२ ख. भलूक्का । १३ ख दीनी ।

चाली सु नागजी कनै गई, जायनै मुजरो करनै दूहो कहै छै—

सोरठा— **साजनीयांसूं प्यार, कठै वसो दीसौ नहीं ।**
मिलता सो सो वार, नैणा ही सांसो पड़्यौ[1] ।। २९

वले कहे छै—

सांमा मिलीया सैण, सेरीमै सांमा भला ।
उवे तुमीणा वैण, नहचै निरवाया नहीं ।। ३०

नागजीवाक्यम्—

अमीणो तुम पास, तुमहीणो[2] जाणुं नही ।
विवरो होसी वास, वास[3] न विवरो साजना ।। ३१

१८ **वारता**— नागजी नै नागवती दोनु भेळा मिल महले आयनै सेझ ऊपर भेळा सोह्य[4] रह्या, नीद आय गई। ईतरा माहे जाखडै धोलवाळै नु कह्यौ—हालो तो नागजीरी खबर ल्यावा, काई ठीक छै ? तद दोनु सिरदार[5] नागजीरै महल आया सो धोलवाळै दोनु[6] जणानै सूता दीठा। तरै तरवार काढ वाहण लागो। तरै जाखडे पकडलीयो नै दुहो कह्यौ—

सोरठा— **धवला वाल न वाढ, नागरवेल न चढीयै[7] ।**
'चपै वली चाढ[8]', फूल विलब्यो भंवरलो ।। ३२

१९ **वारता**— अवै धोळवाळौ नै जाखडो पाछा आया। जितरै नागवती जागी। नागजीसु सीख कर तलहटी आई नै नागजी सूता छै। अवै परभाते[9] नागजी जागीयो। सु नागवतीरै विजोगसु वेचाक थो। सु नागवतीरो तो मिलाप हुवो तद चाक हुवो। अवै नागजी उठ दरवार आयो। आगै धोलवाळो नै जाखडो वैठा छै, तठै आय मुजरो कीयो। सु इणरो तो नीचो हुवण हुवो नै धोलवाळै कनै सेल[10] थो, सु नागजी ऊपर वाह्यौ। सु नागजीरै ऊपर कर नीकळ गयो 'सु सेल धरती पड्यौ[11] ।' तरै नागजी विचार्यौ—करू काई, वाप छै, नहीतर तो मार नाखु। तरै कामदारानु धोलवाळै कह्यौ—नागजीनु देसोटो देवो। अनै जाखडानु कह्यौ—म्हे नागजीनु देसोटो देवा छा। थे आछो दिन लगन साहो देखनै नागवतीनु परणाय देवो। तरै जाखडै कह्यौ—हाकडै पढीयारसु सगाई कीवी छै। तारै ब्राह्मणनु[12] वोलायनै साढीयो मेल्यौ नै

१ ख सांसा पड्या। २ ख तुमीणो। ३ ख सांस। ४ ख सोय। ५. ख प्रति में नहीं। ६ ख दोऊ। ७ ख वढीयै। ८ '–' ख वेली न चाढ। ९ ख. प्रभातै। १० ख सेलडो। ११ '–' ख प्रति में नहीं है। १२. 'विरामण कनै साहो सुझायो सु दिन तीन रो साहो ठहरायो' इतना पाठ 'ख' में अधिक है।

लिखीयो—जे दिन तीन माहे आया तो वीहा[1] थाहरो छै। अनै अठै नागजी नै देसोटो देवै छै। नै नागवतीरो वीहा मडीयो छै। अबै नागजी जातो थको भोजाईरे महला नीचै कर नीकळै छै। नीकळतो दूहो कहै छै—

सोरठा- **भावज भरणुं जुहार, सयणांनु सदेसडा।**
वै तुमीणा वोहार, जीव्या जितैही मांणीया॥ ३३

तरै भोजाई दूहो कहै छै—

सोरठा- **कुकु वरणी देह, टीको[2] काजलीयां थई।**
एह तुमीणा[3] नेह, 'सू नित मेलो[4]' नागजी॥ ३६

२०. **वारता**- भोजाई कह्यौ—देवरजी ! दिन तीन तो[5] वागमैं रहज्यो, नागवतीनै हू थास्यु मिलावस्यु। तरै नागजी कह्यो—दिन तीन तो थाहरै कहै वाट जोऊ छु, पछै परो हालस्यु। इसो कहनै नागजी वागनु चालीयो[6]। तिसै नागवतीनै खवर हुई-अस[7] नागजीनु रातरौ देसोटो हुवो, सु परभातै चढ गयौ। तरै नागवती दूहो कहै छै[8]।

सोरठा- **नागा खायजो नाग, काळा करडै[9] माहलो।**
मूवो न मिलज्यो आग, जांवतड़ै जगाई नहीं॥ ३५

२१ **वारता**- अबै नागवतीरै वीहारी[10] तयारी छै। तिणसु नागवन्ती चिन्ता करै छै। 'मनमे कहे छे[11]' हू तो एक वार परण चुकी, वले[12] परणावै छै। इतरै ताईं जाय हाकडानै खबर दीवी। परभातरो वखत थो। जागनै महलसु उतरतो थो। तिसै राईकै जाय खवर दीवी। कागळ[13] वाचनै तुरत घोडै चढ चालीयो नै उमरावानै चाकरानै कह्यौ-माहरी जान वणायनै वागडरै देस[14] आय मोसु मिलज्यो[15]। यु कहनै चढीयो सु आयो सु आगै वीहारी तयारी करै छै। तरै नागवती आपरी मानै कह्यौ-मैं परमलदेजीनै कह्यौ थो जे माहरो वीहा हूसी तारै थानै नैतीहार[16] बोलायसा[17], तिणसु परमलदेजीनै बुलावो। तरै माता वडारणनै कह्यौ[18]-तू[19] जायनें कहे-थानु बोलावै [छै तरै बडारण जाय परमलदेजी नु कह्यौ][20] तरै परमलदेजी कह्यौ—सपाड कर[21] आवस्या। एम[22] कहनै मनमैं विचारीयो-जे नागजीनु लीया जाऊ

---

१ ख वीवाह। २. ख कीकी (?) ३ ख तमींणों। ४ '—' ख नित नित नवेलो। ५ ख ताई। ६ ख चालीया। ७ ख जे। ८ ख नागवतीवाक्यम्। ९ ख किरडघा। १० ख बिबाहरी। ११ ख '—' प्रति में नहीं है। १२ ख नै वलै बुसरी वेला। १३ ख. कागद। १४ ख मुलक। १५ ख सामल होज्यो। १६ ख न्यूतार। १७ ख बूलावस्यां। १८ ख मेली। १९ ख सु। २० ख [—] प्रति में नहीं है। २१ ख करनै। २२ ख इम।

तो भली वात[1] छै। तिसै नागजीरो खवास उभो थो, तिणनु परमलदेजी कह्यौ–तू वागमैं जायनै नागजीनु वोलाय ल्याव[2]। तरै खवास जाय[3] वोलाय[4] ल्यायो। तरै नागजीनै ग्रसत्रीरो रूप[5] करायनै साथे लीयो।

तिसे धोळवाळै जाखडानु कह्यौ—जिणरो नाव नागजी छै, सु विना ग्रायो[6] रहसी नही, ग्रनै मेह ग्रधारी रात छै। तिणसु सहर वाहरली चौकी हू देऊ छु नै सहर माहली चौकी थे देज्यो[7] नै सात पोळ छै, जठै[8] चौकी राखज्यो[9] नै माहली पोळ एक ग्राधो पोलीयो छै तिणनै वैसाल्यो[10]। उणरो हीयो देखतासु सवाय छै। इण तरै सरव जावतो करनै धोलवालो तो चोकी देवण सारू चढीयो नै परमलदेजी सातवीसी सहेल्यानै लेनै चाली। नै मोहरा पचास कनै राखी सु सहरनै जातो[11] जाखडो मिलीयो। तरै जाखडै पूछीयो—थे कुण छो नै कठै जावो छो ? तरै सहेली[12] कह्यौ—परमलदेजी नागवतीरै वीहा[13] जाय छै। तरै जाखडै कह्यौ—दुरस छै पिण जावतो राखज्यो, नागजी ग्रावण पावै नही। ग्रवै इसी तरै छत्र प्रोल[14] तो गया नै सातडी[15] प्रोल गया तरै ग्राधे कह्यौ—वाया ! था माहे मरदरो पग वाजै छै, हू जावण देसु नही। तरै वडारण वोली—ग्रठै मरद कठै छै। तरै प्रोलीयै कह्यौ—भला, माहरै हाथ ऊपर हाथ दे जावो। तरै [वडारण दूहो कहै छै][16] —

दूहा– **पापी वैठो प्रोलीयो[17], कूडा इलम[18] लगाय[19]।**
निलाडांरी फुट गई, पिण हिवड़ारी वी जाय ॥ ३६

२२ वारता—तरै प्रोलीयै कह्यौ –हरगज जावण देऊ नही, हाथा मैं ताळी देनै जावो। जद सगळीया हाथ दीयो नै नागजी हाथ ताळी दीवी। जठै[20] हाथ पकडीयो[21]। तरै परमलदेजी पाछी फिरनै कह्यौ—स्यावास छै तोनै पोळीया। इसो कहनै मोहर पचास पकडाय दीवी। तरै प्रोलीयै कह्यौ—पाच वले ही ले जावो। ग्रवै परमलदेजी माहे गया। ग्रागै देखे तो नागवती चवरी माहे हथलेवो जोडीया वैठा छै। तिसे परमलदेजीरै मुहडा सामो देखै नै कहै छै—

---

१ ख भलां। २ ख लाव। ३ ख प्रति में नहीं। ४. ख. वुलाय। ५ ख वेस। ६ ख. ग्रायां। ७ ख देवो। ८ ख. तठै। ९. ख. राखो। १० ख वैसाणो। ११ ख जाता। १२ ख सहेलीयां। १३. ख विवाह। १४ ख. पोळ। १५ ख सातमी। १६. ख परमलदेजीवाक्यम्। १७ ख पोळिया। १८ ख कलक। १९ ख म लाय। २० ख. तठै। २१ ख पकडलीयो।

सोरठो– नागड़ा निरखु देस, एरड थाणो थपीयो ।
हसा गया विदेस, बुगलहिसु बोलणो ।। ३७

परमलदेजीवाक्यम्[1]—

भांमरा भूल न[2] बोल, भवरो केतकीयां रमैं[3] ।
जांण मजीठां[4] चोल, रंग न छोड़े राजीयो ।। ३८

२३ वारता– अवै परमलदेजी कहै छै—नागजी ! थे मोह[5] कनै उभा रह्यौ[6] नै जे नागवती कनै जावो तो या[7] डावडी लूण उतारै छै, तठै जायनै थे थाळी उरी लेनैं लूण उतारण लागज्यो[8] । तरै नागजी जायनै थाळ उरो लीयो नै नागवती ऊपर लूण उतारण लागो । नै आख्या आसुवे भराणी नें आसु पडीयो सु नागवती रै खवै लागो । तरै नागवती ऊचो जोयो, सु देखे तो नागजी छै। तरै नागवती कह्यौ—राज ! वागमैं रह्ज्यौ, हू हथळेवो छुडायनै तुरत आवु छु ।

नागवतीवाक्य[9]

सोरठा– टिपां टिप[10] टपीयांह, विण वादल बुछ्टीया[11] ।
आख्या आभ थयांह, नेह तुमीणै नागजी ! ।। ३९

तरै सहेल्या कह्यौ[12]—

सोरठा– वण्यो त्रिया को[13] वेस, आवत दीठो कुवरजी ।
जातो दुनीया देख, नाटक कर गयो नागजी ।। ४०

२४ वारता– हमैं नागजी तो वाग माहे[14] गयो । उठै हीज खेत मैं वाग छै, तिणमैं मालो थो, तिण ऊपर नागजी जाय बैठो नै लारै नागवती चवरी माहे[15] सु ऊठी नै मानै कह्यौ—माहरो तो माथो दूखै छै सु हू तो रगसालमैं[16] जाय सोऊ छु मोनै कोई वतलाज्यो मती । इसो कहनै[17] पोसाक पैहरिया थका ईज वागनु चाली सु आधी रातरै समैं एकली[18] जावै छै । सु एक [गुणवत बुधवत[19]] माहातमारी पोसाल छै, तिणरै आगै हुय नीकळी । [तारै चेलौ गुरुजी नु कहै छै][20]—

---

१ ख प्रति में नहीं । २ ख. म । ३ ख भमै । ४ ख मजीठो । ५. ख मो । ६ ख रहो । ७ ख उ वा । ८ ख लाग जाज्यो । ९ ख प्रतिमे नहीं । १० ख. टप । ११. ख विछुटीया । १२. ख इतरी वात करनै नागजी वाग जावण लागो तरै वलै सहेली कहयौ । १३ ख कै । १४. ख मे । १५ ख. बैठी थी । १६ ख रग महल । १७ ख कहीनै । १८ ख इकेली चाली । १९ [–] ख प्रतिमें नहीं है । २० [–] ख. प्रतिमें नहीं है ।

दूहा– रिम झिम[1] पायल[2] घूघरा, मोती मांग[3] सवार[4] ।
आधै समैइयै रैणकै, गुरजी कहां चली उवा[5] नार ॥ ४१

तरै गुरुजी दूहो कहै छै[6]—

दूहा– कान धड्यां वले सोवना[7], नक सोनारी नाथ[8] ।
प्यारी प्रीतमपै चली, रमण सेझ रग रात[9] ॥ ४२
वेलडी, तिलडी, पचलड़ी, ज्यां सिर वेणी म्हेल[10] ।
चेलै दीठी गोरड़ी, सु दीधा पुसकत[11] मेल ॥ ४३

गुरुजी कहै—

दूहा– चेला पुसतक झल करी[12], कहा पूछत है वात ।
इण नगरीकी डगरमैं, एक[13] आवत एक जात ॥ ४४

चेलो दूहो कहै छै—

रहो रहो गुरजी मूढ[14] कर, कहा सिखावत मोय ।
सत[15] सूते इण नगर के, जागत विरला कोय ॥ ४५

२५ वारता– नागवती सहर[16] सु वारै नीकळी[17] मेह अधारी रात छै सु हाथ नै हाथ सूझै न छै[18] । तिण समै नगर वारै डूमारो घर थो, तठै आई तरै दूहो कहै छै—

सोरठा– साली सूनो ढोर[19] वाली मैं वरजु घणी ।
अठै अमीणो चोर, जुगमे जाणी तल् थयो ॥ ४६

२६ वारता– उठासु आघी हाली । सू एक विरामणरो घर थो जठै आय नीकळी । विरामण जाणो—डाकण छै, कै देवी छै, मु उठ नै भागो । तरै नागवती कहै छै—

सोरठा– नां भरड़ो ना भूत, म्हे दुखी मांणस हुय आवीया ।
अठै अमाणो कत[20], नारी-कुजर नागजी ॥ ४७
डाकण नहीं गिवार, सिहारी हुती नही ।
गलती मांझल रात, खरी सिहारी हुय रही ॥ ४८

---

१ ख रिमझिमीया । २ ख. पाय । ३ ख. मागमें । ४ ख सार । ५ ख प्रतिमें नहीं है । ६ ख. प्रतिमें नहीं है । ७ ख. सोवन्या । ८. ख नथ । ९ ख रत । १०. ख वण हमेल । ११ ख पुसतक । १२ ख. मेल कर । १३. ख इक । १४ ख मुठ । १५ ख सब । १६ ख सेर । १७ ख निसरी । १८ ख कोई नहीं । १९ ख बेस । २० ख सूत ।

तरै विरामण दूहो कहै छै[1] —

सोरठा– सूतो सुख भर नींद, सूतैनै[2] सुपनो थयो ।
ऐ रख नागो वींद, सुखरो मल् थो खेत मैं[3] ॥ ४९

२७. वारता– हमै उठासु आघी हाली, सू रात इसी मिली सु लिगार मात्र सूझै कोई नही । तरै वीजळीरे झावकासू[4] आघी जाय छै । तिसै मेह गाजीयो ।

[तरै दूहो कहै छै][5]

दूहा– ऊंडो गाजै ऊतरा[6], ऊची[7] वीज खिवेह ।
ज्युं ज्युं सरवणे[8] सभलु, त्यु त्यु कपै देह ॥ ५०

२८. वारता–उठासु आघी हाली सु तलाव आई । तलावरो पाणी हिलोळा खाय रह्यौ छै । पीपळरा पान वाजै छै । तरै नागवती कहै छै—

दूहा– पीपल पांन'ज रुणझणै, नीर हिलोला लेह ।
ज्यु ज्यु श्रवणे सभलु, त्यु त्यु कपै देह ॥ ५१

२९ वारता– [उठासु आघी हाली । सु तळाव आइ आगै जाय][9] इसो कहनै हेला मारीया[10]—हो नागजी महाराजकुंवार ! कठैई नैडा हुवै तो वोलज्यो, हमै हू डरू छु । इसो कहि आघी हाली सु आबा नीचै आई ।

[तरै दूहो कहै छै][11]

दूहा– सजन आंबा मोरीया, आई आस करेह ।
ज्यु ज्यु श्रवणे सभलु, त्यु त्यु कपै देह ॥ ५२

सु देख वागमै आई । तरै दूहो कहै छै—

दूहा– आंबो, मरवो, केवडो, केतकीयां अर[12] जाय ।
सदा सुरगो चपलो, आज विरगो काय ॥ ५३

[वलै कहै छै][13] —

सजन चदन वांवनै, अै रू कूका रेह ।
ज्यु ज्यु श्रवणे सभलू, त्यु त्यु कपै देह ॥ ५४

३० वारता– इसो कहिनै वले हेलो मारीयो । हो नागजी ! हमै तो वोलो । हू घणी[14] डरू छु ।

---

१ ख प्रतिमें नहीं है । २ ख सूतानै । ३ ख. नै । ४ ख झबतकार । ५ [–] ख में नहीं है । ६ ख उतराध । ७ ख. ऊची ऊची । ८ ख श्रवणे । ९ [–] ख प्रतिमें नहीं है । १० ख हेलो दीयो । ११ [–] ख प्रतिमें नहीं है । १२ ख अरु । १३ [–] ख प्रतिमें नहीं है । १४ ख प्रतिमें नहीं है ।

सोरठा– सेवा सेहतडाह[1], मानव काय मांनै नहीं।
पाथर पूजतडाह, निरफल थई हो नागजी ॥ ५५
सूतो सवड घरेह, विव[2] पिछोड़े पिंडरा।
सादो साद न देह, 'आवि वले ओ'[3] नागजी। ॥ ५६

३१. वारता– अवै नागवती घणा खाला-वाहला उलाघती जावै छै। पाहडामै सीह गाज रह्या छै,[4] वादळा झुक रह्या छै, वीजा झवक रह्या छै, मोर कुहका करै छै, रात महाभयकर वण रही छै, मेह छोटी वूदा पड रह्यो छै, पवन पिण वाजै छै, तिण समै नागवती सनेहरी वाधी थकी घणा दुखासू माला ताई आय पोहती नै आगै नागजी मालै जाय वैठो थो सु नागवतीरी घणी वाट जोई, पिण आई नही तरै विरहरै मारीयै कलेजारी कटारी मार सुय रह्यो। तिसै नागवती आई। मालै चढी देखै तो नागजी सूतो छै, तरै कनै जाय वैठी नै दूहो कहै छै—

दूहा– नागडा नींद निवार, हू आई हेजालुई।
ऊठो राजकवार, नींद निवारो नागजी ॥ ५७
नागडा सूतो खूटी ताण, वतलायां बोलै नहीं।
कदेक पड़सी काम, नोहरा करस्यो नागजी ॥ ५८[5]

३२ वारता– इसो कहिनै पछेवडो उपरासू परो कीयो, देखै तो कटारी कालिजै थिरक रही छै सु देखनै नागवती कहै छै—

सोरठा– कटारी कुनार, लोहाली लाजी नही।
आजूणी अधरात, नागण गिल[6] वैठी नागजी ॥ ५९[7]

दूहा– जा जोबन अर जीव जा, जा पाणेचा नैण।
नागो सयण गमाय कर, रही किसा सुख लेण ॥ ६०

---

१ ख. सेवतडाह। २ ख. पीव। ३ '–' ख आज निहेजो। ४ ख प्रतिमें इतना विशेष है।—'पाणीरा खडताल पड रह्या छै, निस अधारी रात छै, दादुर सोर कर रह्या छै वीजळियांरा झवतकार होय रह्या छै, मोर झिंगोर कर रह्या छै।' ५ ख यह सोरठा 'ख' प्रतिमें नहीं है। ६ ख हू निगलज। ७ ख प्रतिमें निम्न सोरठा विशेष है—

'कटारी कुनारि, लोहारी लाजी नहीं।
नागतणै घट माहि, बाढा नींबु ही भली ॥
बाला बिलबिलतांह, ऊतर को आयो नहीं।
कदे काम पडीयाह, निहुरा करस्यो नागजी ॥

दूहा– कुच जा भुज जा अहर जा, तन धन जोवन जाह ।
नागो सयण गमाइयो, अब[1] रहि'र करसी काह ।। ६१

सोरठा– जाय'जसी जुग छेह, पाछा[2] आय जासी नही ।
नालां[3] विच बैसेह[4], वले न वातां कीजसी ।। ६२

दूहा– जान[5] माणी रतडी, ते न लाई[6] वार ।
अमां विछोहो तैं कीयो, तो करज्यो भरतार[7] ।। ६३

सोरठा– नागड़ा नवलो नेह, जिण तिणसु कीजै नहीं ।
लीजै परायो[8] छेह, आपणो[9] दीजै नहीं ।। ६४
नागड़ा नवलो नेह, नोज किणहीसुं लागजो ।
जलै सुरगी देह, धुखै न धुवो नीसरै ।। ६५
नागा नागरवेल, गूढ स गूढी उषणी ।
क्युंहीक मोनुं राख, वरतण जोगी वालहा ।। ६६
डूगर केरा वादळा,[10] ओछां तणे सनेह ।
वहता वहै उतावला, झटक देखावै छेह ।। ६७

सोरठा– तूं ही रावल हीर, मोट सूता मिलसी घणा ।
तू पाटण पट चीर, नारी कुंजर नागजी ।। ६८
इम कहीया बहु वैण, नैण झरै आसु घणा ।
तो सिरखा[11] मो सैण, वले न मिलसी नागजी ।। ६९

३३. वार्ता– इसी तरै बैठी विलाप करै छै। तिसै धोळबाळो चोकी फिरतो आय नीकळ्यो। नागवतीरो वोल साभलीयो तरै नैडो आयो, माले ऊपर चढीयो। देखै तो नागजी मूवो पडीयो छै नै नागवती कनै बैठी विलापात करै छै। तरै धोलवालै कह्यौ–नागवन्ती नीचै ऊतरो।

[तरै नागवती कहै छै][12]

सोरठा– चढती चड बड तार[13], उतरतां आटा पड़ै ।
[आ जूणी अध रात][14], हू निगल बैठी नागजी ।। ७०
सुसराजी सो वार, सयण घणांई सपजै ।
पिण न मिलै दूजी वार, नाग सरीखो नाहलो ।। ७१

---

१ ख हिव। २ ख इठै। ३ ख बाला। ४ ख विब। ५ ख जानीं। ६. ख लगाई। ७ ख किरतार। ८ ख परनो। ९ ख. आपणपो। १० ख बाहला। ११ ख सरीखा। १२ ख प्रतिमें नहीं है। १३ ख बार। १४ ख वहे तमीणो बाल।

३४ वारता– इसौ कह्यौ तरै धोळबाळो लजखाणो पडीयो नै नीचो उतरीयो। मनमैं विचारीयो जे रात तो थोडी आय रही छै नै आ ऊतरै नही। परभात होय जासी तो वात आछी लागसी नही। तरै सहरमैं ओठी मेलनै जाखडानु बुलायो। नै सारी हकीकत कही। तरै जाखडै कह्यौ—नीची उतर। तरै नीची ऊतरी। तरै दूहो कहै छै—

सोरठा– **आईयो आढा लाह, गाज्यो न धड़ुक्यो नहीं।**
वूढो वाढा लाह, निगुणी भुय पर नागजी ॥ ७२[1]

३५ वारता– जितरै नागवन्ती घरानै चाली। अठै नागजीरै चलावारी तयारी करै छै। काठ भेळो करै छै। नै धोलवालो दुहो कहै छै—

सोरठा– **नागड़ा नव खडेह, सगपण घणांई तेडीयै**[2]**।**
भुय[3] **ऊपर भुंवताह**[4]**, मिलतां हो मरजै नहीं ॥ ७३**

३६ वारता– नागवती पीहरसु हाली, सु नागजीरी आरोगी कनै आय नीसरी। सु धोळवाळो दूहो कहै छै—

सोरठा– **ऊडै पडवै पैस, पिवसु पैजा मारती।**
सुं मांणसीया एह, घूघै लागा धोलउत ॥ ७४

नागवती सुण नै कहै छै—

सोरठा– **ऊपरवाड़ै अहीर, रह रह चावा**[5] **डांभतो।**
सालै माँय सरीर, सु नित नवेला नागजी ॥ ७५
चुड़लो चोरां एह, मोल मुहगै आणीयो।
नाखूनीं भ्काडेह, भव पैलासु पाइयौ[6] **॥ ७६**
कलमैंको कुभार, माटीरो मेलो करै।[7]
चाक चढावणहार, कोई नवो निपावै नागजी ॥ ७७
'कुलमै दोय कुभार'[8]**, वांसोलो नै वींभ्रणी।**
जे हुं हुती सुथार, नवो 'घड़ लेवत'[9] **नागजी ॥ ७८**

---

१ ख प्रतिमें—'अईयो आसाढाह, गाजीनै धड़ूकियौ।
वूढो बाढालाह, निगुणी भूई सिर नागजी ॥

२ ख घणां हा तोडिये। ३ ख भव। ४ ख भमताह। ५ ख चम्वा। ६ ख. पाछ्यां। ७ ख प्रतिमें एक सोरठा विशेष है—

'फळमें को कुभार, माटीरो मेळो करै।
जे हू हुती कुमार, तो चाक उतारूं नागजी ॥

७ '–' ख फळमें दोय आधार। ८ '–' ख घडेलू।

३७. वारता– नागजीरी आरोगी चिणे छै, लापो देवणरी तयारी छै। जितरै [नागवतीरो रथ वरावर कनै आरोगीरै आय][1] नीसरीयो[2] । तरै देखनै रथरै खडैती[3]नै पूछीयो, जुहारीरा नाळेर कितरायक आया छै ? तरै खडेती[4] नारेल देखाया तिण माहेसु नालेर एक ले नै रथसु नीची ऊतरनै आरोगी कनै आई। नागजीनु खोळेमैं ले बैठी। तरै सारा देखता रह्या नै कह्यौ, नागवती ओ काई। तरै नागवती कह्यौ, म्हारै ठेठरो ओ भरतार छै। तरै लोका घणी ही समभाई। पिण आ मानै नही। तरै जान तो परी गई। अनै जाखडो अहीर धोलवाळौ सारो साथ लेनै सहरमे गया। नागवती आपरी रथीरै आग[5] लगाय माहे जाय बैठी। जितरै श्रीमहादेवजी नै पारवतीजी आय नीसरचा। तारै पारबती कह्यौ, महाराज ओ कासू वलै छै। तरै महादेवजी कह्यौ—आ नागवती नागजीरै लारै वळै छै। तरै पारबती कह्यौ—महाराज नागवती तो आपारी घणी चाकरी[6] सेवा करी छै, सो[7] इणरो सुहाग अखी राखो। तरै महादेवजी ततकाल अगन 'वुभाव दीवी'[8] नै नागवन्तीनु कह्यौ—तू वळ मती, इणनै म्हे जीवतो करस्या। इसो कहनै अमीरो छाटो घालीयो। तरै नागजी उठ वैठा हुवा। नागवन्ती, नागजी महादेवजीरै पाए[9] लागा। पारवती आसीस दीवी—थाहरो सुहाग अखी रहो। अबै नागवती नै नागजी सहरमैं आया।

दूहा– मूवा मुसांण गयाह, नागवती नै नागजी।
कलमैं अखी कयाह, महादेव अर पारबती॥ ७९
प्रीत निवाहण अवतरचा, कलमे अखी थयाह।
सिव उमया प्रसाद कर, चिरजीव रहियाह॥ ८०[10]
जो याकौं गावै सुणे, विरहै टळै ततकाल।
नितप्रतरो आनन्द रहै, कदे न होत जजाल॥ ८१[11]

इति श्रीनागजी-नागवतीरी वात सम्पूर्ण[12]।

---

१ [–] ख. प्रतिमें नहीं है। २ ख नीसरी। ३ ख सामडवी। ४ ख सागदड़ी। ५ ख अगन। ६ ख सेवा। ७ ख तिणसू। ८ ख. वुभाई। ९. ख पगे। १०-११ ख प्रतिमे ये दोनो दूहे अप्राप्त हैं।

१२ ख इति श्रीनागवती नै नागजीरी वात सम्पूर्णम्।

सवत् १८५२ वर्षे मिति आसाढ वदि ७ भोमवारे लपिकृत प० केसरविजेन विकपुर-मध्ये कोचर मुनि छुमणजी पठनार्थे॥ श्रीरस्तु कल्याणमस्तु॥१॥

॥ श्री ॥

वात दरजी म्यारामकी

[अथ श्रीमयाराम दरजीरी वात लिख्यते]

बरवै– बदू नंद गवरिया, गुनपत देव।
दीजै भेद अछरिया, करहू सेव॥ १

दोहा– आसै डाबीरी अगै, वारठ आसै वात।
जग जाणी जोडी जका, पढै अजे लग पात॥ २
कवीयण नैं सिघांणनै, जोडै कहै परत।
अमर करै औ आंषरा, कवि कथ अमर करत॥ ३

नीसाणी– ऊकता ड(ऊं)डी ऊमदा जुगता हुं जांणां।
उकतां जुगतां आणीयां, विरला सम जाणा॥
आषर सूघा ऊमदा ग्रहणा सोनांणा।
कठ कथीरा काठका दन थोडा जाणा॥
पहुसर आषर पाधरा वापार पडाणां।
पाधरसला दुहडा के दीहर हांणां॥
वैठा कीकर सो वुघा कव उदम कराणा।
माणीगर म्यारांमकी धर वात धराणां॥
मालम होसी मेदनी राणां सुरतांणां।
आडा पडसी दीहडा जद केहा जांणां॥ ४

दोहा– आबूगिर अछ(च)लेसरी, सिध दोय करता सेव।
चेला नामै चतुर रिष, गुरकौ नाम गंगेव॥ ५
सत त्रेता द्वापुर समै, कीधी तपस्या कोड।
इद्रायण नै अपच्छ[स]रां, जितै रही कर जोड॥ ६

१ वारता– आवू माथै दोय रषेस्वर तपस्या करै। सो गुरकौ तौ नाम गंगेव रिष, चेलाकौ नाम चतुर रिष। सतजुग, द्वापरजुग नै त्रेताजुग, तीन ही जुग रषेसर तपस्या करवौ कीधा। जतै एक तौ इद्रायणी नै आठ अपच(छ)रा

वैकुठसू आय नै रषानै जीमाड नै ग्यानचरचा सुणनै दहु वषत वैकुठ जाती । हमै कलजग आयौ नै कलजुगरी पवन लागेवा ढूकौ । जद रषा ईद्राणीनै अर आठ ही अपछरानै कह्यौ–हमै मे देहा दूजी धारसा, कलजुगमें अण देहा नही रहसा । सो इद्रायण ! थै नै आठ ही अपचरा मारी विदगी घणी कीधी, सो थे वर मागौ सौ थानै मे वर दे नै गुर-चेलौ अलोप होसा ।

रिपा वायक—

दुहौ– कलजुगरो मानै कहर, विजनस लागै वाव ।
रिषा कह्यौ अण देहरौ, परत करा पलटाव ॥ ७
नर-पुरमै रहसा नहीं, वससां सुर-पुरवास ।
मांग इद्रायण ! वर मुषा, अब तौ पूरां आस ॥ ८
इद्रायण मुष आषीयौ, औ वर मागा आज ।
नर-पुर माहे नेहसूं, मो परणौ माहाराज ! ॥ ९
आया वचनागै अवै, चेलौ गुर कर चाव ।
पालण वचन पधारसी, वले करेवा व्याव ॥ १०
एक इद्रायण रिष उभै, आठू अपछरां आंण ।
मांणण सुख मृतलोकमै, जनम लिया घण जांण ॥ ११
चेलो हुऔ ज सूवटौ, गुर दरजी म्याराम ।
चेलो काम सुधारणौ, रामवगस उण नांम ॥ १२
भांड्यावस जाहर भुवण, गहर रसीलौ गाम ।
दुलहै घर अण देसरै, जनम लियौ म्याराम ॥ १३
अलवल(र) माहे ऊपनी, जसां इद्रायण जाय ।
ज्यू लीधौ म्यारै जनम, मुरधररी घर मांय ॥ १४
आठू अपछर आगलै, भेली रहती भव ।
जसीयांरै हाजर जकै, आठू दासी अब ॥ १५
कसतूरी चपककली, लवगां नै लाली ह ।
चदू चमनू चोपली, मझनायक माली ह ॥ १६
कोडसी(धी)स सवलालकै, धजा फरुकै धाम ।
जणकै घर जाइ जसां, नव-षड राषण नाम ॥ १७
म्यारोजी मोटा हुआ, दुलूहौ सुरधर देस ।
पनरा वरसां पदमणी, वनो वनी यकवेस ॥ १८

२ वारता– वरसा पनरामै जसा हुइ, सिवलाल का(य)थकै घरै । जदी रामबगस सूवौ कीरा पकडनै सिवलालनै दीधौ । सौ चार ही वेद बकै(भषै ?)

जद सौ मोहरा दे नै सिवलाल रामवगसनै लीधो। सो जसा कनै रहै, जसानै पढावै। जद जसा वर-प्रापतीक हुई। सवलाल जसाकौ रूप देषनै मनमै उदास हुग्रौ—जसारी जोडरौ ग्रादमी हीदुसथानमैं एक ही नजर न ग्रावै। सिवलालकै दलीकी उकीलायत, त(ग्र)ने बावन कलागै काम, कोड रुपियाकी ध(घ)रे नगद मालीत। जणरै पुत्री एक जसा। जदपी रामवगस सूवै कह्यौ—कायथजी! ग्राप सोच मत करौ। ग्रा तो जसा इद्रायणी छै, ग्रापकौ घर प्रवीत करणनै जनम लीयौ छै। ज्यू हेमाछ(च)लकै घर पारवती, ज्यू जनकराजाके सीता, भीषमकै घरे रुपमणी जनम लीधो, ज्यू ग्रापके घरे जसा जनमी छै। ग्रा एकली नही ग्राई छै। म्रत-लोकमै यणरी जोडीरौ पुरस हु हेरनै परणाय देसू। ग्राप सोच मत करो। जद सवलाल रामवगसनै कह्यौ—रामवगस! थू तो त्रकाळ-दरसी छै नै थू मारै तौ वडो पुत्र छै। थू भी रामवगस ग्रवतार छै, सो थासू तो काइ बात छानी नही छै। ग्रा लाष रुपीयाकी मालीत छै, सो यण पुत्रीकै नमत छै। ग्राछो जसारी जोडीरी वर, घर [स]भाल नै व्याव कर देजे। हु तो रावजीकै किलकता-दसाको काम छै, सो चढू छू।

सवलालवायक—

जोवन-मद ग्राई जसा, व्याव करीजै वेग।
लागौ ग्रौ सवलालकै, दिलमैं वडो उदेग॥ १९

३. **वारता**— सवलाल तो कलकतानै चढीयौ नै लारसू जसा रामवगसकै गलै छी(ची)ठी वाधनै समाचार लषीयो—'सिध श्री भाडीयावास वाली वाट मुहगी दसै, ग्रातमका ग्राधार मयारामजी वसै, ग्रलवल(र)थी लषावतु जसाकौ मुझरौ ग्रवधारसी। रामवगस राज नषै ग्रायो छै, जीकौ कुरव वधारसी। ग्रठा लायक काम बिंदगी लपावसी। ग्रठी दसाकी ग्राप गाढी षुसीया रपावसी। षान-पानकौ, पडाकौ जाबतौ रपावसी। जावतो तो बलदेवजी करसी पण तावा-दार तो लषावसी। भरोसादार भला मनष जीव-जोग साथे लीजो। इद्र राजाकी तरैका वीद राजा[हो]वीजो। ग्रापकी वाट भाला छा। ग्रौ दवस कदीया ऊगै, जसीको भाग जागै, ग्रलवल(र) ग्राप ग्राय पूगै।

दुहो— **ग्रलवल(र)हुता ऊडीयौ, चेलौ कर मन चाव।**
गुर-कदमां भेटण गहर, वह ग्रायौ भांडचाव॥ २०
कागद नाहे कामणी, जसीयल लषीया जाब।
म्याराजी! दरसण मनै, ग्रातुर दीजो ग्राव॥ २१

४ **वारता**— रामवगस भाडीयावास ग्रायौ। गुर-चेलौ मिलीया। बारै वरसासू भेला हुग्रा। रामवगसकै गलै कागद पाचौ(छौ) मयाराम लषीयौ।

दुहा– म्यारै कागद मेलीयौ, जसीयलनै जग जीत।
भूलूं नह तो भांमणी, छन-छन आवै चीत ॥ २२

५. वात– मयारामका हाथको कागद नै हाथकी मूंदडी लेनै रामबगस जसा नषै आयौ। जसा कागद वाचीया, घणी षुसी वरती। हमै मयाराम जानरी ताकीद लगाई।

दुहा– पूठै सहसा पांचरै, हैवर पाच हजार।
म्यारै मोल मगाडीया, वगैसू उण वार ॥ २३
हेमो लाधो नैहरो, गिर गांमौ सधराज।
महि जतना मयाराम्नरा, साथे यता स काज॥ २४

घोडारा वषाण—

दुहा– रानां पर तांना करै, विध विध नाचै वाज।
नाच करता निरषनै, अछरा लाजै आज ॥ २५
रेवत समजै रांनमैं, किसू बागरौ काम।
कर पलवी आसक करै, वध जण समजै वाम ॥ २६
रेवत समजै रांनमैं, किसौ बागरौ काम।
वलै पवन जण दस वलै, जेम धजा अठ जांम ॥ २७
विडगांरा वाषाण, दोडतणां की दाषजे।
वेडा तारा बांण, जाण न पावै जे लीयां ॥ २८

६. द्वावैत– पवनका परवाह, गुलावकी मूठ, सधराजकौ गोटकौ, तारेकी तूट। आतसकौ भभकौ, चक्रीकी चाल, चपलाको चमकौ, चातीका ढाल। सीचाणेकी झडप, हीडैकी लूब, षगराजका वचा, षेतुमैं षूब। ऐहडा-ऐहडा पाच हजार घोडा सोनैरी साकता सज कीधा।

दुहा– जाषौडा कसीया जरी, तूणां करी तैयार।
मुरधर हुता म्यारजी, चढीया राजकुमार ॥ २९
अतलस थरमा ऊमदा, तास वादळा त्यार।
जसडा कसीया जांनीया, कसीयौ राजकुमार॥ ३०
मोती हीरा मूगीया, पना पीरोजा पूर।
बाजूबध बांधाविनै, नवल वनै बह नूर॥ ३१
कडा, जनेऊ, कठीया, वीटां, पुणचया, वेस।
ग्रहणामें मढीयौ गजब, प्रीत चढावण पेस॥ ३२

मिजलां-मिजलां म्यारजी, अलवल पुंहचा आय ।
समाचार वरतै सरब, जसां कनै नत जाय ॥ ३३
दौय अगाऊ दोडीया, दियण वधाइदार ।
जसां वाट जोती जकौ, सज आयौ सिरदार ॥ ३४

७. **वारता**– वधाइदारनै पाचसै मोहरा वधाईमें दीधी नै मालकीनै कह्यौ– थू सामी जाय । भादरवाकी घटा पण आयनै लूवी छै । मुधरी-मुधरी बूदा पडै छै । राव वषतावरसीग असवारी कीधी छै । सो पैतीस हजार नरुपोता सोनैरी साकता गज गाहामैं गरक कीया थका वाजारमैं घोडा उछकावै छै । महोला-महौला हजारा सहेलीया ऊभी गावै छै । जकण वपतमै जानरौ कैतूल कीधा सरीपा घोडा, सिरदार लीधा, मयारामजी पण आया छै । रग-राग उमेदवाराम(मै) छाया छै । सो जसा कहै—मालकी ! थू सामी जा ।

जद मालकी कहै–आ तो मेह अधारी रात छै नै जणमै रावरी असवारीरौ लोक गलीयामै नही छै । मयारामजीकी कसी पबर पडै ? जद जसा कहै–सूरज वादलामै ढकीयौ कदी रहै ? अण ऐहलाणा मयारामजीनै औलप लीजे ।

दोहा– तुररै छौगै चांकीया, झलब रहै अठ जांम ।
भीनै रग अलीयौ भमर, माणगर म्याराम ॥ ३५
फब सेली किलगी फबी, दुपटै पेचां दूण ।
प्यारै(म्यारै) जणनै ईषनै, लषा सहेली लूण ॥ ३६
अलगी वे(व्हे) जोहे अलो, जोवण दीजो जान ।
माणीगर म्यारामकौ, वेषण दीजौ वांन ॥ ३७

८. **वारता**– अणतरैका मयाराम छै । थू ओळष लीजे । जद मालकी सारा सरदार नजरा वार वती थकी मयारामनै ओलप नै मुजरौ कर नै मयारामका हाथकी मूदडी रामवगस लायो, सो निजर की ।

दुहा– मालू मेले माझली, तारव छैल तमाम ।
जसां कैहती जैहडौ, मिलीयो यक म्यारांम ॥ ३८
मुजरौ करनै मालकी, आगै ऊभी आय ।
म्यारै कररी मूदडी, दीधी तुरत देषाय ॥ ३९

९ **वात**– जद मयारामनै मालकी तोरण लावे छै । सात ही वडारणा दुजोडी साथे छै । पाचसै भगतणा, पातरा, ढोलणारा गरट माहे वीद राजा घोडा पडे छै । इंद्रकी असवारी ओला-भोला पडै छै । मयारामजी वैहता महेलीया सामौ भालै छै, कामदेवरा वाणासू जालै छै । जद मालकी मयारामनै कहै छै–राज ! सूवो नजरा कु न वहै छै ?

मालकीवायक

दुहा- जसां सरीषो जगतमै, महिल नही म्यारांम ! ।
पचौलण है पदमणी, हालौ पूरण हाम ॥ ४०
जसकी हदी जोडरा, यसकी म्यार ! अमीर ।
घालौ बथ जणरै गलै, हालो हेल हमीर ॥ ४१
आगलीया जणरी यसो, मूग तणी फलीयाह ।
म्यारा जसकीसू मिले, कीजो रंगरलीयांह ॥ ४२
म्यारामजी ! थे माणजौ, जसीयाहुत जरूर ।
पषौ ग्रहै पवनरौ, पूगू बिदगौ पूर ॥ ४३
प्रीत पहेला पेरनै, करौ जहेला काज ।
हमै वहेला हालजै, राज गहेला राज ! ॥ ४४
छिन-छिनमै पग चापसू, छिन-छिन करसू चाव ।
पातर सो तो ही परा, राजद ! वैडा राव ॥ ४५

मयारामवायक

मुषसुं दाषै म्यारजी, हसनै असन हवेह ।
मे तौ तोनै मालकी, भूला नही भवेह ॥ ४६

मालकीवायक

दुहौ[1]–ऊणां[2] सहेल्यां आगला, म्यारा ! हु[3] तिल-मात ।
महिल ऊणीमै मूझसी, सहेल्या रहिसी सात ॥ ४७

१०. वारता–[4] यु मयारामनै माल तोरणरै मुहडै लाई । सात-बीस सहेलीया नरेंषणनै आई । पडदारी जालीयामै[5] मयारामनै[6] दंपै छै । सारी सहेल्या हुइ[7] चष एकैठै भाल-भालनै थूंथका नाषै छै । मयाराम पर[8] मोती पाषै[9] छै । दनाका नादान, कामकी मूरत, जसडाही ग्रैहणा नै जसडी ही सूरत । श्रीभगवान आपरा[10] हाथासू वणायौ[11], इसडौ[12] मयाराम[13] तोरणरै मुहडै आयौ । जानरौ, घोडारौ, ग्रहणारौ वरणाव, गीत सुपपरौ पाघरौ भाव ।

गीत[14]

ओपै लपेटो अपार सोस वागौ घो[धो]रादार[15] अगा ।
कुलै ताज पेठा जोत[16] नगारीं[17] करूर ।

---

१ ख में नहीं है । २. ख ऊणा । ३ ख हु । ४ ख बारता । ५ ख जालियांमै ६ ख मायारामनै । ७ ख दइ । ८ ख पै । ९ ख खाखै । १० ख आपारां । ११ ख वणायौ । १२ इसडौ । १३ ख. मायाराम । १४ ख गीत सुपखरौ । १५ ख घोरदार । १६ ख जाते । १७ ख नगारी ।

आवला दलामैं[1] म्यारा[2] प्रकासीयौ रीत एही,
सावला[3] वादलां माहे नकासीयौ[4] सूर ।। १
चोगां तोडां पवत्रा[5] किलगी सेली पाग छाई,
वाजूबधा चोकी जोत जगाइ वसेक ।
मोतीया[6] मूंदडा कडां जनेऊ जडाव मालां,
ओपै बीद[7] राजा यसी पोसाकां अनेक ।। २
साथीयां[8] सजोडां घोडां जाघौडां साकता साजी,
लडालू वहुआ देषे राजी लाषां लोक ।
वधाई बधाई वाजी जसां ऊभी माल वांटै,
अमीराइ[9] भाइ भाइ गाइ[10] ओका-ओक ।। ३
झलवां झलूस साज सहेल्यांरौ साथ जोवै,
बांदी वीजी हुइ रूप देषे हाक - वाक ।
कुरवां[11] वधारे लाडी जसांनै सुनाथ कीजै,
चैल[12] (छैल) वना लीजै दोय दुंबारै की चाक ।। ४

दोहा– देषै ऊभी दासीया[13], सरब जसांरौ साथ ।
मुजरौ करनै मालकी, प्यालौ लीधो हाथ ।। ४८

११ वारता–[14] अण तरैका वीद राजा मयाराम[15] आला-नीला वास रोपनै परणीया[16] नै पाचसै पाचसे मोहरा व्रामणानै[17] भुरसीरी दीधी । दुजै दन जसा मयारामरै तवूआनै हाली ।

नीसाणी–लांवक भूवक लाडली, अग टेर अपारा[18] ।
जण[19] पुलमै हाली जसां, सजीया[20] सिणगारा ।।
सीस जकरणरी सोभीयी, नालेर नैहारां ।
अलका सिरसूं ऊतरी, टक एडी तारा ।।
जांणे[21] नागण हीडलै, षभां सोनारा ।
औपन[22] लाडी ऊमदा, तषतांण[23] तैयारां ।।

---

१ ख दलामैं । २ ख मयाराम । ३ ख सावला । ४ ख नकासियौ । ५ ख पवम्रा । ६ ख मोतिया । ७ ख वदि । ८ ख साथिया । ९ ख अमीराई । १० ख गाह । ११ ख कुरवा । १२ ख छैल । १३ ख दासिया । १४ ख वारता । १५ ख मायाराम । १६ ख परणिया । १७ ख वाभणानै । १८ ख आपारां । १९ ख जणा । २० ख सजिया । २१ ख जाणो । २२ ख ओपैन । २३ ख तखताणा ।

भ्रू आवल बेहु भडी, भमरांण[1] गुंजारां।
भोयण[2] (लोयण ?) कीजै भांमणै, कोयण कुरगांरा[3] ॥
वदनां नाक विराजीयौ, च(छ)ब कीर-चचारां।
अहरा दीजै ओपमा, परवाल प्रकारां ॥
दात- बतीसू[4] दीपीया[5], दाडम-बीजारां।
कठा जाणे[6] कोयली, बोली तण वारां ॥
गरदन जसकी गागडी, तक कुरज तरारा[7]।
नसमैं[8] बाधा तेवटा, झल मोती ऊ प(ा)रां[9] ॥
हार टकावल हीडलै, ऊणमोल अपारां।
होया[10] सनेहा हेतका, अमीयाण[11] ठैयारां[12] ॥
उर - थल थोडा ऊफीया, नींबूण चैयारां।
पीपल पना पेटका, ग्रभ केल चीरारा[13] ॥
कडीयां लघा केहरी, गजराज चलारां।
नितवां दीजे ओपमा, वीणार[14] वैहारा[15] ॥
एडी पेडी ऊमदा, तक एण[16] तरारा।
जांणे[17] करती झूबकौ, तग मगीयौ तारां ॥
जांणे[18] हस मलपीयौ, सर मान मझारां।
हाथी जांण कहालीयौ, मद पीध बजारा ॥
पदमण जाणे[19] पोषता, ऐहडा[20] आचारां।
इद्रायण कै ऊतरी, मृतलोक मझारा ॥
जसकै पलटण जावतै, हल बीस हजारां।
ढाला बडफर[21] ढाबीयां[22], वाकी तरवारा ॥
होदा नागल हाथीयां, जाषोड जैयारा।
सोनै साकत साकुरा, झलको 'तल तारा'[23] ॥
नरषै ऊभी नारीया, अण पार अटारा।
गावै मीठा गीतड़ा, थह मोर थटारा[24] ॥

---

१ ख भमराणा। २. ख लोयण। ३ ख कुरगारां। ४ ख बतीसू। ५ ख दीपिया। ६ ख जाणो। ७ ख ताराराँ। ८ ख तस। ९ ख. झपरा। १० ख हिया। ११ ख अमीयाणा। १२ ख ठैआरा। १३ ख चरिरां। १४ ख बीणार। १५. ख बैहारा। १६ ख एणा। १७ १८ १९ ख जांणो। २० ख अहैडा। २१ ख वड कर। २२ ख ढाविया। २३ ख तलवारा। २४ ख. ठारा। २५ ख ठारां।

तीनु पुरवाली त्रीयां, दल माणद टारां ।
आया जोवरण आदमी, दरीयाव तटारां ।।
ज्या सांमी जोवै जसां कर घाव कटारा ।
मुरचा(छा) गत वे मानवी, पड जाय पटारा ।।
जसीयल जो ऊचौ जीऐ[1], असमान फटारा ।
जतीयां सतीया जोगीयां, वक फाड व(वै)ठारां ।।
चलीया चीत रषेसरां, मुंन जोग मटारां ।
अमरां चीत अलूझीया, जोवण कज जारारां[2] ।।
इद्र इद्रासण ऊतरे, ताकी घण[3] तारां[4] ।
रषीयो इदर रांणीए[5], पकड नठारां[6] ।।
झगमगीया मन देवता, सरगापुर सारा ।
लाष पचासा लूझीयां[7], हल दो वडहारां ।।
झली मुसालां जोतसू, अधरात दोफारां[8] ।
भगतण पातर कंचणी, ढोल्ण ढुलारा ।।
गावै वहती गायणी, मह राग मलारां ।
दाम हजारा दीजीयै, मोहताद मझारां ।।
वध जलेग वेवडो, लूझी लष लारा ।
वाजै जेहड वाजणी, घूघर घमकारा ।।
मुहडे आगै मालकी, कहती षमकारां ।
घण वरण आवै ढोलीयै[9], लग थगथी लारा ।।
मद-चकीया[10] म्यारामजी, तुम होय तैयारां[11] ।। ४६

१२. वात (द्वावैत)– यण तरै जमा मयारामरै[12] डेरै आई । जाजम, गदरा वचा(छा)यता कराई । सहेलीया आय गदरा विराजी । म्यारामजीरी विंदगी साजी । दुहा, गाहा, पहेलीया कही जतरै रात आधी गइ र आधी रही ।

मालू कहै—

दुहो– रातां हव थोडी रही, वातां वह विसतार ।
सातां ऊठ सहेलीया, लुकौ कनातां लार ।। ५०

---

१ ख जोग्रो । २ ख कज जारा । ३ ख. घणा । ४ ख. नारा । ५. ख राणीये । ६ ख निठारां । ७ ख लूडीया । ८ ख दोकारां । ९ ख ढलियो १० ख छकीया । ११ ख तयारां । १२ ख मायारामरै ।

दुहौ– सारी ऊठ सहेलिया, गई आपरी धाम ।
धणनै[1] लीधी ढोलीयै, माणीगर म्यारांम ।। ५१

१३. वारता (द्वावैत)– म्यारामका र जसाका मेला[2] हुआ, चकवी र चकवौ भेला हुआ । घणा दिनाको विरह भागौ, घणा आणदको धौरौ लागौ ।

दुहा– हीडै लागी हीडबा, कामण जांणे[3] काय ।
जसीया हीडै जोमसू, म्यारारै अग माय ।। ५२
वादल कालै वीजली, षवै मली कर षांत[4] ।
म्याराजीरै अग मिली, झलक[5] जसा अण भांत[6] ।। ५३
लपटीजै 'तरसू लता'[7], सावण मास सवाय ।
जण वध लपटाणी जसां, मांणीगर अग माय ।। ५४

जसानै रोती सुणनै मालकी कहै

किसतूरी अरजी करं, राज ! म कीजो रीस ।
मांचै थांरै म्यारजी, आंचै(छै) वाजै ईस ।। ५५

मयारामवायक—

पागै चोटौ पाक छै, लागै ठेह लगीस ।
माछै[8] जणसूं मालकी, आंचै[9] वाजै ईस ।। ६६

मालूवायक—

अलल वचेरा ऊपरै, भूल न चढीया म्यार ! ।
थैटु रहीया थाहरै, टैगण घोडा तरार ।। ५७ *

मयारामवायक

मे तो टैगण मालकी, जसीयलनै जांणाह ।
अलल वचेरा[10] ऊबटा[11], 'त्यार हुआ तार्णाह'[12]।। ५८
अलल वचेरा ऊमदा, फेरवीया अणफेर ।
मत दुष मानै मालकी, दोरम अणचत देर ।। ५९

१४. वात– हमै मयाराम न जसा रग-राग माणै छै । जकानै इद्र भी वषाणै छै । रग-रागरो धोरौ लागौ छै । विरह झौलौ भागौ छै ।

---

१ ख घणानै । २ ख मेल । ३ ख जाणो । ४ ख मालिक र खात । ५ ख झलक । ६ ख मात । ७ ख '–' ख तर झूलता । ८ ख माचै । ९ ख आछै ।
* ५७, ५८ तथा ५९वें दूहोके विषयमें पुस्तकमें निम्न लेख उद्धृत है—'तै दूहा सरब गूढा छै । यण दुहा दुहामै वात वगरी छै । 'टैगण' कैहता हसतणी असत्री जाणणी । 'अलल' घोडा कैहता पदमणी, चत्रणी असत्री जाणणी । १०. ख वछेरा । ११ ख ऊमदा । १२. '–' ख प्रतिमें यह अश नहीं है ।

दुहौ– के भगतण के कचणी, पातर ढौलण पूर।
गावै नटवा गायणी, हुंसी[1] म्यार हजूर ॥ ६०

१५. वात (द्रावैत)– किसतूरी, चपकली, लवगा, लाली, चदू, चमनू, चोकली, मालू ऐ आठ ही अपच(छ)रा गावै वजावै छै, म्यारामजीनै रीझावै छै। महीना बारै होय गया छै, म्यारामजी मैलामै रत होय रहा छै। पाचौ(छौ) आसाढ मास आयौ छै, आभौ वादला चा(छा)यौ छै जद ब्रामण लाधै दुहौ लप मेलीयौ छै, म्यारामजी हाथ झेलीयौ छै।

दुहौ– जल वूठा[2] थल रेलीया, वसधा नीलै वेस।
मागौ सीषां म्यारजी, देषा मुरधर देस ॥ ६१

१६. वारता– म्यारामजी मारवाड आवणरौ मतौ कीधौ, तवू गुडदावणरौ हुकम दीधौ। भार वरदारी[3] आगै चलाइ छै, घोडा पर साकता झलाई छै। वेलीये कमरा वाधी छै, पाचा(छा) पधारणकी सुरत[4] साधी छै। म्याराम ऊठणकी धारी सै[5], जसाकै मरणकी त्यारी छै। कुवरजी राषीया नही रहै[6] छै, जद मालूडी दोय दुहा कहै छै—

दुहा– म्याराजो! थे मुरधरा, वालम जाय वसांह।
आप वहोणी एक दन, जीवै नही जसांह ॥ ६२

जसावायक—

दासी कुण जीवै दिवस, घडी न जीवू एक।
पल-पल जीवां म्यारजी, दिल सुध थांनै देक ॥ ६३

मालूवायक—

म्यारा! पासी मोहकी, आची[7] नाषी आय।
पहला हु हीज[8] पातरी, लाई महल बुलाय ॥ ६४
म्यारा! जासो मुरधरा, चो(छो)ड र जसानै चै(छै)ल।
लाडा था वण लागसी, मानै षारां मैल ॥ ६५
अलवल(र) रहणौ आप, थेटु वचना थापीयां।
मुरधर जांणो माप, मन सुध करजै म्यारजी! ॥ ६६

मयारामवायक—

मुरधर जोवण मालकी, आ(आ)सा ची(छी)णी जासाह।
आवण[9] तीजा ऊपरै, आसां तो आसांह ॥ ६७

---

१. ख हसी। २ ख. वूठा। ३ ख. तरदागी। ४ ख सूरत। ५ ख छै। ६ ख रही। ७ ख आछी। ८ ख हुडीज। ९ ख आवण।

दुहा– मालू आवै म्यारनै, गल-गल अरजी गैर[1] ।
आप षरीदो ऊठ चौ[2] (छौ), जसा षरीदै जेर ।। ६८

जसावायक

मैं तो वरजी मालकी[।], सरजी प्रीत[3] समात ।
अरजी नह[4] मानै अबै, ज्यारी दरजी जात ।। ६९

मयाराम[5] वायक—

सुंण मालू ! थांरी जसा, बोलै बोल कुबोल ।
अण बोलांरै[6] ऊपरै, जासां अलबल षोल ।। ७०

मालूवायक—

म्याराजी लोही मूआ, जीभारा घण[7] जांण ।
जण कारण[8] थानै जसा, बोलै वांण कुवाण ।। ७१
घना घना समजावीया, चना चना कर चाव ।
वना न मानौ वीनती, आप-मना ऊमराव ।। ७२

जसावायक—

म्याराजी [।] विरचौ[9] मती, प्याराजी[10] कर प्रीत ।
न्यारा जी रहतां नमष, मो वैराजी चीत ।। ७३
म्याराजी थे[11] मुरधरा, पातरीयाकी[12] पोव ।
चालौ थे आ चो (छो) डनै, जसीया जीवन जीव ।। ७४
अरज करा अलवेलीया[13], पला झेलीया पाण ।
म्याराजी मत मेलीयां (या), पमगा सीस पलाण ।। ७५

१७ वात (द्रावैत)– गावणौ-बजावणौ वध हुऔ, म्याराम रीसमैं अध-कध हुऔ । जरा मालकी बोली, हीयैरी बात षोली । आप सारू दारूकी भटी कढाइ छै, लाष रुपीयाकी टीप चढाइ छै, लाष लाषका लागा छै मुसाला, जीका तो अरोगै[14] दोय प्याला । आप सारू भटी कढाइ छै, आपकै तो मार-वाडकी चढाइ छै । जण दारूका दोय पयाला लीजै, जसानै सुनाथन[15] कीजै ।

दुहौ– ऐक भटीरै ऊपरै, लागै रुपीया लाष ।
जकण भटीरो म्यारजी[।], छैल दुबारो चाष ।। ७६

---

१ ख गैल । २ ख ऊठवो । ३ ख प्रति । ४ ख. नहीं । ५ ख मायाराम । ६ ख अणबैणो । ७ ख घणा । ८ ख करण । ९ ख. विरछो । १० ख थारा जो । ११ ख. प्रतिमें नहीं है । १२. ख. पातरियाको । १३ ख अलबेलियां । १४ ख आरोगै । १५ ख सुनाथ ।

मयारामवायक—

मो लकानै मूदडी, अबल वतावै आण ।
ऐक भटीरै ऊपरै, कोड करु कुरवाण ।। ७७

१८. वारता (द्वावैत)– जिण दारूको मालू प्यालो भालीयौ, ऐवौ ऐराक चाक[1] प्यालामै घालीयौ[2] । प्यालौ भर म्यारामजी नपै आई, मु जराकी सडा-सड लगाई ।

दुहौ– ऐक पयालौ ऊमदा, अत चौषौ ऐराक[3] ।
मालूरी मनुआररी, छैल अरोगै छाक ।। ७८

१९. वात– एक मनुहार मालू कीधी, अव सीसी दारूकी जसा हाथ लीधी ।

दुहौ– जोडै कर आषै जसां, प्रलब[4] सजे पोसाक ।
म्याराजी ! मनुहारकी, छैल अरोगै[5] छाक ।। ७९

२०. वात (द्वावैत)– अव सातु ही सहेलीया[6] ऊठी, रग-राग रूपकी वूटी[7] । मा'सू मालकी काइ[8] सदाई, मे वी आप आगै गाई-वजाई । सातु ही सहेलीया[9] सात प्याला भरीया, जीसू म्यारामजी होय गया हरीया ।

दुहौ– सातु मिल[10] सहेलीया, माडा कर मनुहार ।
मद पायौ म्यारामनै, ऊगायौ अणपार ।। ८०

२१. वात– वेलीया कमर वाधी छै, भार वरदार लादी छै । घोडा, ऊठ भीजै छै, मदवो जी मेलामै रीजै[11] छै ।

दूहौ– कैफ मही चकीयो[12] कुवर, मणीगर म्याराम ।
वेली भीजै वाहिरा, भीजै साज तमाम ।। ८१
सेठौ कीधो साय धण[13], म्यारौ मैहला[14] माय ।
लछ(ज)काणौ पडीयौ लधौ, कारी लगी न काय ।।८२
म्याराजी ! थे मुरधरा, जाता किसै जरूर ।
लुचो चगावै[15] लाधीयौ, दोढी कर दो दूर ।। ८३

२२ वात– मालू दोढी आयनै कह्यौ—म्यारामजी फुरमावै छै–हता ज्या डेरा कर दो, घोडा, ऊठ पाचा(छा) ठाणारा ठाणा वाध दो ।

---

१ ख छाक । २ ख छालियौ । ३ ख ऐयक । ४ ख पलव । ५ ख आरोगै । ६ ख सहेल्या । ७ ख वूठी । ८ ख कोई । ९ ख सहेल्या । १० ख मिली । ११ ख. रीझै । १२ ख छकियो । १३ ख घण । १४ ख मैला । १५ ख लगावै ।

गीत

जेले तुरगां रेसमी डोरां वनातां जडाव भीण[1],
फबे[2] फीण हातु माग सांकरे फेराव[3]।
पना मारू गाहांणी - जलाला[4] म्यारो चले ओढा[5],
राग रहे पोलो दोढा षडो मारू राव ।। १
जोवे जुल सहेली हवेली सीस चढे जोषी,
तारीफे अनेकां गोषा बेठी रूप तांम ।
देषे साथ जसांरो ज(झ)रोषै माली जा(झा)लो[6] दीयै,
मारे[7] डेरे हालो वीद रसीला म्यारा्म ।। २
आसा जडी(झडी)लगासा दुबारै सूंघ भीन आसा,
राजलोका रमासा हुलासां सुने राट[8]।
मीठा बोलो देती थगा सारग भेला भारी,
बींद राजा हालोनी ओ जोऐ थारी वाट ।। ३
करे कोडजाडा (दा) दोढी[9] षचाणा कनाटा कार,
रमासा हुलासा माडा भारी रेण[10] राज ।
मारू गाढा ही चो[11] लुलुहीयारो हार जेम,
मारू जस-म्यारा अबार थीग देसा पधारो लाडा आज ।।४

२३. वात (द्वावैत)– जद वेली डेरानै वलीया[12], जसाका मनोरथ फलीया हेमराजको घोडो कूदै छै, दुसमण आषीया मूदै छै । पाच पाच बरछी ठेकै[13] छै, अलवल(र)की सहेलीया[14] देषै छै ।

दुहा– केइ नरषै[15] कांमणी, आडै गुघट आय ।
हैवर कूदै हेमरौ, पायक नट ज्यू पाय ।। ८४
डेरा दिस वलिया दुझल, अलवलीया[16] असवार ।
हेम कूदावै हैवरौ[17], अलवल(र)रै[18] बाजार ।। ८५

२४. वात(द्वावैत)–पाचा(छा) डेरा हता ज्या हुआ छै, पकवानाका थाल डेरानै वूआ[19] छै । पाचा[20] रग-राग वरताणा, मालूका हुआ मनका[21] जाणा ।

---

१ ख जीण । २ ख फले । ३ ख फरोव । ४ ख जाला । ५ ख वोढा । ६. ख जाली । ७ ख मोरे । ८ ख राह । ६ ख दोडी । १० ख रेया । ११ ख छो । १२. ख बलीया । १३. ख टेकै । १४ ख सहेल्यां । १५ ख नरेखे । १६ ख अलवलिया । १७ ख हैवरो । १८ ख अलवलरै । १६ ख हुआ । २० ख पाछा । २१ ख मन ।

दारूको झड लगायो छै, जसा भी पीधो छै, म्यारानै पीयो छै। दारूका प्याला लेवै छै, मालकी ओलभा देवै छै। ओ वरसात आयो छै, चै(छै)ला मनचायो[1] छै। आ रात नही छै जावण की, आ रात छै घरा आवण की। ओ वैरी वरसालो आयो, आप जावणको फुरमायो।

जसावायक—

दुहा– वरसालो वैरी वू(हू)ओ, वैरण दूजी वीज।
माथै आई म्यारजी, तीजी वैरण तीज॥ ८६
वैरी चोथा बादला, घण[2] पाचमो घुरात[3]।
थटी. अधारी थाग विण, छटी वैरण रात॥ ८७
सारग वैरी सातमा, मीठा गावै मौर।
ऊवा[4] बरसै बादली, लू बां-भू बा लौर॥ ८८
नवमी आ वैरण नदी, जदी जला ऊझेल।
दसमौ वैरी दीवलो, तण सीचीजै[5] तेल॥ ८९
मद वैरी अगीयारमौ, जण वण केम जीऊ।
वोलै वैरी वारमा, पपीया पीऊ[पीऊ]॥ ९०
तैहडो वैरी तेरमो, जोवन चढीयो जोर।
चदो वैरी चवदमौ, कामणीया चहु कोर॥ ९१
पाका वैरी पनरमा, वलीया फूलां वाग।
साचौ वैरी सोलमौ, रस बरसावै राग॥ ९२
वरसालोमै मत वूझौ, वादल वादल वोज।
मानै थां विण म्यारजी, कुण-षेलासी तीज॥ ९३
हीडै सहीयां हीडसी, वादलहीमै वीज।
मझ दोऊ हीडां म्यारजी, तुरी खेलाजो तीज॥ ९४
पोसाका कीजो प्रवल, लीजो दारू लार।
मुहगौ(डौ) कीजो म्यारजी, तीज तणौ तहवार॥ ९५
साथै लीजो साथीयां, प्याला भर पाजो'ह।
महिल जसांनै म्यारजी, हीडा हीडाजो ह॥ ९६
दूजी मारी देषसी, सारी साथणीया ह।
म्याराजी मछकावतां, हीडारी तणीयां ह॥ ९७
दूजी मारी देषसी, साथणीयांरो साथ।
प्याला थानै पावसां, घाल गलामै वाथ॥ ९८

---

१ ख. छायो। २ ख घणा। ३ ख. घुरत। ४ ख ऊबा। ५ ख. सी छीजै।

दूजी मारी देषसी, साथणीयारो संग।
हीडा थे मे हीडसां, अगां भीजे अग ॥ ९९

कूजा[1] दारू ले'र कर, सहीया घेर सुजाण।
फेर पयाला पावसा, दे'र गलारी आंण ॥ १००

हीडारी लीजो हलक, राजद कीजो रीज।
देषीजो ऊभा दुला, तीजणीया नै[2] तीज ॥ १०१

हीडा रेसम हेमरा, लटकै हीरा लूब।
तीजडीयां हीडै तठै, जण लूबा विच भूब ॥ १०२

तरह-तरहरा तायफा, सजे कहरवा साग[3]।
ऐ[4]वै हीडां आवसी, मोजा लेसी माग ॥ १०३

कल-हल[5] करसी केकीयां, वल-वल पवसी वीज।
म्यारा अलवल[6] माभली, तण पुल रमसां तीज ॥ १०४

वादल गल-गल वरससी, थल-थल नीर थटाव।
तिण पुल जोजौ तीजरौ, अलवल(र) रो ओंचा(छा)व[7] ॥ १०५

पाणी षल-हल[8] परवता, तल-गल सभर तलाव।
काली मिल-मल काठला, अलवल भुकसी आव ॥ १०६

साकल षल-हलसी घरा[9], वल-वल हल-वल वाज।
भल-हल सावल भलकतां, रमजौ अलवल(र) राज ॥ १०७

हीडा जासा हींडवा, पैगा षेलासांह।
वाजा तासा वाजता, आवासां[10] आसाह ॥ १०८

हीडां जासा हींडवा, आसा पूरासाह।
आसा दारू ऊमदा, पीसा अर पासांह ॥ १०९

मारी थारी म्यारजी, जोवणजोगी जोड।
अलवल(र) जसीया ऐकली, चं(छं)लम जावौ चौ(छौ)ड ॥ ११०

मारू मां मनुआरकौ[11] पीवो दारू पूर।
माफ कराडौ(औ) म्यारजी, मुरधररौ मछकूर ॥ १११

वजसी थाढौ वायरौ, गजसी मधुरौ गाज।
घण जद तजसी ढोलीयौ, सजसी जोग समाज ॥ ११२

---

१ ख कूजा। २ ख प्रतिमें नहीं है। ३ ख. सग। ४. ख जे। ५. ख कलहक ६ ख. अलवुल ७ ख औ चाव। ८ ख. खळ-खळ। ९ ख घरा। १० ख आवसा। ११ ख मनुहारकौ।

चहु दिस उमघीयो[1] झड-चवण, मचीयौ घरा चत्रमास[2] ।
कीवँ कसीयो ढोलीयो. पीय[3] रसीयौ नह[4] पास ॥ ११३
सगरा[5] भीजै साथीया, अगरा कपडां ईज ।
मारणो रगरा मालीया, तरा अगरां तीज ॥ ११४
श्रामण मास सुहामणो, घणौ मेह घण गाज ।
तण रतमै जावण तणो, मुणौ मती माहराज ॥ ११५
नदीयां नाला नीझरण, पाणी वाला पूर ।
वरसालारा वादला, काला वरै[6] करूर ॥ ११६
लष ग्रहणा वप लपटजो, राज अपटजो रीज ।
दारू आसौ दपटजौ, तुरा झपटजौ तीज ॥ ११७
भमरा थानै भालसा, चमरा ढुलतां चै(छै)ल ।
आजौ डमरा 'अत रररा[7]', गुमरां घरीया[8] गैल ॥ ११८
काली वरसै कांठला[9], सैहरा वा(पा)लो सोभ ।
मतवाली रत नर-मना, लै हरीयाली लोभ ॥ ११९
साथे लाज्यो सूषडां, रैण दिराज्यो रीज ।
आज्यौ साजा ऊमदा, तरण रमाज्यौ तीज ॥ १२०
महि चा(छा)इ मामोलीयां, बादल चा(छा)यौ वोम ।
वेलां चढ चाया[10] व्रचा[11], जसीयल चा(छा)ई जोम ॥ १२१
वरचां(छां)[12] चढसी वेलडी, नदीयां चढसी नीर ।
नजरां चढजौ माणजौ, साहिब जसां सरीर ॥ १२२
बादल जम कूजा वहै, काठल जेम[13] कुराज ।
मदरो झड़ म्यारामरै, ईन्द्र झडरूपी आज ॥ १२३

२५. वारता (द्वावैत)– म्यारामजीनै दारू पायो छै, अफरौ उगायो छै । म्यारामजी आपा मीचै छै, कामका थाणा सीचै छै । जसानै भी दारू आयो छै, कामको मुसालो पायौ छै । जसा मालूनं जगावै छै, मागै ज्यो[14] मगावै छै । म्यारामजी कैफमै घोराणा, मालूनै ग्रहणा[15] थोराणा । म्यारामजीनै जगावै मान्नू, तो थाकी जनमकी दालद पान्नू ।

---

१ ख उमचीयो । २. ख. चतमास । ३. ख पिय । ४ ख न । ५ ख मगरां । ६ ख घेर । ७ ख. अतणां । ८ ख धरीया । ९ ख काठला । १० ख छाया । ११ ख व्रछां । १२ ख वरछां । १३ ख जेम । १४ ख ज्यां । १५ ख ग्रहण ।

मालूवायक—

अण दारूरै ऊपरै, वैरण पडजो वीज ।
जसडी थू दीसै[1] जसां, आज रहेली ईज ॥ १२४
कैफमही च(छ)कीयौ कवर, नैणी फरगी नींद ।
जागै नह[2] मांसू जसा, वैरण थारो वींद ॥ १२५

जसावायक—

अण दारूस् हे अली !, मारू भी[3] दुष पात ।
सो दारू किण विध सहै, ज्यारी कारू जात ॥ १२६

मयारामवायक—

लाली यक कावल लुली, साली[4]मौ उर सूल ।
अण काली धणनै अवै, माली ! कर माकूल ॥ १२७

मालूवायक—

कुण थांनै कारू कहै, माकै थे मारू ।
दारूकी पी धल[5] [धण]दवै, छैकी अण सारू ॥ १२८
जसीया मद पीवौ जदचा, राजद मतरी वौह ।
औ दीवौ घर आपरै, जिण दीठा जीवौह ॥ १२९
अतरौ अवगुण आपमै, मोटो यक म्याराम ।
आष न जागै आपरी, कामण जागी काम ॥ १३०
जसां अपछर जनमकी, जसां आभ की झाल ।
जसा हस थाकै जसी, भोगी नी भूपाल ॥ १३१
घम-घम वाजै घूघरा, वाजै चम-चम वीच(छ) ।
तम-तम यम मालू तवै, म्यार(म)चसम म मीच ॥ १३२
पैहला दारू पायनै, काढै वचन अकाज ।
म्यारी आषै मालकी, अलवल रहा न आज ॥ १३३

२६ वात (द्वावैत)– अलवल(र)ऊभा रहा नही, थाका वायक सहा नही । मे आया वचनाका वाधा, जसाका माजना लाधा । पूरबली प्रीत पालता ता(था), अतरा दन रीम टालता ता(था) । दू ढाडमै नीपजै सो ढाढी, मे तो जसा आजमू चा(छा)डी । थाकी जसा सरीषी उगै(ठै) लाषा परणा, माकी सोभा मे काई वरणा, मानै तो अनेका न्यौरा करै छै, मारै यण विना काई नही सरै छै ?

---

१ ख दीजै । २ ख न । ३ ख जी । ४ ख साली । ५ ख घल ।

मालूवायक—

दुहौ– जसां सरीषो जगतमैं, महल नहीं म्याराम ।
अण कह्यौ म ऊथपौ, करौं कहै सो काम ॥ १३४

२७. वारता (द्वावैत)– जसीया कसीयक छै, आपनै भी उधारे जसीयक छे। पतीयासीको कमल, गगासी विमल । भूभलीया नैणाकी, अमरतसा वैणाकी । मेहको ममोलौ, वादलाकी वीज, होलीकी[1] झाल, सामणकी तीज । केलकौ गरभ, मोनेभो पभ, सीलकी सती, रूपकी रभ । ताठौ मरग, मगराकी मौर, पावासरको हस, मनकी मीत, मनकी चौर । जीवकी जडी, हीयाको हार, अमीकौ ठाहौ, रूपको अवतार । काजालीकी साठी, गूजालीको भलको, गैलाकी कबाण, हीडाकौ[2] हलको । मुगलरो मीमचौ[3], वषायतरो भालौ, मधरी गोटको[4] प्रेमरौ[5] प्यालौ । सोलमौ सोनौ, राजहसरो वचौ, वावनौ चदण, रेसमरौ गचौ । करतीयारौ भूवकौ, मोतीयारी लूव, हीरोरो[6] लछौ, सरगरी[7] भूव । सनेहरी पालपी, हेतरौ थाणौ, नैणारौ नरषणौ, प्रेमरो कमठाणौ । सरदरी पूनमरो चद, आसाढरो भाण, जसीयाकी तारीफ, वुधैका वाषाण । मदवीको मछौलौ, हाथकी हाल, तीजणीयाकौ तुररौ, रूपकी मुसाल । कापको लाडू, मोतीयाको गजरो, जलालीयाको धको, जसीयाको मुजरौ । 'कलपव्रच(छ)री डाल'[8], पारसरी टोल[9], मेहरी महर[10], दरीयावरी छौल[11] । तावडैरी छाहि[12], अधारैरो[13] दीयो, सीयालारो ताप, जका जसा घणा जुग जीवौ । हरषरौ हीडो, उदेगरी मेट, जीवरो जतन, इन्द्ररी भेट । किस्तूरीरो माफौ, केसररी क्यारी, रूपरौ रूपडो[14], रच(स)ना हीनारी । भमरारो भणणाट, डीलारी[15] दोली[16], दीपमालारा दौर, भापररी होली । गुलाल मही गढौ[17], आषारौ पाणी, हीरारो हार[18] । ग्रहणाको भललाटो तेजको अवार, जसीयाको जोवणो वा ससारको सार । 'दातारो पाणी'[19], कडीयारो केहरी, हालरो हस, भूआरी भमर, कुरजरी नस । अलकारी नागण, पलकारी कुरग, कठारी[20] कोयल, सोनैरी अग । अणीयाला नैणामैं काजलकी रेषा, अमरतरा ठासा चदामैं पेपौ[21] । सीदूरकी

---

१ ख होलीको । २ ख होडाको । ३ ख. ममिचौ । ४ ख गेटको । ५ ख प्रेमको । ६ ख हीरारो । ७ ख सणरी । ८ ख –' ख प्रतिमें दरीयावरी छौलके वाद यह गद्यांश है । ९ ख टोट । १० ख मेहर । ११. ख ढरीयावरी छैल । १२. ख छोहि । १३ ख अधारीरो । १४ ख रखडा । १५ ख डीलारो । १५ ख ढोली । १७ ख गूढौ । १८ ख हारौ, पोतारौ पाणी । १९ ख '–' ख प्रतिमें नहीं है । २० ख कठरी । २१ ख पेखां ।

बीदो भालूमैं भलकं, कालीसी काठलमैं चदोकन चलकै। असोभता ऊतारे, सोभता धारे। वाल वाल मोताहल पोया, जाणे नवलाष नषत्र एकठा होया। वाजणा जाभर पैंरीया, घूघराका सुर गैंरीया। अण भातकी जसीया, जकाकू चो(छो)डो चौ[1] (छौ) रसीया। माणोनी म्यारामजी, थानै दीनी छै रामजी। लों नीं लाडीका लावा, पीचै(छै) करसौ[2] पच(छ)तावा। जावणकी वाता जाणा छा, मतवाली कू नही माणा छा। वरसालाका वादल ज्यू, ढालका जल ज्यू, भाषरका पाणी ज्यू, वाटका दाणी ज्यू, चे[3] (छे)ह मती चा(छा)डौ, थोडौ सो मन करौ गाडौ। झाली वागा षडौ, थोडा रहौ झलीया। पिण थामैं किसो दोस, था कै सगी पलीया।

दुहौ– **पलीवालरी पोत ज्यू, ऊठौ झाटक अग।**
मांणौ रग म्यारामजी!, आणौ अग उमग॥ १३५

२८. वारता (द्वावैत)–वरसायत आवणकी धारी छै, आपकै जावणकी त्यारा छै। जमी नीला सिणगार धारसी, जसा सिंणगार उतारसी। मोरीया महकसी, डेडरा डहकसी, झिलींगन झणकसी, भमरा भणकसी। सीतल पवन वाजसी[4], मुधरौ मेह गाजसी। भाषरैंरी छीया लागसी, 'ग्रीषम रित भागसी। वीजलीया भलकसी'[5], भापरासू वाला षलकसी, पावसकी पोटा पडसी, इद्रकी असवारी चडसी। हरीयालीया चूटसी[6], नदीयाका बध फूटसी, जण रतमैं आप कमरा बाधा (धौ) छौ, आपकै कोइ[7] मासू पला भवकौ बाधौ छौ। बरसायतकी आ रीत सुणौ—

चो(छौ)टौ साणौर[8] गीत

रहीया ढक गिरदरी छीया रसीया, वसीया बुगला पावस वास।
जण पुल माय तजे धण जसीया, बालम[9] क्यू कसीया वर हास[10]॥ १
गीत– **दादुर मोर पपीया नस-दन, सोर[11] करै घण[12] घोर सन्ताप।**
बादल लोर षवै बह बीजा, मेहा घोर करै अणमाप॥ २
बरसै सघण षलल वजवाला, वसधा जल थल एक वूआ।
अलबलहू तज कण पुल अलीया, हलवल कर क्यू त्यार हुआ॥ ३

---

१ ख. छोडं छै। २ ख करस्यो। ३ ख वे। ४ ख, वागसी। ५ ख '–' यह पदावली ख प्रतिमें अप्राप्त है। ६ ख छटसी। ७ ख कोह। ८. ख शाणोर। ९ ख बालक। १०. ख सात। ११ ख सारे। १२ ख घणा।

सरवर कह रस भर जल सिलता, तरवर पपसर ऊत रलतत्यार ।
मुरधर कसर[1] कस म्यारा, हर घर मत कर कत हमार ॥ ४
पग-पग कीछ[2] अथग लग पाणी, मग-मग डग-डग पथग मरै ।
जगमग नगा सुरग अग जसीयां, धण लग पग अग करग धरै ॥ ५
चरजी रहौ रहौ चा[3] (छौ) नीजी, वरजी करजी जोडे वाम ।
भौंगी दरजी दिन भानीजी, मानीजी अरजी म्यांराम ॥ ६

दुहा– म्यारा ! थांरा मुलकमैं, चगी कासू चीज ।
वार वार मुरधर वहौ, राज किसै गुण रीज ॥ १३६
मालू ! मारा मुलकमैं, चगी वसतां च्यार ।
नर नारी औ ठान पग, तीषा वै तोपार ॥ १३७
मालू ! थारा मुलकमैं, कासू भला कहौ ।
नर नागा नारी नलजा, रीजे केम रहौं ॥ १३८
म्यारा ! मांरा मुलकरा, वागारा वाषाण ।
आलीजा सुणजो अवै, श्रवणा कथन सुजाण ॥ १३९

वागारा वाषाण-छन्द पधरी

वन सघन लसत मनु घन वसाल, सचरै नाहि रवि-रसमरास ।
जग-ताप हरत अतिसुपद छाहि, लप लिलत छटा मुनगन लुभाय ॥
केली कदब करुना असोक, सहकार वकुल लष मिटत सोक ।
जातीफल जावू नालकेर, वट पीपर महि व्है[4] हरत हेर ॥
पाडर पुन रांयन तरु तमार, तहा सरु वकायन सरस तार ।
चदन अगर तोया[5] कुन्द चारु, सीताफल चपक अरु अनारु ॥
कचनार नागलितका लवग, थल कोल मल्लिका मिलत सग ।
केतकी जुही केतक रु जाय, चवेल माधवी वेलराय ।
केसर मनौग क्यारी जु कीन, रितराज वसै नित चिव[6] नवीन ॥
प्रफूलत हिम गुलम ज नव प्रकार, थल सकल हरित सुप करत सार ।
मकरदमजुरी स्ववत[7] पुज, अलिमाला झूमत गुज-गुज ॥
टहटहत कुसम पूरत पराग, पल्लव दल[8] मिल जेव जाग ।
रवमुपी दावदी पुन पलास, नाफुरमा परगस आस पास ॥
सोभत मन्द[9] सीतल समीर, कोकला कुहक क्रत सोर कोर ।
वानी अनेक कुजत वेहग, नाचत मयूर आनद अग ॥

---

१ ख कधर । २. ख. कीच । ३ ख. चो । ४. ख महि है । ५ ख निया ।
६ ख छिन । ७ ख स्वतत । ८ फन । ९ ख मत ।

गव धनुष ससक चित्रिग वराह, म्रग महष सुरभ आवरत चाह ।
आनद मइ[1] जहि अवन आज, राजत है मानहु रामराज ।। १४०
नभ चुवत सृंग गिर कलस ऊध[2], उपमा जहि[3] सोधत सुकव बुध ।

२६ बात (द्वावैत)– यसा तो माका वाग छै, इसोई संजीवन राग छै । मारवाडको भूषो, देस जठै अनको न रत्ती लेस । जकण मुलकका जाया, मानै पजावण आया ।

दुहा– कोड गुना कामण कीया, माफ कीया महाराज ।
म्याराजी चोडो[4] मती, बांहि-ग्रहां की लाज ।। १४१
मे तो अणसू मालकी !, पाली आची[5] प्रीत ।
अतरा दन रहीया अठै, बांहि-ग्रहाकी रीत ।। १४२
जहर-जसा मांनै जसां, वकीया षारा वैण ।
जकण जसांसूं मालकी ! नमष मिलै नह नैण ।। १४३

जसावायक

रीसा बलती राजनै, वकीया षारा वैण ।
मारा थानै म्यारजी !, नरष न धापै नैण ।। १४४

मयारामवायक

पग पग ऊपर पदमणी, कीना नोहरा कोड ।
कामण जसीयां कारणै, चलीया ज्यांनै चोड[6] ।। १४५

मालकीवायक

अण सूरत अण अकलनै, करै न नोहरा कोय ।
मोलो लोहो[7] मालकी, ज्यो गर चाढ मरोय ।। १४६

जसावायक

अगलै भव वाली अबै, पालू माली प्रीत ।
मन भावै ज्यू म्यारजी !, चाडो[8] 'रीस नचीत'[9] ।। १४७
नयण लगाडे[10] नेहरा, वयण दिराडे[11] वल ।
मांडी अब क्यु[12] म्यारजी!, चालणकी[13] हलचल ।। १४८

बात दरजी मयारामरी समाप्त ।

+++++++++++++++++

---

१. ख मई । २ ख अध । ३ ख जाहि । ४. ख. छोडो । ५ ख. आछी । ६ ख छोड । ७ ख लोहा । ८ ख छाडो । ९ '–' ख री मन चीत । १० ख लगाहे । ११ ख. दिराहे । १२ ख क्यू । १३ ख चलणकी ।

राजा चंद-प्रेमलालछीरी वात[1]

॥६०[2]॥ कथा ॥

अभा[3] नगरी चदो राजा, गिर नगरी, प्रेमलालछी ।
सौ[4] जौगे[5] विवाह हुसी; अबै मलणौ[6] देवरे [7] हाय ॥ १

वारत्ता—राजपुर गाव, तठै रजपुत एक घररो धणी वसै । तिणरौ नाम रुद्रदेव । तिण दंवरे सजौगै दोय[8] अस्ती[9] परणीयौ, सुषमै रहै । पिण सोकारो[10] वेध[11] तिणसु राति[दि]नि[12] वढती[13] रहै । कदे क मेलि[14] पीण होय[15] जाय । तरै[16] रुद्रदेव आपरा सुष होणनै दोनु[17] ही वैराने घर जुदा जुदा वणाय दीधा । वडी बहुरै वैटौ[18] हूवै[19] न छै । सो कामधेन ले दीधी । तीका दूझै[20] । पिण लुगाई[21] वैहु[22] जणी विद्या सीषी थी । तिका बालकपणै अतीत मोलियौ[23] थौ, तिणसु वीद्या[24] पाई[25] । पीण[26] भरतार जाणै[27] नही । दोहु[28] जणी रैह[29] छै ।

एक दीन बैऊ जणी पाणी भरणने चाली । तरै धणीनै[30] कह्यौ । लहुडी कह्यौ—म्हारौ डावडौ पालणै[31] माहे सुतो[32] छै, देषज्यौ, जागे तो[33] रोवण मत देज्यौ । वडी वहु[34] कह्यौ—चोपा[35] आवणरी[36] वेला हूई छै । गाइ आवै तौ टोघडानै[37] चुघण मत देज्यौ[38] । ईसि भात भला इ बेहु जणी पाणीनै गई । तिसै डावडौ जागीयौ ने रौयो[39] । तरै[40] रुद्रदेव बालकनै पालणा माहेसु[41] उरौ[42] लिनो । तिसै गाइ पीण आई ।[43] तरै[44] टौघडौ[45] चुघण लागौ । तरै बालकनै[46] पालणा माहे सुवाण्यौ । आप टोघडानै[47] जुदौ[48] वाधीयौ । गायनै[49] बाधे तीसै[50] दोनु जणी जल ले आई[51] ।

---

१ २ ख में नहीं है । ३ ख अभो । ४ ख सो । ५ ख जोगे । ६ ख मेलो । ७ ख देंवरे । ८ ख दौय । ९ ख. अस्त्री । १०. ख. सोकांरो । ११ ख रहौ । १२ ख रात दीन । १३ ख विढती । १४ ख मैलि । १५ ख हौय । १६ ख तरे । १७ ख दौनु । १८ ख बेटौ । १९ ख हुवै । २० ख दुझै । २१ ख लुगाया । २२ ख वेहू । २३ ख मोलीयो । २४ ख विद्या । २५ ख पाइ । २६ ख पिण । २७ ख जाणे । २८. ख दौहु । २९ ख देह । ३०. ख. तरे धणीने । ३१ ख पालणा ३२. ख सुतौ । ३३ ख तौ । ३४. ख वहू । ३५ ख चौपा । ३६ ख आवणरी । ३७ ख टोघडानै । ३८ ख देज्यो मती । ३९ ख रोयो । ४० ख तरे । ४१ ख माहिसु । ४२ ख उरो । ४३ ख. आइ । ४४. ख तरे । ४५ ख टोघडो । ४६ ख तरे बालकने । ४७ ख टोघडाने । ४८ ख जुदो । ४९ ख गायने । ५० ख वाधै तीसै तितरे । ५१ ख आइ ।

इतरै[1] लीडो वहू देषै[2]—गायनै[3] वाघै[4] छै नै[5] वालक तौ रोवै छै। तरै[6] लहूडी जाणीयौ—धणी म्हारौ[7] नही, वडारी गायरौ[8] जावतौ कीयौ दुघरौ[9], नै[10]वैटा[11] जिसी[12]मोरात, तिणरो जाबतौ नही कीघो[13] तो[14] इणनै[15] परौ[16] मारणौ[17]। भलौ नही ग्रापनै[18], तिकौ[19] दीजै काला सापनै[20]। ग्रौ उठासु ग्रौपाणो[21] चाल्यौ छै। तरै लहुडीरै माथै[22] ईढोणी[23] थी, तिणरौ[24] मत्रसु साप कालदार कीयौ नै[25] रजपुत साम्हौ पाणनै[26] दौडचौ[27]। तिसै[28] वडी दोठौ—इण म्हारौ[29] मछर करि घणीनै[30]मारणौ[31]माडचौ। तरै[32]वडीरा हाथ महै[33] लोटी[34] थी, तिणरौ नोलीयौ वणायौ मत्रसु। तिको नोलीयौ सापसुं विढवा लागौ। तिण सापने न्यौल्यै[35] मारीयौ।

रजपुत दोन्यारा चरित्र देषने धूज्यौ ने मन माहे विचारीयौ—इसी वैरां ग्रागे कदे'क 'ऐलो साट मरीजमी'[36] तौ ईयाने छोडीजै तो भलौ, पिण इयारी सीप विना परदेसनै चालु तौ ऐ पोचनै मोनै मारै, तिणसु ईणारा मुढासु हसने सोष दैवै तौ दस-कौम ग्रदीठ[37] हूइजै नै उठै पइसो कमाय, काई'क सुधी रजपुताणी आणनै घर माडू। इसौ विचार कह्यौ(रचौ)। दिन दस ग्राडा देनै दौन्यु भेली वैठो छै, तरै रुद्रदेव वौल्यौ— ऐस साप तौ पतली हुई नै घर माहे ऊडो[38] तेह नही नै षाघौ-पहिरचौ जोईजै, जौ थै हसने सीप द्यौ तौ च्यार मास कठै एक जाय' नै, किण हेकरी-चाकरी करिनै च्यार टका ल्यावु। तरे वैरा कह्यौ—घरै वैठा जाडी जीमता, पतली जीमस्या, चोपडी जीमता, लूपी जीमस्या, परदेस कुण जायै। परदेसरो मामलौ छै, कि जाणी, जे कदेई मिलणौ हूवै ? करम माहै लिषीयौ छै, तिको ग्रठे हीज मिलसी। तरै रुद्रदेव ग्रवोल्यौ रह्यौ।

मास १ वीता वलै रजपूत परदेम दिसावले कह्यौ। तरै दौन्यु[39] सोका वात कीवी—ग्रापा साप-नौल कीधौ तिणही'ज रातिसू इणरो मन घरसु लागै नही छै तौ की इयु[40]रहे नही। इणनै गधेडौ करा तौ दीहा दीहा फुस, कचरौ, फुहडौ ल्यावै नै रात पडीया ग्रापणी दाय ग्रावसी त्यु करिस्या। इसौ सोच विचारनै दौनु जण्या मतो कीधौ। रावतजी ! थे परदेस कमावणनै पधारो नै

१. ख इतरे। २ ख देषे। ३ ख गायने। ४ ख बांधै। ५ ख ने। ६ ख तरे। ७. ख म्हारो। ८ ख गायरी। ९ ख दुधरो। १० ख ने। ११ ख वेटां। १२ ख. सरीसी। १३ ख कीधो। १४ ख तो। १५ ख इणने। १६ ख परो। १७ ख मारणो। १८ ख ग्रापने। १९ ख तिको। २० ख सापने। २१ ख ग्रोषा। २२ ख माथे। २३ ख इढोणी। २४ ख तिणरो। २५ ख. ने। २६ ख. षाणने। २७. ख दोडचो। २८ ख तिसे। २९ ख म्हारो। ३० ख घणीने। ३१ ख मारणो ३२ ख तरे। ३३. ख. हाथ माहे। ३४ ख लोटी। ३५ ख. ल्योल्ये। ३६ ख '–' ख ऐळी साजसी। ३७ ख. ग्रठी-उठी ग्रदीस। ३८. ख हउडो। ३९ ख. दोनु ही। ४० ख कोइ।

वेगा आवणरी मनसा करज्यौ । म्हानै था विना घडी १ आवडे नही छै । तरे रजपूत राजी हूवौ । तरै जाण्यौ—भली बात, म्हारौ दिन पाधरौ दीसै छै । इरा मौनै सीष दीधी । इरा रजपुताणीयासु घणो हेत-प्यार दीधौ । तरै दौनु जिण्या भाता सारू चूरमौ कीधौ ने लाडू ४ वाधीया । तिके मत्रनै कौथली माहे घाति बाध मेल्या । जिको ऐ लाडू षायै तिकौ गधेडौ हुवै ने भूकतौ भूकतौ पाधरौ घरै आवै । इसो भातो कर रापीयौ । राते रजपूत सूतौ, पिरा नीद आवै नही । मन माहे जाणै इण वावरं माहिसुं वेगो नीसरू । इयु जाण आधी रातिरौ जाग्यौ नै कह्यौ—हिवै तौ पाछीली राति छै । तरे ऊठि कमर वाधी, हथीयार बाधि[1] सीप करै । तरै दौनु ही बैरे[2] लाडू भाता सारू कौथळी हाथ माहे दीधी ।

रजपूत लाडू लेनै ऊतावली चाल्यौ । तिकौ रातोराति माहे कोस १२[3] ऊपरा श्रीसूर्यजी दरसरा दीधौ । दिन घडी १ चढता चालता-चालता आगै १ जलसू भरीयौ तलाव आयौ । तरे रुद्रदेव जाणीयौ—अठै भातौ षायनै कोस २० सुधौ आज गयौ रहू । यु जाणि, जलरी तीर हथीयार छोडि सारा-फेरा गयो । दातण करि हाथ पग ऊजला कीधा, अमल कीधा नै आप[4] श्रीपरमेश्वरजीरा नाम लैणनै बैठौ । नाम ल्यै छै तिसडै १ ढोली आय नीसरीयौ । तिरा रुद्रदेवनै ऊजलायत मोटौ आदमी देपनै सुभराज दीधौ नै कह्यौ—मा-बाप ! अमलदार छु, अमल पाई गावसु च्याल्यौ थौ । तिको कालजै अमल लागौ छै, कु[5] साथे सीगवरणी[6] हुइ[7] तो[8] रावला जाचकने पसाव करो[9] । इसो सुरा रुद्रदेव जाण्यौ—धरम आडो आवसी नै एक लाडू इणनै द्यु, वासै तीन रहसी घणा ही छै । यु जाण एक लाडू ढोलीनै दीयो । ढोली चूरमौ-चूटीयो[10] देषि, जलरी तीर जाइ[11], उतावलो उतावलो उतावलो[12] लाडू षाधौ । तिसै ढोली गधेडो हूवो, रवाव गला माहे लीया भुकतो जीण दीसी षोज रजपूतरा था, तिण पोजा दोडौ, घडी एक माहे घरा गयो । रजपूताणीया-जाण्यौ पधारोया तो षरा, रबाव कीणरो लाधा । इसो तमासो [देखनै] आषा मत्र बाटिया, तिसै गधारो ढोली हुवौ ने कह्यो—कुल-गोत मुहासणीरो भलो करो, चूडो अवचल रहो । आज म्हारा[13] अभागनै रजपूत एक मिल्यौ, तिण लाडू षाणने दिधौ । तिण षात समाण[14] ऐ फोडा पडीया । तरै दोनु ही जाण्यौ—लाडू तौ तिण न षाधा हुमी । ढोलीरो

---

१ ख बांध । २ ख वेरा । ३, ख. १०ऽ१२ । ४ ख प्रतिमें नहीं है । ५ ख कांइ । ६ ख सीरामणी । ७ ख हुवै । ८ ख इ तो । ९ ख बगसावो । १० ख उठी पो । ११ ख जाइ । १२ ख प्रतिमे द्विरुक्त शब्द नहीं है । १३. ख म्हारा । १४ ख पांत समांन ।

तमासो दीठो तो आपा री दाढा माहसु[1] जासी तो पाछो नही आवसी, इण ढोलीनै क्यु दै वेगी वाहर करो। यु जाण ५ अथा ७ धान घालि ढोलोनै सीष दीधी। ऐ दौनु जणी घोडीरो रूप कीयो, लारे दौडी।

तिसे रजपूत ढोलीरो चिरत[2] देप चमक्यौ। तरै लाडू तो पाणी माहे नाष दीधा। उतावलौ, डरतौ हाथमे जुती लै नाठौ, पाछो जोवतो-जोवतो जायै। आगै कोस एक ऊपरा देवगढ आयौ। तिणरै फीलसै सास भरीयौ पैषै[3]। जिसै रजपुताण्या घौडीरे रूप-पासरणा कीधा, पूछ माथै लीधा आवती दीठी। तरै रुद्रदेव एक अहीरणो घर 'फीलसारै माथै छै, तिणमै पैठो। अहीरणी जवान छै,'[4] अकेलो चौक माहे[5] ऊभी छै। तिण कह्यौ—देपे छै, तु माहरा घरमै च्याल्यो आवै छै। आपा फुटी छे? तु निसर जा! तरै रजपूत कह्यौ—हू मारीजतो[6] थारै सरणे आयो छु। उण कह्यो—कुण मारै? तरै रजपूत उतावली वात सगली कही। अहीरणी वात सुणि बोली—जो तु म्हारो धणी होइनै रहै तौ वाहर पालु। रुद्रदेव प्रमाण की। जैरै अहीरणी[7] मत्रारै पाण नाहरी हुई नै घोडा[8] सामी दोडी। तरै उवै दौनु जणी पाछी डरती नाठी। तरै कोस ५ ऽ ७ सुधी न्हसाई[9] पाछी आई। रजपूत दीठौ—कीसि वलाइ लागी? घरसु तो इण मत्रारा भौसु न्हाठौ थो नै अठै तौ आ उठासु इधकी! पिण रात रहौ। जरै अहीरणीनै रति-श्रान्त हूई निद्रा व्यापी, आधी रातिरो रजपूत छोडि निसरीयौ। तिको अभो[10] नगरी जठै चद[11] राजा राज करै छै, तठै आयौ।

आगै राजारै कवरी वड कवार छै। तिणरा सवारै-सवरा मडप मड्यो छै। देस-देसरा राजा आया छै। त्या[12] माहे रुद्रदेव पिण तमासो देषणनै गयो छै, ऊभो छै। तिसे कवरी 'माला फूलरी'[13] हाथमैं छै, लीया घणी दासी सहेल्यारै झूलरै आई। तिको पेलतररै लैष, वडा वडा गढपति छोडिनै[14] रुद्रदेवरै गला माहै वरमाला घाली। जरै सगला कह्यौ—कवरी चुकी-चुकी। जरै वलै बीजि वेला फिर वर माल्यो। जरै चादौ राजा कह्यो—इणरा करम माहै[15] लिषीयो थौ, तिको मिलीयौ। जरै रुद्रदेवनै जात-पात पुछि कवरी परणाई। गाव दोया, महिल[16] दीयौ। गेहणो, पोसाष, माल, दासी सरब दीयौ[17]। सुषमै रहै पिण पाछलो डर भागो नही।

---

१ ख माहिसु। २ ख तमासौ। ३ ख पछै। ४ ख. '—' ख प्रतिमें चिह्नित अश नहीं है। ५ ख मे। ६ ख म्हारीजतौ। ७ ख. अहेरणी। ८ ख. घोड्यां। ९ ख नाहरी दोड। १० ख अभौ। ११ ख चदो। १२ ख त्यांहां। १३ '—' ख फुलरी माल। १४ ख छोड। १५ ख मं। १६ ख महेल। १७ ख. दीयां।

तिसै पाछली रजपूताणी सावली दोइ हुइनै उडती[1]। तिके अभो नगरीमै सुष विलसतो रुद्रदेवनै दीठो। तरै दोना ही विचारीयौ—ईणरी आष्याकाढि लै जावा तौ आधो तिको जीवतो ही मु वा बरोबर छै, यु जाणि। रुद्रदेव झरोषे वैठो नगररो ष्याल-तमासो देषे छै। तिसे आकास उपर सावलि दोइ भमै छै। तरै जाणीयौ—सही, वैहु रजपूताणीया छे। ऊ[2] दैषे इतरै उचो सामो देपै, तिसै आष्या लेणनै[3] तूटी। रुद्रदेव झरोषासू र्माहल माहै पीण ढौल्यौ पडचौ छै, जीकण उपर ढह पडचौ। कवरी षमा-पमा कर पुछीयौ—आज झरौपासु क्यु महलमै पडचा? तरै रुद्रदेवकू अचालि[4] आई। तरै कवरी हठ घणौ करि पूछियौ तरै रुद्रदेव वाछली वात धुरा-मुलसु कही। जरै कवरी आपरा पगरा नेवर उतार मत्रिया। 'तिके सीकरो होइ उभो रह्यौ'[5]। सीकरो तुटो तिकौ सावलि दोन्युनै मार पाछौ आयो। तरै कवरी नेवररा[6] नेवर कीया।

रुद्रदेव देष सोच्यौ जठै[7] जाउ जठे एक-एकणसु 'चढति चढति मिल'[8] तरै आधि रातरो इणनै ही छोड नाठो। तिसै पाछली रातरी कवरी जागि देषै तो सेज षाली। जरै सहैल्यानै कह्यौ—अठी-उठी, माहे-वारै सगलै गोध कीनी पिण बारणारा[9] पोलिरा किवाड[10] उघाडा लाधा। जरै जाण्यौ—रावतजी तो पर-देस विगर सीष च्याल्या। तरै कवरीरे[11] चदो राजा पिता छै, तिणनै कह्यौ—थाहरो जमाई आज आधि रातरौ निसर गयौ, षबर करावौ। ईमो साभल[12] राजा मारग चारै दिसा असवार दोडाया। जठै लाभै तठासु लाज्यौ[13]ने थाहरो[14] वुलायो[15] नावै तो मानै षबर देज्यौ, म्है आइनै मनाय लासा[16]। यु समझाय असवार दोडचा। एक मारग रुद्रदेवजी मीलिया। कह्यौ—अपुठा पधारौ। रुद्रदेव नावै जदि ऐक असवार पाछो मेलियौ। जायनै कह्यौ—मारो[17] तो बुलायो आयौ नही। जरै राजा गयौ। जायने मिलीया। वात पुछि—थे माहसु विना सीष रीसाय क्यु निसरीया, तिका किसी तकसीर दिठी? पाछा पधारो। जरै[18] रुद्रदेव झूठी-साची ऐक-दोइ[19] वात कही। तरै राजा कह्यौ—साच दाषवौ जद मन मानै। जरै रुद्रदेव धरा-मुलसु वात माडनै कहि—जठै इसी मत्रवादण असत्रि छै, जठै जिवणकी आस कीसी? काएक सुषी, भोलि लुगाईसु घर माडीयां चैन होइ[20]। जरै राजा[21] हसि कह्यौ—रावतजी!

---

१. ख उठती। २ ख में नहीं है। ३ ख नेण। ४ ख अधाली। ५ ख '—' तिको सीकरो होय उभी रही। ६. ख में नहीं है। ७ ख जठै जठै। ८ ख चढति सै। ९ ख वारेणारा। १० ख कीवाड। ११ ख कवरी। १२ ख सांभले। १३ ख लावज्यो। १४ ख थाहरा। १५ ख वुलाया। १६ ख लासु। १७ ख मारा। १८ ख में नहीं है। १९ ख. दोयइ। २० ख होय। २१ ख में नहीं है।

म्हारी वात साभली आरवल जितरै काई षीषा नही, तिको आपरो दिन पाधरो जोइजै । तरै चदो राजा आप वीती वात कहै छै—

इण अभो नगरी माहै राज करू । तिको माहरी मावु छै । मारी पटराणी परभावती तिका माहरै जीवरी जडी, पिण स्त्रीजाति तरैदार छै । गिरनगरीरो राजा, तिणसु दइवरै जोग म्हारी माता नै परभावती राणी, ऐ दोन्यु रो जीव लागो । तिको सातवीसी कोसरो आतरो छै । तठै 'नितरा नितरा'[1] जावै । राति पडीया दोन्यु जायै । मोनै सूता ऊपर आषा मत्रनै छाटै, तिको अघोर निद्रा आवै । दोन्यु जणी पुठी आवै तिको आषा छांटै तरै जागु । यु मास दो[2] विता । ऐके दिन मै मनमै सोचीयो— कदे ही रातिरो सुष जाणु नही तिको कासु छै ? यु जाणि पोढिणनै सुतौ नही । तरै ढोलीया उपर घामरो पूलो मेलियो, ऊपरा सोड ओढाय दीनी नै हु अधारी जाइगा माहै बठो । तिसै पटराणि आइ आषा मत्र, सेज ऊपरा छाटचा नै पाछी फिरी[3] । तरै मै दीठो—देषा, आ अवै कासु करसी ? तरे दोन्यु सासु-वहू पोसाप करि गढ वारै नीकली[4] । हू पीण लारै नीसरीयौ । तिसै वेहु जणी सहर वारै एक वड थौ, तिण उपरा जाइ[5] वैठी । हु पिण वडरी पोपाल[6] थो, तिणमै जाय बैठो चिरत देषणनै । तिसै दौना ही मत्र जप्यौ तरे वड चाल्यौ । तिको घडी दो माहै गिर नगरी बैहू[7] जणी नगर वारै वड ऊभौ रह्यौ, जरै दोन्यु ही उतरी नगरमै चालि[8] । रात पोहर दोढ वीती छै । जरै हु पिण अलगौ थको लारै चयाल्यौ । हु पिण वाता सुणु छु ।

राजा कह्यौ—आजि मोडा क्यु आया ? राण्या कह्यौ—चद राजा मोडो सुतो । जरै राजा कह्यौ—एक वात सुणो—मारै प्रेमलालछि(छी) पुत्री छै तिणरो व्याह आजसु इकवीसमै दीन अमको तिथ गुरवाररा फेरा छै, तिण ऊपरा रात पोहर जाता पहिली दौन्यु पधारिज्यो । जरै दोन्यु हो प्रमाण कीयौ । उठी रही, हसी-रमी । अबे पाछिली[9] राति थोडी रही, जरै सीष मागी तिके चाली । हु पिण ऊणारै लारै चाल्यौ । वारै आय वड ऊ[प]रै वैठी । हु म्हारी जायगा जाय बैठो । सवद जप्यौ तरै वड चाल्यौ ठिकाणै आयौ । राण्या ऊत्तरि नगरमै चाली नै हु तिणा पहिली ऊपरिवाडै होयनै सेझ ऊपरा आय पोढचौ । तिसै राणी आय आषा छाटीया तरै राजा जागीयौ । तरै मै दिन ऊगा कागद माहे मीति तिथ लिष राषी । ऊण दिन तौ हु जास्यु, देषा, इणारो किसौ एक आदर छै ? नै व्याहरौ ष्याल-तमासौ पिण देषस्यु । यु करता ओ दिन आयौ । जरै मैं जाणतै ही दिन आथमतै समै मातासु कह्यौ—आज म्हारा नेत्र षुलै छै,

---

[1] '—' ख नितरा । [2] ख, २ऽ३ । [3] ख घिरी । [4] ख नीसरी । [5] ख जा । [6] ख. षाषल । [7] ख बेहू । [8] ख चाली । [9] ख. पाछि ।

नीद धकावै छै। माता कह्यौ—जा[1], ऊ मालीयै पधारिनै सुप करौ। तरै हु मालीयै आय ढोलीया ऊपरि घासरो पुलो मेल नै ऊपरा सोड ऊढायनै छिप वैठौ। उवा दोन्या ही रा चीतीया[2] हुवा। राति घडी ३ऽ४ जाता माहै राणी ऊपरि आई, ढोलीयानै आषा छाटीया नै नीची ऊतरी। तरै हू पिण उणारै लारै ऊत्तरीयौ। ऊवे वड माहे वैठी। हू पिण छानौ जाय छिपनै वैठौ। सासू-वहू सिणगार[3] करि अरगजा पहिरसुधा लगाय नै फूलारी माला पहिरनै गिर नगरीनै नीसरी नै वड चलायौ[4] तिके घडी २(दो) माहै पोती। तिकै तौ ऊतरी गढ माहै गई। मैं सोचीयौ—य्या दोन्यारो आदर-व्यवहार कुकरि देपणौ होसी ? जरै मै जाण्यौ—जान आई छै, तिण साथे गया कोई सुल वणै। जरै मै पोसाप करि आभ्रण[5] पहिर जान कनै[6] परदेसीं थकौ ऊभौ रह्यौ। तठै जान माहैं वीद राटो[7]-टूटौ, काणौ, कालौ, रूपहीण छै। तठै वीदरा वाप प्रमुष जान्यानै सोच ऊपनौ—राजारी वेटी तौ रभा पदमणीरौ अवतार वतावे छै नै आपणै तो वीद इसौ छै, इण वीदनै देपै तौ राजा परणावै नही नै कवारी जान पाछ[8] जाय[9] तौ भलौ दीसै नही तो काई अकल करि कोईक फूटरौ वीद हेरा, फेरा लिरायनै विदणी कवरनै सुप देस्या, पछै झप मारिनै आदरसी। यु सोचता माहे मोनै दीठौ। हू वणीयौ-वणायौ 'वीद दीसु'[10]। जरै मो कनै आय पुछीयौ—थाहरी पाघ, वोली अठारी [दीसै नहो, थारो वास कठै छै ? जरै म्है कह्यौ—म्हे तो व्यापारी छा][11], आभो[12] नगरी रहा छा। अवार थारी जान आई तरै दैपणनै आया छा। जरै वीदरै वाप कह्यौ—एक वात ऊपगाररी छै। था जिसा पुरप ऊपगारनै देह धारी छै। तरै राजा कह्यौ—तिका कीसी वात ? तरै राजा विवरा सुधी सर्व वात कही। तरै म्हे दीठो—फैरा लेसी तिणरी वैर[13] होसी नै त्यारो पिण तमासौ देपणी आवसी। जरै हुकारो भण्यौ। जद सरब पुस्याल होइ 'वीदरी पोसाष कराइ'[14] काकण-डोरा, काजल, महिदी दीधी। आभरण पहीर[15], हाथी चढाय[16], 'मोडि वाधाय'[17] चवर ढलता मुसालारै चादणै यु करता तोरण वाद्यौ। सासु आरती, तिलक कीयौ। राजा देप राजी हूवौ। जिसी कवरी बेटो छै तिसोहीज वीद आयौ[18]। घोडासु उतर[19] माहे दोढी गया तरै दासी, सहेल्या दिठौ। तिसै चवरीमै जाय हथलेवो दीयो। जरै राणी प्रभावती

---

१. ख मा। २ ख मनरा चीतीया। ३ ख सणगार। ४ ख. चालीयो। ५. ख आभरण। ६ ख. करेने। ७ ख. रादो। ८ ख में नहीं है। ९ ख. जाये। १० ख '–' वींदसु। ११ ख. [–] ख. प्रतिमें चिह्नित अश अप्राप्त है। १२. ख अभों। १३, ख वेर। १४ '–' ख वींदरो सरपाव करायो। १५, ख पहराया। १६ ख. चढाया। १७ '–' ख मोड बांध। १८. ख छै। १९ ख ऊतरी।

दीठो । लुगाया दोइ सौ[1] माहे उभी सो हला-वधावा गावै छै। त्यामै[2] उवा[3] जाण्यौ—चद राजा जिसो दीसै । लष्यण, रग, चहिन, निलाड, आष्या, सरिसो विभनो पडीयो। चद राजा पिण वडो वहूनै देषै छै। तिसै राणी सासुनै कह्यौ ! जो[4] सासुजी, वीद तौ थाहरी बैटो दीसै छै। सासु कह्यौ—अबोली रहै, सरीसा देस भरीयो छै। आगलीसु ना कहै। तिको हू देषु छु। तिसै फैरा लेता पहिली मै जाण्यौ—इणनै तौ दगौ हुसी, माहरी षवर किसी पडसी ? चुनडी ऊार तवोलसृ कोर ऊपरा दोहो[5] लिष्यौ—

अभौ नगरी चद[6] राजा, गिर नगरी प्रेमलालछी।
'सजोगै-सजोग'[7] परणीया, मेलो दईवरै हाथ ॥ १

पछे फेरा लेनै जानीवासै मभन्यौ 'गावता आया'[8]। कवरी पाछी गई। तिसै चाचलै तेडण आदमी आयो। तरै मै कह्यौ—जानीयानै कहो, माको साथ चाल जासी, मोनै सीष द्यो। तरै जानीया [राजी हूवा। जरै पारणेतरो सिरपाव वणाव कीया][9] वड जाय वैठौ। तिसै सासु-वहु उतावली सासै भरी वड ऊपरा आइ वैठी नै सवदासु वड चलायो। अभो नगरी आय थभ्यौ। सासु-वहू ऊतावलि नगरनै चाली। हुं त्या पहिली उपरवाडै होइ सेज जु रो ज्यु आइ पौढचौ। तिसै राणी आगै आइ देषै तो राजा सुतो छै, पिण वीद वणीयो दिसै ज्यु रो ज्यु छै। तरै राणि दौडि सासुनै कह्यौ—वहुजी ! थे न मानै था, पिण थाहरो वेटो वीद थो त्यु रो त्यू वेस[10], काकण-डोरडा[11], मेघी छै। अबै आपानै दोहरौ छै।

तरै माता ऊठी मो कनै आई। तरै मोसु लाल-पाल कर कठी बाधणनै हाथ घालै। तिसै हु अजाण्या गलै डोरो वाध्यौ[12]। जरै हु सुवौ होइ गयो तरै मोनै पीजरामै घालि आला माहै[13] राष्यौ। आडो तालो दीधौ। कु ची बहूरै हाथ दीनो। राति पडिया राजा करै, दोहा सुवो करि राषै। अबै वासिली वात सुणो—

जानि मिल विदनै केसरीयो वागो, पाघ, गेहणौ पहरीया[14], मोड बाध्यौ। साथे रजपूत दे पोढणनै चाचलै गयौ। तरै षोजा सहेल्या वरज्यौ पिण मोड सुधो ऊचो मालीयै गयौ। आगै कवरी देषि पूछयौ—तु प्रेतरूप कुण ? विद

---

१ ख सो-दोइसो। २ ख त्या माहे। ३ ख उणा। ४ ख जी। ५ ख दूहो। ६ ख चदो। ७ ख देव सजोग। ८ '–' ख गवावता आयौ। ९ ख [–] ख प्रतिमें कोष्ठगत अश नहीं है। १० ख वेस। ११ ख डोरा। १२ ख बाधीयौ। १३. ख. मै। १४ ख पहैरिया।

कह्यौ—हु थारो वर छु । कवरी कह्यौ—मोनै परण्यौ तिको कठै ? इण कहीयो—मजूर, चाकर राजा आगै काम सदा करै[1], राजारै हुकमसु तौ कु वस्तुरो[2] धणी हुइ जायै ? तरै कवरी राता नैण् करि महेल्या कनासु चादणीमै पोटली ज्यु वधायनै पगथीयासु गुडाय दीधो। तिको गुडतो-गुडतो हेठो आय पडीयो। रजपुत ऊभा त्या जाण्यौ—क्यु माल री गाठ आई। जोवे तो वीद राजा छै। तरै रजपूता पूछीयौ वीद हुई ज्यु कही। तरे अवोल्या छाना जीव ले न्हाठा। तिके जानमै आया नै[3] सारी विगतवार[4] वात कही। तरै [नगारो दीया विना डरता जान चढी आपरै][5] नगर गई। कवरी वात राजा-राणीसु कही। इचरज हूवौ। अवै प्रेमलाल कवरी सचीती सुपना वाली वात जाणै। वरस १ वीतो, तठै तीज आई। तरै सहेल्या कह्यौ—बाईजी ! आज तो आप पोसाप वणावो, षुस्याली रापौ। श्री परमैसरजी सहु भला[6] करसी। तरै पार-णौतरौ सिरपाव मगायौ जव दानी पोली। आगै कोर'ज ऊपरा तवोलरा आषर छै, तिकै कवरी वाच्या—

अभो नगरी चद राजा, गिर नगरी प्रेमलालछि।
सजोगे-सजोग व्याह हूवौ, पिण मेलो दईवरै हाथ ॥

ओ दूहो वचायौ, हरप पायौ। जाण्यो—म्हारो परण्यो चद राजा छै। तरै राजा सू वुलाइ[7] कह्यौ, दूहो वचायो। तरै राजा कह्यौ—पुत्री ! इणरो इलाज कासु करा ? कवरी कह्यौ—हजार १० ऽथ १५ असवार साथे द्यो, परची दीरावौ। हु तीरथरो नाम ले, अभो नगरी जाइ चद राजासु मिलु। पिण षवर ही नही छै, जीवै छै कै नही ?

यु कहे राजा हजार पाच-सात सेन्या दीधी। अठासु चाली तिका केईक दीना अभो नगरी मुकाम कीयो नै कह्यौ—बाई प्रेमलालछि भरतार-विहूणी वैरागणि छै। तिका के दिना अभो नगरी तिरथा करणनै जायै छै। अभो नगरीमै सासू, वहू राणी छै। त्यानै दास्या मेलि आसीस कहाई। तरै दास्या गई थी। घणो मनुहार कीधी नै जीमणरो कहीयौ[8] जरै पाछौ कहीयौ—चालस्या जद थाहरै रौटी जीमस्या, जरै दिन दस अठै रहिस्या, सामोसुत करणौ छै। इयु कहि दासीयानै गढ माहै जावती 'आ वाती'[9] कीधी। गावरा लोकानै राजाजीरा सर्व समाचार पुछीया। 'जरै लोका'[10] कह्यौ—वरस १ (एक) हुवौ,

---

१ ख करि। २ ख वस्तरो। ३ ख आयनै। ५ ख विगत वात। ६ ख कोष्ठगत पाठ ख प्रतिमे अप्राप्त है। ६ ख भलो। ७ ख. वुलाय। ८ ख कहायो। ९– ख '–' ख. में नही है। १० ख में अप्राप्त है।

चद राजारौ[1] दरसण कीधानै। सासू, वहू राज चलावै छै नै कहै छै—श्रीमहाराजाजी तौ गौसलपानै विराजीया छ। इसी वात सुणनै ऊमराव वेदल थका रहै छै।

अवै दासी दोय निजरवाज चतुर थी, त्यानै कह्यौ—राज जीवता-मुवारी पवर रापौ। इसी भाति कहिनै षवर करावै[2]। तठै १ महिल राजाजीरो पोढणरौ, तिणरै तालौ जडोयौ रहै[3] छै। साझ पड्या राणी जायनै तालौ षोलै छै। एक दिन कवरीरी दासोया सहेल्यारै झूलरा साथे गई महिल माहे। और दासीया तौ ऊरी आई। ऐ दौय जणी अलादी छीपनै रही। राणी माहे गई। आलौ षोल, नै पीजरो काढि नै राजानै सुवौ कीनौ छै, तिको डोरो षोलनै राजा प्रगट कीनौ। दासोया किवाड माहे सारा ही चिरत दीठा। तरै राजी हुई—राजा जीवतो तौ दीठौ छै। तिसै रात पाछिली घडी २ रही तरै राणी पाछौ सुवौ करि, पीजरा माहै घालि, पाछौ आला माहै घालि, तालौ देनै नीचो ऊतरी। तरै तिण पहिली दासीया उतर[4] नै 'आगणै आ'यनै कह्यौ—म्हे सुवारै कुच करस्या, तिणसु थे रीसावस्यो सो आज रोटी म्हे थारै जीमस्या। इतरौ सुणनै[5] सासू, वहू राजो हुई नै तयारी रसोई री करणी माडी।

दासीया 'हसती हसती'[6] कवरीनै आयनै कह्यौ—दीठी हकीकत सगली मालुम कोन्ही नै म्है जीमण ठहिरायनै आई छा, आज श्री परमेसरजी मनौरथ सफलौ करसी। तिसै सुवो १ पीजरा माहे घालि, डोरो गलै बाधि सहेली कनै छानौ रापीयौ। तिसै जीमणनै दास्या तेडा आई। तरै कवरी दासी पचास अथवा साठ साथे ले, सुषपाल[7] बैसि गढमै आई, मिली। भोजन अरौगी जरै दासी कह्यौ—बाईजी साहिब ! वार-वार अभो नगरी आपरो पधारणो न होइ नै महिल दीठा नहि, तिणसु महिल देषीजै। जीमणसु देषणो भलो छै। कवरी कह्यौ—कासु महिल देषस्या ? जरै राणी कह्यौ—दासी साच कहै छै, महिल दैष्या चाहीजै। तरै राणी साथै होय कवरीनै महिल दिषावै छै। पहिली चतुराईसु पीजरामै सुवौ दासी कनै रापीयो छै। महिल देषता-देपता दासी बोली—महाराणो ! रावलो[8] सुहणौर बाईजीनै दिषावो। देपा, किसी एक जलूस छै। तरै कवरी दासीनै रीस कीना—सुहणौररौ कासु देषसी ? ऐ महिल दैषै न छे। तरै राणी भोली होइ महिलारौ तालौ षोल्यौ, माहे गया। देषै तो महल मोटो छै। जालि, गोप घणा छै। राणी, कवरी तो आलासु निजर टाल, महल

---

१ ख राजा चदरो। २ ख करावौ। ३ ख में नहीं है। ४ ख. उतरी। ५. '–' ख में नहीं है। ६ '–' ख. हसी-हसी। ७ ख स्यावपाल। ८ ख रावालो।

पग ठाभ-ठाभ, वात पुछि-पुछि देषै छै। तितरै दासी आलारो तालो पोल पीजरो उरो लीधो, अोर पीजरो घालि दीधो, तालो दीधो। दासी पीजरो ले डेरे गई। लारली दासी बोली —वाईजी! कूचरी ताकीद छै। अठै घणी वार लागी नै आप फुरमायौ थो, तिको कामरी षुसाली[1] आइ छै। कवरी कह्यौ—बापजीरी ताकीदसु कासीद आयो दीसै छै।

कवरी डेरे आई, पोसाष करि पीजरा माहिसु सुवौ काढ्यौ, डोरो षोल्यौ। चद राजा हूवो। कवरी उठ मुजरो कीयो। चंद राजा बोल्यौ—थे कुण? इण कह्यौ—हुं गिर नगरीमै प्रेमलालछी परणी, तिका छु। थानै पीजरामै सुवा कर राष्या था, मै अकल कर काढ्या।

वासै त्या रात पडी राणी पीजरो काढि डोरो षोलै तो सुवा तो[2] सुवो छै। राणी डरती कालजै ऊकती[3] सासुनै जाय कह्यौ—वहूजी! प्रेमलालछी राजानै ले गई, आपारो मरण आयौ, वेगी वाहर करो। जरै दिन घडी दोय चढत समो दोन्यु सावली होय डेरा ऊपर राजारी आव्या फोडणनै आई। तरै[4] दोन्युही नै राजा तीरसु मारी। सुष हुवो। प्रेमलालछी मुदायत राणी हूई।

राजा चद रुद्रदेव जमाईनै कहै छै—तिण प्रेमलालछीरी[5] पुत्री थानै परणाई छै। स्त्रीरा चीरतरो पार नही। नेट भरताररो बुरो चाहे नही, वुरो चाहे तो भलो हूवै नही। मरजासी (णाथी) थे डरो मती, चैनमै रहो। समझाय राजी कर पाछा ल्याया नै राष्या।

इति श्री राजा चदरी प्रमलालछि-रुद्रदेवरी वार्ता सपूर्णं[6]।

+++++++

---

१ ख पुस्याली। २. ख रो। ३. ख. ऊकलती। ४ ख. तरे त्या। ५ ख प्रेमलालछी।

६ ख इति श्री राजा चदरी प्रेमलालछी-रुद्रदेवरी वात सपूर्णं। सवत् १८३६ रा मती चेत्र वदि १४ चद्रवासरे ॥ पडीतचक्रचुडामणी वा० ॥ श्री श्री श्री ७ श्री कुशलरत्नजी तत् शिष्य प० श्री श्री अनोपरत्नजी तत् शिष्य मुनि पुस्यालचद लिपीकृत ॥ श्री गदवच नगरमध्यं ॥ सेवग गिरधरीरी मोयी माहेसु लपी ॥

॥ श्री ॥

परिशिष्ट १ (क)

॥६०॥ अथ रीसालू कुमारनी वार्त्ता लिष्यते ॥

चोपै– प्रथमें प्रणमूं श्रीगणेश, विद्यातणो आपै उपदेश ।
सालिवाहनपुत्र रीसालू होय, सत-तपते ग्रहीया सोय ॥१

दूहा– बेटा जाया सालिवाहन, धरिया रीसालू नांम ।
वांभट भट्टनें पूछिया, नवषंड राषे नांम ॥ २
दोनूं राजा जुगतिका, दोनूं राजा सोज ।
हरषें दोय सगा हूआ, सालिवाहन नें भोज ॥ ३
छाजें बेठी मावडी, आसूडां मत षेर ।
पुत्र हुआ सो चलि गया, ऊभी मदिर घेर ॥ ४
हसानें सरवर घणा, पुहप घणा भमरेह ।
सुमाणसनें मित्र घणा, आप-तणे गुणेह ॥ ५
कस्तूरीरा गुण केता, केता कागदमे चित्र ।
नदियारा वलणा केता, केता सुगुणारा मित्र ॥ ६

राजाना लोक कहे छै—

हरि हरणा थल करहलां, नउ मर्या तो नरां ।
वींझ विस मोहा थीयां, ए वीसर से मूआं ॥ ७
दुरबलके बल राम हे, वाड षेतकूं षाय ।
जननी सुतकू विष दीए, तो सरण कुणपें जाय ॥ ८

अत्र महादेव मिल्या परिष्या करे छै ।

दया रषो धरमकूं पालो, जगसूं रहो उदासी ।
अपना तन ओरका जांणे, तो मिले अविनासी ॥ ९
एक ज घडी आधी घडी, भी आधो को अद्ध ।
हर-जन सग मेला वडो, सुकृत होय तो लद्ध ॥ १०

महादेव यो रूपेंसूं छै—

चातुरकूं चातुर मिले, ललि ललि लागो पाय ।
अलवें थकी ओच्चरे, तो माणिक मेली जाय ॥ ११

दूहा– राक्षस रूडां मारीयो, दुष देतो दुनीयांय।
सींघडीइ सालिवाहननो, रह्यो रीसालूराय ॥ २०

वार्त्ता– हवे रीसालूइ छ महीनानी फूलवती उछेरवाने वास्ते अनेक वन वाव्या। राजा मनवेगे घोडे चडी ने जगलमाहेथी रोझडीनू दूध लावी ने पावे। इम करता बार बरसनी थई। तिण समे हठीयो वणझारो जातिनो रजपूत, वणझारो कमव करता भाइइ वारचो—तू क्षित्रीवट करे तो इहा रहे अनें व्यापार करे तो इहाथी नीकलि। त्यारें हठीयो नीकलो ने सोरठ नवलपू गाम वासो नें तिहा रह्यो।

दूहा– सहस आबा सहस आंबलो, केइ डोलरीयो जाय।
हठीये सेहर वासीयो, नीकी जिहां वनराय ॥ २१

वार्ता– तिण समे एक दिन रीसालूइ मनमाहिथी नाहनू मृगनू बचू फूलवतीनें आणी दीधू। राणो साथकी गुदराण करो। त्यारे मृगसू राणीने गुदराण करता मृग मोटो थयो। त्यारे तिहाथी नीकलीनें मृगलो हठीयानी वाडीना फूल, फल षाइ जाए छे पिण पकडातो नथी।

दूहा– माली रावें सचरचो, सांभल हठीया वात।
कोइ गाटेरो मृगलो, वाडी चरि चरि जात ॥ २२
काला मृग ऊजाडका, फिर फिर पवन भषेय।
वाडी हमारी भेलतो, भलकडीयूं झालेय ॥ २३

वार्ता– मृगलो हठीयानें कहे छे—मुने स्याने अर्थें घाव करे छे।

दूहा– ओ दीसे आबा आबली, ओ दीसे दाडिम जाय।
बापें जायो बेटडो, जो मांणी घर जाय ॥ २४

वार्ता– ति वारें हठीओ घोडे चडी तिहा आव्यो। देषे तो वन विचे मेडोये फूलवती एकली बेठी छे। त्यारें हठीयो बोल्यो।

दोहा– के तू देवल पूतली, के तू घडी सुनार।
किण राजारी कूअरी, किण राजारी नार ॥ २५

फूलवतीवाक्य

केड कटारा वकडा, अबोडे नव नाग।
तिण पुरषारी गोरडी, पथीडा मारग लाग ॥ २६

हठीयावाक्य

लागणहारा लागस्ये, दीठडली म दीठ।
हइडे टेकण होइ रही, ज्यू कापड चोल मजीठ ॥ २७

फूलवतीवाक्य

हड्डू न हलावीइ, नयणा भरी म जोय।
इण नयणें जे मूआ, फिरी न आवे कोय ॥ २८

हठीयावाक्य

सज्जण दुज्जण सुध करण, प्रथम लगाडी प्रीत।
सुप देयग ससारमे, ए नयनूंकी रीत ॥ २९

फूलवतीवाक्य

नेंनूकी आरत बुरी, पर-मुष लग्ग न जाय।
आग लेवे ओरको, अपनो अग जलाय ॥ ३०

हठीयावाक्य

जीव हमारा तें लीया, पंजर भी तू लेय।
तो पर तन्न उवारकें, षेर फकीरां देय ॥ ३१

फूलवतीवाक्य

मारेगो रे बप्पडा, मृगां हदे घाव।
सैंज हमारी आस करे, तो सिर बाहिर धराव ॥ ३२

हठीयावाक्य

मेरा नांम हे हट्ठीया, मेरे हट्ठ सुहाय।
तुझस्यू आल करतडा, सिर जाय तो मर जाय ॥ ३३

फूलवतीवाक्य

सिर जाता जीव जायसे, मुझमा किस्यो लुभाय।
हो परदेशी पथीया, घर कुशलें क्यु न जाय ॥ ३४

हठीयावाक्य

ए ज्युं रीसालू रीसालूओ, हु हठीओ लाल चउहांण।
राविल वेला जे चरे, मुडसा एह प्रमांण ॥ ३५

फूलवतीवाक्य

नेंन् सै सान ज करी, हाथ विछाई सेज।
हूं राणी तू राजवी, दोनू रावें रेज ॥ ३६

हठी हठीला हट्टीया, कडि बांधी तरवार।
पक्का आंबा वींणये, काचा तें हि निवार ।। ३७

वार्ता– हठियो भोग भोगवीनें कहे छे—जो अमने सीष द्यो तो ठिकाणे जावा । त्यारें फूलवती कहे छे—

दूहा– जावत जीभें क्युं कहा, रहो तो साई वाट ।
आवे तूं ही उघडस्ये, आहे ता रथरा हाट ।। ३८

हठीयावाक्य

जाकी जासू लगन हे, ता ताके मन राम ।
रोम-रोमसें रचि रहे, नही काहुसें काम ।। ३९

फूलवतीवाक्य

सेज ऊजरी फूलू जई, इसी ऊजरी रात ।
एक ऊजरे पीउ विण, सबी जरी होय जात ।। ४०

हठीयो गयो, ति वारे पूठे रीसालू आव्यो ।

दूहा– पग दीठा पवगरा, रीसालू दरबार ।
कोइ वटाऊ वहि गयो, कोइ रीसायो घर नार ।। ४१

वार्ता– इम कही आघो रीसालू गयो । त्यारे पालेल पषी हू ता, ते वोल्या—

दूहा– आठ पषेरू छ' बग, नव तीतर दस मोर ।
रीसालूरा राजमां, चोरी कर गयो चोर ।। ४२

वार्ता– त्यारे राणी आवी ऊभी रही । राणी देषीने रीसालू बोल्यो—

दूहा– किणें आंबा झझेडीया, किणें छाटचा षूषार ।
किणें कचुआ माणीया, किणें सेज दीनां भार ।। ४३
पलिगपट्टी ढालीआं, किण ही दीना भार ।
रीसालूरा बागमा, कोण फिरचा असवार ।। ४४

फूलवतीवाक्य

मे मेरा कचुआ माणीया, मे सेजें दीन्हा भार ।
मे आंबा झाडीया, मे थूक्या षूषार ।। ४५

वार्ता– त्यारें रीसालू फूलवतीनें कहे छे—हवे ए पान चावीने नाषो । त्यारे पाटलाना पाइया आगें वलषो पडचो । त्यारे फूलवती वोली—

दूहा– **रीसालू रीसालुआ, रीसडीयां मर जाय।**
आबा पक्का रस चुए, कोइ षुणसें न षाय॥ ४६

रीसालूवाक्य

रीस अमारा माइ बाप, रीस अमारा नांउ।
सषर पक्का अंबला, रजक होय तो षांउ॥ ४७

वार्ता– त्यारे फूलवती कह्—रूठा केम वेठा छो। रीसालू कहे छे—

दूहा– **अमृतवेलो वावीओ, मृग्गो चरि चरि जाय।**
ओ मृगो मारि सोला करू, दिलरी दाझ मिटाय॥ ४८

वार्ता– त्यारे रीसालू हठीयानो पग लेई पछवाडे चाली नीकल्यो। ति वारें हठीयो सामो चाल्यो आवे छे। रीसालू पूछे—तू कुण छे रे ? त्यारे हठीयो कहे—तू कुण छे ? ओ कहे—हू रीसालू। ओ कहे—हू हठीओ छू। रीसालू कहे—क्या जावे छे ? हठीओ कहे—ताहरे घरे जावू छू। रीसालू कहे—भूडा, इम नथी जाणतो—जे कोई घणी आवस्ये ? त्यारें हठीयो कहे—

दूहा– **रेढा सरवर किम रहे, रेढा रहे न राज।**
रेढा त्रीया किम रहे, रेढां विणसे काज॥ ४९

वार्ता– रीसालू कहे—तू छे कोण ? हठीयो कहे—हू गढ गागलनो रजपूत छू।

रीसालूवाक्य

दूहा– **गढ गागलरा राजीया, क्युं चल्यो नहीं राय।**
रीसालूरी गोरीयां, क्युं मांणी घर जाय॥ ५०

रीसालू कहे—माटी थाजे।

दूहा– **रीसालू वांण सनाहीयो, करे रीस करार।**
छेकें मडी छडीया, निकस्या आरो-पार॥ ५१

वार्ता– हठीयाने मारी मासनो पावरो भरी घरे ल्याव्यो, राणी करो स्याक—मृग मारी लाव्यो छू। त्यारें ओ मास राधी, ऊपरथी घो काढी दोवो कीवो, स्याक कीधो। राणी कहे—राजा, जिमो। राजा कहे—राणी पहिला तुमे जिमो। त्यारे राणी पहिला पावा वेठी। षाता राजा कहे छे—

दूहा– **हाथ पीउ मुषमे पीऊ, दीवडा वले पीयाय।**
जीवतडा रस माणीओ, मूआं न लीधो साय॥ ५२

फूलवतीवाक्य

तें आण्यो मे भषीयो, मृगां हदा माय।
क्रपी मोरो पिउ मारीश्रो, मरूं कटारी षाय ॥ ५३

वार्ता— त्यारें रीसालू बेठी मेलीनें चाली नीसरचो। त्यारे फूलवती कहे—मुझने मारीनें जाय।

दूहा— **साद करी करी हूं थकी, चल चल थक्का पाव।**
रीसालू ऊभो न रहे, वेरी वाल्यो दाव ॥ ५४

वार्ता— रीसालू तो चाली नीसरचो। फूलवती श्रावी ठिकाणे बेठी। हवे रीसालूश्रो श्रागें चाल्यो जाए छे। एतले एक जोगी श्रागे मिल्यो। जोगीने देषी रीसालू झाड ऊपरें चडी बेठो—देषू, जोगी क्या जावे छे ? त्यारे योगीइ तलाव ऊपरे नाही साथलमेथी एक जोगणी काढी। ते देषी रीसालू श्रपना मनमे कहे।

दूहा— **योगी योगी योगीया, श्रायसडा सधीर।**
ऊची योगण पातली, काढी साथल चीर ॥ ५५

वार्ता— एहवू रीसालूइ अपना मनमे जाणी तमासो देषे छे। श्रो जोगणीइ जोगीना कह्याथी पावू कीधू। षावू जमी जोगी सूतो। त्यारे जोगणीइ श्रापणी झाघ माहेंथी एक जोगी बालक जगनाथ नामे काढचो। पछे भोग भोगवी श्रो पुरुषनें पाछो साथलमे घाली ने श्रपना मोटा जोगीने जगाडचो। ऊठो स्वामी ! हवे सारी पठें जमो। जोगी कहे—जोगणी ! तो सरषी कोइ सती नही। बाजो सकेली हाली नीसरचो। त्यारें रीसालू जइ श्राडो फिरचो। चालो सामीजी ! श्राज बाबानो भडारो छे। योगीनें तेडी फूलवतीने पासे लाव्यो। रीसालू फूलवतीनें कहे—लाडूश्रा करो। सामीनें जमाडीइ फूलवतीइ लाडूश्रा करचा। थाल भरी सामी पासे लाडू लाव्यो। सामी कहे—बाबा ! एता लाडू क्या करू। मे तो श्रकेला छू, मे पण लाडू षाऊ, तमे पण लाडू षाश्रो। रीसालू कहे—तमे षाश्रो श्रनें तमारा बे जीव भूषे मरे, ते पण श्रमनें धरम नही। योगी कहे—मे तो एकला हू। रीसालू कहे—जोगणी काढो, नही तर माथू वाढसू। त्यारे मरण-भयें जोगणी काढी। वली जोगणीपासें भयें करी बीजो बालो जोगी कढाव्यो। योगी बीजा जोगीने देषी तमासो पाम्यो। बेइ जोगी माहो-माहें लडचा। श्रो कहे, जोगण माहरी, श्रो कहे माहरी। त्यारें रीसालू कहे—लडो मा। रीसालू जोगणीने कहे—तुनें कुण प्यारो छे ? जोगणी कहे—नाहनो जोगी प्यारो। तेहनें जोगणी देइ सीप दीधी। बूढो जोगी कहेवा लागो—तें तो भूडो काम करचो, हवे

माहरी चाकरी कुण करस्ये ? त्यारें रीसालूइ फूलवतीने जोगीनें दीधी । फूलवती कहे—हठीयाने सेवीने हवे जोगी कोइ सेवू नही । त्यारें फूलवती गोष थकी पडी, आपघात करी मूई । त्यारे जोगी महादेव थइ ऊभो रह्यो । योगी कहे—रीसालू, तू क्या जाणता हे ? योगी कहे—हमारे घरमे पण ए षेल हे तो आदमीका क्या आसरा ? योगी कहे छे—

दूहा— **पांणी जग सघलो पीए, किहा इक निरमल नीर ।**
सर देषी सारस भमे, तूं कां आंणे अधीर ॥ ५६

वार्त्ता— त्यारें रीसालू जोगीने कहे—मे नाहना थका पाली हती-रोवालागो । रोई ने रीसालू कहे छे—

दूहा— **सज्जन गया गुण रह्या, गुण वी चल्लणहार ।**
सूकण लग्गी वेलडी, गया ते सीचणहार ॥ ५७
वीजलीयां चमकीयां, वादलीयां घनघोर ।
हठीओ परदेसी उठि चले, ज्यू वटाऊ ढो(ठो)र ॥ ५८

वार्ता— जोगी कहे—तू कहे तो जीवती करू । रीसालू कहे—हवे न षपे । त्यारे जोगी कहे—हवे इहाथी जा, वीजी स्त्रीनी षवर कर । त्यारे रीसालू वीजी स्त्रीनी पवर लेवाने चाल्यो । क्या गयो—जिहा धारानगर छे, तिहा सरोवरे ऊभो रह्यो ।

धारावाक्य

दूहा— **सरोवर धोया धोतीयां, आडण सूंथण पग्ग ।**
नख कर भरयो घडूलीयो, तो हि न बोल्यो ठग्ग ॥ ५९

ते तलावने विषें रीसालूनी स्त्री छे । ते पाणी भरवा आवी छे । रीसालूनें रूपवत देपी, देपवा मोही । धारा नामे स्त्री रीसालूइ ओलषी—ए माहरी स्त्री, पण धाराइ ओलष्यो नही । त्यारें ए दुहो कह्यो । मोरे लष्यो ते दूहो साभली रीसालू बोल्यो—

दूहा— **पाल पीयारी जल नवो, हींडां ज झीलेवा ।**
पण ता गन लभो पाणीआं, वी आंसु बुझ्झेवा ॥ ६०

धारावाक्यं

आछो कापड चोल रंग, माहिसु चंगो डील ।
विण षूटे षींषे नहीं, तू झलहलयोतो झील ॥ ६१

रीसालूवाक्य

भूमि पीयारी भोगणो, तूं को राजाहदी धीव ।
तुझ कारण मुझ मारस्ये, कुण छोडावे जीव ॥ ६२

देसडला परदेसडा, नही झीलणरो जोष ।
तुझ कारण मुझ मारस्ये, तो मूआं न पांमूं मोष ॥ ६३

धारावाक्य

अगर चदन करी एकठा, चोहटे षडकावूं चे(बे) ।
मुझ कारण तुझ मारस्ये, बलसू आपण बे ॥ ६४

वार्ता- रीसालू कहे—तू कोण छे ? कन्या कहे—हूं राजा मान कच्छवाहानी दीकरी छू । रीसालू कहे—तू किहा परणी छे ? कन्या कहे—सालिवाहननो दीकरो रीसालू छै, तेहनें परणावी छे । रीसालू कहे—ताहरो धणी मुझ सरिषो छे ? त्यारें कन्या कहे—रीसालू तो गहिलो सरिषो छे, बाहिर फिरतो फिरे छे, तमे तो महारूपवत छो, लक्षणवत छो । त्यारें रीसालू कहे—

दूहा- अवगुणगारी गोरडी, तिको अवगुण भाषत ।
आप पुरु[ष] नद्या करे, पर पुरुषां वादत ॥ ६५

वार्ता- रीसालू कहे—तुमें जाओ, साहमी वाडीमे जई बेसो, अमे तिहा आवीइ छइ । ते धारा कन्या तो वाडीइ जइ बेठी अने रीसालू तिहाथी राजाने जइ मिल्यो । राजा पुस्याल थयो । दरबारमे षबर पडी—जमाइ आव्या । हवे धारा कन्यानें ढूढवा माडी । कन्या किहाइ दीसे नही । रीसालू कहे—स्यू जोओ छो ? चाकर कहे—कन्या जोईइ छीइ । त्यारें रीसालू कहे—मे वाडीमे दीठी छे । तिहाथी रुपी तेडी आवी । राति पडी त्यारें सिणगार सजावी, सषी लेई रीसालूना मोहलमे गई । तिहा कन्यानें मेली सषी जाती रही । रीसालूइ जोयू— ए स्त्री केहवीक छे ? त्यारे ओरडानी साकल देई माहे सूतो । स्त्री बाहिर ऊभी रही । त्यारे धारा बोली—

दूहा- कें मूओ कें मारीओ, कें झडीयो एं मार ।
हजा हदी गोरडी, ऊभी अगण बार ॥ ६६

रीसालूवाक्य

नवि मूओ नवि मारीओ, नवी झडीओ एं मार ।
हजा हदी गोरडी, गई बग्गां घरि बार ॥ ६७

धारावाक्य

रेढा सरवर न छोडीइं, रेढां जावे राज ।
रेढी त्रिया किम रहे, रेढां विणसे काज ॥ ६८

हज सरोवर हज पीए, बगा छीलर पीयंत ।
बग्गा केतो आसरो, हजा सरता कंत ॥ ६९

वार्ता– रीसालू बोल्यो नही । त्यारें धारा स्त्री तिहाथी चाली । मेडी थकी ऊतरता झाझर वाग्गे । त्यारे रीसालूइ जाण्यू—देषू किहा जाए छे ? कन्या चाली थकी कुमतीया सोनारने घरें गई । कुमतीयो सोनार घरमे सूतो छे । तिहा सोनारनो बाप सुतो छे । तिहा जई धारा स्यू कहे छे—

दूहा– तूबी चूइ टवूकडे, भीजे नवसर हार ।
चीर पटो(ढो)ला ढह पडे, गूरषरे दरबार ॥ ७०

सोनीनो बाप कहे छे—

दूहा– राजा रूठो स्यू करे, लीये लाष बे चार ।
ऊठो पुत्र सुलष्षणा, मांणिक भीजे बार ॥ ७१

वार्त्ता– इम कही स्त्रीने मांहि लीधी । भोगवता निद्रामे प्रभात होइ गयो ।

दूहा– प्रह फूटो प्रगडो भयो, ध्रूग्रो धलो रें ।
ऊठ कुमतीया अनुमति, द्यो जिम जावू घरें ॥ ७२

सोनार कहे छे—

पाय पहिरी चाषडी, ले षेंडो तरवार ।
हो राजारो ओलगू, चली जा दरदार ॥ ७३

वार्त्ता– वेम करी चाली त्यारें रीसालू बोल्यो—

दूहा– पावडीयां चटकालीयां, कडें रलक्या केस ।
रीसालूरी गोरीया, किणें फिराव्या वेस ॥ ७४

कन्यावाक्य

वीरा कांइ वरांसीयो, साव सारी पांमू आं ।
उट विछूटा रावला, अमे नासेटु हूआं ॥ ७५

रीसालूवाक्य

रातें करहा न छूटीइ, दीहे तारा न होय ।
फिठ गमार तुं गोरडी, वर किम वीरा होय ॥ ७६

कन्यावाक्य

काठो तोडातां जणे, झोरां च्यारे दत ।
हूं राजारो ओलगू, तूं किणांरो कत ॥ ७७

रीसालूवाक्य

नासा सोहे मोतीयां, झाल्यां कांन झबकत ।
नहीं राजारो ओलगू, तू मोरी अरधग ॥ ७८

वार्ता– त्यारे रीसालूइ माथानी पाघडी ऊतारी । त्यारे राड चावी थई । रीसालू कहे—साचू बोल, राते किहा हती ? कन्या कहे—

दूहा– **पाघडीयां पचा सकल, कटारें बहु चित्र ।**
जे तू राजा पांतस्यो, देष हमारो मित्र ॥ ७९

वार्ता– पछे रीसालूइ मेली दोघी, तिहाथी ऊठी चाल्यो ।

दूहा– **रीसालू रीसावीओ, चडी चलीओ राव ।**
राजा आडो आवीयो, षून ज पर्ले लाव ॥ ८०

वार्ता– त्यारे रीसालूनो सुसरो कहे—स्या माटे जाओ छो ? रीसालू कहे—स्त्री धीज दीए तो रहा । त्यारे सुसरो कहे—तुमे कहो ते धोज दीया । रीसालू कहे—बे घडी ध्याने बेसू अने स्त्री माथाथी पाणी नामे, नाके सुद्ध रेलो ऊतरे हू वर अने ए स्त्री । त्यारे सुसरे वात मानी धीज करवा बेठा ।

दूहा– **आसण वाली बेठो रहू, पांणी नेंणा धार ।**
इस्त्रीनां एतो गुनो, बीजें पुन अपार ॥ ८१

कन्या आवी—

सोवन भारी हाथ करि, धाराइ करी धार ।
ता सोनारो आवीयो, षूनी कीयो षूंबार ॥ ८२
नेंण चूकी निजर फेरवी, पांणी पूठां धार ।
रीसालू बांणें दई, सिर काट्यो सोनार ॥ ८३
ऊठी नें ऊभो थयो, मानें केहो दोस ।
पापी पापें जायसे, माया लीजें षोस ॥ ८४
मोटाथी मोटा थीइं, मोटा षोटा न होय ।
नांढा मोटानें अडे, हाल तिणारा होय ॥ ८५
धारवती ढली करी, चचल चडीयो राय ।
सामलदेरो साहिबो, उमगीयो घरि जाय ॥ ८६

वार्ता– तिहाथी चाली भोज राजारे गाम आव्यो । तलाव ऊपरे देषे तो सामलदे पोतानी स्त्री नाहे छे । तिहा पाच सात सषी आडी थई ऊभी छे । तिहा

रीसालू पूछे–जे ए कुण छे ? दासी कहे—राजा भोजनी वेटी छे। त्यारे रीसालूइ पावरा माहिथी चारो तरफ सोना मोहरू नापी। दासीउ लेवा गइ। रीसालू घोडो लेइ जइ सामलदेनें माथे राष्यो। सामलदे लाजनी मारी पाणी माहे वेसी रही। दासी रीसालूने कहे—रे भाइ! दूरो रहे, ए राजानी वेटी छे, राजा जाणस्ये तो तुने मारस्ये।

दूहा– **बाहडीयें जल सजल, कलियल केस वलाय।**
दुवल थास्यो गोरडी, ऊची करतां वाय॥ ८७

वार्त्ता– ति वारे सामलदेइ हाथ ऊचो कीधो त्यारे रीसालू मूर्छाई पाणीमा पड्यो। त्यारे सामलदे वाहिर आवी, लूगडा पेहरी अने दासीने कहे—दासी, यू पुरुषनें वाहिर काढो, मरी जास्ये। त्यारे दासीइ काढ्यो। राजा सचेत थयो। त्यारे परिक्षा हेते राणीने कहे—

दुहा– **सरवर पाव पषालती, पावलीया घस जाम।**
जिण राजारे द(न)ही गोरडी, तिणनें रेंण किम विहाय॥ ८८

कन्यावाक्य

पाणी पी में वाटथी, तुं मुंकइ सम तुल्य।
जिण राजारी गोरडी, तिणरी पेंनी केरो मूल॥ ८९

वार्ता– त्यारे रीसालू कहे—एक वार मुझस्यू सुष भोगवो। त्यारे कन्या कहे— मारचो जाइस। रीसालू कहे—माहरू माथू फिरे छे, मुने तो काइ दीसतू नथी। त्यारे कंन्या कहे—

दूहा– **माथू फिरच्यू तो मारग थी श्रो, नहीं ऊभेरो जोग।**
जिण पुरुषनें से वरी, तिणनें भरस्या भोग॥ ९०

रीसालूवाक्य

श्रो दीसे आंबा आंवली, श्रो दीसे दाडिम द्राष।
ए सूडातणां सटू[क]डा, एकेला विचें वाट॥ ९१

सामलदेवाक्य

ए नहीं आवा आंवली, नहीं दाडिम नहिं द्राष।
नहीं सूडातणा सटूकडा, तारा माथा विचें वाट॥ ९२

रीसालूवाक्य

ऊभा थाए तो अमी झरे, धरती न झल्ले भार।

सामलदेवाक्य

तुमे परदेसी पथीया, मरता न लागे वार ॥ ९३

रीसालूवाक्य

साप ज षाधे सहु मरे, वींछी चटपट होय।
स्त्री दीठे पुरुष ज मरे, तो कुलमां न जीवे कोय ॥ ९४

वार्ता- त्यारे कन्या मार्ग लेइ सषी साथे चाली ने घरे आवी। त्यारे रीसालूइ कन्याने दृढ जाणी, राजा पासे आव्यो। राजाइ जमाइ आव्यो जांण मेडीइ ऊतारचो। सामलदे धणी पासे गई। रीसालू कमाड देइ बेठो। कन्या कहे—ए स्यू छे ? रीसालू कहे—तुमे एहवा रूपाला एतला दिन किम रह्या हस्यो ? तिण वास्ते काचू माटीनू कोडीयू पाणी माहे चारे तरफ वाट करी, पोतानी मेले दीवो थाए तो तू सती। त्यारे सामलदे कहे—हू षूणे धीज नही करू, राजाननी सभा माहे धीज करसू। त्यारे प्रभाते राजाननी सभामा आवी तिम ज कीधू। सामलदे कहे—माहरे ए धणी होय तो दीवो थाजो। त्यारे दीपक थयो। हवे राणी कहे—तू समषा, तू साचो तो आपणे प्रीत, नही तो आज थी [टू]को छे। त्यारे राजा [नी, ती] पेलाइ तो दीवो न थयो। त्यारे सभा हसी-जे रीसालू षोटो छे। रीसालू कहे छे—हू किहाइ चूको तो नथी पण एतलो थयो छे—

दूहा- **रीसालू षोटो थयो, दीवे ज्योति न होय।**
रांणी रूप नीहालीयो, कलक ज लगो मोय ॥ ९५

वार्ता- इम कहता दीवो थयो। सत्यवादी पणाथी वली रीसालू कहे छे—

दूहा- **फूलवती हठीयो ग्रह्यो, धारा ग्रह्यो सोनार।**
सील सांमलदे पालीयो, राजा भोज जुहार ॥ ९६

वार्ता- ति वारे राते सजाई भेला थया।

दूहा- **पावल ऊपल घूघरा, हीयडा ऊपर हार।**
गोरी ऊपर साहिबो, दो कलियनको भार ॥ ९७

वार्ता- तिहा रीसालू छ महिना रही पछे आपणे सेहर आवे छे। सेहर जेतले कोस दस रह्यो तेतलें राते तिहा रह्या। राते वारा फिरता, चोकीइ चोकी करता राणीनें साप डस्यो। राणी मूई। सवारे पाणीनी झारी भरी रीसालू राणीनें जगावे तो राणी मूई दीठी। त्यारे रीसालूइ पेट नाषवा माडी। हवे महादेवनें पार्वती कहे छे—

दूहा– रीसाल् रुदन करे, आंसूहारो धार ।
वेगो जाइ महेस तू मरस्ये राय - कुमार ।। ६८

वार्ता–तिहा महादेव आव्या ।

दूहा– अमी छ्डक्का नांष कर, कव झडक्का लाय ।
सांमलदे सजीव कर, रीसालुं घरि जाय ।। ६६

वार्ता– हवे तिहाथी चाली ने आपणें नगरें आव्यो । बापनें वधाई देई । सालिवाहन बेटाने दुषे रोइ आधलो थयो हतो, ते हरपी ने ऊठचो, वार साषे माथू फूटू, लोही नीकल्यू । सालिवाहन देषतो थयो ।

दूहा– माथो लागो वार साषस्यू, चष विहू हुआ सुचग ।
रीसालू सालिवाहन मिल्यो, दीओग्घाओ दङग ।।१००

इति श्रीरीसालूकुमरनो वार्त्ता सपूर्णं ।। सवत १८६० ना कात्तिक विद ८ बुद्धे संपूर्णं ।। लिखित मुनी गुलालकुसल ।। श्रीमानकूए ।।

++++++++++++++++

परिशिष्ट १ (ख)

॥ अथ रीसालूरा दूहा लिषते ॥

सालवाहन नलवाहणरा, श्रीपुर नगररा राव बे।
पुतां काज ज सेवीया, साधां हदा पाव बे॥ १
पींडत पुछणह चली, थाल भरे नल चावलां।
लीयो कटोरो घीव बे, मारे पुत्रके धिय बे॥ २
केसर कहै कस्तुरीयां, सुती कै जागत बे।
सोनां हांदी थालीयां, भीत्र वजी कै बाहिर बे॥ ३
हड हड दे मुडो हसी, नाई मेरे दाइ बे।
एक रीसालु आवीयौ, जासी सीस कटाय बे॥ ४
हड हड दे मुडी हसी, नाई मेरे दाई बे।
एक रीसालु आवीयौ, जासी सउ जलाय बे॥ ५
काला हरण उजाडरा, सरवर पांन झडत बे।
.. .., . . ॥ ६
हठीया पतसा हठ म कर, हठ हठ रमो सिकार।
. , ॥ ७
जे देषै तुं रूंषडा, तास तणा फल जाय बे।
बापे ज ., ... बे॥ ८
फेरा फीरे फीरंदर्डा, साह फिरै कै चोर बें।
कै तुं .. . , ... ॥ ९
है मैहल [ल]छवती गोरीयां, तम कीस हांदी नार।
.. .. -- पाव बे॥ १०
हैं म्हैं लछवती गोरीयां, तेरा कु .. ... ।
... ., एक प्रेम चषाय बे॥ ११
है म्है लछव .. ..., ...।
.. ... सीर, भुलां मारग बताय बे॥ १२
.. .. .., ...।
. . विच कर डडडी, पथी एथ बैसंत बे॥ १३

.. .. .., ...।
... ..., ...ल साव बे ।। १४
मारचौ मारचौ रे बा ', ...।
... .. ', ...सुपने ग्राव बे ।। १५
मे हठुवा मे .., ... ' ।
... .सार जायँ तो जाय बे ।। १६
किण ऐ ... ., ...।
राजा हदी गौरीयां, किस ह .. ' ।। १७
... ..., ..वा घर जाइ बैं ।
तोसुँ केल करांतडा, सिर जाय तो जाय बे ।। १८
... ., मे ई सींच्या ग्रजीर रूष बे ।
रीसालू हादी गौरडी, रीसालुरा दर [बार] बे ।। १९
मेरा मला भागीया, कीण भगीया ए बार बे ।
रीसालुरा वागमै, रीसालु ग्रसवार बे ।। २०
मैं तेरा माला भगीया, मैं बुदीया ए बार बे ।
रीसालुरा वागमै, रीसालु ग्रसवार बे ।। २१
सड सड सुड्या चषिया, मारचा मोर चकोर बे ।
रीसालु हदे गौषडै, चोरी करी गया चोर बे ।। २२
दस सुवा दस सुवटा, नव तीतर दोइ मोर बे ।
रीसालु हदे गौषडै, चोर करी गया चोर बे ।। २३
कीण मेरा माला भगीया, कीण घुदीया नबार बे ।
रीसालुरा मैहलमै, कीण छांटीया षषार बे ।। २४
हाथ प्रीउ मुष प्रीउ, प्रिउ दीवलै जलाई बे ।
जीवतडां जुग माणीयौं, .. ' न लाभै साव बे ।। २५
थे दीघौ म्है भष्यौ, हरणो केरौं साव बे ।
जांणुं हठुवा मारीया, मरू कटारचां घाव बे ।। २६
हरीयो होजे वालमा, होज्यौ दाडम दाष बे ।
मो नीगुणीरे कारणे, (थारे) डक बसाया काग बे ।। २७
काला मुहरा कागला, उठ परे रोजाई बे ।
मेरा प्रीउरी पांसली, (मेरा) मुह ग्रागै म षाइ बे ।।२८
' ...जोगी जोगीणा, ग्राव षडो वड तीर ।
डीघी जोगण दतली, (तैं) काढी साथल चीर बे ।। २९

जोगीया पर-भोगीया, ध्रिग जमारौ तोय बे।
ऐंठा परबत सेझमै, मैं दीठा सांमोई बे ।। ३०
रीसालु रीसालुवा, रीसडीयां मर जाय बे।
मै ई पडु इस गौषसु, मेरी देह जलाइ बे ।। ३१
पथी ए सुघड घोइया, भगो पछेवड पग बे।
नषस्युं घुडल्यौ मै भरयौ, प्रेम न बोल्या वुग बे ।। ३२
भुम पराई भोगणै, (तुं) राजा हांदी धीय बे।
तो कारण मो मारजै, कुण उगारे जीय बे ।। ३३
भुम पराई नै परमडली, नही बोलणका सग बे।
तो कारण मो मारिजै, मुयां न पाऊ आग बे ।। ३४
चदरण-काटे चह रचुं, करू ज अमर नांव बे।
मो कारण तो मारिजै, (तो) बलु पथी गल लग बे ।। ३५
कड कड वाहु काकरा, लागई लाल किवाड बे।
कै मुया कै मारीया, कै चपीया आहार बे ।। ३६
रीसालु हदी गोरडी, उभी भीजु बार बे।
न मुया न मारीया, न चपीया आहार बे ।। ३७
तुं राजा हदी गौरडी, (क्युं उभी) वागा हदै बार बे।
(न मुया न मारीया, न चपीया आहार बे)
लबा पतला कुंण सा, (तेरै) गया गिलोला मार बे ।। ३८
पटुवा महता गांवरा, न कर हमारो तात बे।
ले जाउली राउलै, षुटसो मांरै हाथ बे ।। ३९
रूपा सोनानी रूप रज, मोती अधिक वरणाव।
उठो सोनी पातला, उपर मेरो मेह ।। ४०
एक दीया तौ दोय दोयां, दोय देस्या तो च्यार बे ।। ४१
पोह फाटो पगडो हुवौ, घुवो धवलहराह।
उठ कमतीया मत दै, (अब) वघु क जांह घरांह ।। ४२
पैहर हमारा लुघडा, पाचै डाब अ हथियार।
चोहटै नीसर मचकती, कूण कहेसी घर नारी ।। ४३
चांषडीयां चटका घणा, कडयां रूलांता केस।
मा मरदांरी गोरडी, (थनै) किणै कराय वेस ।। ४४
भोलै भुलौ रे वालभा, नैण तर्णे उणीहार।
रात ज करहा [उछरे], ज्यांरा म्हे ए वालभ ।। ४५

रात ज करहा न उछरे, दीहा न तारा होई ।
...   . , वर क्यु वीरा होई ॥ ४६
सोनी हृदा दीकरा, अवसर न षेलो ' · · ।
उपर चरु चढावीयो, धड दावीयो पयाल ॥ ४७
सीर अमारै अमी झरै, पगमे .... पयाल ।
सोनो लेसु लोडीयो, अव कहा करेलो राव ॥ ४८
नारू तीषा लोयणां, उर चगी नैणांह ।
घरा तुट घरनी गई, कोइ नर चढीया नैणांह ॥ ४९
रीसालु रीसालुवा, ... मरीयां वहु चित ।
तु राजारो षुटीयो, जोइ हम [क]रो मीत ॥ ५०
सरवर पाय पषा[लता]· पाइल कीस झाई ।
जीण पुरषरी गोरडी, जीण क्यु रैण विहाय ॥ ५१
..   ·   ......, मो तो किसो ज तोल ।
हु जिण पुरषरी गोरडो, ...राषी पाइ मुल वे ॥ ५२
पाइ मुका   .. ,   ...   ·   ।
जीणरा मुहडा आगै, तो सरी...   ... ॥ ५३
...   ...,   ~ ... · तो आतम लोई ।
मो सरीषा दोय   .... ..   ॥ ५४
सराहीयै टुक दती, षड ·   · · ·   ई ॥ ५५
काई योवन मैंमतीयां, काई जोव   ... ।
      ·   .. ,   · चड़कातां वाइ ॥ ५६
ना जोवन मैमतीयां,   · ·   .. ।
..   .., ... , करतां वांह ॥ ५७
अवे आंवा उवे आ ,   ·   .. नव मोर ।
उहा वीच कर डडडो, पथी उवे ही चोर ॥ ५८
जल ही उढ · हरण, जल सोहै वीर वे ।
जो तु हुवै रीसालुवा, पथी आंव पधार वे ॥ ५९
फुलमती हठीयै घरी, धारू घरी सोनार ।
सवलदे सत राषीयो, राजा भोज विचार ॥
मेगलसी मुहता आव घरे, देउ गला रो हार ॥६०

॥ ईति श्रीचदकुंवर रीसालुरा दूहा सपूर्ण ॥

परिशिष्ट २ (क)

"बात बगसीरांमजी प्रोहित हीरांकी"

पद्यानुक्रमणिका

दोहा—अनुक्रम

क्रमाङ्क	पृष्ठाङ्क पद्याङ्क
अ	
१ अठै निवाई उपरै,	७-५५
२ अतबल चचल सबल अति,	१७-१३६
३ अतरै अदभुत आबियो,	६-७१
४ अपछरमैं ओर न यसी,	४२-२६५
५ अबै झरोखै ऊतरचो,	२७-२२७
६ अभैराम हीरा अवर,	४३-३११
७ अभैराम हीरां अवर,	४४-३१६
८ अरज करत हीरां अधिकै,	२५-२१५
९ अरज करू चालो अबै,	२३-१६१
१० अरज करू छू आपसु,	४६-३४४
११ अरज लिषी छै वालिमा,	३४-२५३
१२ अरघ निसा आई अली,	२३-१६०
१३ अवर त्रिया मिल येकठी,	४२-३०२
१४ असवारी छब अधिक,	१७-१३८
१५ असवारी हद वोपियो	२४-१६५
आ	
१६ आज भलाई आविया,	२४-२०५
१७ आप जोड देज्यो अबै,	१६-१५३
१८ आप तणी आधीनता,	४८-३६६
१९ आप नहीं जो आवस्यो,	२०-१६६
२० आप नहीं जो आवस्यो,	२०-१६५
२१ आप पधारीजै अबै,	४४-३२६
२२ आप बडा छौ ईसर,	४८-३७७
२३ आप बिना होये न असी,	४०-२७६
२४ आभूषण आरभयो,	२२-१७३
२५ आभूषण करस्यां अवस,	१३-६४

क्र०	पृ० प०
२६ आभूषण झमकत ऊठी,	४-२६
२७ आरभ उछव गवर,	१६-१३२
२८ आलीजो छिब अगमैं,	१६-१५४
इ	
२९ इण विध सूरज आथयो,	२१-१७०
उ	
३० उण गिरवर पै आयेकै,	८-६२
३१ उण पुल कन्या अवतरी,	२-१३
३२ उदयापुर निकसी गवर,	१५-१२५
३३ उदयापुर पति इँदसो,	१२-६२
ऊ	
३४ ऊठ चाल्यो घर आगणै,	४७-३५८
३५ ऊडघन अवर छबि अधिक,	४-२३
३६ ऊतर आयो आगणै,	४५-३४१
३७ ऊदयापुर चढियो अवस,	१०-८२
३८ ऊवयापुर राजै ईसो,	२-१०
३९ ऊदयैपुर निकसी गवर,	३५-२५६
४० ऊभी सनमुष आयकै,	२५-२१०
ऐ	
४१ ऐक ऐकतै आगली,	१०-७६
४२ ऐ धुलो छिब सय अतै,	१६-१५२
अ	
४३ अक छोड प्रोहित उठचो,	२६-२१६

क्रमाङ्क पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

आं

४४ आनन सपियांको अवर, १५-१२४
४५ आंबा पोहो रत छवि अधिक,४२-२६६

क

४६ क्रोध कर राणो कह्यौ, ३१-२३८
४७ कए वडारण केसरी, ४४-३२०
४८ कटक विकट घण थट किया,३२-२४५
४९ कमर कटारी असी हया, २४-१९६
५० कर गमण तव केसरी, ४५-३३५
५१ कर जोड्या राधाकृष्ण, २०-१५७
५२ कर जोडी सुभटा कह्यौ, ३१-२४३
५३ कर जोडी हीरा कहैत, २६-२२१
५४ कर जोडे येकण कह्यौ, १०-७३
५५ करणफूल मोती कनक, २२-१७७
५६ कर पकडी इम कहत है, ४६-३४२
५७ कर फैटो तजि कमरको, ४७-३६६
५८ कर हीरा डोली करग, ४३-३०५
५९ कर हुता पाछै करै, १८-१४०
६० करि गमण अब केसरी, १८-१४५
६१ करो पमो हीरा कहै, ४८-३७४
६२ कला प्रकासत दीपकी, ४९-३८२
६३ कह्यो आपकी घायकू, ३-१६
६४ कह्यौ वडारण केसरी, ४५-३४०
६५ कह दीजे तु केसरी, २०-१६७
६६ कहियो हीरा इम कथन, ४५-३३९
६७ कहु ता दोनो कुरव, ४९-३८३
६८ कहूँ छद चद्रायेणा, ४९-३८२
६९ कहैत वडारण केसरी, १९-१५६
७० कहै दीज्ये तु केसरी, ४५-३३४
७१ कहै वडारण केसरी, ४५-३३६
७२ कहै वडारण केसरी, ४६-३५२
७३ काई नाव क जातिय्या, १८-१४६

क्र० पृ० प०

७४ कामल भुज अणवट किनक,२२-१८२
७५ कामातुर हीरा कहै, ६-४१
७६ किनक मुद्रिका वज्रकण, २२-१८४
७७ कुच ऊपजे काची कली, ३-१६
७८ केसर अग्र कपूरको, ४३ ३१०
७९ केसर होद भराय कर, ४३-३०३
८० केहर वतलायो कना, ९-६८
८१ केहर येक कराल, ९-६६
८२ कोमल तन पर जोर कर, ४६-३४९
८३ कोयल सुर मिल नायका, १५-१२९
८४ कज कठ त्रेवट किनक, २२-१७९
८५ कज प्रफुलत सोभ कर, ४२-२९८

ग

८६ गड गड दडी गुलावकी, ४५-३३१
८७ गहर प्रजक सुगध अति, २४-२०६
८८ गेंदा छटक गुलावका, ४६-३५१
८९ गोटत गेंद गुलावकी, ४५-३३२

घ

९० घणहर जल वरषत घुरत, ६-४६
९१ घणे परकार हीरा अठै, ७-५३

च

९२ चकोर चाहे च दकू, २३-१९२
९३ चत्र मास नीला चिरत, ४१-२८९
९४ चमकण लागी चद्रिका, ६-५१
९५ चमकत वीज अचाणचक, ६-४७
९६ चले प्रोहत नाव चढि, ३१-२४०
९७ चवदह वरसं अधिक चित, ४-२१
९८ चहुँ तरफा डगर अचल, १०-७७
९९ चहूवांण चढै चापडै, ४०-२८१
१०० चातुर बोल्यो सुप वचन २५-२०७

क्रमाङ्क पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

१०१ चाल विलूबी इधक चित ४८-३७१
१०२ चाली घाट चीरवैं ४०-२८२
१०३ चाले नाव-जिहाज चढ ३०-२३६
१०४ चाहत चातुर अधिक चित १-३
१०५ चाहत जोवन अधिक चित ५-३६
१०६ चाहत वेगी इधक चित ४४-३२३
१०७ चाहत हीग छैल चित ७-५४
१०८ चैत मास पष चादणै २-१२
१०९ चैन बुझाकड मुष वचनै १०-८०
११० चद्रहार ऊपर चमक २२ १८१
१११ चदमुषी म्रगलोचनी ४३-३०९
११२ चादस्यघ बोल्यो बचन १०-८१

छ

११३ छको हीरा मदन छकि ५-१०
११४ छुटत वडी गुलाब छिब ४४-३१४
११५ छुद्रघटका अधक छव २२-१८६

ज

११६ जगमग आभूपण जडे १०-७५
११७ जगमदर जगनीवासमैं २८-२३०

ड

११८ डसरा एक सुडाल १-१
११९ डोली झपटी डाव कर ४५-३३३

त

१२० तरवर पत चदणत ४२-२९४
१२१ तिलक तेल तबोल मिल २२-१७५

द

१२२ दरगहै राणाकी दरस ३०-२३७
१२३ दरवाजै प्रोहित दूगम २४-२००
१२४ दाव कर बाही वडी ४६-३५०
१२५ दावत अतबल कूदियो २४-२०१
१२६ दिल कपटी मैं देषिया ४६-३४८
१२७ दुलही बनड़ो देषता ४-२९
१२८ देषत घुंघट ओट दे ४४-३१५
१२९ दपत दरस प्रजक पर २५-२१३
१३० दपति विलसो सुष मदन ४८-३७८

ध

१३१ धजा फरकत दल सघर १५-१२८
१३२ घन जोबनका थे धणी ३४-२५२

न

१३३ नर नारी सोभत निपट १५-१२७
१३४ नरषो मो पर शुभ नजरि ४६-३४३
१३५ निरमलगढ बूंदी नगर ८-६०
१३६ नील विडग कुद्यो लहर २४-२०३

प

१३७ प्यारा पलका ऊपरै २५-२१६
१३८ प्यारी आवो प्रजक पर २५-२०८
१३९ प्यारी कर गह प्रेमसु २७-२२६
१४० प्यारी चाहत महल पर ४४-३२२
१४१ प्यारी छै अत प्राणकी ४९-३८९
१४२ प्यारी पीतम हेत पर ४८-३७९
१४३ प्यारी पीव प्रजक पर २५-२१४
१४४ प्यारी फाग बसत पर ४३-३०७
१४५ प्यारी राज पधारज्यो ४४-३२१
१४६ प्यारी सागर प्रेमका ४६-३४५
१४७ प्रगट महल जल तीर पर १०-७८
१४८ प्रीतम प्यारी पेम पर (अर्द्धाली) ४९-३८७
१४९ प्रोहित अब चाल्यौ प्रगट ३०-२३५
१५० प्रोहित आयो पेमसु १९-१५१
१५१ प्रोहित ईरा विधि पूछियो १०-७४
१५२ प्रोहित कहियो पदमणी ४८-३७६
१५३ प्रोहित कीनो जग प्रगट ९-७०
१५४ प्रोहित प्यारीनै कह्यो २६-२१७
१५५ प्रोहित प्यारी षेल पर ४३-३०४

क्रमाङ्क		पृष्ठाङ्क पद्याङ्क
१५६	प्रोहित बोल्यौ बिल प्रबल	३१-२३८
१५७	प्रोहित मगत पछाणियो	३४-२५४
१५८	प्रोहित रमक प्रजक पर	३५-२११
१५९	प्रोहित रांण प्रचंडका	३१-२४२
१६०	प्रोहित सुरभी पेमसु (अर्धाली)	२०-१६१
१६१	प्रोहित हीरां कर पकड़	४८-३७५
१६२	प्रोहित हीरां पेखीयो	३५-२६०
१६३	पर घर फरी न प्रीतड़ी	२०-१६०
१६४	पहुपीनग विधविधि प्रगट	२२-१८३
१६५	पाय पोस मोती प्रगट	२३-१८८
१६६	पिचकारी कर जोर पर	४५-३३०
१६७	पिचकारी भटकत प्रगट	४५-३२८
१६८	पिचकारी धारां प्रगट	४५-३२९
१६९	पिचकारी मो ऊपरे	४५-३२७
१७०	पिचकारी लागि पीयकै	४५-३३८
१७१	पीओर्न आई प्रगट	१५-१२३
१७२	पीतम कारण पदमणी	४७-३५९
१७३	पीतमर्थ उर सेझ पर	४९-३८७
१७४	पीतम प्यारी सेझ पर	४९-३८५
१७५	पूरब प्रीत हीरां तणै	६-४४
१७६	पंकजमुख पर गीतपट	४-२७

फ

क्रमाङ्क		पृष्ठाङ्क पद्याङ्क
१७७	फीकै मन फेरा लीया	५-३२
१७८	फुल श्रगार प्रजक पर	४९-३८०

ब

क्रमाङ्क		पृष्ठाङ्क पद्याङ्क
१७९	बकि चितवन सत बदन	४३-३०८
१८०	बचन अफटा नहीं भया	४७-३५४
१८१	बणियाणी मातुर घणी	२०-१५९
१८२	बणी सहेली बाड़िया	२७-२२८
१८३	बतलायां नहीं बालमा	४७-३६७
१८४	बन उपवन फूलत बिपन	४२-२९७
१८५	बनडाको देख्यौ बदन	४-२८
१८६	बले येम कहियौ बचन	४४-३२५
१८७	बहुत अगाड़ी बीरबर	२४-१९८
१८८	बाटी तोनै जीभड़ी	४७-३६१
१८९	बालक लीला बालपण	३-२०
१९०	बिध-बिध कहियौ बयण	४४-३२४
१९१	बिगकुल बोल्यौ मुख बचन	२६-२२५
१९२	बिहद लोह बंजावयो	४०-२७७
१९३	बोल्यो प्रोहित बागमें	१६-१३०
१९४	बोल्यो प्रोहित बेलिया	१६-१३१
१९५	बोल्यौ प्रोहित बेलिया	१०-७९
१९६	बोल सुणत तब कंवरी	२०-१६१
१९७	बक भुकट बोली बयण	४६-३४६
१९८	बध पकड़ त्याय बिहुव	४०-२७५

भ

क्रमाङ्क		पृष्ठाङ्क पद्याङ्क
१९९	भली बात प्रोहित भणै	३१-२४४
२००	भाभी इम कहियो बयण	४-२५
२०१	भाभी बोलत बहुत भर	४३-३१३
२०२	भामण प्यारी अंक भर	४९-३८६

म

क्रमाङ्क		पृष्ठाङ्क पद्याङ्क
२०३	मगमद कुकुम चन्द मिल	२२-१७८
२०४	मयनातुर मेरो मरण	६-४८
२०५	मधुर बचन छवि चद मुख	४-२२
२०६	मिणधारी घिसतै उछर	१८ १३९
२०७	मिलै कसुंबा माजमा	४९-३८४
२०८	मीठा बोलो बचन मुख	४८-३७२
२०९	मुगत मग सिंदूर मिल	२२-१७६
२१०	मैं तो कागद मेलयौ	४०-२७८
२११	मंनु घणी विमुख मन	४७-३६०
२१२	मोद न हीरां कुव मन	५-३३
२१३	मो वणवृत रायो मुवे	४०-२७९
२१४	मो मन मलियो बालमां	२६-२२४

क्रमाङ्क		पृष्ठाङ्क पद्याङ्क
२१५	मो मनमें रसियो भवर	१८-१४४
२१६	मोर सबद लागे विषम	७-५२
२१७	मजण नीर गुलाब मिल	२२-१७४
२१८	माणत पदमणि महलमें	८-६३
२१९	मानत फूल सुगध मिल	४२-३००
२२०	मानै तागो बालिमा	४७-३६२
२२१	मानोजी रसिया भमर	४७-३६३
	य	
२२२	यण प्रकार प्रोहित अठे	४२ २९२
२२३	यण प्रकार सोहत महल	२१-१७२
२२४	यम फद फसिया प्रगट	२०-१६२
	र	
२२५	रची गोठ यम रावनु	४०-२८४
२२६	रची बाहादर रावनैं	४०-२८३
२२७	रछ्यक आये गवरकै	१५-१२६
२२८	रतनावत दिल रोसमें	३१-२३९
२२९	रमत फाग वीत्यौ रिसक	४४-३१७
२३०	रमस्या सेजा रगरली	२४-२०४
२३१	रसक बृतीकी सीत रुत	४२-२९३
२३२	रहस्यां बूदी सासरं	४७-३५७
२३३	रहै जतं उ राजवी	१९-१४९
२३४	राचत कछु सिंगार रस	५० ३९३
२३५	राज कीयो छं रुसणो	४८-३६८
२३६	राजत ईधक वसत रुत	४२-२९६
२३७	राज तणी वा रायघण	४५-३३७
२३८	राव कहै जीती किघू	४०-२८०
२३९	राव बाहाद्र सुभट रण	३२-२४६
२४०	राषीजं षांवद सरस	४८-३७०
२४१	रूप गरबकी राज वणि	४७-३५५
२४२	रग भरत प्रोहित रसक	४३-३०६
२४३	रग रात बीती असक	२६-२१८
२४४	रग घ्यालरा ध्याप गत	४४-३१८
	ल	
२४५	ललवत किनक सहेलडी	२२-१८५

क्र०		पृ० प०
२४६	ललित बक छवि लोयणा	४-२४
२४७	लारे मोने लेवज्यौ	२६-२२२
२४८	लाल दरोगो बोलियो	१९-१४७
२४९	लाष बात चालू नही	४६-३५३
२५०	लाषा बाता लाडला	४७-३६५
२५१	लिषमीचद किरति लीयें	२-११
२५२	लोभी देषो लोयेणा	४७-३६४
	व	
२५३	वण सहेली वाडिर्यां	१०-८३
२५४	वणे सहेली वाडियां	१२-९१
२५५	वरषत घणहर वीषरचौ	६-५०
२५६	वांत सही यण विधि वणी	४९-३९१
२५७	विमल किनकके विछये	२२ १८७
२५८	वुवयापुर राजे यधक	२७-२२९
२५९	वृछ सरोवर छवि विमल	१९-१४८
२६०	वेग तुरगम अति विहद	२४-२०२
२६१	वैले मिलीजे बालिमा	२६-२२३
	ष	
२६२	षल-षायक रण-षेतमें	१२-८९
	स	
२६३	सगता चांडा सग सुभट	२९-२३१
२६४	सपतलडी कचन सुभग	२२-१८०
२६५	सब सोलैं सणगार है	१३-९५
२६६	सरस पियाला साथमैं	१६-१३३
२६७	सरस लुटत रत-रगको	४९-३८८
२६८	सषी बचन पणि विघ सुण्यौ	५-३७
२६९	सहर कोट आयो सिघर	२४-१९९
२७०	सात बरसा की समय	३-१५
२७१	सामा भेटण सासरं	४७-३५६
२७२	सावण घर्णो सिराविये	९-७२
२७३	सिरपै वारूं साहिबा	२०-१६३
२७४	सुगत बडारण केसरी	१९-१५०

क्रमाङ्क		पृष्ठाङ्क पद्याङ्क
२७५	सुण वडारण केसरी	१८-१४३
२७६	सुण वडारण केसरी	४८-३७३
२७७	सुभटा जसा समाजमैं	११-८८
२७८	सुभटा थट सनमुष मले	३३-२५०
२७९	सुष-सज्या तडव सुणी	८-६४
२८०	सुष-सज्या समझै नहीं	५-३४
२८१	सुष-सज्या सझ्या सनय	४४-३१९
२८२	सूती सहै सहेलिया	६-४९
२८३	सोहै जेहा जेहा सुभट	१२-९०

ह

२८४	हुकमल हल हुकलै	३३-२४७
२८५	हय चढियो पर घय हुक्म	२३-१६४
२८६	हलकारा मालुमै करी	३३-२४६
२८७	हसज्यौ फसज्यौ पेलज्यौ	२०-१६४
२८८	हसत लसत निरषत हरष	४९-३८१
२८९	हिया पीतम परहरत	२६-२२०
२९०	हीराके आयो हरष	१२-९३
२९१	हीरा चाहै छैल चित	६-४३
२९२	हीरा चिंता परहरी	३-१९
२९३	हीरा चिंता परहरो	३-१८
२९४	हीरां चिंता परहरो	५-३५
२९५	हीरां जोवत मन हरष	५-३८
२९६	हीरा तणी सहेलिया	५-३६
२९७	हीरा बगसीराम हित	५०-३९४
२९८	हीरां मद आतुर भई	६-४२
२९९	हीरां मदन विलास हित	२४-१९७
३००	हीरा मनमे अति हरष	१९-१५५
३०१	हीरां मनमे अति हरष	४२-३०१
३०२	हीरा मन व्याकुल भई	४-३०
३०३	हीरा मन वाकुल भई	४-३१
३०४	हीरां यम लषियो हरष	२०-१५८
३०५	हीरा व्याकुल थरहरत	२५-२१२
३०६	हीरांसु कही केसरी	२१-१६८
३०७	हीरां सुणज्यौ हेतकी	४६-३४७

क्र०		पृ० प०
३०८	हीरा सूती महलमें	६-४५
३०९	हू तो चाकर हुकमकी	३४-२५१
३१०	होद नीर चादर वहत	२९-२३२

छप्पय अनुक्रम

अ

१	अव निवाई ऊपरें, हीरा दिल प्रोहित	४१-२८५
२	अव वरषा रत घुमत घुमड घनहर घूमत	४१-२८७
३	अव सूरज्य आथम गहर, सुनो वति गजिये	२१-१६६
४	अले वेलिया असवार यण विध देषण आई	१८-१४१

उ

५	उदयापुर त्रिय अवर विवध मन राग वणावत	१५-१२२

ऊ

६	ऊट चढै आकलो यम राईको आयो	३६-२६२
७	ऊसन धरण आकास, उसन चल पवन असभवै	४२-२९१

क

८	कर रावण केसरी चलत मन वात हरष चित	३४-२५७

ग

९	गिगन मलत घन घोर चपला चमकारत	४१-२८८

घ

१०	घोडा भड घमसाण पाषरा बगतर पूरा	१८-१४२

क्रमाक पृष्ठाक पद्याक

च

११ चढे रीस चष चोल मुछ मिल
अगट अमावत ३१-२४१
१२ चोपदार सुण बचन प्रोहित
ऊसस ३०-२३४

ज

१३ जगमिंदर इम जोय राण
भीमेण विराजत २६-२३३

घ

१४ घमकत पग घुघरा तडत
दमकत ४३-३१२
१५ घरण फोड घडे घडे गहिर
गडे त्रमागल ३६-२६५

प

१६ प्यारी महल प्रजक पर
सपुष सेज फूल पर ४१-२८६
१७ प्रोहित यण प्रकार साथनै
वात सुणाई २३-१६३
१८ प्रोहित लषियो प्रगट आज
तीजा आडवर ३४-२५६

व

१६ वा वात करतां यतै पणि
प्रोहित आयौ ३६-२६३

भ

२० भीमराण सांभले कहर
प्रजले कोप कर ३६-२६१

म

२१ मरत नीर विन मीन आप विन
मो दुष ऐसो ३४-२५५

र

२२ रवै वाहादर रावै गयणत्र
घ ट गरज्यै ३३-२४८

क्र० पृ० प०

२३ रण केते नर रहे जिते भड
सनमुष जुटे ३८-२६६
२४ रति बिलास अनुराग करत
निस-दन कंतूहल ५०-३६०

स

२५ सषियां तणे समाज ललित
गहणां नीलवर १४-१२१
२६ सीतल जल थल सरस
पवन सीतल ऊतर पर ४१-२६०
२७ सुगात गवर सक्रमी झणण
आभूषण झमकत २० २०६

ह

२८ हणण माच हैमराण गणण
घोषा रवै डूगर ३६-२६४
२६ हीरा मनमैं अति हरष
विवध पोसाष बनाई ३४-२५८

कुण्डलिया अनुक्रम

उ

१ उण गदीक ऊपरे राजत
बगसीराम ११-८६
२ उदिय्यापुरकी छब अधिक
सपति नगर समाज १-४

च

३ चहुं तरफां बणि चौहटां,
घटा वुतग अषड २-७

त

४ तीज तणे उछव तटै,
सांचौ घणौं वषाण ७-५६

द

५ दरवाजा बणिया दुगम,
कीना लोहकपाट १-५

क्रमाङ्क पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

प

६ प्रोहित वूंदी परगियौ, रसियौ वगसीरांम ७-५८
७ पीछोलाको पेपवो, मान सरोवर मोज २-८

व

८ वणी विछायत वाडियां, जाजमैं गिलम जुहार ११-८५
९ वाग अनेक वावडी, अदभुत फूल अपार २-९

र

१० राजत वगसीरामकं, अभग सुभट थट येम ११-८७

व

११ वजे त्रमक घौसर वजे, नौवति सवद निराट १-६

स

१२ साथ समाजत घरा सुभट, अग्राजत आथारा ७-५७

भुजगप्रयात-अनुक्रम

उ

१ उदार विशाल वर्ण भाल अग १३-९९

क

२ फरं हाव-भाव कटाछं फिलोल १४-११९
३ किये फूल सप्पेद वेर्णीक रगे १३-९७
४ कुच कचुकी रेसमी तारकद १४-१०९

च

५ चढ़ें ऊसर घासना अग चोजं १४-१२०

क्र० पृ० प०

ज

६ जरीतारपट्ट विराजे जहूर १४-११५
७ जु हारं मिणी पुचिका हाथ जोपं १४-१११

द

८ दुतं लोचनं काजलं रीष दीनें १३-१०२
९ दुत दतकी दाडिमी हीर दाणं १३-१०४

घ

१० घरे वात निरधार छडीदार ध्यायौ २८-२३०

प

११ पट यैठ हीरा सनान प्रसंग १३-९६
१२ पद कोमल लाल एडी प्रकासै १४-११६
१३ पुणै मागकी ओर सोभा प्रकार १३-९८
१४ पुनीत नप रग मैंदी प्रकासै १४-११२

फ

१५ फवै वाहे वाजू मिणी जोति फूलै १४-११०

व

१६ वणी कठसोभा विसाल वसेषा १३-१०७
१७ वणै नैण भूहार भाल विचत्र १३-१००
१८ वलै कठकी सोभना कीण भास १३-१०८
१९ विचै नासिका अग्र मोती विराजै १३-१०३
२० विणे मोचडी हीर मोती विचित्र १४-११७

क्रमाङ्क पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

म

२१ मिणी माणक हेम ताटकं मडै १३-१०५

२२ मुष मडल जोति सोभा विमोह १३-१०६

ल

२३ लसै लोचन षजन मीनलीला १३-१०१

व

२४ विभूषै तरीर पट नीलवृ दं १४-११८

स

२५ सुरग दुती नाभि गभीर सोहै १४-११४

ह

२६ हिये फूलमाल कीये हीरहार १४-११३

छन्द झमाल-अनुक्रम

प

१ प्रोहित बगसीराम भमर छै कीतको ७-५६

गाथा चोसर-अनुक्रम

ड

१ डसण येक गजमुप लबोदर १-२

चद्रायणो-अनुक्रम

ऊ

१ ऊदयापुरमें आयकै प्रोहित येरसों १०-८४

त्रोटक-अनुक्रम

अ

१ अब राव बाहादर कोप कियू, लल-

क्र० पृ० प०

कारत सेल त्रभाग लियू ३७-२६६

२ तीन प्राक्रम येक तुरगम यू, भण नाम स नीलविडगम यू १६-१३५

छन्द उधोर-अनुक्रम

अ

१ अति मीठा वोलत्त मोर, सुभ करत्त कोयेल सोर ८-६१

२ अदभुत सुभट अपार, उतग अमल उदार १६-१३४

भ

३ भणिया किम विडग, अदभुत प्राक्रम अग १७-१३७

गीत-अनुक्रम

ऊ

१ ऊजालै म छुठै जगं क्रोधवान मह वोला वीर जग ३६-२७१

घ

२ घरे घण कटक चीखं घोटे चढि झाला चहूवांण ४०-२७४

३ घुरे त्रमाला मचायो जंग मेवाड चीरवो घाट वुयो जिण ३६-२७०

च

४ चद्रहासाकै षागां प्रचडा झुड बीर चालै ३६-२७२

ब

५ बागी घमचाल कटक वो हूऐ बैल कढि किरमाल कराली ३७-२६७

प

६ परे गोवालानु मार महै फूलधारा षेत घरैगो ३६-२७३

क्रमाङ्क　　　　पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

छन्द पधरी-अनुक्रम

उ

१ उपजी कोडी धज घरि आय, लषमी-चद मन उछव लगाय　२-१४
२ उपत जगमदर जगनिवास, पर दोहन-को शोभा प्रकास　२६-२३१

क

३ कोप्यो क अवँ प्रोहित कराल, जग्यो क सोर ढिग अगन ज्वाल　३७-२६८

क्र०　　　　पृ० प०

ब

४ बतलायो ईस केहरि वडाल, कोप्यो क आय जमजाल काल　६-६६

भ

५ भयो प्रातकाल परकास भान, वन पषीजन बोलत्त वाण　६-६५

व

६ वणि महल सपतषड गगनवाट, कण हेम जटत चदण कपाट　२१-१७१

परिशिष्ट २ (ख)

वात रीसालूरी

दूहा-अनुक्रम

अ

१ अगन सरण ताहरो करू　११०-२०३
२ अगर चदणरा ज(ल) फडा (टि)　११३-२८
३ अगर चदन करी एकठा (प)　२०५-६४
४ अपुत्रस्य गत नास्ती (टि)　५२-२
५ अपुत्रस्य गृह् सुन्यं (टि)　५२-१
६ अब वेगा मिलज्यो हठमला　१०६-२००
७ अब बसन्त ही आवही (टि)　१४३-७४
८ अमी छटक्या नांप कर (प.)　२१०-६६
६ अमृतवेली जो चरो　६१-११७
१० अमृत वेलो वावीओ (प)　२०२-४८
११ अवगुणगारी गोरडी (प)　२०५-६५
१२ अवे आवा उवे आ (प)　२१५-५८
१३ अहो-अहों रैणी वीगती　११६-२५३
१४ अहो रीसालू कुवरजी　१०६-१८१
१५ आइयो लेष आलाहका　१००-१५८
१६ आईयो कुवरजी आवीया　१०१-१५६
१७ आछो कापड चोल रग (प)　२०४-६१
१८ आज उजाडा देसमैं　६६-१४६
१६ आज कुवरजी रीसालूवा　१२३-२६८
२० आज मेहिल आर्छो वणो　६७-१५१
२१ आज रूपाली रातडी　१२२-२६५
२२ आज सलूणो रातडी　११६-२३१
२३ आज सूरज भल उगीयो　१३२-३०७
२४ आजूनो दिन अति भलो　६५-१४०

क्रमाङ्क	पृष्ठाङ्क पद्याङ्क
२५ आठ पखेरू छ बग (प)	२०१-४२
२६ आडा कसीया कामनी	११६-२४६
२७ आप कही सो म्हे परणीया	१२६-२८३
२८ आप षूसी पीउ पधारीयै	९६-१४५
२९ आभे अडबर बादली	११६-२२९
३० आय सजोगी ध्यानमैं	१०५-१७९
३१ आसण वाली बेठो रहू (प)	२०७-८१
३२ आसू लूधी सेणरी	११८-२४३

इ

३३ इण कारण हसीया अमे	७२-६३
३४ इण देसं तु आवीयो	७२-६२
३५ इम चिंतवता आवीयो	१०४-१७४
३६ इम टहुक्का सरला दीया	१०१-१६०

ई

३७ ईम केहर्ता आसू ढल्या	६९-५६

उ

३८ उचा महिल आवास है (टि)	७५-०
३९ उचौ मीदर मालीया	७५-६६
४० उजेणीपूर आवीया	६१-२३
४१ उठ बीडाणा देसरा	१२२-२६१
४२ उठीयौ कुवर बीवालूआ	११७-२३६
४३ उठो-उठो कुवर सोनारका (टि)	११७-५२
४४ उठो कुमार सोनारका (टि)	११८-४७
४५ उठो कुवर सुनारका (टि)	११७ ४१
४६ उठो नीबूघ्यका आगरू	१२०-२५४
४७ उत्तम जननी प्रीतडी	८३-८५
४८ उत्तम जीव हुवे जिके	१०६-१८३
४९ उतावल कीया अलूभीयै	९६-१४१

क्र०	पृ० प०
५० उद्यम साहस धैर्यं	१११-२१३
५१ उम्रावा सापीधरा	१३०-२९३
५२ उमरावा वरज्या घणा	६८-५१

ऊ

५३ ऊं एकलडी महीलमैं	९८-१५६
५४ ऊठी नें ऊभो थयो (प)	२०७-८४
५५ ऊभा थाए तो अमी झरे (प)	२०९-९३

ए

५६ ए आजूंणी रात	११६-२३५
५७ एक गई दूजी गई	१११-२१०
५८ एक छोडी दूजी छोडस्यां	११९-२४५
५९ एक ज घडी आधी घडी (प.)	१९७-१०
६० एक दीया तो दोय दीयां (प)	२१३-४१
६१ एक नर दो नारसू (प)	१९८-१४
६२ एक नारी ब्रह्मचारी (प)	१९८-१५
६३ एक षड चढ दूसरै	९१-१२१
६४ एक षड चढी दुसरे (टि)	९२-३०
६५ ए ज्यु रीसालू रीसालूओ (प)	२००-३५
६६ ए नहीं आबा आंबली (प)	२०८-९२
६७ एवडी रीस न कीजीयै	६७-४७
६८ एहनो काइ पटतरो	६२-३४
६९ एहवो माता-पिता तणो	६५-४३

ऐ

७० ऐक षड दुजे षड (टि)	९३-२६

ओ

७१ ओ दीसे आबा आवली	१९९-२४
७२ „ „ „ (प)	२०८-९१
७३ अग उमाहो कुवरजी	१३५-३२०

क्रमाङ्क पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

७४ ग्रवर तारा डिग पडै १२९-२८८
७५ ग्रहो ग्रहो कुवरजी रीसालूवा
९७-१५०

क

७६ कयारा केसर नीलडा ८५-९१
७७ कयारी केसर द्रापकी (टि) ८४-०
७८ कयु चाल्यो रे मानवी (टि) ७२-१२
७९ कडकड नापू काकरा ११४-२२०
८० कडकड वाहु काकरा (प) २१३-३६
८१ कया रसिक कविरायकी ५१-४
८२ कर चोदा दारु घणो (टि.) ९२-३१
८३ कर छीदो पयु कर पीवै (टि)
९३-२७
८४ कर छोदो पाणी पीवै (टि) ९४-१७
८५ कर ढीला घट साघूडा ९१-१२५
८६ करसू कर मेलावियां १००-१५७
८७ कवर नई को कारणै ६१-२५
८८ कवियां मन जय पामवा १४४-३४६
८९ कस्तूरीरा गुण केता (प) १९७-६
९० काई योवनमें मतोया (प.) २१४-५६
९१ कागद वाचनै भेजीयो १४०-३३९
९२ काची कन्नी मत लूवियै ८९-१११
९३ काठो तोडाता जणे (प) २०६-७७
९४ कामण कारीगरतणी ११०-२०८
९५ कामण हीयडा कोरणी ९८-१३४
९६ काम विचारीने कहो ९६-१४२
९७ कारीगर किरतारका १०८-१९१
९८ काला मुरगं कागले (टि) १०८-४४
९९ काला मुरगा कागला (प) २१२-२८
१०० काला मृग उजाडका (टि) ७०-४
१०१ ,, ,, ,, (टि) ७१-४
१०२ काला मृग उजाडका (प)
१९९-२२
१०३ काला रे मग उजाडका (टि) ७०-९

क्र० पृ० प०

१०४ काला हरण उजाडरा (प)
२११-६
१०५ काली काठल भलकीया १३३-३०९
१०६ काहा चाल्या वे राजवी (टि)
७३-०
१०७ काहा चालो गे राज (टि) ७२-८
१०८ किण ऐ॰ (प) २१२-१७
१०९ किणस्यू राजा थे रम्या ७५-६८
११० किणे ग्रांवा भ्रूकेडीया (प)
२०१-४३
१११ किसका वै ग्रावा ग्रावली ९०-११२
११२ किहा गया कुवरजी प्रभातका
८८-१०२
११३ कीण ए लोयण लोइया (टि)
९८-३५
११४ कीण मेरा माला भगीया (प)
२१२-२४
११५ कीण ही लोयण लोईया (टि)
९८-२९
११६ कुण छै वाल वडी ६२-३३१
११७ कुण तु इहा ग्रायो ग्रठै ७२-६१
११८ कुण राजा रो लाडलो (प)
१९८-१२
११९ कुमर कहैजी गोरीया ६३-३७
१२० कुमर चाल्यो सामो जवे ८१-८१
१२१ कुमर सूणनै चीतवै ६२-३३
१२२ कुलवटनी कामणि तणी ६४-४१
१२३ कुवर कहै ग्रहो हीरणजी ८३-८८
१२४ कुवरजी छाया माहरी ८३-८६
१२५ कुवरजी सोच घणो कीयो ८८ १०४
१२६ कुवरजी हुय इम कित करी
१२६-२८०
१२७ कुवर भगै घर ग्रावियो (टि)
१४०-६१

क्रमाङ्क पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

१२८ कूकड कूकू कहुकीया ११६-२५२
१२६ कूड कपटनी कोयली १३४-३१४
१३० कूडो बोलें छं सूवटो ६८-१५३
१३१ केड कटारा वकडा (प) १६६-२६
१३२ के तू देवल पूतली (प) १६६-२५
१३३ के मूग्रो कें मारीग्रो (प.) २०५-६६
१३४ केसर कहे कस्तुरीया (प) २११-३
१३५ केहनी ग्रस्त्री न जाणज्यो १०४-१७१
१३६ कै मुग्रा कै मारीग्रा बे ११४-३६
१३७ कोई न लेवैग्रा लवै १२०-२५७
१३८ कोड छडाया कागला १२२-२६६
१३९ कोरण उतराधिकरण ११६-२३०
१४० कचू कस्यो दिल हुथ कीयो ११६-२४७

ग

१४१ गढ गांगलरा राजीया (प) २०२-५०
१४२ गणपतदव मनाय की ५१-१
१४३ गाव(वे) मग्ल नारीया ६१-२८
१४४ गुणवती नारि तणा १४४-३४२
१४५ गुनेहगार हु रावलो १३६-३३७
१४६ गोरषनाथजी नै घ्याईयो ८१ ७६
१४७ गोरषनाथजीगी सेवा करी ६६-५८
१४८ गोरषनाथजी सेवा करी (टि.) ७०-११
१४६ गोरषनाथजीरी सेवा कीधी (टि) ७१-६
१५० गोरषनाथजीरी सेवा कीधी (टि) ७१-७

घ

१५१ घणा दीनारी प्रीतडी ८३-८७
१५२ घूघरीयारा सौरसू ८६-१००

च

१५३ चढीया सहु जानीया घणा ६१-२२
१५४ चाकर पचसय चेरीया १३५-३२३
१५५ चातुरकू चातुर मिले (प) १६७-११
१५६ चाल्यो ग्रांवा ग्रागलें (प्र) ५६-११
१५७ चालता ठीक छटकीया ८६-६६
१५८ चालो मीलीय सेणसू ११६-२३४
१५९ चाषडीया चटका घणा (प) २१३-४४
१६० चोपड षेलें चतुर नर (टि) ६२-३२
१६१ चोर इहां कुण ग्रावीयो ६७-१४६
१६२ चंदन कटाउ ११३-२१६
१६३ चदण-काटे चह रचु (प) २१३-३५

छ

१६४ छाजे वेठी मावडी (प) १६७-४
१६५ छीपायो तबेला ठाणमें ८६-१०७
१६६ छोटीनें मोटी करी १४४-३४५
१६७ छोडचो सगलो गामडो (प) १६८-१६
१६८ छोरू ग्रास करें घणी १४०-३३८

ज

१६९ ज्याह नवलषा बाग है (टि) १४३-७५
१७० ज्यू पितु जपे तु षरो १३१-३०२
१७१ जगमे नारि रूवडि १३४-३१५
१७२ जतन करें च्यारू जीवतणां ८०-७५
१७३ जलज्यो पासा षेलणां ७८-७२
१७४ जल ही उढ'''हरण (प) २१५-५६
१७५ जष्य राष्यस वेताल है (टि) ८७-२२
१७६ जाकी जासू लगन हे (प) २०१-३६

क्रमाङ्क　　पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

१७७ जाचक जै-जै बोलीया　६१-२४
१७८ जाचक बहुधन पोषीया　६१-२६
१७६ जाण न पाई हठमला　१०८-१६६
१८० जाणै मान सरोवरे　१३३-३११
१८१ जान विराजी गोहरें (प) १६८-१७
१८२ जावत जीभें क्यु कहा (प.)　२०१-३८
१८३ जावो राणी विडांणीया १०६-१८०
१८४ जाज्या रीध्या विवताल है (टि)　८८-१८
१८५ जि नर रूपे रूवडा　१३३-३१३
१८६ जीव हमारा तें लीया (प)　२००-३१
१८७ जे देषै त रूवडा (प.)　२११-८
१८८ जे परपूरषा कामनी　६३-१३१
१८६ जेसा पूत्र ज्यू वाल्हा　१३१-२६८
१६० ' ' जोगी जोगीणा (प)　२१२-२६
१६१ जोगीडा रस भोगीया　१०५-१७५
१६२ जोगीया पर भोगीया (प)　२१३-३०
१६३ जो तुमै रीसवता हूवा　६७-४८
१६४ जो मिलवो मूष देषवो १३६-३३३
१६५ जो सूरज आथूणमै　८३-८४

झ

१६६ झगो धोयो फेंटो धोयो (टि)　११२-२६
१६७ झारी हठमल हाथ ले　६१-१२४
१६८ झिरमीर झिरमीर वरसीयो　११७-२३७

ड

१६६ डाकिणमत्र अफीण रस १६८-१६

ढ

२०० ढोल घडकै तन वडे (है) १२७-२८४

क्र०　　पृ० प०

त

२०१ तव राकस रूपै रवी　८१-८२
२०२ तल गुदल निलज उपरे १२५-२७६
२०३ तास तीषा लोयणा　१२४-२७३
२०४ तिनसू आयो था कनै　८६-१०८
२०५ तीर सपल्लल चांपीयो १३०-२६२
२०६ तीहां छै वचा अती भला (टि)　१४३-७६
२०७ तीहांथी मान नृपततणी　६१-२७
२०८ तु कारण क्यू पूछ वै　६०-११३
२०६ तुम फूरमायो जा परो १३६-३३२
२१० तुरत मोहर लेई करी　८०-७४
२११ तु राजा हदी गोरडी (प.)　२१३-३८
२१२ तु हठालु हठमला (टि) ६१-२८
२१३ तु हठीमल तु हठीमला (टि)　६३-२४
२१४ तूवी चूइ टवूकडे (प.) २०६-७०
२१५ तें आण्यो में भषीयो (प)　२०३-५३
२१६ ते नारी गढ सूरडी　६२-१३०
२१७　तो आतम लोई (प) २१४-५४
२१८ तो इहा वध मै सरघा　६५-४६
२१६ तोरा नाम हठमला　६०-११४
२२० तो सरसी नार तणा　११०-२०७
२२१ तोसु केल करातडा (प)　२१२-१८

थ

२२२ थारो वीरो बहुवली (टि)　१४२-७३
२२३ थाल भरी दाल-चांवला　५७-१२
२२४ था वीना सारी वातडी　८१-७७
२२५ थांह सरसी मांहरे　१२३-२७२
२२६ थांह सरीषा म्हारा वाहरू ८४-६०
२२७ थासू कटती रातड़ी　६६-५५

क्रमाङ्क पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

२२८ थे छो राजा बहुगुणां (टि) १४२-७१
२२९ थे दीधो म्हे भख्यो (प) २१२-२६
२३० थे दीनां में जीमीया १०३-१६६

द

२३१ दइवाधीन लिख्या जिके १०७-१८४
२३२ दया रषो धरमकू (प) १६७-६
२३३ दल दिषणादी देषीया १३८-३२८
२३४ दल वादल भेला हुवा १३७-३२७
२३५ दस मास हवी परणीया ६३-१३२
२३६ दस सुवा दस सुवटा (प) २१२-२३
२३७ दुरबल के वल राम हे (प) १६७-८
२३८ देसडला परदेसडा (प) २०५-६३
२३९ देस वीडाणो भूय पारकी ११२-२२८
२४० देषो छोरू मुष सदा ६५-४२
२४१ देषो सहेली आयकै (टि.) १४०-६३
२४२ देषो सूषम दुषै हुवो (अ) ६६-५७
२४३ देषो हुती दस मासनी १०४-१७०
२४४ दोनू राजा जुगतिका (प) १६७-३
२४५ दत कटका कुदतो ८१-८०

ध

२४६ धणी सासती नारी नही ११८ २४४
२४७ धन-धन मातारो नेहडो १३६-३२४
२४८ धन रे नांम रीसालुवा (टि) १४०-६२
२४९ धारवती ढली करी (प) २०७-८६

न

२५० नगर चोहटे नीसरचा (टि) १३२-७०
२५१ नगर चोहटै नीसरचो (टि) १३२-५७

क्र० पृ० प०

२५२ नयण थारा भुभला (टि) १४२-७२
२५३ नवल सनेह पीहर तणों ६४-४०
२५४ नवि मूओ नवि मारीओ (प) २०५-६७
२५५ नष अगूठे अगूली ११२-२१७
२५६ नहीं घररो वेरागीओ (प) १६८-१३
२५७ नही घोडा रथ उटीयां १०४-१७३
२५८ ना जोवनमैं मतीया (प.) २१४-५७
२५९ नाटिक छद गुण गाजीया ५७-१५
२६० ना म्हे मूवा नवि मारीया ११४-२२२
२६१ नार पराई विलसता १०१-१६४
२६२ नारी न जाण्यो आपरी १११-२१२
२६३ नारी नही का आपरी ११८-२४०
२६४ नारी ना-ना मुख रटै ११६-२५१
२६५ नारू तीखा लोयणां (प) २१४-४६
२६६ नासा सोहे मोतीया (प) २०७-७८
२६७ नाहर सेती अधीक बल (टि) ६०-३३
२६८ नीदडीयांरो नेहडो ११६-२३३
२६९ नेंण चूकी निजर फेरवी २०७-८३
२७० नेंनूकी आरत वुरी (प) २००-३०
२७१ नेंनूसे सान ज करी (प) २००-३६

प

२७२ प्रथमें प्रणमू श्रीगणेश (प) १६७-१
२७३ प्रह फूटी प्रगडो भयो (प) २०६-७२
२७४ प्रेम गहिली हु थई १०८-१६५
२७५ प्रेम विडांणा पारषा १३१-३०१
२७६ पग दीठा पवगरा (प) २०१-४१
२७७ पटुवा महता गात्ररा (प) २१८-३६
२७८ पर घर पर घरती तणा ८६-११०
२७९ पर भूमी पडवा थकी १२३-२७१

क्रमाङ्क		पृष्ठाङ्क पद्याङ्क
२८०	परवाई झीणी फूरे	११५-२२७
२८१	पलग छीपाए छांटीये (टि)	८७-३७
२८२	पलिग पठ्ठी ढालीज्यां (प)	२०१- ४
२८३	पाई मुका' (प)	२१४-५३
२८४	पाघडीया पचा सफल (प)	२०७-७६
२८५	पाछो वोलो वोलडो	१३१-२९७
२८६	पाणी जग सघलो पीए (प)	२०४-५६
२८७	पाणी पीनें वाटथी (प)	२०८-८६
२८८	पातसाह अग्या तेहनें	८५-६४
२८९	पांना फूला माहिला	१०९-१९९
२९०	पाय पहिरी चाषडी (प)	२०६-७३
२९१	पाल पीयारी जल नवो (प)	२०४-६०
२९२	पालो पाणी पातसाह	११६-२२८
२९३	पावडीया चटकालीया (प)	२०६-७४
२९४	पावरीयां पटकालीया	१२०-२५८
२९५	पावल ऊपर घूघरा (प)	२०९-९७
२९६	पिंडस पतल कटि करल	१३३-३१०
२९७	पिण को दाय उपायथी	९५-१३८
२९८	पिण तो सरषी वालही	१३४-३१७
२९९	पिण थें जावो गोरडी	९५-१३६
३३०	पिण हिव सूता रिसालूवा	१२२-२६७
३०१	पिता हूकम वनवासकौ	१३९-३३४
३०२	पिलग छपीया छाटीया	९८-१५५
३०३	पीउ कचोलें पीउ वाटके	१०३-१६७
१०४	पीउ प्यारी पीउ प्यारडी	११९-२४६

क्र०		पृ० प०
३०५	पीउ रे दुध रसालुग्रा (टि)	७०-७
३०६	पींजिरीयारा पोढणा	९६-१४७
३०७	पींडत पुछणह चली (प.)	२११-२
३०८	पीया दुघ फलो करो (टि)	७०-३
३०९	पीया दुघा यलो करो (टि)	७१-०
३१०	पूरष भला गहिलाथई	११८-२४१
३११	पूरो पूनम जेहवो	१३३-३१२
३१२	पूत्र ईसा जगमें हुवें	१३१-३००
३१३	पूत्रतणी वांछा घणी	६५-४५
३१४	पूत्र नहीं ईक माहरें	५२-८
३१५	पूत्र पितारा हुकममे	१३१-२९६
३१६	पेहरज्यों माहरी पावडी	१२०-२५५
३१७	पेंहर हमारा लुघडा (प)	२१३-४३
३१८	पोह फाटी पगडो हुवो (प)	२१३-४२
३१९	पच पयेरू सात सूव सूवटा	९६-१४८
३२०	पथी ए सुघड घोइया (प)	२१३-३२

फ

३२१	फिट फिट कुवधी सज्जनां	१०८-१९३
३२२	फुलमती हठीयें धरी (प.)	२१४-६०
३२३	फूलवती हठीयो ग्रहो (प)	२०९-९६
३२४	फेरा फीरे फीरंदडा (प)	२११-०

व

३२५	वारें वरस वनवासरा	१३५-३२१
३२६	वालापणरी प्रीतड़ी	१०८-१९०
३२७	वाहडीयें जल सजल (प)	२०८-८७
३२८	वेटा जाया सालिवाहन (प)	१९७-२
३२९	वेटा तु सुलषणो (टि)	१४१-६५

क्रमाङ्क पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

३३० वंधव भलैं घर आवीयो (टि) १४०-६४

भ

३३१ भलाई पधारयां कुमरजी १३२-३०६
३३२ भला ई पीयारो नेहड़ो १३२-३०८
३३३ भला तुम्हे सुषीया हुवौ ९५-१३९
३३४ भलो बुरी माइततनी १३१-२९९
३३५ भागवान अरु साहसी (टि) १४३-७९
३३६ भुम पराई नें पर मंडली (प) २१३-३४
३३७ भुम पराई भोगणें (प) २१३-३३
३३८ भूमि पीयारी भोगणो (प) २०४-६२
३३९ भूलैं चूकें भोलडी ११५-२२४
३४० भेटे चरण सूखी थवू १४३-३४०
३४१ भोलैं भुलौ रे वालभा (प) २१३-४५
३४२ भोलैं म भूल रे भाइया १२१-२५९
३४३ भोंम पराई विगाडीया ८४-८९

म

३४४ म्हारे पुत्री इक वले १२६-२८१
३४५ म्हे क्यू रीसालू थाह थकी १२३-२७०
३४६ म्हे परदेसी दीसावरा ९१-१२२
३४७ म्हे मारघा किण रामरा ७३-६५
३४८ म्हे समसत रायक पूतडा १२६-२७९
३४९ म्हे राजा राजवी ७३-६४
३५० मनरंजण अतिसुषकरण १४४-३४७
३५१ मांगणहारा मगता ५७-१६
३५२ मांटी सूतौ छोडनें ११८-२३८
३५३ माणस ते नही होल्डा ९२-१२१

क्र० पृ० प०

३५४ माणस देह विडाणीया १०९-२०१
३५५ माता मैं मीलवा तणो (टि.) १४१-६६
३५६ माथू फिरघू तो मारगथी ओ (प.) २०८-९०
३५७ माथो लागो वार साथस्यू (प) २१०-१००
३५८ माय वाप लियां तिहां १३६-३२५
३५९ माय धडारण वाप धड (टि) ७१-३
३६० माय वीडाणी पीता पारका (टि.) ७०-८
३६१ माय पीडाणी वाप वड (टि.) ७०-४
३६२ मारघो मारघो रे बा (प) २१२-१५
३६३ मारी नें माथो ल्यावसू ८१-७८
३६४ मारेंगो रे वप्पडा (प) २००-३२
३६५ माली कहे पीतसाहजी ८५-९२
३६६ माली रावें सचरचो (प) १९९-२२
३६७ माहाराज धणी हूकमथी ६०-२०
३६८ मृगलो सूवो मेनडी ११५-२२३
३६९ मे अस्त्री विन सूनडा १०५-१७७
३७० मे मरहू त्रिस कारणें १०५-१७८
३७१ मे मेरा कचुआ मांणीया (प) २०१-४५
३७२ मेरा नाम छै हठीमला (टि) ९३-२३
३७३ मेरा नाम हठ भला (टि) ९४-१८
३७४ मेरा नांम हे हट्ठीया (प) २००-३३
३७५ मेरा मला भांगीया (प) २१२-२०
३७६ मे विरहणी विरहातणी १०१-१६२
३७७ मे हठीया छु हठमला ९१-११६
३७८ मे हठुवा मे (प) २१२-१६

क्रमाङ्क पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

३७९ में ही लोयण लोईया (टि.) ९८-३०
३८० मैं जाण्यो मृग मारीग्रो (टि) १०३-३२
३८१ मैं तेरा माला भगीया (प) २१२-२१
३८२ मोटा थी मोटाथीइ (प) २०७-८५
३८३ मो सरखी निगुणी तणे १०८-१९२
३८४ मौ सरसौ पीउडौ मील्यौ ११८-२३९
३८५ मंगल जारी मागरण १३४-३१६

य

३८६ योगी योगी योगीया (प) २०३-५५

र

३८७ रतन कचोलो रूवडो १२५-२७५
३८८ रयणी दुपकी राश भी १०१-१६१
३८९ रस रमतां मेहलां विषे १०८-१९४
३९० रसालुहदा भ्रावा भ्रावली (टि) ९०-२६
३९१ रहो रहो केथ अ्रण भावना १२४ २७४
३९२ राकस घूतारो भ्रछे ८१-७६
३९३ राग-रंग-रसकी कथा ५१-५
३९४ राजन रूडा होयज्यो १३१-२९५
३९५ राजपाट सहु विलसतौ १४३-३४१
३९६ राज विना दिन जावसी ६९-५४
३९७ राज सरीषा प्राहुणा १३५-३१९
३९८ राजा तणौ पउग परणैने ६२-३२
३९९ राजा भोजजी (भ्र) ६१-२५
४०० राजारे भोजरी कुवरी (टि.) १२८-६६
४०१ राजा भोजरी टीकरी (टि) १२८-५३, ६१

क्र० पृ० प०

४०२ राजा भोजरी मानरी ६३-३८
४०३ राजा मिल नाम थापीयो ५७-१४
४०४ राजा मेरी वालही १०५-१७६
४०५ राजा रसालुरी वातडी (टि) १४४-७४
४०६ राजा रीसालू हदी वातडी (टि.) १४४-६८
४०७ राजा रूठो स्यूं करे (प) २०६-७१
४०८ राजा लूणनै बोलीयो ६७-५०
४०९ राणी कहै सूण राजवी ७६-७१
४१० रांणी झारी भर लेई ९१-१२३
४११ रांणी सहू साथै लीया (टि) १४३-७७
४१२ रांणी सूण पीवतै भणै ६२-३५
४१३ रांणी सूण मोहित हूई ९२-१२८
११४ रात ज करहा न उछरे (प) २१४-४६
४१५ रात दीवस तीहां ही रहे (टि) १४३-७८
४१६ राते करहा उछरै १२१-२६०
४१७ राते करहा न छूटीइ (प) २०६-७६
४१८ रातै नायौ तु हिरणीया ८८-१०३
४१९ रांमन रातडीया तणी ११६-२३२
४२० राम सरीसा भोगव्या १०७-१८५
४२१ रावत भिडिया वाकडा १०८-१८८
४२२ राक्षस रूडा मारीयो (प) १९९-२०
४२३ रीस अमारा माइ बाप (प) २०२-४७
४२४ रीसालु रीसालुवा (प) २१४-५०
४२५ रीसालू कुवरने छोडने ९३-१३३
४२६ रीसालू वाण सनाहीयो (प) २०२-५१

४२७ रीसालूया रीस कसाइया १२६-२७८
४२८ रीसालू रीसालुश्रा (प) २०२-४६
४२६ रीसालु रीसालूवा (प) २१३-३१
४३० रीसालू रीसावीओ (प) २०७-८०
४३१ रीसालू रुदन करे (प) २१०-६८
४३२ रीसालू हवी गोरडी (प) ६०-११३
४३३ रीसालू हवी गोरडी (प.) २१३-३७
४३४ ,, ,, ,, ,, २१२-१६
४३५ रीसालू हवी बातडी १४४-३४३
४३६ रीसालू षोटो थयो (प) २०६-६५
४३७ रूडा राजिद जाणज्यो १०८-१६७
४३८ रूपांसूं घोली करूं १२६-२८७
४३६ रूपा सोनानी रूप रज (प) २१३-४०
४४० रेवा सरवर किम रहे (प) २०२-४६
४४१ रेवा सरवर न छोडीइं (प) २०५-६८
४४२ रे फूटरमल हिरणला ८७-१०१
४४३ रे बाबा तु जोगीश्रा (टि.) १४२-७०
४४४ रे सुथारजीरा डीकरा ७६-७३
४४५ रडी भूंडी ते करी ११०-२०६
४४६ रंडी राजी ना हुई ११०-२०४

ल

४४७ लगम लेइनें जोईयो ५७-१८
४४८ लागणहारा लागस्ये (प) १६६-२७
४४६ लांबी लांबी भीषडी १२०-२५६
४५० लेब बिवाता जि लीध्या ५१-२
४५१ लोक करत बधामणा १३२-३०१
४५२ लोक करे बधामणा (टि०) १३२-५६
४५३ लोक करे बधामणा (टि०) १३ -६०, ६४

व

४५४ व्यापारी ज्यू बटाउडा १०६-१६८
४५५ वचन हतो सो पूगीयो १२८-२८६
४५६ वरषा रीत पावस करे ११५- २६
४५७ वस राजरो रावणी ६७-४६
४५८ वागां नीलडा चरणनू ८८-१०६
४५६ वागा महिला मांनवी (टि०) ८६-२४
४६० बाजा छत्रीस बाजीया ५७-१३
४६१ वाडी मेहलां आदमी ८६-१०६
४६२ वात रीसालूराय की १४४-३४४
४६३ विच कर डहडी (प) २११-१३
४६४ विघना तू तो बावली १११-२११
४६५ विष-वेलीका ईहा थरा ६०-११५
४६६ विसरा-वसरी वोसरा ११६-२५०
४६७ वीजलीयां चमकीयां (प) २०४-५८
४६८ वीरह विडाणां मेहलथी १३०-२६०
४६६ वीरां कांइ वरांसीयो (प) २०६-७५
४७० वीरा तुं सुलषणो (टि०) १४१-६७
४७१ वेघालू मन वीधयो ५१- ३
४७२ वेलारा साजन भणी ६३-३६
४७३ वंका लोहण लोहसा ११६-२४८
४७४ वंदी जम छोडावीया १३२-३०५

श

४७५ श्रीगोरषनाथजीरे ध्यानसूं ८१-८३
४७६ श्रीमाहाराजा जांणज्यो १२६-२८२
४७७ श्रीमाहाराजा भोजजी १३१-२६४
४७८ श्रीमाहाराजा हुकम द्यो १३६-३३५
४७६ श्री सिध श्री श्रीहजूरने १३६-३२६

५२९ सूकुलीणी नारि तिका १३५-३१८
५३० सूगणी तु चिर जीवज्यो १२९-२८९
५३१ सूण रे हठीया पातसा १०२-१६५
५३२ सूण सूण साहिब हठमला ८५-९३
५३३ सूणीयै रीसालूरायकी ८६-९८
५३४ सूरज किरण ज्यूं तन झिमै १३६-३२६
५३५ सूरा पूरा सौ हुवो ९१-११९
५३६ सूवा किण देशे चला १०६-१८२
५३७ सूष करस्यू सारी वातरी ९६-१४४
५३८ सूष बहु तुम परसादथी १३९-३३१
५३९ सेज ऊजरी फूलू जई (प) २०१-४०
५४० सेयण रीसालू हुय रही १२३-२६९
५४१ सेहर उज्जेणी के गोरमे १२८-२८५
५४२ सैहर सगलो झटकावीयो (टि०) १४०-६०
५४३ सो कोसां सजन वसै ११८-२४२
५४४ सोनी हवा वीकरा (प०) २१४-४७
५४५ सोभा मान सरोवरा १११-२१५
५४६ सोल वरसरी वीजोगणी १२२-२६४
५४७ सोवन झारी हाथ करि (प.) २०७-८२
५४८ सौ तुम आज इहा रवै ८६-९७
५४९ सग सूहेलो पीउ तणो ६३-३६
५५० सझचा सू घडी च्यारडी ८५-९५

ह

५५१ हइडू न हलावीइ (प.) २००-२८
५५२ हठमल मन काठो करी ९१-१२०
५५३ हठमल मीलज्यो साहिबा ११०-२०२
५५४ हठमल हठ कर चालीयो १०१-१६३
५५५ हठीया पतसा हठ म कर २११- ७
५५६ हठीया रावत वाकडा १०७-१८६
५५७ हठी हठीला हठ्ठीया (प.) २०१-३७
५५८ हडवड आग हीसता ५३-१०
५५९ हड हड दे मुडो हसी (प) २११ ४, ५
५६० हथीयारा पाषल जूडै (अ०) ५३-९
५६१ हमकी लोंयण लोइया ९८-१५४
५६२ हम परदेसी पथीया ९२-१२६
५६३ हम ही लोयण लोइया (टि०) ९८-३६
५६४ हय गरथ सीणगारांया ६१-२१
५६५ हर्षतणी गत होय रहि १३२-३०४
५६६ हरण्या भला कैहरी भला (टि०) ७१ - ५
५६७ हरष बधाइ नै आवीया ६२-३०
५६८ हरिया हुयजो वालमा १०८-१८७
५६९ हरि हरणा थल करहलां (प) १९७-७
५७० हरीया वागारा राजवी १०८ १८९
५७१ हरीयो होजे बालमा (प) २१२-२७
५७२ हाथ प्रीउ मुष प्रीउ (प) २१२ २५
५७३ हाथ पीउ मुषमे पीउ २०२-५२
५७४ हाथ पीउ मूष पर जलै १०३-१६८
५७५ हारचो सघलो गामडो (प) १९८-१८
५७६ हिरण कहै राणी रातरी ८८-१०५
५७७ हिव रीसालू सोसकूं १०२-१६६
५७८ हिवे कुवरजी हालीया ७२-६०

५७६ हीरण भला केहर भला (टि०) ७०-१०
५८० हीरण भला कंहर भला (टि०) ७०-२६
५८१ हीव चवरी मड़प तणे ६१-२६
५८२ हीव घरे जोतसी तेडीया ५७-१७
५८३ हुकम भलो माहाराजंरो ६०-१६
५८४ हुं जिण पुरुषरी गोरडी (प) २१४-५२
५८५ हु हठालु हठमला (टि०) ६१-२७
५८६ हु हठवा हठीमला (टि०) ६३-२५
५८७ हु हठालु हठमलो (टि०) ६१-२६
५८८ हे वांदी थांहरा हाथरो ११५ २२५
५८९ है म्हेल छवती गोरीयां (प) २११-११
५६० है म्हैल छवती······ (प.) २११-१२
५६१ है मंहल [ल]छवंती गोरीयां (प) २११-१०
५६२ है सुगणी म्हे पखीया ६५-१३५
५६३ होणहार बुध उपजं (टि०) ८८-१६
५६४ होणहार सो बुध उपजं (टि०) ८७-२१
५६५ होणहार सो नही मिटै ७५ ६६
५६६ होणहार सो हो ज हूवो ६८-५२
५६७ हज सरोवर हज पीए (प) २०६-६६
५६८ हसा ने सरवर घणा (प.) १६७- ५

परिशिष्ट २ (ग)

नागजी ने नागवतीरी वात

दूहा—अनुक्रम

अ

१ आंबो मरवो केवडो १५६-५३

उ

२ ऊंडो गाजै ऊतरा १५६-५०

क

३ कमर बंधावत कुंवरकु १५०- ६
४ कान-घडयां बले सोवना १५८-४२
५ कुच कर ओलव भुज-पटी १५३-१२६
६ कुच आ भुज आ अहर जा १६१-६१

ग

७ गोरीवा गल हायडा १५०-१३
८ गोरी बांह छातीयां १५०-१२
६ गोरी हीयो हेठ कर १५०-११

च

१० चल सिर खत अदभुत जतन १५२-२२
११ चेला पुसतक भल करी १५८-४४

छ

१२ छोटी केहर बोहत्त गुण १४७- ३

ज

१३ जा जोबन अर जीव जा १६०-६०
१४ जान मांणो रतडी १६१-६३
१५ जावो जोभा ना कहू १५१-१४
१६ जो याको गावे सुणै १६३-८१

ड

१७ डूगर केरा बाहला १६१-६७

ढ

१८ ढोल दडूकै तन दहै १५३-२७

प

१६ प्रीत निवाहुण अवतरया १६३-८०
२० प्रीत लगी प्यारी हुंती १५२-२१
२१ पापी बैठो ओलीयै १५६-३६
२२ पीपल पांन ज रुण-भ्रणै १५६-५१

ब

२३ बेलडी तिलडी पचलडी १५८-४३

म

२४ मन चिंते बहुतेरियां १४५- १

र

२५ रहो रहो गुरजी मूठ कर १५८-४५
२६ राजा वैद बुलायकै १५१-१८
२७ रिमझिम पायल घूघरा १५८-४१

ल

२८ लाख सयाणप कोड बुध १४५-२

स

२६ सजन आंबा मोरीया १५६-५२
३० सजन चदन बावनै १५६-५४
३१ सजन दुरजन हुय चलै १५१-१६
३२ सिधावो नै सिध करो १५१-१५
३३ सिसक सिसक मर मर जीवे १५२-२०
३४ सेल भलूका कर रह्यो १५३-२८

ह

३५ हे विधना तोसु कहूं १५०-१०

परिशिष्ट २ (घ)

वात – दरजी मयारामरी

दूहा - अनुक्रम

अ

१ अगलै अवधाली अवं १८५-१४७
२ अण दारूरै ऊपरै १८१-१२४
३ अण दारूसू हे अली १८१-१२६
४ अण सूरत अण अकलनै १८५-१४६
५ अतरो अवगुण आपमै १८१-१३०
६ अतलस घरमा ऊमदा १६७-३०
७ अरज करा अलबेलीया १७५-७५
८ अलगी वे जोहे अली १६८-३७
९ अलल बचेरा ऊपरै १७३-५७
१० अलल बचेरा ऊमदा १७३-५९
११ अलल माहे ऊपनी १६५-१४
१२ अलवल(र)रहणो आद १७४-६६
१३ अलवल हुता ऊडीयो १६६-२०
१४ आगलीया जणरी यसी १६९-४२
१५ आठू अपछर आगली १६५-१५
१६ आबूगिर अछ(च)लेसरी १६४- ५
१७ आया घघनांमें अवै १६५-१०
१८ आसै डावीरी अग्र १६४- २

इ

१९ इन्द्रायण मुष आवीयो १६५- ९

उ

२० ऊणां सहेल्यां आगला १६९-४७

ए

२१ एक इन्द्रायण रिष उभै १६५-११
२२ ऐक पयालो ऊमदा १७६-७८
२३ ऐक भटीरै ऊपरै १७५-७६

क

२४ कडा जनेऊ कठीया १६७-३२
२५ कलजुगरो मानै कहर १६५- ७
२६ कलहल करसी केकीयां १७९-१०४
२७ कवीयणनै सिधांणनै १६४- ३
२८ कसतूरी चपककली १६५-१६
२९ कागद मांहे कांमणी १६६-२१
३० काली घरसै काठलां १८०-११९
३१ किसतूरी अरजी करै १७३-५५
३२ कुण थांनै कारू कहै १८१-१२८
३३ कूजां दारू ले'र कर १७९-१००
३४ केइ नरथं कामणी १७७-८४
३५ केफ महो चकीयो कवर १८१-१२५
३६ ,, ,, ,, ,, १७६-८१
३७ के भगतण के कचणी १७४-६०
३८ कोड गुना कामण कीया १८५-१४१
३९ कोड सीस सवलालकै १६५-१७

घ

४० घना-घना समजावीया १७५-७२
४१ घम-घम वाजै घूघरा १८१-१३२
४२ घहु दिस उमघीयो झड़ पवण १८०-११३

च

४३ चेलो हुग्रो ज सूवटो १६५-१२

छ

४४ छिन-छिनमें पग चांपसू १६९-४५

ज

४५ जल वूठा थल रेलोया १७४-६१
४६ जसकी हुंदी जोडरा १६६-४१
४७ जसा अपछर जनमको १८१-१३१
४८ जसां सरीपी जगतमैं १६६-४०
४९ ,, ,, ,, १८२-१३४
५० जसीयां मद पीवो जदयां १८१-१२६
५१ जहर जसा मानै जसां १८५-१४३
५२ जापोडा कसीया जरी १६७-२६
५३ जोईं कर आवे जसां १७६-७६
५४ जोवन मद आई जसा १६६-१६

ड

५५ डेरां दिस वलिया दुभल १७७-८५

त

५६ तरह-तरहरा तायफा १७६-१०३
५७ तुररै छोगै यांकीया १६८-३५
५८ तैहडो वैरी तेरमो १७८-६१

द

५९ दासी कुण जीवै दिवस १७४-६३
६० दूजी मारी देपसी १७८ ६७,६८
६१ ,, ,, ,, १७६-६६
६२ देपै ऊभी दासीयां १७०-४८
६३ दौय अगाऊ दोडीया १६८-३४

न

६४ नदीयां नाला नीभरण १८०-११६
६५ नरपुर मे रहतां नहीं १६५- ८
६६ नवमी आ वैरण नदी १७८-८६

प

६७ प्रीत पहेला पेरनै १६६-४४
६८ पग-पग ऊपर पदमणी १८५-१४५
६९ पसीवासरो पोत ज्यूं १८३-१३५
७० पाका वैरी पनरमा १७८-६२
७१ पागै घोटो नाक छै १७३-१५६
७२ पांचो यत-हूंस परबतां १७६-१०६
७३ पूठै सहतां पाचरै १६७-२३
७४ पहला दाक पायनै १८१-१३३
७५ पोताको भोओ प्रबस १७८-६५

फ

७६ फब सेली किलगी फबी १६८-३६

ब

७७ बादल जम कूजा वहै १८०-१२३
७८ वंदू नद गवरिया (बरवै)
१६४- १

भ

७९ भमरां थांनै भालसां १८०-११८
८० भाद्रयावस जाहर भुवण १६५-१३

म

८१ म्यारा जासो मुरधरा १७४-६५
८२ म्याराजी थे मुरधरा १७४-६२
८३ ,, ,, ,, १७५-७४
८४ ,, ,, ,, १७६ ८३
८५ म्याराजी लोही मूआ १७५-७१
८६ म्याराजी विरचो मती १७५-७३
८७ म्यारा थांरा मुलकमे १८४-१३६
८८ म्यारा पासी मोहको १७४-६४
८९ म्यारामजी थे मांणजो १६६-४३
९० म्यारा मांरा मुलकरा १८४-१३६
९१ म्यारै कागद मेलीय १६७-२२
९२ म्यारोजी मोटा हुआ १६५-१८
९३ मद वैरी अगीयारमो १७८-६०
९४ महि चा(छा)इ मामोलीयां
१८०-१२१
९५ मांरी थारी म्यारजी १७६-११०
९६ मारू मां मनुआरको १७६-१११
९७ मालू आपै म्यारनै १७५-६८
९८ मालू थांरा मुलकमैं १८४-१३८
९९ मालू मारा मुलकमैं १८४-१३७
१०० मालू मेसै मांझली १६८-३८
१०१ मिजमां-मिजलां म्यारको १६८-३३
१०२ मुजरो करनै मालको १६८-३६
१०३ मुरधर जोवण मालको १७४-६७
१०४ मुवसूं दापै म्यारजो १६६-४६
१०५ मे तो मनसूं मालको १८५-१४१

१०६ मे तो टंगण मालको १७३-५८
१०७ मैं तो बरजी मालको १७५-६६
१०८ मोती हीरा मूगीया १६७-३१
१०९ मो लकाने मू दडी १७६-७७

र

११० राता हव थोडी रही १७२-५०
१११ रानां पर तांना करै १६७-२५
११२ रीसां बलती राजनै १८५-१४४
११३ रेवत समजे रानमें १६७-२६
११४ रेवत समजे रानमें १६७-२७

ल

११५ लपटीजे तरसू लता १७३-५४
११६ लष ग्रहणा वप लपटजो १८८-११७
११७ लाली यक कावल लुली १८१-१२७

व

११८ वजसी थाढो वायरो १७९-११२
११९ वरचा(छां) चढसी वेलडी १८०-१२२
१२० वरसालो मैमत वूवो १७८-९३
१२१ वरसालो वैरी वूग्रो १७७-८६
१२२ वादल काले वीजली १७३-५३
१२३ वादल गल-गल वरससी १७९-१०५
१२४ विडगारा वार्षाण १६७-२८
१२५ वैरी चोथा बादला १७७-८७

श

१२६ श्रामण मास सुहामणो १८०-११५

स

१२७ सत त्रेता द्वापुर समै १६४- ६
१२८ साकल पल हलसी घरा १७९-१०७
१२९ सातु मिल सहेलीया १७६-८०
१३० साथै लाज्यौ सूषडा १८०-१२०
१३१ साथै लीजो साथीया १७८-९६
१३२ सारग वैरी सातमा १७७-८८
१३३ सारी ऊठ सहेलिया १७३-५१
१३४ सुण मालू थांरी जसा १७५-७०
१३५ सैठो कीधो सायघण १७६-८२
१३६ सगरा भीजै साथीया १८०-११४

ह

१३७ हीडा जासा हींडबा १७९-१०८,
१३८ ,, ,, ,, १७९-१०९
१३९ हीडांरी लीजो हलक १७९-१०१
१४० हीडा रेसम हेमरा १७९-१०२
१४१ हीडै लागी हीडवा १७३-५२
१४२ हीडै सहीयां हीडसी १७८-९४
१४३ हेमो लाधो नै हरो १६७-२४

गीतादि—अनुक्रम

अ

१४४ आसा जडी लगासा दुवारे सूघ भीन आर्सा १७७- ३

उ

१४५ ऊकता ऊडी ऊमवा जुगता हु जाणां १६४- ४

ओ

१४६ ओपै लपेटो अपार वागो १७०-१

क

१४७ करै कोडजाडा दोढी पचाणा कनाटां कार १७७- ४

च

१४८ चरजी रहो रहो चां नोजी १८४-६
१४९ चोगां तोडा पवत्रां किलगी सेली पाग छाई १७०-२

ज

१५० जेलें तुरगा रेसमी डोरां वनाता जडाव झीण १७७- १
१५१ जोवे जुल सहेली हवेली सीस चढे जोषी १७७- २

झ

१५२ झलबा झलूस साज सहेल्यांरो साथ जोवै १७०- ४

द

१५३ दादुर मोर पपीया नस-वन
१८३- २

प

१५४ पग-पग कीछ अथग
लग पांणी १८४-५

ब

१५५ वरसै सघण षळळवजवाळा
१८३- ३

र

१५६ रहीया ढक गिरिंदरी
छीयां रसीया १८३-१

ल

१५७ लावक झूबक लाडली अंग
टेर अपारा (नीसाणी) १७०-४६

व

१५८ घन सघन लसत मनु
घन वसाल (पद्धरी) १८४-१४०

स

१५९ सरवर कहू रस भर
जल सिलता १८४- ४

१६० साथीयां सजोडां घोडा
जाषोडा साकता साजी १७०- ३

परिशिष्ट ३

वार्त्तागत सूक्तियाँ

अ

अंबर तारा डिग पड़ै, धरण अपूठी होय।
साहिब षीसारुं आपणों, तो कलि उथल होय ॥ —१२९-२८८
अइयो आसाढाह, गाजी नै घडकीयो।
वूठो बाढालाह, निगुणी भूई सिर नागजी ॥ —१६२-७२, टि०
अण कह्यो म ऊथपो। —१८२-१३४
अण काली धणनै अवै, माली कर माफूल। —१८१-१२७
अत चोषो ऐराक —१७६-७८
अपछर मैं और न यसी, रभा छवि सारीष।
षट रुत मैं नही पेषजे, रति वसत सारीष ॥ —४२-२६५
अमर करै श्रो आषरां, कवि कथ अमर करत। —१६४-३
अमीणो तुम पास, तुमहीणो जाणु नहीं।
विवरो होसी वास, वास न विवरो साजनां ॥ —१५४-३१
अरज करां अलवेलीया, पला झेलीया पाण।
म्याराजी मत मेलीयां पमगां सीस पलांण ॥ —१७५-७५

आ

आइयो लेष आलाहाका, दूष-सूष का विरतत वै।
आवेगी यारो मोतडी, पर वधी कुलवत वै ॥ —१००-१५८
आगलीयां जणरी यसी, मूग तणी फलीयाह। —१६६-४२
आरया अंकिस वाण, ताख करे नै ताणीया।
न डरै तेण दीवाण, सो माढु नैणा ही मांणीया ॥ —१५०-८
आज रूपाली रातडी, झिरमिर बरस्या मेह।
पीउ मन षाची पोढीयो, नवली नारने नेह ॥ —१२२-२६५
आज सलूणी रातडी, मोही अलूणी होय।
एको कांमण सीझीयो, वादी विधुता जोय ॥ —११६-२३१
आजूनो विन अति भलो, जीवत रहीया म्हेह वे।
हिव सारा ही षोकड़ा, करस्यां सारा जेह वे ॥ —६५-१४०

आजो उमरा अतररर्रा —१८०-११८
आडा फसीया कामनी, नैण-सरासर देत।
घावा मचीया घो(ढो)लीया, सैण सवादी लेत ॥ —११९-२४९
आडा पडसी दीहडा, जद केहा जाणां। —१६४-४
आवो मरवो केवडो, केतकीया अर जाय।
सदा सुरगो चपलो, आज विरगो काय ॥ —१५९-५३
आभे अडवर वादली, बीज चमको होय।
तिण वीरीया कचूं कसै, पीवनै राषे नोय ॥ —११६-२२९
आवला दलामें म्यारा, प्रकासीयो रीत एही।
सावळा वादला माहे, नकासीयो सूर ॥ —१७०-१
आसू लूधी सेणरी, घणीयण आस लिगार वे।
गोठ पराई राचवै, जीवत छडै लार वे। —११८-२४३

उ

उठियो कुवर बीवालूवा, भीजै राजकुवार।
राजा रूठैगो गाव लै, नहो तर घोडी त्यार ॥ —११७-२३६
उत्तम जननी प्रीतडी, फोणहीक वेला होय वे।
ते छोडी नै वीसरै, ते जग मूरष होय वे ॥ —८३-८५
उत्तम जीव हुवे जिके, जिण तिण सू उपगार।
करतां न जाणे हाण बे, राषे सूष परकार वे ॥ —१०-१८३
उतावल कीया अलूझीयै, सनै सनै सहु होय वे।
माली सींचे सो घडा, रीत आया फल होय वें ॥ —९६-१४१
उमरावा वरज्या घणा, राज न मान्यो कोय बे।
बीधना लेख हुवै तिकै, उ टले टलीया टलाय वे ॥ —६८-५१
उर-थल थोडा ऊफीया नींबूण चेयारां। —१७१ नी०

ऊ

ऊडै पडवै पैस, पिवसु पैजां मारती।
सुमाणसीया एह, घूघै लागा घोलउत ॥ —१६२-७४
ऊँडो गाजै ऊतरा, ऊची वीज खिवेह।
ज्यु ज्यु सरवणे सभलु, त्युं त्यु कपै देह ॥ —१५९-५०
ऊणा सहेल्या आगला, म्यारा हु तिल मात ॥ —१६९-४७
ऊवा वरसै वादली, लूवा-भूवा लोर ॥ —१७८-८८

ए

ए आजूणी रात, पवर पडैसी मूझ परी।
वैरण हवी वात, परो म थाज्यो पेलणा ॥ —११६-२३५

एक गई दूजी गई, हिव तीजी की मेल ।
नारी नही का आपरी, कुडी जगमे केल ॥ —१११-२१०

ओ

ओ जोऐ थारी वाट । —१७७-३. गी०
ओ दीवी घर आपरै, जिण वीठां जीवोह । —१८१-१२९

क

कचू कस्यो दिल हथ कीयो, मोलीयो तन सोनार ।
जाणे केलना पान पर, कपूर ढुल्यों नीरवार ॥ —११९-२४७
कठ कथीरा काठका, दन थोडा जाणा । १६४-४
कटारी कुनार, लोहाली लाजी नहो ।
आजूणी अघ रात, नागण गिल बैठी नागजी ॥ —१६०-५९
कटारी कुनारि, लोहारी लाजी नहीं ।
नाग तणै घट माहि, बाढा नींबू ही भली ॥ —१६०, टि०
कनक थाल मे छेद करि, मारी लोहां मेष । —४-३०
कमर बँधावत कुवरकु, विरह उलट गयो मोहि ।
सजन वीछडण कब मिलण, काहां जाणे कब होय ॥ —१५०-९
कर ढीला घट साघुडा, नीर ढुली ढुल जाय वै ।
पथीडो तिरस्यो नही, नेयणां रहीयो लूभाय बे । ९१-१२५
कलमें को कुभार, माटी रो भेलो करै ।
चाक चढावणहार, कोई नवो निपावे नागजी ॥ —१६२-७७
कलमें को कुभार, माटी रो भेलो करै ।
जे हू हुतो कुभार, तो चाक उतारू नागजी ॥ —१६२- टि०
कला प्रकासत दीवकी, दूणा भासत दीप ।
रभा दिषा छैवि रूपकी, स्यामा षडी समीप ॥ —४९-३८२
कामण कारीगर तणी, कामण केथ पढेह ।
सात कीयो सँसे गई, भलो दिखायो नेह ॥ २१०-२०८
कांम विचारी ने कहो, रहसी तिणरी लाज वे ।
ऊठ कहो ऊतावला, तो विणसाडै काज बे ॥ ९६-१४२
कामण हीयडा कोरणी, जीवत रही तु आज वे ।
हिव सारी सिघ होयसी, देह विलूघी नाज बे ॥ —९४-१३४
कांमातुर हीरां कहै, रवि राह विहरत ।
चाहत चातुर अधिक चित, आतुर होत अनत ॥ —६-४१
काची कली मत लूबीयै, पाका लागेगा हाथ वै ।
जीवत जावंगा मानवी, नही को बीजा साथ वै ॥ —८९-१११

कारीगर किरतार का, छयल किया तसू हाथ ।
जीहा पीउ थारी छाहडी, तीहा पीउं मांहरो साथ ॥ —१०८-१६१
काल हुतै काची कली, भई सुपारी आज । —३-१७
काली काठल झलकीया, बीजलीयां गयणेय ।
चमकंती मन मोहीयो, कंचू छाकी देय ॥ —१३३-३०६
कुकुवरणी देह, टीकी काजलीयां थई ।
एह तुमोणा नेह, सू नित मेलो नागजी ।। —१५५-३४
कुच कर ओखद भुज पटी, अहैर पती दे ताव ।
उन नयननके घाव कू, ओखद एह लगाव ॥ १५३-२६
कुच जा भुज जा अहर जा, तन धन जोबन जाह ।
नागो सयण गमाइयो, अब रहि'र करसी काह ॥ —१६१-६१
कूड कपटनी कोयली, रमती पर पुरुषाह ।
लजा सकण जान ही, प्रीतम मन पिछताह ॥ —१३४-३१४
कुल में दोय कुभार, वासोलो नै वींझली ।
जे हु हुती सुथार, नवो घड लेवत नागजी ॥ —१६२-७२
कुलवटनी कामणि तणों, सासरीयों सीरदार ।
इश्वर गत जांणै धरी, आदर पु(कु)जी मार ॥ —६४-४१
केइ नरखै कांमणी, आडे गुघट आय । —१७७-८४
केहनी अस्त्री न जाणज्यो, कुड़ो नेह रचत बे ।
पूठ पराई नारीया, न घरे एक ही कत बे ॥ —१०४-१७१
कोड छडाया कागला, पीउडा कारण पाय ।
विघना हदी वातडी, अजब करी मूझ माय ॥ —१२२-२६६
कोरण उतराधिकरण, घोरण ची(चो)ली कुवाल ।
घणीया घण सालै घणी, वणीयो इम वरसाल ॥ —११६-२३०

ग

गरदन जसकी गांगडी, तक कुरज तरारां । —१७१—नीं०
गुनेहगार हु रावलो, साहिब चरणा दास ।
छोरू कुछोरू हुवें, तात न छोडत आस ॥ —१३६-३३७
गोरीदा गळ-हायडा, नागकुवर कर सेल ।
जांणै चदन रूखडै, अधर विलवी वेल ॥ —१५०-१३
गोरी वाह छातीया, नागकुवर न झुराय ।
जांणै चदन रूखडै, वेल कलुवी खाय ॥ —१५०-१२
गोरी हीयो हेठ कर, कर मन धीर करार ।
साई हाथ सदेसडो, तो मिलसा सो-सो वार ॥ —१५०-११

घ

घणा वीनारी प्रीतडी, कीम मुझ छाडी जाय वे।
रूडा राजिद परषज्यो, जीवू ज्या लग काय वे ॥—८३-८७
घणी सासती नारी नहीं, सेणा सहिल अपार।
प्रेम गहैली सेंणनै, आपै तन घन सार ॥ —११८-२४४

च

चकोर चाहे चवकूं, मोर चहै घण मड। —२३-१९२
चल सिर खत अवभुन जतन, बधक वंद निज हृत्य।
उर उरोज भुज अधर रस, सेक पिंड पव पत्थ ॥ —१५२-२२
चसम म मीच —१८१-१३२
चाल[क] हीरा चदसी, केत राहा सो कथ। —४-३१
चाल विलूवी इधक चित, वेल तरोवत चाण।
लपटावो गल लाडली, रसिया प्रोहित राण ॥ —४८-३७१
चुडलो चोरा(चींरा) एह, मोल मुहगै आणीयो।
नांखूनीं झाडेह, भव पैला सु पाइयो ॥ —१९२-७६
चेला पुसतक झलकरी, कहा पूछत है वात।
इण नगरी की डगर में, एक आवत एक जात ॥ —१५८-४४

छ

छटी (ठी) वैरण रात —१७८-८७
छोटी केहर बोहत्त गुण, मिलै गयदा माण।
लोहड बडाइ ना करै, नरां नखत्त प्रमाण ॥ —१४७-३

ज

जगमें नारी रूवडि, वसत करी जगनाथ।
पिण साचे मन चालवे, तो पिउ थाय सू नाथ ॥—१३४-३१५
जतीया सतीया जोगीयां, बक-फाड व(वै)ठारा। —१७२-नीं०
जलज्यो पासा षेलणा, जलज्यो षेलणहार।
दस मासरी डीकरी, ले गयो कुवर रसार(ल) ॥—७८-७२
जल वूठा थल रेलीया, वसधा नीलै वेस। १७४-६१
जागै नह मासू जसां, वैरण थारो वींद। १८१-१२५
जाचक जे जे बोलीया, मेह आगम जिम मोर वे।
दानें करि राजी किया, तोरण बाध्या तोर वे ॥ —६१-२४
जा जोबन भर जीवजा, जा पांणेचा नैण।
नागो सयण गमाय कर, रहो किसा सुख लैण। —१६०-६०

जाण न पाई हठमला, नवि पूगो मूझ डाव।
जे हु मारयो जाणतो, तो करती कटारया घाव। —१०८-१६६
जाणे नागण हीडले, षभा सोनारा।—१७०-नीं०
जाणे मान सरोवरे, मीलप्यो हस विसाल।
सेझा आई सूदरी, छुटो गज छछाल॥ —१३३-३११
जाणे हस मलपीयो, सर मान मझारा। —१७१ नी०
जान माणी रतडी, ते म लाई वार।
अमा विछोहो तै कीयो, तो करज्यो भरतार॥ —१६१-६३
जाय जसी जुग छेह, पाछा आय जासी नहीं।
नाला विच बैसेह, वले न वाता कीजसी॥ —१६१-६२
जावो जीभा ना कहू, वधो सवाई घट।
ऊगडसी था आवीया, हता रथां को हट॥ —१५१-१४
जे नर रूपे रूवडा, ते नर निगुण न हुवत।
जीमण भोजकूमार का, मोह्यो मन तन कत॥ —१३३-३१२
जे पर पूरषा कामनी, हीलमील षेलणहार।
ते पति नै काकर समो, गिणै नित की नार॥ —६३-१३१
जेसा सूत्र ज्यू वाल्हा (लहा), जेसा अवर न कोय।
पिण जग मावीता तणो, सूखमें दुष को जोय॥ —१३२-२६८
जोगीडा रसभोगीया, भर-भर नयण मत रोय वे।
आसी(अस्त्री)मजाणो आपरी, पर तुमारा जोय वे॥ —१०५-१७५
जोवण जोगी जोड। —१७६-११०
जोवन चढीयो जोर। —१७८-६१
जो सूरज आथूण मैं, उगै दिन मैं हजार वे।
आग न जो सीतलपण करे, तो पिणहु नहीं बार वे॥ —८३-८४
ज्यू पितु जपे तुं षरो, कालो गोरो कथ।
तेहवो हुकम चढाईये, सीस सदा समरथ॥ —१३१-३०२

झ

झड पडत घावरत कीच भीन।
मनु तुच्छ नीर तडफडत मीन॥ —३८-२६८

ट

टिपांटिप टपीयांह, विण बादल बुछुटीयां।
आख्या आभ थयाह, नेह तुमीणै नागजी॥ —१५७-३९

ड

डाकण नहीं गिवार, सिहारी हुती नहीं।
सलती माझल रात, खरी सिहारी हुय रही॥ —१५८-४८

डूगर केरा बावला, श्रोछा तणे सनेह ।
वहता वहे उतावला, झटक देखावै छेह ॥ —१६१-६७

ढ

ढोल दडूकै तन दहै, गेहरीया नाचत ।
चालो सखी सहेलडा, कठै न दीसै कत ॥ —१५३-२७
ढोल धडकै तन दहै, विरहीणी सतीया होय ।
पीउ मीलाश्रो तो मीलै, तो किम दुखीयो कोय ॥ —१२७ २८४

त

तण पुल रमसां तीज, १७९-१०४
तल गुदल निलज उपरे, नीर निरमल होय ।
टुक पीवहो रीसालूवा, नीरमल नीर न होय ॥ —१२५-२७६
तास तीर्षां लोयणा, श्रोस(श्रर) चगी वेणाह (नैणांह) ।
धार विछटी घर गई, नर चढियो नैणांह ॥ —१२४-२७३
तीजी वैरण तीज, १७८-८६
तुररै छोगै चांकीया, झलव रहै श्रठ जांम ।
भीनै रग श्रलीयो भमर, मांणीगर म्यारांम ॥ —१६८-३५
तू हीरावल हीर, मोट सूता मिलसी घणा ।
तू पाटण पटचीर, नारी - कुजर नागजी ॥ —१६१-६८
ते नारी गढ - सूरडी, होवै जगमै हराम वे ।
त्यू ए रीसालूरी गोरडी, हठमलसू हित काम वे । —९२-१३०
तेहडो वैरी तेरमो, जोवन चढीयो जोर ॥ —१७८-९१
तो सरसी नारी तणा, वेल तणा मन वेल ।
प्राण तणा पासा ढल्या, मैमत कीधा मेल ॥ —११०-२०७

थ

थारो वीरो बहुबली, तीम श्ररजण-बाण ।
रयणी वात बहू गई, ईण वीध राता रैण ॥ —१४२-७३
दईवांधीन लिख्या जके, श्रकण भिसले सीस वे ।
जेसा दुख-सुष सीरजीया, जेसा-जेसा लहै नर वीस वे ॥ —१०७-१८४
दल बादल भेला हुवा, देतां नगारां ठोर ।
जांणे भाद्रव गाजीयो, चढीया वहतां सजोर ॥ —१३७-३२७
दसमो वैरी दीवलो, १७८-८९
दारूकी पी घल (घण)वर्षं, छैकी श्रण सारू । —१८१-१२८
दुलही बनड़ो वेषता, ऊलही उर बिच श्राग ।
संगम वेषो साहिबों, कीनों हस'र काग ॥ —४-२९

देषत घुंघट ओट दे, बकी द्रगनि बिसाल
लीन वसत गुलालमें, लसत भग छवि लाल ।। —४४-३१५
देषो हुती दस मासनी, पाली किण विध पोष वे।
हिव परघर मडप करी, अस्त्री जातरी ओष वे ।। १०४-१७०
दोढी कर दो दूर, १७६-८३

घ

घण वण आवं ढोलीयै लगथगथी लारा ।। —१७२-४६ नीं०
घधळा वाल न धाढ, नागरवेल न चढीयै।
चपं वली चाढ, फूल विलव्यो भवरलो ।। —१५४-३२

न

नव अगूठे अगूली, भरीयो कलस अभ्रूग।
अजेयस मारू साहिवो, बोले नहीं ओ वूग ।। —११२-२१७
नर-नारी ओठा नवग, तीषा वै तोषार। —१८४-१३७
नवमी आ वैरण नदी, १७८-८६
नवल सनेह पीहर तणो, पीण सासरीयो परवान वै।
सासरीयो जुग-जुग तणो, सूष पीहर उनमान वै ।। —६४-४०
नही घोडा रथ उटीयां, हाथी ने सूषपाल।
चाकर-याबर को नही, ए नृप केहा हवाल ।। १०४-१७३
नागजी नगर गयाह, मन-मेळू मिलीया नहीं।
मिलीया अवर घणाह, ज्यासु मन मिलीया नहीं ।। —१५१-५७
नागडा नवखडेह, सगपण घणाई तेडीयै।
भुय ऊपर भुवताह, मिलतां ही मरजै नहीं ।। १६२-७३
नागडा नवलो नेह, नोज किण ही सुं लागजो।
जलै सुरगी देह, धुखै न धुवो नीसरै ।। —१६१-६५
नागड़ा नवलो नेह, जिण-तिणसू कीजै नहीं।
लीजै परायो छेह, आपणो दीजै नहीं ।। --१६१ ६४
नागड़ा निरखु देस, एरंड थाणो थपीयो।
हसा गया विदेस, बुगला हीसुं बोलणो ।। —१५७-३१७
नागा खायजो नाग, काला करडै मांहलो।
मूवो न मिलज्यो आग, जाषतडै जगाई नहीं।। —१५५-३५
नार पराई विलसता, कांटा पूर तूटाय वे।
सीस साई जब दीजिये, मीच पडै सूचि काय वे ।। —१०१-१६४
नारी न जाण्यो आपरी, जगमें न सूणी कोय।
मूरास मरावै हाथसूं, पाछैसूं सती होय ।। —१११-२१२
नारी नही का आपरी, पूठ पराई थाय।
जो हित तन-मन दीजतां, पिए न पतिजै जाय ।। ११८-२४०

नारी ना-ना मूष रटै, बिमणो वधे सनेह ।
जाणे चदन रूषडै, नागण लपटी देह ।। —११९-२५१
नितवा दीजे ओपमा धीणा रवै हारा ।। —१७१- नीं०

प

पर घर करा न प्रीतडी, प्रोहित बचन प्रकास ।
दाधा म्है छां काच दिढ, रमा न धिय रत-रास ।। २०—१६०
परवाई भीणी फूरे, रीछी परवत जाय ।
तिण विरीया सू कलीणीया, रहती पीव गल लाय ।। ११५—२२७
पलीवालरी पोत ज्यू, ऊठ्यो भाटक अग ।। —१८३-१३५
पाका वैरी पनरमा, वलीया फूलां वाग ।। —१९८-९२
पाछे बोलो बोलडा, वादै कर रीसाय ।
ते सूता पितु अलषामणो, होय सदा दुषदाय ।। —१३१-२९७
पापी बैठो प्रोलीयो, कूडा इलम लगाय ।
निलाडारी फुट गई, पिण हिवडारी थी जाय ।। —१५६-३६
पालो पांणी पातसाह, चढी उत्तराधि कोर ।
तीरा वीरीयां घणियायति, मोरडींया ज्यू भिगोर ।। —११६-२८८
पाना फूला माहिला. सीस रहूगी सोड ।
के नाराज्यू साजना, लहु मूभ हीयडे जोड ।। —१०९-१९९
पिडस पतल कटि करल, केल नमावे अग ।
लोयण तीखा डग भर, आई मेहल पतग ।। —१३३-३१०
पीतमकै उर सेभ पर, चंदमुषी चिपटत ।
मांनु भादवै मासकी, लता व्रछ लपटत ।। —४९-३८७
पीपलपना पेटका प्रभ फेल चीरारां । १७१ नीं०
पीपल पान'ज रुणभणे, नीर हिलोला लेह ।
ज्यु ज्यु श्रवणे सभलु, त्यु त्यु कपे देह ।। —१५९-५१
पुरुष प्रीत हीरां तलफै, दुषव हीयो दाहत ।
ऐसै वुद आकासमें, चात्रग मुष चाहत ।। —६-४४
पूत्र ईसा जगमें हुवै, माइत तणा मजूर ।
रहै सवा मूष आगल, नही अलगा नही दूर ।। —१३१-३००
पूत्र पितारा हुकममें, जे रहे जगमै जोय ।
ते सारीसो जग हणै, वले न बीजो कोय ।। —१३१-२९५
पूरष भला गहिला थई, राषै भरोसो नार ।
कवे ही आपणी नही हुई, नारी जग निरधार ।। —११८-२४१
पूरो पूनम जेहवो, मूष विच चूपे जडाव ।
कालो वादल कोर पर, बीज पीवे भिभकाव ।। १३३-३१२

प्यारा पलका ऊपरै, रापाला चित रीत।
रातै घणी छै राजवी, प्रीतम अधिकी प्रीत॥ —२५-२१६
प्यारी पीध प्रजक पर, ऊलही उर अवलूब।
मानु चदन वृच्छ मिल, झुकी 'क नागणि झूब॥ —२५-२१४
!!त लगी प्यारी हुती, बाला थई विछेह।
नोज किणही नै लागज्यो, कामण हदो नेह॥ —१५२-२१
प्रेम गहिली हु थइ, माहरा पीउरे सग।
यू नहीं जाण्यो हठमला, तो करती रगमें भंग॥—१०८-१६५
प्रेम विडाणा पारषा, जगके मोह अकथ।
कर जोडि पितु आगलें, रहै सदाई साथ॥ —१३१-३०१
प्रोहित हीरां पेषीयो, तीष नोष छिव तोर।
दूषी तिषातुर देषिया, मानु घणहर मोर॥—३५-२६०

फ

फिट-फिट कुवधी सज्जना, कीनो नहीं सूझ साथ।
पवर न का सूझनै पडी, तो मीलती भर बाथ॥ —१०८-१६३
फीकै मन फेरा लीया, अतर भई उदास।
आंष मीच रोगी अवस, पीवत नीम प्रकास॥ —५-३२
फेर पयाला पावसां, दें'र गलारी आंण॥ —१७६-१००

ब

वाटो तोनै जीभडी, कुटल बचन कहाय।
रोस निवारो राजवी, मो पर करो मयाह॥ —४७-३६१
बालापणरी प्रीतडी, पूरण कीधी पीर।
लागा हाथ छयलका, हिव तोसू हुवो सीर॥ —१०८-१६०
वाला बिल-बिलतांह, ऊतर को आयो नहीं।
कदे कांम पडीयांह, निहुरा करस्यो नागजी॥ —१६० टि०
बावी बीजी हुइ रूप देषे हाक-बाक॥ —१७०-४
वांहि ग्रहा की लाज। —१८५-१४१
बोलै वैरी वारमा, पपीया पीऊ-पीऊ। —१७८-६०

भ

भला तुम्हे सुषीया हुवो, म्हे दुषीयारो देह।
साहिब करसी सो भला, पषी पषी सालेह॥ —६५-१३६
भला पधारया कुमरजी, भलो हुवो दिन आज।
आस्या-बधी कांमनी, ताका सुधरचा काज॥ —१३२-३०६
भली बूरी माइत तनी, नवि कीजै देषै पुत्र।
पूठत मावीतथी, ते सफू जावै सुत्र॥ —१३१-२६६
भावज भणु जुहार, सयणांनुं सदेसडा।

वै तुमीणा वोहार, जीव्या जितेही मांणीया ॥ —१५५-३३
भांमण प्यारी अक पर, पीतम परस प्रजक ।
बक सरीर बिलांसमै, लसत कबूतर लक ॥ —४९-३८६
भंमिण भूल न बोल, भवरो केतकीयां रमै ।
जांण मजीठां चोल, रग न छोडे राजीयो ॥ —१५७-३८

म

मद वेरी अगीयारमो । —१७८-६०
मन चितै बहुतेरीयां, किरता करे सु होय ।
उलटी करणी देवरी, मती पतीजो कोय ॥ —१४५-१
मगल जारी मागरण, चीला छोड कुचीन ।
चाले मन पिउ नहि गिणै, ज्यू मदमातो फील ॥ —१३४-३१६
माणस ते नही ढोरडा, पर-त्रीय राखै नेह वे ।
नारी पत छोडो तुरत, पर-पूरषांसू नेह बै ॥ —९२-१२९
माय बीडांणी पिता पारका, हम ही बिडाणां जाय वे ।
षेवटीयाकी नाव ज्यू, कोइक संजोग मीलाय बे ॥ —७०-८
मालू ! थारां मुलकमै, कासू भला कहों ।
नर नागा नारी नलज, रीजे केम रहों ॥ —१८४-१३८
मांटी सूतो छोडनै, जावे षेलण नार ।
पर रस भीनी कांमणी, ते हूई जगमे षराब ॥ —११८-२३८
मांणस देह विडांणीया, क्या हींदु मूशलमांन ।
आग जलाया कायने, हींदु धर्म निदांन ॥ —१०९-२०१
मेहा घोर करै अणमाप । — १८३-२ गीत
मो मन मलियो बालमा, कहुक प्यारा कत ।
दीसत यक-सम दूधमैं, मानु नीर मिलत ॥ —२६-२२४
मो मन लागो साहीबा, तो मन मो मन लग्ग ।
ज्यु लुण वीलुधो पाणीयां, ज्यु पांणी लुण वीलग ॥ —१३४-७३
मोलो लोहो —१८५-१४६
मो लकानै मू दडी, प्रबल बतावै प्राण । —१७६-७७
मो सरषी निगुणी तणे, कारण काया छोड ।
हु अभागणी जीवती, रहीय करडका मोड ॥ —१०८-१९२
प्यारा ! मांरा मुलकरा, थागांरा वापाण ।
आलीजां सुणजो मबै, श्रवणा कथन सुजाण ॥ —१८४-१३९

य

यण प्रकार सोहत महल, दमकत छबि उद्योत ।
दीपग लग प्रतिबिंब दुत, हिलमिल जगमग होत ॥ —१२१-१७२

र

रतन कचोलो रूवडो, सो लागो पाथर फूट वे।
जिण जिण आगल ढोईयो, केसर बोटी काग वे॥ —१२५-२७५
रतनावत दिल रोसमैं, प्रोहित चले प्रयाण।
वचन-वचन वांधी विथा, जग्यो अग्नि प्रत जाण॥ —३१-२३६
रयणी दुषकी राश भी, भरसी गुण सताप।
ढोली सहु ढीली पडी, जावो कलेजा काप॥ —१०१-१६१
रषीयो इंदर राणीए पकड नठारा। —१७२-नी०
रस रमता मैहला विषे, चोपड पासा सार।
ते छोडी घर पाथरचां, सीस षड जूवा वार॥ —१०८-१६४
रहो रहो केथ अणभावना, अणहुती कहिताह।
हीवडै हार अलूझियो, सो सुलझायो नेणाह॥ —१२४-२७४
रहो रहो गुरजी मूढ कर, कहा सिखावत मोय।
सत(व) पृते इण नगरमें, जागत विरला कोय॥ —१५८-४५
राषीजै षावद सरस, नाजक घण रा नेम।
प्राण दुषी प्यारी तणो, कीजै अति हठ केम॥ —४८-३७०
राज कीयो छै रुसणो, ऊर मो दहत कदोत।
आप न मांनो मो अरज, मरू कटारी मोत॥ —४८-३६८
राज सरीषा प्राहुणा, घले न आवे कोय।
मिलीया दुष गलीया सहु, जूगत थई सहु जोह॥ —१३५-३१६
राजा वैद बुलायकै, कुंवर देषाई वांह।
वैदा वेदन का लही, करक कलेजा मांहि॥ —१५१-१८
राते करहा उछरे, दीहा उतारा होय।
मारू मूंघ कटारीया, वर क्यू चोरडा होय॥—१२१-२६०
रावत भिडिया वांकडा, ताहरा हाथ सलूर।
मो निगुणीकै कारणे, काया कीधी दूर॥—१०८-१८८
राम सरीसा भोगव्या, बारै वरस वनवास।
तो हु गीणती केतली, दईव लिख्या ते आस॥ —१०७-१८५
रीसालू कुवरनै छोडनै, क्यू जायै घर और बे।
पर पूरषा सू नेहडो, किम कीजै निज जोर बे॥—६३-१३३
रूडा राजिंद जाणज्यो, मूझने चूक न कोय।
जे हू जांणती मारीयो, तौ हु करती दोय॥ —१०८-१६७
रग प्यालरा व्यापगत, रात वख्यात ऊमत।
चद गिगन ऊढन चमक, सजोगण हुलसन॥ —४४-३१८
रुठी भूंडी ते करी, माण मूकायो मोह।
घार दीयो मूझ छातीया, भलो करी मूझ दोह॥ —११६-२०६

रंडी राजी ना हुई, कुंमर थकी कर कूड।
मे बिदनामी रच गई, नार देई तुभ धूड॥ —११०-२०४

ल

लछ(ज)काणो पडीयो लर्गो, कारी लगी न काय॥ —१७२-८२
लाख बात चालू नहीं, टालू नह मन टेक।
तापसी बालक और नृप, त्रिया हठ है छै येक॥ —४६-३५३
लाख सयाणप कोड बुध, कर देखो सब कोय।
अणहुणी हुणी नहीं, होणी हुवै सु होय॥ —१४५-२
लाखा बाता लाडला, मांणो महिल मनाय।
हिवडै नवसर हार ज्यू, लेस्या कठ लगाय॥ —४७-३६५
लाडा थां बण लागसी, मानै थारा मैल॥ —१७४-६५
लाबक-झूंबक लाडली। —१७०-नो०
लुलुहीयारो हार। —१७७-४ गीत
लूबा-झूबा लोर। —१७८-८८
लेख बिधाता जि लीख्या, तीमहीज भुगतै सोय।
सुगण नरा मन जाणज्यो, बात तणो रस जोय॥ —५१-२
लोभी देखो लोयेणा, ऐमी नजरि भरि ऐम।
मुख बांणी बोलै मधुर, प्रीतम करि हित प्रेम॥ —४७-३६४

व

वकीया थारा वेण। —१८५-१४३
वण्यो त्रियाको वेस, आवत दीठो कुवरजी।
जातो दुनीया देख, नाटक कर गयो नागजी॥ —१५७-४०
वदनां नाक विराजीयो च(छ)ब कीर वचारा। —१७१-नो०
वरषा रीत पावस करे, नवीया वलके नीर।
तिण विरीयां सूंकलीणीयां, घणीयां स्यू घर्यो सीर॥ —११५-२२६
वरसालो वैरी वू(हु)ओ, वैरण दूजी बीज॥ —१७८-८६
वागां मांहेला मानवी, साहूकार के चोर वे।
दरषत ही छीपतो फीरे, ढांढो गमायो के ढोर वे॥ —८९-२४
वाडी मेहला आदमी साह अछै किनू चोर वे।
रूषा छीपायो वपू रह्यो, ढीलो हूवो जू ढोर वे॥—८९-१०९
वावल कालै बीजली, वचै भली कर थांत॥—१७३-५३
विधना तु तो वावली, किसका ले किसकू देय वे।
रोतो सामी चालीयो, पाटण मारग लेय॥ —१११-२११
विडगांरा वाषांण, वोडतणां की दाषजे।
वेडातारा वांण, जाण न पावै जेलीयां॥ —१६७-२८

विसरा-वसरी चोसरा, अमला करडी तांण।
सेझां रग पलाणीयां, अमलां किया पिछांण॥ —११६-२५०
वेघालू मन वीधयो, मूरख हासो होय।
जांणै सोई सूजाण नर, अवर न जाणै कोय॥ —५१-३
वंका लोइण लोइसा, कटि कवांण कसि वग।
सेझ समूद पर नाव ज्यू, तीरता चलै तुरग॥ —११६-२४८
व्यापारी ज्यू वटाउडा, वालद ज्यूं विणजार।
लदीया लोय पडी रही, कागा कुचरे पा'र॥ —१०६-१६८
वैरी चौथा वादला। —१७८-८७

श

श्रीमहाराजा जाणज्यो, सूरा एह सताप।
सिर उपर रुठा फिरै, स्यानै केहा पाप॥ —१२६-२८२

स

सग सूहेलो पीउ तणो, दुहिलो विछडवार वे।
पीउ'र अक्षर जीभयी, नहीं छूटसी नार वे॥ —६३-३६
सजन आवा मोरीया, आई आस करेह।
ज्यु ज्यु श्रवणे सभलु, त्युं त्युं कपै वेह॥ —१५६-५२
सजन चदन वांधनै, ऐरू कूकारेह।
ज्यु ज्युं श्रवणे सभलु, त्युं त्युं कपै वेह॥ —१५६-५४
सजन दुरजन हुय चले, सयणा सीख करेह।
घण विलपती यु कहै, आवा साख भरेह॥ —१५१-१६
सत कीधो ने साहबण, हिंदु तुरक समान।
जस पाटी जालम तणो, जलण चर्‍यो ए प्राण॥ —११०-२०५
सरवर निरमल नीरडै, भरीयो हसा केल।
वागा फूली सूगीधीयां, वास वले बहु मेल॥ —१११-२१४
सरवर पाय पखालतां, तेरी पायडली पस जाय।
हु पने पुछु गोरडी, थने वयु कर रयण वीहाय॥—१३३-७१
सरवर पाय पखालतां, मोरी पायलड़ी पस जाय।
अवर तारा गीणता थकां, यु मोकु रयण वीहाय॥ —१३३-७२
साचो वैरी सोलमो, रस वरसावै राग। —१७८-६२
साजनीयां सू प्यार, फटे वसा दोसो नहीं।
मिलता सो-सो वार, नैणां ही सांसो पड्यो॥ —१५४-२६
सारंग वैरी सातमां, मीठा गावै मोर। —१७८-८८
सासो भो मन माहरी, भूडो रांड भटांण।
सो सरसो घालो बरस, देयो लोह पडांह॥ —११०-२०६

सासरीया पीहर तणा, कुलनैं करती घराव बे।
पर पूरुषां मनडो रजे, सकल गमावे ग्राव वे ॥ —१०४-१७२
साहिब तो सूता भला, करडी घांगां तांण।
घण नही लीवी नींदड़ी, ढीला हुवा संघाण ॥ —१२१ २६२
साई थाजी राप वे, तो सूघौ सहु काज।
पच पतीजो पामै बे, पलि रहै सगली लाज ॥ —१३०-२६१
साई साजन प्रेमका, घण दीघा छीटकाय।
चरघा रुतरी रातडी, दुप म दई विताय ॥ —१२२-२६३
साप छोडी काचली, भीत्या छोड्यो लेव।
रीसालू छोडी गोरडी, मन भावै सो लेव। —१२५-२७७
सिघावो नै सिघ करो, पूरो मनरी ग्रास।
तुम जीवकी जांणु नही, मो जीव छै तुम पास ॥ —१५१-१५
सिसक-सिसक मर-मर जीवैं, ऊठत कराह-कराह।
नयण बाण घायल कीया, ग्रोपद मूल न थाय ॥ —१५२-२०
सिगालो ग्ररि पीलणो, जिण कुल एक न थाय।
तास पूरांणी घाड ज्यू, दिन-दिन माथै पाय ॥ —५२-७
सीह तणा जेवा बाछडा, किम वंघीया रहै बघ बे।
होणहार सो होयसी, विघना कामना ग्रघ वे ॥ —६५-४४
सुण वडारण केसरी, कथन पुराण कहत।
लछण बाद लुगाईया, ग्रकलि पछे ऊपजत ॥ —४८-३७३
सुण वीरा वैनी कहै, कुलवती ते होय।
त्रीया - चरित्र जाणै नही, जो ग्रावै सूर-ईंद्र ॥ —१४१-६६
सुण हो साहिब हठमला, सूरां हदा काम बे।
कायर षडग न बाघसी, रकण दैसी दाम वे ॥ —६१-११८
सूकुलीणी नारी तिका, पति सग रहै ग्रछेह।
जीवतडा नहि घीसरे, न चलगाई नेह ॥ —१३५-३१८
सूती सहै सहैलिया, गहरी नीद गरद।
दरद नही छै दूसरा, दुषै जिका दरद ॥ —६-४६
(नागडा) सूतो खूटी तांण, वतलायां बोलै नहीं।
कदेक पडसी काम, नोहरा करस्यो नागजी ! ॥ —१६०-५८
सूतो सवड घरेह, विव पिछोडो पिढरा।
सावो साद म वेह, ग्रावि चले ग्रो नागजी ! —१६०-५६
सूवा किण देसे चला, सूरां किसा विदेस।
जिहां ग्रपणा ग्रन्नपाणीया, जिहा करस्यां परयेस ॥ —१०६-१८०
सैल भलूका कर रह्यो, माठू(ढ़ू)डा घूमत।
ग्रावो सखी सहेलडां, ग्राज मिलाऊ कत ॥ —१५३-२८

सेवा सेहतड़ाह, मांनव काय माने नही।
पाथर पूजतडांह, निरफल थई हो नागजी ! १६०-५५
सो कोसा सजन वसै, दस कोसां हुवै नार।
तो नारी तेहनै झूरै, पीउरी न जांणै पूकार ॥ —११८-२४२
सो वारू किण विध सहै, ज्यारी कारू जात। —१८१-१२६
सोल वरसरी वीजोगणी, निठ मील्यौ भरतार।
हस्या न बोल्या हे सखी, आइयौ लेष अपार ॥ —१२२-२६४

ह

हठीया रावत वाकड़ां, तो विण रैन विहाय।
तेज पराक्रम ताहरो, सो हिव कागा वाय ॥ —१०७-१८६
हरिया हुयजो वालमा, ज्यू वाडी के सिग (साग)।
मो नगुणीके कारणे, करक वेसाण्या काग ॥ —१०८-१८७
हरीया वागारा राजवी, फूला हदा हार।
तो तो छेती बहु पड़ी, कूडे इण ससार ॥ १०८-१८९
हीरण भला केहर भला, सुकन भला के सांम वे।
उठो'र अरजुन बाण ल्यो, सीध करे श्रीराम वे ॥ —७०-१०
हीरां चाहै छैल चित, जोबन हदो जोर।
किरणालो चाहै कमल, चाहै चद चकोर ॥ —६-४३
हीरा मद आतुर हुई, चित प्रीतम की चाह।
विषधर ज्यु चदन बिनां, दिल की मिटै न दाह ॥ —६-४२
हे विधनां तो सु कहू, एक अरज सुंण लेत।
वीछडण अक'ज मेट कर, मिलवैको लिख वेत ॥ —१५०-१०
होणहार सो बुध उपजे, भवीतव्य किण ही न हाथ वे।
तेरा नाम है हठमला, आओ कर मूझ साथ वे ॥ —८७-२३
होणहार सो नही मिटै, लेष लिख्या छठी रात वे।
भलो बूरो सहू मांहरो, करसी विधाता मात वे ॥ —७५-६६
होणहार सो ही'ज हूवो, स्याणपणी क्या होय वे।
राजा कोपे भी भरयो, वरजण सको कोय वे ॥ —६८-५२

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर द्वारा

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला में प्रकाशित

राजस्थानी–हिन्दी-ग्रन्थ

१. कान्हडदे प्रबन्ध, (ग्र. ११), महाकवि पद्मनाभ विरचित; सम्पादक - प्रो. के. बी व्यास । मू. १२.२५

२. क्यामखां रासा, (ग्र. १३), कवि जान कृत; सम्पादक - डॉ. दशरथ शर्मा और अगरचन्द भवरलाल नाहटा । मू. ४.७५

३. लावा रासा, (ग्र १४) अपर नाम कूर्मवंशयशप्रकाश, गोपालदान कविया कृत; सम्पादक - श्रीमहताबचन्द खारेड । मू. ३.७५

४. बांकीदास री ख्यात, (ग्र २१), बांकीदास कृत; सम्पादक - श्रीनरोत्तमदास स्वामी । मू ५ ५०

५. राजस्थानी साहित्य संग्रह भाग १, (ग्र. २७); सम्पादक - श्रीनरोत्तमदास स्वामी । मू. २.२५

६. राजस्थानी साहित्य संग्रह भाग २, (ग्र. ५२) तीन ऐतिहासिक वार्ताए्—बगडावत, प्रतापसिंह म्होकमसिंह और वीरमदे सोनगिरा; सम्पादक - पुरुषोत्तमलाल मेनारिया । मू. २.७५

७ कवीन्द्र-कल्पलता, (ग्र. ३४), कवीन्द्राचार्य सरस्वती कृत, सम्पादिका - रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत । मू. २००

८. जुगलविलास, (ग्र ३२), कुशलगढ़ के महाराजा पृथ्वीसिंहजी अपरनाम कवि पीथल कृत ; सम्पादिका - रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत । मू. १.७५

९. भगतमाळ, (४३), चारण ब्रह्मदास दादूपंथी कृत; सम्पादक - श्रीउदयराज उज्ज्वल । मू. १ ७५

१० राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची भाग १, (ग्र. ४२), ई. स. १९५६ तक संगृहीत ४००० ग्रंथो का वर्गीकृत सूचीपत्र ; सम्पादक - मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य । मू ७ ५०

११. राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची, भाग २, (ग्र ५१), ७८५५ तक के ग्रन्थों का सूची-पत्र ; सम्पादक – श्रीगोपालनारायण बहुरा । मू. १२ ००

१२. राजस्थानी हस्तलिखित-ग्रन्थसूची भाग १, (ग्र. ४४), मार्च १९५८ तक के ग्रंथो का विवरण , सम्पादक - मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य । मू. ४ ५०

१३ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थसूची भाग २, (ग्र. ५८), १९५८-५९ के संगृहीत ग्रंथो का विवरण , सम्पादक – पुरुषोत्तमलाल मेनारिया । मू २.७५

१४. स्व. पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण-ग्रंथ-संग्रह, (ग्र. ५५), सम्पादक - श्री गोपालनारायण बहुरा और श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी । मू ६ २५

१५ मुंहता नैणसी री ख्यात भाग १, (ग्र ४८), मुंहता नैणसी कृत, सम्पादक - आ० श्रीबदरीप्रसाद साकरिया । मू. ८ ५०

१६. मु० नैं० री ख्यात भाग २, (ग्र ४६), सपा०-श्रा०श्रीबदरीप्रसाद साकरिया । मू ६ ५०
१७. मु० नैं० री ख्यात भाग ३, ((ग्र. ७२), ,, मू. ८.००
१८. सूरजप्रकास भाग १, (ग्र ५६), चारण करणीदान कविया कृत ; सम्पादक—श्रीसीताराम लाळस । मू. ८.००
१९ सूरजप्रकास भाग २, (ग्र. ५७); सम्पादक - श्रीसीताराम लाळस । मू. ६.५०
२०. ,, भाग ३, (ग्र. ५८); ,, ,, ,, मू ६ ७५
२१. नेहतरग, (ग्र. ६३), बूदी नरेश राव बुधसिंह हाडा कृत ; सम्पादक - श्री रामप्रसाद दाधीच । मू. ४.००
२२ मत्स्य-प्रदेश की हिन्दी-साहित्य को देन, (ग्र. ६६), लेखक डॉ मोतीलाल गुप्त , मू ७.००
२३ राजस्थान में सस्कृत साहित्य की खोज, (ग्र.३१), अनु० श्रीब्रह्मदत्त त्रिवेदी, प्रोफ़ेसर एस आर भाण्डारकर द्वारा हस्तलिखित सस्कृत-ग्रथो की खोज मे मध्यप्रदेश व राजस्थान मे (१६०५-६ ई०) मे की गई खोज की रिपोर्ट का हिन्दी अनुवाद । मू. ३.००
२४ समदर्शी आचार्य हरिभद्र, (ग्र ६८), लेखक–प० सुखलालजी, हिन्दी अनुवादक–शान्तिलाल म जैन । मू. ३.००
२५. वीरवांण, (ग्र. ३३), ढाढी बादर कृत, सम्पादिका–रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत । मू ४ ५०
२६ वसन्त-विलास फागु, (ग्र. ३६), सम्पादक - एम सी मोदी । मू ५ ५०
२७ रुषमणीहरण, (ग्र ७४), महाकवि सांयाजी झूला कृत, सम्पादक–पुरुषोत्तमलाल मेनारिया । मू. ३ ५०
२८ बुद्धि-विलास, (ग्र. ७३), बखतराम साह कृत; सम्पादक–श्री पद्मधर पाठक । मू. ३ ७५
२९ रघुवरजसप्रकास, (ग्र ५०), चारण कवि किसनाजी आढा कृत, सम्पादक–श्री सीताराम लाळस । मू ८.२५
३० सस्कृत व प्राकृत ग्रन्थों का सूचीपत्र भाग १ (ग्र ७१), राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर सग्रह का स्वरित रोमन-लिपि मे ४००० का सूचीपत्र, अत मे विशिष्ट ग्रन्थो के उद्धरण, सम्पादक–पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य । मू. ३७.५०
३१ सस्कृत व प्राकृत ग्रन्थों का सूचीपत्र भाग २ अ (ग्र. ७७), सम्पादक–पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य । मू. ३४ ५०
३२. सन्त कवि रज्जब–सम्प्रदाय और साहित्य (ग्र ७६), लेखक–डॉ. व्रजलाल वर्मा । मू ७ २५
३३ प्रतापरासो, (ग्र ७५), जाचिक जीवण कृत, सम्पादक–डॉ मोतीलाल गुप्त । मू ६.७५
३४ भक्तमाल, राघोदास कृत, चतुरदास कृत टीका, सम्पादक–श्री अगरचन्द नाहटा । मू ६ ७५
३५ पश्चिमी भारत की यात्रा, (ग्र ८०) कर्नल जेम्स टॉड कृत, अनु० श्री गोपालनारायण वहुरा, एम ए. मू. २१ ००